क्षमा की धरती को उर्वरा बनाते हैं मैत्री के फूल

विश्व मैत्री दिवस - 9 सितम्बर, 2024

-ललित गर्ग

जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। यह एकमात्र आत्मशुद्धि का प्रेरक पर्व है। इसीलिए यह पर्व ही नहीं, महापर्व है। संपूर्ण जैन समाज इस पर्व के अवसर पर जागृत एवं साधनारत हो जाता है। आठ दिनों की कठोर साधना के बाद मैत्री दिवस का आयोजन होता है। पर्युषण पर्व का हृदय है-क्षमापना दिवस जिसे मैत्री दिवस भी कहते हैं। इस दिन अपनी भूलों या गलतियों के लिए क्षमा मांगना एवं दूसरों की भूलों को भूलना, माफ करना, यही इस पर्व को मनाने की सार्थकता सिद्ध करता है। यदि कोई व्यक्ति इस दिन भी दिल में उलझी गांठ को नहीं खोलता है, तो वह अपने सम्यग्दर्शन की विशुद्धि में प्रश्न चिन्ह खड़ा कर लेता है। क्षमायाचना करना, मात्र वाचिक जाल बिछाना नहीं है। परंतु क्षमायाचना करना अपने अंतर को प्रसन्नता से भरना है। बिछुड़े हुए दिलों को मिलाना है, मैत्री एवं करुणा की स्रोतस्विनी बहाना है। मैत्री पर्व का दर्शन बहुत गहरा है। मैत्री तक पहुंचने के लिए क्षमायाचना की तैयारी जरूरी है। क्षमा लेना और क्षमा देना मन परिष्कार की स्वस्थ परम्परा है। क्षमा मांगने वाला अपनी कृत भूलों को स्वीकृति देता है और भविष्य में पुनः न दुहराने का संकल्प लेता है जबकि क्षमा देने वाला आग्रह मुक्त होकर अपने ऊपर हुए आघात या हमलों को बिना किसी पूर्वाग्रह या निमित्तों को सह लेता है। क्षमा ऐसा विलक्षण आधार है जो किसी को मिटाता नहीं, सुधरने का मौका देता है। भगवान महावीर ने कहा-अहो ते खंति उत्तमा-क्षांति उत्तम धर्म है। तितिक्खं परमं नच्चा-तितिक्षा ही जीवन का परम तत्व है, यह जानकर क्षमाशील बनो। पर्युषण महापर्व से जुड़ा मैत्री पर्व मानव-मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है, यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों व दरवाजों को खोलने का पर्व है, जो एकाग्रता एवं एकांत आध्यात्मिक जिज्ञासाएं जगाकर एक समृद्ध एवं अलौकिक अनुभव तक ले जाता है। इस भीड़भाड़ से कहीं दूर सबसे पहली जो चीज व्यक्ति इस पर्युषण की साधना से सीखता है वह है -अनुशासनयुक्त मैत्रीमय जीवन। यह विलक्षण साधना तनावमुक्ति का विशिष्ट प्रयोग है जिससे शरीर को आराम मिलता है, अपने आपको, अपने भीतर को, अपने सपनों को, अपनी आकांक्षाओं तथा उन प्राथमिकताओं को जानने का यह अचूक तरीका है, जो घटना-बहुल जीवन की दिनचर्या में दब कर रह गयी है। इस दौरान परिवर्तन के लिये कुछ समय देकर हम अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं तथा साथ ही इससे अपनी आंतरिक प्रकृति को समझ सकते हैं, उसे उन्नत एवं समृद्ध बना सकते हैं। भगवान महावीर ने क्षमा यानि समता का जीवन जीया। वे चाहे कैसी भी परिस्थिति आई हो, सभी परिस्थितियों में सम रहे। ह्यक्षमा वीरो का भूषण है-महान व्यक्ति ही क्षमा ले व दे सकते हैं। पर्युषण पर्व क्षमा के आदान-प्रदान का पर्व है। इस दिन सभी अपनी मन की उलझी हुई ग्रंथियों को सुलझाते हैं, अपने भीतर की राग-द्वेष की गांठों को खोलते हैं वह एक दूसरे से गले मिलते हैं। पूर्व में हुई भूलों को क्षमा के द्वारा समाप्त करते हैं व जीवन को पवित्र बनाते हैं। पर्युषण महापर्व का समापन मैत्री दिवस के साथ होता है। इस तरह से पर्युषण महापर्व एवं क्षमापना दिवस- यह एक दूसरे को निकटता में लाने का पर्व है। यह एक दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है। गीता में भी कहा है - ह्यआत्मौपम्येन सर्वत्रः, समे पश्यति योर्जुन-श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-हे अर्जुन ! प्राणीमात्र को अपने तुल्य समझो। भगवान महावीर ने कहा-मित्ती में सव्व भूएसु, वेरंमज्झण केणइ सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी के साथ वैर नहीं है। मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन, आत्मा की उपासना शैली का समर्थन आदि तत्त्व इस पर्व के मुख्य आधार हैं। ये तत्त्व जन-जन के जीवन का अंग बन सके, इस दृष्टि से इस महापर्व को जन-जन का पर्व बनाने के प्रयासों की अपेक्षा है। पर्युषण पर्व आत्म उन्नति, अहिंसा, शांति और मैत्री का पर्व है। अहिंसा और मैत्री के द्वारा ही शांति मिल सकती है। आज जो हिंसा, युद्ध, आतंक, आपसी-द्वेष, नक्सलवाद एवं भ्रष्टाचार जैसी ज्वलंत समस्याएं न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए चिंता का बड़ा कारण बनी हुई है और सभी कोई इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं। उन लोगों के लिए मैत्री पर्व एक प्रेरणा है, पाथेय है, मार्गदर्शन है और अहिंसक-निरोगी-शांतिमय जीवन शैली का प्रयोग है। आज भौतिकता एवं स्वार्थपूर्ण जीवन की चकाचौंध में, भागती जिंदगी की अंधी दौड़ में इस पर्व की प्रासंगिकता बनाये रखना ज्यादा जरूरी है। इसके लिए जैन समाज संवेदनशील बने विशेषतः युवा पीढ़ी मैत्री पर्व की मूल्यवत्ता से परिचित हो और वे आत्मचेतना को जगाने वाले इन दुर्लभ क्षणों से स्वयं लाभान्वित हो और जन-जन के सम्मुख मैत्री का एक आदर्श प्रस्तुत करे। तथागत बुद्ध ने कहा-क्षमा ही परमशक्ति है। क्षमा ही परम तप है। क्षमा धर्म का मूल है। क्षमा के समकक्ष दूसरा कोई भी तत्व हितकर नहीं है। क्योंकि प्रेम, करुणा और मैत्री के फूल सहिष्णुता और क्षमा की धरती पर ही खिलते हैं। सबके साथ मैत्री करो यह कथन बहुत महत्त्वपूर्ण है किंतु हम वर्तमान संबंधों को बहुत सीमित बना लेते हैं। दर्द सबका एक जैसा होता है, पर हम चेहरों को देखकर अपना-अपना अन्दाज लगाते हैं। यह स्वार्थपरक व्याख्या हमें प्रेम से जोड़ सकती है मगर करुणा से नहीं। प्रेम में स्वार्थ है, राग-द्वेष के संस्कार है, जबकि करुणा परमार्थ का पर्याय बनती है। कहा जाता है-वसुधैव कुटुम्बकम वसुधा कुटुम्ब है, परिवार है। ह्यमित्ती में सव्व भूएसु वेरं न केणई- यह सार्वभौम अहिंसा एवं सौहार्द का ऐसा संकल्प है जहां वैर की परम्परा का अंत होता है।

मित्रता का भाव हमारे आत्म-विकास का सुरक्षा कवच है। आचार्य श्री तुलसी ने इसके लिए सात सूत्रों का निर्देश किया। मित्रता के लिए चाहिए- विश्वास, स्वार्थ-त्याग, अनासक्ति, सहिष्णुता, क्षमा, अभय, समन्वय। यह सप्तपदी साधना जीवन की सार्थकता एवं सफलता की पृष्ठभूमि है। विकास का दिशा-सूचक यंत्र है। मित्रता का यह पर्व आमंत्रित कर रहा है अपनी ओर, बांहें फैलाये हुए, हमें बिना कुछ सोचे, ठिठके बगैर, भागकर मित्रता की पगडंडी को पकड़ लेने के लिये। जीवन रंग-बिरंगा है, यह श्वेत है और श्याम भी। मित्रता की यही सरगम कभी कानों में जीवनराग बनकर घुलती है तो कहीं उठता है संशय का शोर। मित्रता को मजबूत बनाता है हमारा संकल्प, हमारी जिजीविषा, हमारी संवेदना लेकिन उसके लिये चाहिए समर्पण एवं अपनत्व की गर्माहट। यह जीना सिखाता है, जीवन को रंग-बिरंगी शक्ल देता है। प्रेरणा देता है कि ऐसे जिओ कि खुद के पार चले जाओ। ऐसा कर सके तो हर अहसास, हर कदम और हर लम्हा खूबसूरत होगा और साथ-साथ सुन्दर हो जायेगी जिन्दगी। मानवीय संवेदनाओं एवं आपसी रिश्तों की जमीं सूखती जा रही है ऐसे समय में एक दूसरे से जुड़े रहकर जीवन को खुशहाल बनाने और दिल में जादुई संवेदनाओं को जगाने का सशक्त माध्यम है मैत्री दिवस। क्षणिक और स्वार्थों पर टिकी मित्रता वास्तव में मित्रता नहीं, केवल एक पहचान मात्र होती है ऐसे मित्र कभी-कभी बड़े खतरनाक भी हो जाते हैं। जिनके लिए एक विचारक ने लिखा है- पहले हम कहते थे, हे प्रभु ! हमें दुश्मनों से बचाना परन्तु अब कहना पड़ता है, हे परमात्मा, हमें दोस्तों से बचाना। दुश्मनों से भी ज्यादा खतरनाक होते हैं दोस्त। विश्व मैत्री दिवस वैयक्तिक स्वार्थों को एक ओर रखकर औरों को सुख बांटने एवं दुःख बटोरने की मनोवृत्ति को विकसित करने का दुर्लभ अवसर प्रदत्त करता है। इस दिवस को मनाने का मूल हार्द यही है कि मित्रता में विचार-भेद और मत-भेद भले ही हों मगर मन-भेद नहीं होना चाहिए। क्योंकि विचार-भेद क्रांति लाता है जबकि मन-भेद विद्रोह। क्रांति निर्माण की दस्तक है, विद्रोह बरबादी का संकेत।

हरियाणा में त्याग के बदले सपा कांग्रेस से क्या-क्या चाहती है ?

अशोक भाटिया

हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव का बड़ा बयान सामने आया है। दरअसल अभी तक सुगबुगाहट थी कि हरियाणा में इंडी गठबंधन के तहत सपा 17 सीटों की मांग कर रही है। माना जा रहा था कि इस बंटवारे का सीधा असर इसके बाद होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा की 10 सीटों के उपचुनाव के सीट बंटवारे पर भी पड़ेगा। उपचुनाव के लिए कांग्रेस का प्रदेश नेतृत्व 5 सीटों पर दावेदारी कर रहा है। लेकिन शुक्रवार को अखिलेश यादव ने एक्स पर अपनी पोस्ट में साफ कर दिया कि हम हरियाणा के हित के लिए किसी भी तरह के त्याग के लिए तैयार हैं। बात सीट की नहीं जीत की है। यानी जो जहां से मजबूत होगा, उसे इंडी गठबंधन का दूसरा दल समर्थन देगा।

दरअसल लोकसभा चुनाव में 37 सीटें जीतने के बाद से अखिलेश यादव राष्ट्रीय फलक पर सपा को पहचान दिलाने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इसके लिए वो पहले हरियाणा विधानसभा चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे थे। हरियाणा की सपा प्रदेश इकाई ने 17 सीटों पर चुनाव लड़ने का प्लान बनाया था। सपा के प्रदेश अध्यक्ष सुरेन्द्र भाटी ने अखिलेश यादव को 17 सीटों का ब्यौरा भी भेज दिया था। जुलाना, सोहना, बावल, बेरी, चरखी-दादरी और बल्लभगढ़ जैसी सीट पर सपा की नजर थी। सपा प्रमुख अखिलेश यादव की कोशिश हरियाणा में कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ने की थी । इसके लिए कांग्रेस शीर्ष नेतृत्व के साथ सीटों को लेकर उनकी बातचीत भी चल रही थी। हालांकि, कांग्रेस एक सीट से ज्यादा सपा को देने के पक्ष में नहीं थी। ऐसे में अखिलेश ने हरियाणा चुनाव लड़ने से पीछे हट गए हैं। ट्वीट करके कहा कि हमारे या इंडिया गठबंधन के किसी भी घटक दल के लिए, यह समय अपनी राजनीतिक संभावना तलाशने का नहीं, बल्कि त्याग और बलिदान देने का है। हरियाणा के हित में सपा बड़े दिल से हर त्याग के लिए तैयार हैं। बीजेपी को हराने में इंडिया गठबंधन के साथ अपने संगठन और समर्थकों की शक्ति को जोड़ देंगे। उन्होंने आगे लिखा है कि पिछले 10 सालों में भाजपा ने हरियाणा के विकास को बीसों साल पीछे ढकेल दिया है। हम मानते हैं कि हमारे या इंडिया एलायंस के किसी भी दल के लिए, ये समय अपनी राजनीतिक संभावना तलाशने का नहीं है बल्कि त्याग और बलिदान का है। जनहित के परमार्थ मार्ग पर स्वार्थ के लिए कोई जगह नहीं होती। कुटिल और स्वार्थी लोग कभी भी इतिहास में अपना नाम दर्ज नहीं करा सकते हैं। ऐसे लोगों की राजनीति को हराने के लिए ये क्षण, अपने से ऊपर उठने का ऐतिहासिक अवसर है। हम हरियाणा के हित के लिए बड़े दिल से, हर त्याग-परित्याग के लिए तैयार हैं। इंडिया एलायंस की पुकार, जनहित में हो बदलाव!

अखिलेश ने हरियाणा चुनाव से अपने कदम पीछे खींचकर कांग्रेस को चुनाव लड़ने के लिए पूरा मैदान दे दिया है। मध्य प्रदेश के 2023 चुनाव में कांग्रेस के साथ सीट शेयरिंग पर बात न बनने के बाद सपा ने 71 सीटों पर उम्मीदवार उतार दिए थे। अब हरियाणा में समझौते से पहले ही सपा विधानसभा चुनाव लड़ने से सिर्फ पीछे ही नहीं हटी बल्कि कांग्रेस को पूरा समर्थन करने का भी भरोसा दिया है। सपा प्रमुख ने हरियाणा में जिस तरह त्याग दिखाया है, क्या कांग्रेस यूपी में बड़ा दिल दिखा पाएगी और महाराष्ट्र में सम्मानजनक सीट देगी?

उत्तर प्रदेश की 10 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होने हैं। यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि कांग्रेस उपचुनाव में 10 में 5 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इसे लेकर जब अखिलेश यादव से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि 50-50 तो बिस्किट आता है। सपा की कोशिश अपनी पांच विधानसभा सीटों पर जीत को बरकरार रखने के साथ एनडीए पाले वाली पांच विधानसभा सीटों पर कब्जा जमाने की है। ऐसे में अखिलेश कांग्रेस को उपचुनाव में एक से दो सीटें ही देने के मूड में है। 2024 लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में छह सीटें जीतने के बाद से कांग्रेस के हौसले बुलंद है। इसके चलते ही कांग्रेस को यूपी की सियासत में दोबारा से खड़े होने की उम्मीद दिखने लगी है। इसके लिए वह 2027 के विधानसभा चुनाव में अपने लिए बड़ा अवसर तलाश रही है। राहुल गांधी लगातार यूपी के दौरे कर रहे है। ऐसे में कांग्रेस उपचुनाव में पांच सीटों पर दावा कर रही है। 2024 में 17 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस ने 2027 विधानसभा चुनाव में 100 से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ने का मंसूबा बना रखा है।

हालांकि, हरियाणा में जिस तरह से कांग्रेस मजबूत है, उसी तरह यूपी में सपा की स्थिति है। हरियाणा में सपा कमजोर है तो यूपी में कांग्रेस की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। अखिलेश यादव ने हरियाणा में कांग्रेस के साथ सीट की बार्गेनिंग करने के बजाय बीजेपी को हराने के लिए हर त्याग-परित्याग देने की बात कही है, क्या उसी तरह से यूपी उपचुनाव में भी कांग्रेस बड़ा दिल दिखा पाएगी। कांग्रेस पांच सीटों पर उपचुनाव लड़ने की जिद छोड़ेगी, क्योंकि उपचुनाव को 2027 के विधानसभा का लिटमस टेस्ट माना जा रहा है।

लोकसभा चुनाव में बदली रणनीति के तहत उतरी सपा ने बीजेपी को करारी मात दी थी। अखिलेश यादव अब विधानसभा उपचुनाव में सपा के मोमेंटम को बरकरार रखने की कोशिश में है। इसके जरिए वो विधानसभा चुनाव 2027 की रूपरेखा तय करने की कोशिश करते दिख रहे हैं, लेकिन कांग्रेस ने पांच सीटों की डिमांड कर-के चिंता बढ़ा दी है। ऐसे में अखिलेश यादव ने हरियाणा चुनाव में इंडिया गठबंधन को समर्थन करके कांग्रेस पर यूपी उपचुनाव और महराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए दबाव बना दिया है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में सपा करीब 10 सीटों पर अपना दावा ठोक रही है। अखिलेश यादव ने अपने वरिष्ठ नेता माता प्रसाद पांडेय, विधायक लकी यादव, तूफानी सरोज और इंद्रजीत सरोज को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए प्रभारी नियुक्त कर रखा। महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष अबु आसिम आजमी एक बड़ा चेहरा है। अबु आजमी पिछले दिनों सपा के सभी सांसदों का मुंबई में स्वागत समारोह कर मोमेंटम बनाने का काम कर चुके हैं। पार्टी के अभी वहां दो विधायक हैं।

सपा ने महाराष्ट्र में मुस्लिम बहुल और उत्तर भारतीय मतदाताओं वाली सीटों पर चुनाव लड़ने का प्लान बनाया है, जिसके लिए पार्टी ने उम्मीदवारों के नाम भी लगभग तय कर लिए हैं। मुंबई और उससे सटे ठाणे जिले की सीटों पर पार्टी की नजर है। मुंबई की मानकोर शिवाजी नगर, भायखला, वसोर्वा और इससे सटे ठाणे की भिवंडी ईस्ट और भिवंडी वेस्ट के अलावा महाराष्ट्र की धूलिया और औरंगाबाद जैसी मुस्लिम बहुल सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारने की तैयारी की है। मानकर शिवाजी नगर सीट से सपा के अबु आजमी और भिवंडी ईस्ट से रईस शेख पार्टी के मौजूदा विधायक हैं। इस बार सपा महाराष्ट्र में अपने विधायकों की संख्या में इजाफा करना चाहती है। हरियाणा में त्याग के बदले सपा यूपी उपचुनाव और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में सम्मानजनक सीटें चाहती है। हरियाणा में चुनाव प्रदर्शन और जमीन के आधार पर जिस तरह राज्य में सपा को सीटें नहीं मिली हैं, उसी तरह यूपी उपचुनाव में कांग्रेस के लिए दबाव बना दिया है। कांग्रेस यहां पांच सीटों पर दावा कर रही है, लेकिन एक से अधिक सीट उसको मिलनी मुश्किल होगी। हरियाणा की तरह महाराष्ट्र में भी कांग्रेस से बात नहीं बनी, तो इसका असर उत्तर प्रदेश की सियासत में दोनों दलों की दोस्ती पर भी पड़ सकता है।

खेल के क्षेत्र में खेल मनोवैज्ञानिक की भूमिका महत्वपूर्ण

खेल के क्षेत्र में कई बदलाव हुए हैं। खेल के क्षेत्र में समय के साथ कई तरह के बदलाव आए हैं। इसी तरह के बदलाव उन क्षेत्रों में भी हो रहे हैं जिनका खेल के क्षेत्र से सीधा संबंध नहीं है, जैसे कि खेल के मैदान के बाहर के कुछ लोग अपना योगदान देते हैं । खिलाडीय़ों के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका खेल मनोवैज्ञानिक की भी होती है। कई खेल प्रेमियों को लगता है कि जब कुछ एथलीट इतनी अच्छी स्थिति में होते हैं, तो उनका प्रदर्शन तुरंत खराब हो जाता है। इसके पीछे क्या कारण हो सकते हैं? कई लोग ऐसे अनुमान लगा रहे हैं, कुछ को इससे जवाब मिल जाता है, तो कई को इससे किसी तरह का कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिलता है। कई बार खिलाड़ी बहुत अच्छी फॉर्म में नजर आते हैं लेकिन तुरंत अगले मैचों में खराब प्रदर्शन करते हैं। भले ही पिच एक जैसी हो, मैदान एक ही हो, विरोधी टीम एक ही हो, खिलाड़ियों का प्रदर्शन खराब हो जाता है। इसके लिए अक्सर उनकी मानसिक स्थिति जिम्मेदार होती है। ऐसे में खिलाड़ियों को अच्छी मानसिक सलाह देना जरूरी है, इसके लिए खेल के क्षेत्र में खेल मनोवैज्ञानिक बहुत अच्छी भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन खेल मनोवैज्ञानिक हर स्तर पर उपलब्ध नहीं हैं। उच्च स्तर पर खेलने वाले खिलाड़ियों के लिए खेल मनोवैज्ञानिक आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन जूनियर खिलाड़ियों को जरूरत महसूस होने पर भी वे नहीं मिल पाते हैं, इसलिए जितना संभव हो सके हर स्तर पर खेल मनोवैज्ञानिक अधिक से अधिक स्थानों पर उपलब्ध होने चाहिए। जिससे हमारे देश के विभिन्न खेलों के खिलाड़ियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

कई बार हम खिलाड़ियों को मैच के दौरान मानसिक दबाव में खेलते हुए देखते हैं कुछ खिलाड़ी ऐसी परिस्थितियों से वापसी करने में सक्षम होते हैं, जबकि अन्य को वापसी करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, हमने वास्तविक मैचों के दौरान देखा है, मैदान पर किसी घटना के बाद या कुछ छोटे विवादों के बाद, कुछ खिलाड़ी बहुत शानदार प्रदर्शन करते है । मानसिक स्थिति में परिवर्तन के कारण सभी बदलाव होते हैं। कुछ खिलाड़ी इस घटना को नकारात्मक रूप से लेते हैं, जबकि अन्य इस घटना को सकारात्मक रूप से लेते हैं और शानदार प्रदर्शन या कुछ और करिश्मा करने की कोशिश करते हैं। निःसंदेह, कुछ लोग इसमें सफल भी होते हैं। हम मैचों के दौरान कुछ खिलाड़ियों को एक-दूसरे को चुनौती देते हुए भी देखते हैं, जहां एक खिलाड़ी शीर्ष पर रहता है, और दूसरा दबाव में अच्छा प्रदर्शन करने में विफल रहता है। ये सभी बातें सिर्फ और सिर्फ मन की स्थिति पर निर्भर करती हैं। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य को अच्छा बनाए रखना बहुत जरूरी होता है। जिस खिलाड़ी के पास मानसिक स्थिरता है वह निश्चित रूप से बहुत बड़े स्तर पर एक सफल खिलाड़ी के रूप में उभर सकता है। लेकिन अगर खिलाड़ियों में मानसिक स्थिरता नहीं है, उनका दिमाग हमेशा दबाव में रहता है, तो कोई भी खिलाड़ी कितना भी अच्छा क्यों न हो, उसके लिए वास्तविक मैदान पर अच्छा प्रदर्शन करना संभव नहीं है। तब ऐसी स्थिति से जूझते हुए इन एथलीटों को एक विशेषज्ञ खेल मनोवैज्ञानिक की सख्त जरूरत होती है।

देखा जाता है कि खेल मनोवैज्ञानिक दबाव में रहने वाले खिलाड़ियों को बहुत अच्छे से बाहर निकालते हैं। कुछ जगहों पर हमने देखा है कि जब खिलाड़ी बड़े स्तर पर खेल रहे होते हैं तो वे खेल मनोवैज्ञानिकों की मदद लेते हैं, लेकिन मेरी राय में हर खेल अकादमियों को इसकी मदद लेनी चाहिए। छोटी उम्र से ही खेल मनोवैज्ञानिकों की मदद जरुरी हैं। यदि हर खेल अकादमियों में एक अच्छा खेल मनोवैज्ञानिक जुड़ा होगा तो वे निश्चित रूप से हर महीने खिलाड़ियों को अच्छी सलाह देकर उनकी मानसिक स्थिति को मजबूत करने का प्रयास करेंगे। यदि वे अपने खिलाड़ियों को अच्छी मानसिक स्थिरता देते हैं, तो निश्चित रूप से ऐसे खिलाड़ी अपने राज्य और देश के लिए बहुत अच्छा काम कर सकते हैं। इसलिए, खेल मनोवैज्ञानिक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। हमने कई अलग-अलग विशेषज्ञ देखे हैं, जो शारीरिक फिटनेस के लिए उपलब्ध हैं। वे आपको अच्छी फिटनेस बनाए रखने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षक हैं, पोषण विशेषज्ञ हैं, लेकिन खेल मनोवैज्ञानिकों की संख्या अभी भी बहुत अधिक नहीं है, इसलिए खेल मनोवैज्ञानिकों की संख्या बढ़नी चाहिए। जो लोग इस क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं , उन्होंने खेल मनोवैज्ञानिक के रूप में इस क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए, इस क्षेत्र में अभी भी बहुत संभावनाएं हैं और इसलिए यदि खेल मनोवैज्ञानिकों की संख्या बढ़ती है, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत इस क्षेत्र में काफी प्रगति करेगा। भविष्य में खेल मनोवैज्ञानिकों की संख्या बढ़नी चाहिए और विभिन्न खेल अकादमियों के साथ-साथ खेल संगठनों को भी इस विषय पर प्रकाश डालना चाहिए, ताकि भविष्य में अधिक से अधिक खिलाड़ियों को अच्छा मानसिक स्वास्थ्य मिल सके और हमारा देश क्रीडाक्षेत्र में अधिक विकसित हो सके।

-डॉ. गोकुलसिंह गिरासे, क्रिकेट कमेंटेटर

नारियों पर अत्याचार का यक्ष प्रश्न, शर्मसार होता संपूर्ण स्त्री समाज

संजीव ठाकुर

हाय कोलकोता की बेटी मौमिता हम सचमुच शर्मिंदा हैं,हम तुम्हारी रक्षा-सुरक्षा नहीं कर पाए।अभया,निर्भया, मोमिता न जाने कितनी अबोध निर्बल बच्चियों अत्याचार की शिकार होती रहेगी और हमारा सभ्य पुरुष समाज कैंडल जलाकर सड़कों पर प्रदर्शन कर न्याय की गुहार लगाता रह जाएगा । पुरुष अत्याचार की शिकार बेटियों हम तुम्हारी आत्मा से क्षमा प्रार्थी हैं। स्त्रियों पर पुरुषों के अत्याचार और उनकी सुरक्षा का यक्ष प्रश्न हमारे सामने खड़ा हुआ है। क्या हम उनकी कभी सुरक्षा नहीं कर पाएंगे क्या यूं ही देश में स्त्रियों पर अनवरत अत्याचार होते रहेंगे? देश में शहरों और गांवों में नारियों पर हो रहे अत्याचारों की खबरें मानवीय संवेदनाओं को झकझोर कर रख देती है। आसपास और पास पास इतनी दिल दहला देने वाली घटनाएं प्रकाश में आती हैं की मानवता केवल आंसू बहा कर रह जाती है। क्या इतना बड़ा सशक्त पुरुषों का समाज इसे रोकने में सक्षम नहीं है। देश में यह यक्ष प्रश्न की तरह हम सबके सामने खड़ा है। भारत में गरीब तबके में महिलाओं की स्थिति अभी भी दयनीय है मजदूरी करने से लेकर घरों में झाड़ू पोछा बर्तन मांजने तक औरत अपनी आजीविका चलाने के लिए मजबूर है। नारी उत्पीड़न की शुरूआत यहीं से होती है ।भारत में नारी अभी भी बहुत उपेक्षित प्रताड़ित तथा उत्पीड़ित है। हजारों उत्पीड़न तथा प्रताड़ना की घटनाएं प्रकाश में ही नहीं आ पाती हैं, और हम नारी दिवस पर जोर जोर से नारी उत्थान की दलीलें देते फिरते हैं। यह अत्यंत पीड़ा दायक तथा विचारणीय है।स्त्री जागरण के परिपेक्ष में भारत में नई स्त्री की संकल्पना उभरती है। भारत की स्त्री जागरण स्थितियों में पश्चिम नारीवाद का सर्वाधिक प्रभाव दिखाई देता है, इसमें बुनियादी नारी अधिकारों के जरिए सशक्तिकरण की बात की गई है। भारत में नारी उत्थान और समानता का संकल्प एवं विमर्श मूलतः मध्यम वर्गीय, शहरी और अभिजात्य इसमें स्त्रियों के बुनियादी अधिकार शिक्षा रोजगार आर्थिक स्वतंत्रता की बात का जोर शोर से जिक्र किया गया है। गांव की स्त्रियों पर घरेलू हिंसा तथा कस्बाई स्त्रियों के शोषण की समस्याएं बहुत बड़ी हैं। इसके अलावा भारत की परंपरागत विशेषताएं हैं जो भारतीय जनमानस में इस तरह घुली मिली हैं कि यकायक दलित स्त्री को सबला या सर्व शक्तिमान मानना पुरुष समाज को स्वीकार्य नहीं होगा। भारतीय स्त्री पति को परमेश्वर एवं मातृत्व के दायित्व को निभाने वाली एक अबला स्त्री ही है। पिता, भाई तथा पति के संरक्षण में पलने, बढ़ने के बाद उनके अधिकारों से परे जाने में अभी भी सक्षम नहीं हुई है। जबकि यूरोपीय देशों का नारीवाद एवं नारी सशक्तिकरण एक अलग दृष्टि तथा नई दिशा को दशार्ता है। भारत की नारी अपनी ॸस्त्रीॸहोने के दायित्व को यकायक ठुकरा कर उसकी बेड़ियों से बाहर नहीं निकल सकती। भारतीय समाज अभी भी स्त्रियों को मान्य रुप से बराबरी का दर्जा नहीं दे पाया है। वह अभी भी स्त्री को अबला एवं विज्ञापन का एक अच्छा जरिया मानता है, स्त्रियों को आज भी पुरुष विहीन समाज किसी भी तरह ग्राह्य एवं मान्य नहीं है। भारतीय संदर्भ में नई स्त्री की कल्पना वास्तव में महिलाओं के लिए एक मिथक तथा मृग मरीचिका के रूप में है। स्त्री उत्थान विमर्श के लिए यह समझना अत्यंत आवश्यक होगा की हर समाज की अपनी वैचारिक विशेषता, संस्कृति एवं सीमाएं होती हैं। नारी सशक्तिकरण की जितनी भी अवधारणाएं और नियम कानून बने हैं, वह सब पश्चिम से अनुसरण करके बनाए गए हैं, ऐसे में भारतीय दलित स्त्री की वैचारिकी क्या हो सकती है, इसकी संकल्पना भारतीय नारी ही कर सकती है। भारत की नई स्त्री वह होगी जो अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो एवं स्वतंत्रत विचारों के अधिकार से अच्छी तरह वाकिफ एवं जानकार हो। कस्बाई तथा झोपड़पट्टी में रहने वाली स्त्रियों को जहां भारत में शिक्षा का अभाव है, ऐसे में उनके लिए जागरूकता लाना अभी भी एक टेढ़ी खीर तथा एक बड़े अभियान चलाने जैसी बात होगी। भारत में जहां 35% स्त्रियां साक्षर नहीं है, ऐसे में नई स्त्री की परिकल्पना केवल पश्चिमी देशों में ही की जा सकती है। भारत में स्वतंत्रता संग्राम से स्त्रियों की सहभागिता रही है, उसके उपरांत पंचायती चुनाव में महिला आरक्षण, संरक्षण,शिक्षा तथा रोजगार में बढ़ती सहभागिता नौकरी पेशा स्त्रियों का मातृत्व सुविधा कार्य के लिए समान वेतन का संघर्ष भारत में स्त्री बेचारी की मानसिकता को सशक्त करते हैं। भारत में नारी सशक्तिकरण एवं नारी समानता के उदाहरण चिकित्सा, तकनीकी, विधि विधाई, शिक्षा जगत, सेना तथा सरकारी नौकरी में दिखाई तो देते हैं, पर यह स्त्रियों की संख्या उनकी जनसंख्या के अनुपात में अत्यंत ही न्यून है। भारत में स्त्री समानता के लिए भारतीय समाज, सरकार, राजनेताओं, चिंतकों को पश्चिमी देशों का अंधानुकरण न कर भारत की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तथा धार्मिक पृष्ठभूमि को देखकर उसके अनुरूप स्त्रियों के विकास तथा सशक्तिकरण एवं समानता के लिए सशक्त योजनाएं बनाकर उसके क्रियान्वयन की आवश्यकता होगी है। वरना नारी सशक्तिकरण नारी समानता और नारी उत्थान की बातें कागजों तक सिमट के रह जाएंगी, और नारी अभी भी अंधेरों में, गांवों में झोपड़पट्टीयों में उत्पीड़न एवं शोषण का शिकार होती रहेंगी।

गणेश उत्सव सामाजिक समरसता का प्रतीक

भारत देश अपनी सांस्कृतिक विशेषता के कारण दुनियां में एक अलग पहिचान रखता है। यही सांस्कृतिक विशेषता हमारे देश को श्रेष्ठता प्रदान करती हैं, इस विशेषता के दर्शन तीज त्यौंहार, उत्सव, परंपराओं में होते है। इसी तरह की सांस्कृतिक और सामाजिक समरसता भारत में नवदुर्गा उत्सव के बाद किसी सांस्कृतिक पर्व में नजर आती है तो वह है, दस दिवसीय गणेश उत्सव, इस उत्सव ने सम्पूर्ण देश को एकता के मोती में गूथ दिया। यह उत्सव किसी विशेष जाति, वर्ग का नहीं होकर राष्ट्रीय उत्सव नजर आता है। गणेश उत्सव ने देश की राष्ट्रीय चेतना जगाने और सामाजिक समरसता स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महाराष्ट्र राज्य से शुरू हुआ यह उत्सव समय के साथ सम्पूर्ण भारत में मनाया जाना लगा। इस उत्सव की खास बात यह है की यह

-नरेंद्र तिवारी 'पत्रकार'

समाज के सभी वर्गों में समान उत्साह, उमंग और उल्लास के साथ मनाया जाता है। जातिपाती और आर्थिक मतभिन्नता के परे इस उत्सव में गजब की सांस्कृतिक एकता और सामाजिक समरसता के दर्शन होते है। गणेशोत्सव की शुरूआत महाराष्ट्र के पुणे से हुई थी। गणेश चतुर्थी का इतिहास मराठा साम्राज्य के सम्राट छत्रपति शिवाजी महाराज से जुड़ा है। ऐसी मान्यता है की भारत में मुगल शासन के दौरान अपनी सनातन संस्कृति को बचाने हेतु छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी माता जीजाबाई के साथ मिलकर गणेश चतुर्थी यानी गणेश उत्सव की शुरूआत की थी। यह उत्सव हिंदू पंचांग के अनुसार भाद्रपद मास की चतुर्थी से चतुर्दशी (चार तारीख चौदह तारीख तक) दस दिवस तक चलता है। गणेश जी निराकार दिव्यता हैं जो भक्त के उपकार हेतु एक अलौकिक आकार में स्थापित हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार वह भगवान शिव और देवी पार्वती के पुत्र है। गण का अर्थ है समूह। यह पूरी सृष्टि परमाणुओं और अलगझअलग ऊजाओं का समूह है। यदि कोई सर्वोच्च नियम इस पूरी सृष्टि के भिन्नझभिन्न संस्थाओं के समूह पर शासन नहीं कर रहा होता तो इसमें बहुत उथलझपुथल हो जाती। इन सभी परमाणुओं और ऊजाओं के समूह के स्वामी हैं गणेशजी। वे ही वह सर्वोच्च चेतना है, जो सर्वव्यापी है, और इस सृष्टि में एक व्यवस्था स्थापित करती है। आदि शंकराचार्य ने गणेश जी के सर का बहुत सुन्दरता से गणेश स्त्रोत में विवरण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार हालांकि, गणेश जी की पूजा हाथी के सिर वाले भगवान के रूप में होती है, लेकिन यह आकार या स्वरूप वास्तव में उस निराकार परब्रह्म रूप को प्रकट करता है। वे अजं निर्विकल्प निराकारमेकम है। अर्थात गणेश जी अजं (अजन्मे) हैं, निर्विकल्प (बिना किसी गुण के) हैं, निराकार (बिना किसी आकार के) हैं और वे उस चेतना के प्रतीक हैं, जो सर्वव्यापी है। गणेश जी वही ऊर्जा है जो इस सृष्टि का कारण है। यह वही ऊर्जा हैं। जिसमे सबकुछ प्रकट होता है और जिसमे सबकुछ विलीन हो जाता है। भगवान गणेश जी के जन्म की कहानी हम सभी उस कथा को जानते हैं, कि कैसे गणेश जी हाथी के सिर वाले भगवान बने। गणेश जी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। पुरातनकाल से हिंदू समाज कोई भी शुभ कार्य निर्विघ्न संपन्न करने के लिए उसका आरंभ गणपति की पूजा से होता है। गणेश जी सुखझसमृद्धि, वैभव एवं आनंद के अधिष्ठाता हैं। समाज में सभी शुभ कार्यों का प्रारंभ उनके दिव्य स्वरूप का स्मरण करके किया जाता है। व्यापारी अपने बहिखातों पर ह्णश्री गणेशाय नमः लिखकर ही नए वर्ष का प्रारंभ करता है। विवाह के मांगलिक अवसर पर भी गणेश पूजा की जाती है। श्री गणेश जी की अराधना से जुड़े इस उत्सव का राष्ट्रीय महत्व भी है। पेशवाओं ने गणेश उत्सव को बढ़ावा दिया। कहते है पुणे में कस्बा गणपति नाम से प्रसिद्ध गणपति की स्थापना शिवाजी महाराज की मां जीजाबाई ने की थी। परंतु लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गणेशोत्सव को राष्ट्रीय स्वरूप दिया। इससे पूर्व गणेश पूजा परिवार तक ही सीमित थी। पूजा को सार्वजनिक महोत्सव का रूप देते समय उसे केवल धार्मिक कर्मकांड तक ही सीमित नहीं रखा। बल्कि आजादी की लड़ाई, तात्कालीन समाज में व्याप्त छुआछूत दूर करने और जाति, वर्ग,अमीर, गरीब के भेद से ऊपर उठकर समाज को एक रुपता प्रदान करने के लिए इससे बढ़कर उसे अंग्रेजो के खिलाफ एक आंदोलन का स्वरूप दिया। बाल गंगाधर तिलक ने 1893 में गणेशउत्सव का जो सार्वजनिक पौधारोपण किया वह समय के साथ बढ़ता चला गया। अंग्रेजो के विरुद्ध आजादी की लड़ाई में गणेश उत्सव से निर्मित सामाजिक और राष्ट्रीय एकता हथियार के रूप में सामने आने लगी। तिलक ने गणेश उत्सव को सांस्कृतिक एवं सामाजिक समरसता का रूप दिया। उसके बाद महाराष्ट्र से यह उत्सव सम्पूर्ण भारत और दुनियां में मनाया जाने लगा। इस दस दिवसीय उत्सव का उल्लास पुणे और मुंबई में बड़े रूप में देखने को मिलता है। यहां विशाल गणेश पांडालों में झांकियां सजाई जाती है। देश के अन्य राज्यों में भी गणेश उत्सव परंपरागत उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है। घरों, संस्थाओं, गली मोहल्लों में गणेश जी प्रतिमाओं की स्थापना की जाती है। प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। बच्चो से जुड़ी प्रतियोगिताएं, खेलकूद, नाच, गाना, बजाना, सभी गली मोहल्लों, कालोनियों के लोगो को आपस में जोड़ देते है। गणेश उत्सव के दौरान बने रिश्ते समाज को आपस में जोड़ने का काम करते है। सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता की स्थापना में सहायक भूमिका निभाते हैं। पुणे के चर्चित गणेश पांडालों में जहां कस्बा गणपति, तांबड़ी जोगेश्वरी, गुरुजी तालीम, तुलसीबाग, केसरीवाड़ा दगड़ू सेठ गणेश पांडाल शामिल है तो देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में लालबागचा राजा, अंधेरीचाराजा, गणेश गली मुंबईचा राजा, खेतवाड़ी चा राजा, जीएसबी सेवा मंडल और गिरिगांव चा राजा गणेश पांडाल लोकप्रिय है। महाराष्ट्र से सटा एमपी भी अब गणेश पांडालों से सुसज्जित होने लगा है। यहां अनंत चतुर्दशी पर झिलमिलाती झांकियों का कारवा बरसों से निकल रहा है। एमपी के इंदौर में विभिन्न मिलो की झांकियां श्रमिको द्वारा बनाई जाती थी। समय के साथ नवीन गणेश मंडलों द्वारा झांकियां निकाली जाती हैं। दस दिन विशाल पांडाल में झांकियां सकती है, प्रसाद और भंडारों का दौर चलता है। गणेश उत्सव की इस कड़ी में एमपी की सीमा पर स्थित महाराष्ट्र से सटे अपने शहर सेंधवा का भी नाम शामिल करना चाहूंगा। जहां गणेश उत्सव की परंपरा बरसो से जारी है। दस दिवसीय गणेश उत्सव शहर के विभिन्न चौक चौराहों और कालोनियों में उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यहां अनेकों सामाजिक संगठन अनंत चतुर्दशी के चल समारोह में भागीदारी करते हुए झांकियों का निर्माण करते थै। इनमे महाराष्ट्र समाज सेवा संगठन, हिंदू समाज सेवा संगठन, दिनेश गंज एकता संगठन, जय भवानी एकता संगठन, पालीवाल समाज एकता संगठन, जय हिंद एकता संगठन, महाराज गली एकता संगठन आदि प्रमुख है। इन संगठनों में से कुछ अभी भी झांकियों का निर्माण करते है, कुछ नए संगठनों द्वारा झांकियां निकाली जाती है। दिनेशगंज एकता संगठन दस दिवसीय गणेश पंडाल का निर्माण करता है। यह क्रम अब भी जारी है। यह पांडाल निमाड़ में सबसे प्रसिद्ध पंडांलो में शुमार है। गणेश उत्सव सांस्कृतिक रूप से भारतीय जनमानस में एकता स्थापित करने का प्रमुख सांस्कृतिक उत्सव है। बाल गंगाधर तिलक ने जिस सांस्कृतिक एकता और सामाजिक समरसता के स्थापन के लिए सार्वजनिक गणेश उत्सव मनाए जाने की प्रक्रिया का प्रारंभ किया था। इस उत्सव ने अंग्रेजों से आजादी के दौरान तो भारत को एक सूत्र में बांधने का काम किया था। आजाद भारत में भी गणेश उत्सव सामाजिक समरसता का प्रतीक बना हुआ है।

सम्पादकीय

भारत में ऑनलाइन गेमिंग में महिलाओं और छोटे शहरों का बढ़ता रूझान

तकनीकी क्रांति के दौर में दुनिया तेजी से बदल रही है। इस परिवर्तन के साथ जहां अनगिनत फायदे सामने आए हैं, वहीं कुछ गंभीर चुनौतियां भी उभर कर आई हैं। हालांकि, इन चुनौतियों के बावजूद तकनीकी विकास को रोक पाना संभव नहीं है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस प्रगति के सकारात्मक पहलुओं को अपनाएं और नकारात्मक प्रभावों से बचें। यह बात न केवल रोजमर्रा की जिंदगी में लागू होती है, बल्कि भारत में तेजी से बढ़ रहे ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर पर भी सटीक बैठती है। ऑनलाइन गेमिंग उद्योग भारत में तेजी से उभर रहा है, और इसका उदाहरण यह है कि इसे खेलने वाले लोगों में 41 प्रतिशत महिलाएं हैं, और 66 प्रतिशत से अधिक गेमर्स छोटे शहरों से हैं। भारत में लूडो की सबसे बड़ी ऑनलाइन गेमिंग कंपनी जुपी के चीफ ऑफ पॉलिसी अश्विनी राणा के अनुसार, यह एक संकेत है कि ऑनलाइन गेमिंग की लोकप्रियता समाज के सभी वर्गों में फैल रही है। उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ऑनलाइन गेमिंग उद्योग की सराहना की है, क्योंकि यह क्षेत्र भविष्य में मानव जीवन को बदलने वाले अनुसंधानों का केंद्र बन सकता है। जुपी की स्थापना 2018 में आईआईटी कानपुर के पूर्व छात्र दिलशेर सिंह द्वारा की गई थी। इस कंपनी ने बहुत कम समय में भारतीय ऑनलाइन गेमिंग बाजार में एक प्रमुख स्थान हासिल कर लिया है। भारत का ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर अब चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है। हालांकि, इस सेक्टर की तेज़ी से बढ़ती लोकप्रियता के साथ कुछ चिंताएं भी सामने आई हैं, विशेष रूप से गेम की लत के संदर्भ में। अश्विनी राणा ने इस मुद्दे पर कहा कि किसी भी चीज की लत हो सकती है, चाहे वह मोबाइल फोन हो, टीवी हो, सोशल मीडिया हो, या फिर शराब और तंबाकू। यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी सीमाएं स्वयं तय करें और इन आदतों को नियंत्रण में रखें। ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर में अच्छी और बुरी दोनों तरह की कंपनियां हैं। विदेशी कंपनियां, जो जुआ खेलने के लिए लोगों को प्रेरित करती हैं, भारतीय बाजार में भी सक्रिय हैं। लेकिन जुपी जैसी भारतीय कंपनियों का मुख्य फोकस ऑनलाइन खेलों पर है, जिसमें कई सुरक्षा उपाय और सीमाएं लगाई गई हैं। उदाहरण के लिए, दांव लगाने की सीमा तय है, और 18 वर्ष से कम उम्र के लोग इन खेलों में भाग नहीं ले सकते। इसके अलावा, लूडो जैसे खेलों की अवधि सीमित होती है, और अधिक समय तक खेलने पर गेमर को अलर्ट भी मिलता है। ऑनलाइन जुआ और ऑनलाइन गेमिंग के बीच अंतर को समझना महत्वपूर्ण है। इस मुद्दे पर कई मामले हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में पहुंचे हैं, जहां यह स्पष्ट किया गया है कि जिस खेल में दिमाग और कौशल का उपयोग होता है, वह जुआ नहीं है। वहीं, जहां केवल भाग्य का सहारा लिया जाता है, उसे जुआ कहा जाएगा। इस आधार पर लूडो, क्रिकेट टीम बनाना, घुड़दौड़, तीन पत्ती, और लॉटरी जैसे खेलों को जुआ की श्रेणी में रखा गया है। जुपी के पास आज 300 से अधिक कर्मचारी हैं, जिसमें आधे से ज्यादा आईआईटियन हैं। इस कंपनी के प्लेटफार्म पर 10 करोड़ से अधिक लोग लूडो खेलते हैं। इस तेजी से बढ़ते हुए सेक्टर में तकनीकी प्रगति और नवाचारों का बड़ा योगदान है।

हरियाणा में त्याग के बदले सपा कांग्रेस से क्या-क्या चाहती है?

लोकसभा चुनाव में 37 सीटें जीतने के बाद से अखिलेश यादव राष्ट्रीय फलक पर सपा को पहचान दिलाने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इसके लिए वो पहले हरियाणा विधानसभा चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे थे। हरियाणा की सपा प्रदेश इकाई ने 17 सीटों पर चुनाव लड़ने का प्लान बनाया था। सपा के प्रदेश अध्यक्ष सुरेन्द्र भाटी ने अखिलेश यादव को 17 सीटों का ब्यौरा भी भेज दिया था। जुलाना, सोहना, बावल, बेरी, चरखी-दादरी और बल्लभगढ़ जैसी सीट पर सपा की नजर थी।सपा प्रमुख अखिलेश यादव की कोशिश हरियाणा में कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ने की थी । इसके लिए कांग्रेस शीर्ष नेतृत्व के साथ सीटों को लेकर उनकी बातचीत भी चल रही थी।

अशोक भाटिया

हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव का बड़ा बयान सामने आया है। दरअसल अभी तक सुगबुगाहट थी कि हरियाणा में इंडी गठबंधन के तहत सपा 17 सीटों की मांग कर रही है। माना जा रहा था कि इस बंटवारे का सीधा असर इसके बाद होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा की 10 सीटों के उपचुनाव के सीट बंटवारे पर भी पड़ेगा। उपचुनाव के लिए कांग्रेस का प्रदेश नेतृत्व 5 सीटों पर दावेदारी कर रहा है। लेकिन शुक्रवार को अखिलेश यादव ने एक्स पर अपनी पोस्ट में साफ कर दिया कि हम हरियाणा के हित के लिए किसी भी तरह के त्याग के लिए तैयार हैं। बात सीट की नहीं जीत की है। यानी जो जहां से मजबूत होगा, उसे इंडी गठबंधन का दूसरा दल समर्थन देगा।

कांग्रेस एक सीट से ज्यादा सपा को देने के पक्ष में नहीं थी। ऐसे में अखिलेश ने हरियाणा चुनाव लड़ने से पीछे हट गए हैं। ट्वीट करके कहा कि हमारे या इंडिया गठबंधन के किसी भी घटक दल के लिए, यह समय अपनी राजनीतिक संभावना तलाशने का नहीं, बल्कि त्याग और बलिदान देने का है। हरियाणा के हित में सपा बड़े दिल से हर त्याग के लिए तैयार हैं। बीजेपी को हराने में इंडिया गठबंधन के साथ अपने संगठन और समर्थकों की शक्ति को जोड़ देंगे। उन्होंने आगे लिखा है कि पिछले 10 सालों में भाजपा ने हरियाणा के विकास को बीसों साल पीछे ढकेल दिया है। हम मानते हैं कि हमारे या इंडिया एलायंस के किसी भी दल के लिए, ये समय अपनी राजनीतिक संभावना तलाशने का नहीं है बल्कि त्याग और बलिदान का है। जनहित के परमार्थ मार्ग पर स्वार्थ के लिए कोई जगह नहीं होती। कुटिल और स्वार्थी लोग कभी भी इतिहास में अपना नाम दर्ज नहीं करा सकते हैं। ऐसे लोगों की राजनीति को हराने के लिए ये क्षण, अपने से ऊपर उठने का ऐतिहासिक अवसर है। हम हरियाणा के हित के लिए बड़े दिल से, हर त्याग-परित्याग के लिए तैयार हैं। इंडिया एलायंस की पुकार, जनहित में हो बदलाव!

अखिलेश ने हरियाणा चुनाव से अपने कदम पीछे खींचकर कांग्रेस को चुनाव लड़ने के लिए पूरा मैदान दे दिया है। मध्य प्रदेश के 2023 चुनाव में कांग्रेस के साथ सीट शेयरिंग पर बात न बनने के बाद सपा ने 71 सीटों पर उम्मीदवार उतार दिए थे। अब हरियाणा में समझौते से पहले ही सपा विधानसभा चुनाव लड़ने से सिर्फ पीछे ही नहीं हटी बल्कि कांग्रेस को पूरा समर्थन करने का भी भरोसा दिया है। सपा प्रमुख ने हरियाणा में जिस तरह त्याग दिखाया है, क्या कांग्रेस यूपी में बड़ा दिल दिखा पाएगी और महाराष्ट्र में सम्मानजनक सीट देगी? उत्तर प्रदेश की 10 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होने हैं। यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि कांग्रेस उपचुनाव में 10 में 5 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इसे लेकर जब अखिलेश यादव से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि 50-50 तो बिस्किट आता है। सपा की कोशिश अपनी पांच विधानसभा सीटों पर जीत को बरकरार रखने के साथ एनडीए पाले वाली पांच विधानसभा सीटों पर कब्जा जमाने की है। ऐसे में अखिलेश कांग्रेस को उपचुनाव में एक से दो सीटें ही देने के मूड में है। 2024 लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में छह सीटें जीतने के बाद से कांग्रेस के हौसले बुलंद है। इसके चलते ही कांग्रेस को यूपी की सियासत में दोबारा से खड़े होने की उम्मीद दिखने लगी है। इसके लिए वह 2027 के विधानसभा चुनाव में अपने लिए बड़ा अवसर तलाश रही है। राहुल गांधी लगातार यूपी के दौरे कर रहे है। ऐसे में कांग्रेस उपचुनाव में पांच सीटों पर दावा कर रही है। 2024 में 17 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस ने 2027 विधानसभा चुनाव में 100 से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ने का मंसूबा बना रखा है। हालांकि, हरियाणा में जिस तरह से कांग्रेस मजबूत है, उसी तरह यूपी में सपा की स्थिति है। हरियाणा में सपा कमजोर है तो यूपी में कांग्रेस की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। अखिलेश यादव ने हरियाणा में कांग्रेस के साथ सीट की बार्गेनिंग करने के बजाय बीजेपी को हराने के लिए हर त्याग-परित्याग देने की बात कही है, क्या उसी तरह से यूपी उपचुनाव में भी कांग्रेस बड़ा दिल दिखा पाएगी। कांग्रेस पांच सीटों पर उपचुनाव लड़ने की जिद छोड़ेगी, क्योंकि उपचुनाव को 2027 के विधानसभा का लिटमस टेस्ट माना जा रहा है।

लोकसभा चुनाव में बदली रणनीति के तहत उतरी सपा ने बीजेपी को करारी मात दी थी। अखिलेश यादव अब विधानसभा उपचुनाव में सपा के मोमेंटम को बरकरार रखने की कोशिश में है। इसके जरिए वो विधानसभा चुनाव 2027 की रूपरेखा तय करने की कोशिश करते दिख रहे हैं, लेकिन कांग्रेस ने पांच सीटों की डिमांड करके चिंता बढ़ा दी है। ऐसे में अखिलेश यादव ने हरियाणा चुनाव में इंडिया गठबंधन को समर्थन करके कांग्रेस पर यूपी उपचुनाव और महराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए दबाव बना दिया है।महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में सपा करीब 10 सीटों पर अपना दावा ठोक रही है। अखिलेश यादव ने अपने वरिष्ठ नेता माता प्रसाद पांडेय, विधायक लकी यादव, तूफानी सरोज और इंद्रजीत सरोज को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए प्रभारी नियुक्त कर रखा। महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष अबु आसिम आजमी एक बड़ा चेहरा है। अबु आजमी पिछले दिनों सपा के सभी सांसदों का मुंबई में स्वागत समारोह कर मोमेंटम बनाने का काम कर चुके हैं। पार्टी के अभी वहां दो विधायक हैं। सपा ने महाराष्ट्र में मुस्लिम बहुल और उत्तर भारतीय मतदाताओं वाली सीटों पर चुनाव लड़ने का प्लान बनाया है, जिसके लिए पार्टी ने उम्मीदवारों के नाम भी लगभग तय कर लिए हैं।

मुंबई और उससे सटे ठाणे जिले की सीटों पर पार्टी की नजर है। मुंबई की मानकोर शिवाजी नगर, भायखला, वर्सोवा और इससे सटे ठाणे की भिवंडी ईस्ट और भिवंडी वेस्ट के अलावा महाराष्ट्र की धूलिया और औरंगाबाद जैसी मुस्लिम बहुल सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारने की तैयारी की है। मानकर शिवाजी नगर सीट से सपा के अबु आजमी और भिवंडी ईस्ट से रईस शेख पार्टी के मौजूदा विधायक हैं। इस बार सपा महाराष्ट्र में अपने विधायकों की संख्या में इजाफा करना चाहती है।हरियाणा में त्याग के बदले सपा यूपी उपचुनाव और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में सम्मानजनक सीटें चाहती है।

हरियाणा में चुनाव प्रदर्शन और जमीन के आधार पर जिस तरह राज्य में सपा को सीटें नहीं मिली हैं, उसी तरह यूपी उपचुनाव में कांग्रेस के लिए दबाव बना दिया है। कांग्रेस यहां पांच सीटों पर दावा कर रही है, लेकिन एक से अधिक सीट उसको मिलनी मुश्किल होगी। हरियाणा की तरह महाराष्ट्र में भी कांग्रेस से बात नहीं बनी, तो इसका असर उत्तर प्रदेश की सियासत में दोनों दलों की दोस्ती पर भी पड़ सकता है।

शख्सियत

बस कर्म करिए फल की इच्छा मत रखिए,ये कर्म भूमि है यहां कर्म ही फलीभूत होता है, टोना टोटका नहीं। युवाओं के असफल होने का बड़ा कारण कर्म को सही तरीके से ना करना ही है। हमें फल मिलना तय है लेकिन कर्म के आधार पर यदि हम अच्छा कर्म करते हैं तो फल अच्छा ही मिलेगा ये शास्वत सत्य है

हिमांशु गुप्ता
(आइएएस अधिकारी)

नमस्कार दोस्तों हमारे आज शख्सियत कॉलम के स्टार हैं भारतीय प्रशासनिक सेवा के ऊर्जावान अधिकारी हिमांशु गुप्ता। इनका जन्म 16 अक्टूबर सन 1987 को पंजाब के लुधियाना शहर में हुआ। इन्होंने बीई (ऑनर्स) ईएलई और इलेक्ट्रॉनिक्स में पढाई कर सिविल सर्विसेज में अपनी किस्मत आजमायी और देखिए जो सपना था वो सच कर दिखाया। आज फिलहाल ये प्रबंध निदेशक ग्रामीण गैर-कृषि क्षेत्र विकास एजेंसी जयपुर के पद को सुशोभित कर रहे हैं। यहां से शुरूआत किए एलबीएसएनए मसूरी में प्रशिक्षण के तहत रहे। श्रीगंगानगर में जिला प्रशिक्षण के तहत रहे, श्रीगंगानगर में जिला प्रशिक्षण के तहत। एलबीएसएनए मसूरी में प्रशिक्षण के तहत। उपखण्ड अधिकारी, धौलपुर। सचिव, यूआईटी, अलवर। आयुक्त नगर निगम, अजमेर एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, अजमेर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, अजमेर। आयुक्त नगर निगम, अजमेर एवं अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी, अजमेर स्मार्ट सिटी लिमिटेड, अजमेर।कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट,बाड़मेर। अतिरिक्त निदेशक, एचसीएम रीपा, जयपुर। निदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग, बीकानेर। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, जालोर। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, भरतपुर। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, जोधपुर। आयुक्त उद्योग, वाणिज्य और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) और आयुक्त निवेश और एनआरआईएस बीआईपीए राजस्थान, जयपुर।

साथ ही साथ इन पदों पर अतिरिक्त रूप से सरकार द्वारा लगाया गया जहां भी इन्होंने सफल नेतृत्व किया। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, जोधपुर ग्रामीण। संभागीय आयुक्त, जोधपुर व निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा विभाग एवं पंचायती राज प्रारंभिक शिक्षा विभाग, बीकानेर रहे। बहुत ही ऊर्जावान अधिकारी के रूप में लोग इन्हे जानते हैं। भरतपुरकलक्टर शिप के दौरान व अजमेर सीईओ स्मार्ट सिटी के दौरान इन्होंने अनेकों नवाचार किए। जौधपुर जिला कलक्टर पद पर लम्बे समय पर टिके रहना इनके अच्छे कार्य व आचरण को बताता है। दैनिक बढता राजस्थान की टीम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

जय हिन्द

आज का इतिहास

8 सितंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- गाजी मलिक 1320 में दिल्ली का सुल्तान बना।
- स्टीफन उरोस चतुर्थ ने 1331 में खुद को सर्बिया का राजा घोषित किया।
- टुमू किले का युद्ध- मंगोलिया ने 1449 में चीन के सम्राट को बंधक बनाया।
- इटली के फ्लोरेंस में माइकल एंजेलो ने 1504 में अपनी प्रसिद्ध मूर्ति डेविड का लोकार्पणकिया।
- ओरसा का युद्ध, लिथुआनिया और पोल सेना ने 1514 में रूसी सेना को ओरसा (वर्तमान समय में बेलारुस) में पराजित किया।
- फ्रांस ने 1549 में इंग्लैंड के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।
- इंग्लेंड में 1553 को लिचफिल्ड शहर का निर्माण हुआ।
- चीन और रूस ने 1689 में नेरट्सजिंस्क(निरचुल) की संधि पर हस्ताक्षर किया।
- जेनेवा में 1864 को रेड क्रॉस की स्थापना हुई।
- ए. टी. मार्शल ने 1899 में रेफ्रीजरेटर का पेटेंट करवाया।
- बोस्टन में 1900 को पहले डेविस कप श्रृंखला की शरूआत हुई।
- अमेरिका ने 1900 में ग्रेट ब्रिटेन को हराया।
- टेक्सास के गैलवेस्टोन में 1900 को चक्रवाती और ज्वारीय तूफान से 6000 लोगों की मौत
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1942 को बम्बई (अब मुंबई) सत्र में 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' पारित किया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इटली ने 1943 में मित्र सेना के साथ एक बिनाशर्त युद्धविराम संधि पर दस्तखत किया था जिसकी घोषणा जनरल आइजनहावर ने की।
- अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रुमैन ने 1945 में संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर किया।
- जेनेवा में 1952 को कॉपीराइट के लिये पहले विश्व सम्मेलन में भारत समेत 35 देशों ने किये हस्ताक्षर।
- चीन ने 1962 को भारत की पूर्वी सीमा में घुसपैठ किया।
- लोगों को पढ़ाई के प्रति जागरूक करने के लिए यूनेस्को ने 1966 में साक्षरता दिवस मनाने की शुरुआत की।
- आजादी के बाद पहली बार केंद्र में सरकार चला रही पार्टी को 1967 में लोकसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा।
- दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के समूह की स्थापना के लिए 1967 में इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड की बैठक आयोजित की गई।
- चिली के राष्ट्रपति अगस्टो पिनोशे 1986 में एक जानलेवा हमले में बाल-बाल बच गए थे। इस हमले में उनके पांच अंगरक्षकों की मौत हो गई थी और 11 अन्य ज़ख्मी हो गए थे जबकि जनरल पिनोशे को मामूली चोट पहुंची थी।
- जाने माने व्यवसायी विजयपत सिंघानिया 1988 में अपने माइक्रो लाइट सिंगल इंजन एयरक्राफ्ट से लंदन से अहमदाबाद पहुँचे।

विशेष आलेख

महर्षि वेदव्यास जी की छत्रछाया में विशाल काव्य महाभारत का लेखन श्री गणेश जी ने ही किया था

संजय खाबिया

यह बात तो सर्व विदित है कि भगवान श्री गणेश जी ने ही सुप्रसिद्ध महाभारत काव्य की रचना स्वयं अपने हाथों से की थी। यही वजह है कि विद्या के साथ साथ उन्हें लेखन कार्य का भी अधिपति माना गया है। ज्योतिषाचार्य पंडित अतुल शास्त्री जी का तो कहना है श्री गणेश जी को पौराणिक लेखक कहें तो गलत नहीं होगा। ज्योतिषाचार्य पंडित अतुल शास्त्री जी कहते हैं, दरअसल श्री गणेश जी ब्रह्माण्ड के प्रथम लेखक हैं क्योंकि महर्षि वेदव्यास जी की छत्रछाया में विशाल काव्य महाभारत का लेखन श्री गणेश जी ने ही किया था। उनका चित्त सदैव स्थिर और शांत रहता है. कैसी भी परिस्थिति हो वे अपना धैर्य नहीं खोते हैं और शांत भाव से अपने कार्य को करते रहते हैं। भगवान श्री गणेश जी की इसी खूबी के चलते महर्षि वेद व्यास उनसे अति प्रभावित थे। जब महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना करने का मन बनाया तो उन्हें महाभारत जैसे महाकाव्य के लिए एक ऐसे लेखक की तलाश थी जो उनके कथन और विचारों को बिना बाधित किए लेखन कार्य करता रहे क्योंकि बाधा आने पर विचारों की सतत प्रक्रिया प्रभावित हो सकती थी। महर्षि वेद व्यास ने सभी देवी देवताओं की क्षमताओं का अध्ययन किया लेकिन वे संतुष्ट नहीं हुए। तब उन्हें भगवान गणेश जी का ध्यान आया, महर्षि वेद व्यास ने गणेशजी से संपर्क किया और महाकाव्य लिखने का आग्रह किया। भगवान श्री गणेश जी ने वेद व्यास जी के आग्रह को स्वीकार कर लिया लेकिन एक शर्त उनके सम्मुख रख दी। शर्त के अनुसार काव्य का आरंभ करने के बाद एक भी क्षण कथा कहते हुए रूकना नहीं है। यदि ऐसा हुआ तो वे वहीं लेखन कार्य को रोक देंगे। श्री गणेश जी की बात को महर्षि वेद व्यास ने स्वीकार कर लिया, लेकिन उन्होनें भी एक शर्त श्री गणेश जी के सामने रख दी कि बिना अर्थ समझे वे कुछ नहीं लिखेंगे। इसका अर्थ यह था कि गणेश जी को प्रत्येक वचन को समझने के बाद ही लिखना होगा। श्री गणेश जी ने महर्षि वेद व्यास की इस शर्त को स्वीकार कर लिया, इसके बाद महाभारत महाकाव्य की रचना आरंभ हुई। कहा जाता है कि महाभारत के लेखन कार्य पूर्ण होने में तीन वर्ष का समय लगा था। इन तीन वर्षों में श्री गणेश जी ने एक बार भी महर्षि वेद व्यास जी को एक पल के लिए भी नहीं रोका और महर्षि वेद व्यास जी ने बिना किसी बाधा के तीन वर्ष में महाभारत काव्य पूर्ण किया।ज्ञातव्य है कि गणेश चतुर्थी पर भक्त गण भगवान गणेश को अपने घर ले आते है तथा पूरी आस्था से मूर्ति की स्थापना करते है। हिन्दू धर्म में ऐसी मान्यता है कि जब गणेश जी घर पर आते है तो ढेर सारी सुख, समृद्धि, बुद्धि और खुशी ले आते है हालाँकि जब वो हमारे घर से प्रस्थान करते है तो हमारी सारी बाधाएँ तथा परेशानियों को साथ ले जाते है। भगवान गणेश को बच्चे बहुत प्रिय है और उनके द्वारा उन्हें मित्र गणेश बुलाते है। लोगों का समूह गणेश जी की पूजा करने के पंडाल तैयार करता है। वो लोग पंडाल को फूलों और प्रकाश के द्वारा आकर्षक रुप से सजाते है। आसपास के बहुत सारे लोग प्रतिदिन उस पंडाल में प्रार्थना और अपनी इच्छाओं के लिये आते है। भक्त गण भगवान गणेश को बहुत सारी चीजें चढ़ाते है जिसमें मोदक उनका सबसे पसंदीदा है। ये उत्सव 10 दिनों के लिये अगस्त और सितंबर में मनाया जाता है गणेश चतुर्थी पूजा दो प्रक्रियाओं को शामिल करती है; पहला मूर्ति स्थापना और दूसरा मूर्ति विसर्जन ।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताए और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष

धार्मिक कार्यों या धार्मिक यात्रा के पीछे धन खर्च होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखनें। कटु वचन या खराब व्यवहार के कारण झगड़े- विवाद होंगे। क्रोध और कामवृत्ति पर संयम आवश्यक होगा। आर्थिक लाभ की संभावना है।

वृष

आज अत्यधिक धन खर्च की संभावना है, इसलिए संभलकर खर्च करने की सलाह दी जाती है। किसी के साथ आर्थिक व्यवहार करते समय काफी सावधानी बरतें। सामान्य बातचीत वाद-विवाद में परिवर्तित न हो जाये।

मिथुन

सामाजिक समारोह, पर्यटन आदि के लिए जा सकते हैं। आप प्रफुल्लित रहेंगे। आय के स्त्रोत बढ़ेंगे। अविवाहितों के लिए वैवाहिक योग है। सांसारिक जीवन में आनंद का अनुभव करेंगे। नौकरी करने वालों के लिए लाभ का दिन है।

कर्क

परिवार में सुख- शांति का माहौल रहेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आज तन-मन की अस्वस्थता और बेचैनी रहेगी, इस कारण आपको वाणी और व्यवहार में खूब सावधानी बरतने की जरूरत है। आंखों में दर्द होने की भी संभावना है। पिता के साथ मतभेद उत्पन्न होगा।

सिंह

किसी के साथ संघर्ष न हो, इसका ध्यान रखें। आध्यात्मिकता और ईश्वर भक्ति से मानसिक शांति मिलेगी। आज आपका मन चिंता के भार से मुक्त होगा। दोस्तों के साथ मुलाकात होगी। स्त्री मित्रों से विशेष लाभ होगा।

कन्या

शरीर में थकान, आलस और चिंता का अनुभव होगा। संतान के साथ मतभेद या मनमुटाव होगा। ऑफिस में उच्च अधिकारियों के साथ आपका वाद-विवाद होगा। राजनीतिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। नौकर और सहकर्मी आपके सहायक बनेंगे।

तुला

समय से भोजन करने में विलंब तथा अत्यधिक खर्च आपके मन को अस्वस्थ बनाएंगे। नौकरी-धंधा और व्यवसाय के क्षेत्र में आज आपको लाभ ही लाभ है। इसके साथ मित्रों, सगे संबंधियों और बुजुर्गों से भी लाभ प्राप्ति का संकेत है।

वृश्चिक

ऑफिस या घर में उत्तरदायित्व का बोझ बढ़ेगा। जीवन को अधिक गंभीरता से लेंगे। नए संबंध स्थापित करने या काम के संबंध में कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें। शुभ अवसर के आयोजन के लिए समय अच्छा नहीं है।

धनु

नियमित आय में वृद्धि होने के साथ अन्य तरीके से आर्थिक लाभ होगा। दांपत्यजीवन में आनंद व्याप्त रहेगा। तन-मन से स्वस्थता का अनुभव होगा। किसी रमणीय पर्यटन स्थल की यात्रा से आपके आनंद में बढ़ोतरी होगी।

मकर

मन दुविधा से मुक्त होने के कारण आप हिम्मत से काम कर सकेंगे और उत्तरदायित्वों का अच्छी तरह निर्वाह कर सकेंगे। आर्थिक आयोजन सफलतापूर्वक कर सकेंगे। मौज-शौक की वस्तुएं और मनोरंजन के पीछे खर्च होगा।

कुंभ

पारिवारिक सदस्यों या सगे- संबंधियों के साथ मतभेद हो सकता है। आपकी बातचीत या व्यवहार के कारण गलतफहमी खड़ी हो सकती है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने से चिंता बढ़ेगी। व्यर्थ के कार्यों में शक्ति बरबाद होगी।

मीन

तबीयत खराब होने की संभावना होने के कारण खान-पान का ध्यान रखें। संक्षेप में कहा जाए, तो आज का दिन मध्यम रहेगा। आज का दिन आपके लिए शुभफलदायक होगा। आपकी रचनात्मक और कलात्मक शक्ति निखर उठेगी। शरीर में थकान, आलस और चिंता का अनुभव होगा।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीदपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतीक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

संविधान के मजाक पश्चिम बंगाल से शुरू

भारतीय प्रजातंत्र में इससे बड़ा मजाक क्या होगा कि अब राज्य सरकारें संसद के अधिकारों पर अतिक्रमण कर संविधान में संशोधन अपनी विधानसभा के माध्यम से कराये? किंतु अब हमारे संविधान के साथयह मजाक शुरू हो गया है, जिसकी शुरूआत पश्चिम बंगाल की ममता सरकार ने कर दी है, इस राज्य की सरकार ने भारतीय दण्ड संहिता में संशोधन का अधिकार संसद की उपेक्षा कर अपने हाथों में ले लिया तथा दुष्कर्मियों को फांसी देने वाला संविधान संशोधन (दण्ड संहिता संशोधन) वाला प्रस्ताव अपनी विधानसभा से पारित करवा लिया और अब इसे राष्ट्रऊपति की मंजूरी के लिए भेजने का फैसला लेकर पुनः एक बार संसद के अधिकार पर अतिक्रमण की जुर्रत करने की तैयारी की जा रही है, यह भी कहा जा रहा है कि यह कानूनी संशोधन देश के सभी राज्यों पर लागू होगा, आखिर पश्चिम बंगाल सरकार यह सब हमारे संविधान की कौन सी धारा के तहत् करने जा रही है? यह माना कि कलकत्ता में एक महिला चिकित्सक के साथ घटी घटना राष्ट्रीय शर्म का विषय है और उस पर राष्ट्रव्यापी आक्रोश व्यक्त करना भी सही है, लेकिन इसका मतलब यह तो नही कि पश्चिम बंगाल की सरकार अपनी विधानसभा में संवैधानिक दण्ड प्रक्रिया संहिता में संशोधन का प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रपति की मंजूरी को भेज दे? संवैधानिक प्रक्रिया के तहत् उसे अपनी विधानसभा से प्रस्ताव पारित कर संसद तथा केन्द्र सरकार को पारित करवाने के लिए भेजना चाहिए था और उसे संसद से पारित होने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए थी, उसके बाद संसद ही दण्ड प्रक्रिया कानून में संशोधन कराने की वैधानिक अधिकारी थी, किंतु यदि हमारी राज्य सरकारें इस तरह संसद व केन्द्र के अधिकार अपने हाथ में लेकर ऐसे प्रस्ताव पारित करेगी तो फिर हमारे संविधान का क्या महत्व रह जाएगा? और फिर हमारी प्रजातांत्रिक व्यवस्थाओं का क्या हश्र होगा? यह एक गंभीर विचार विमर्श का विषय है, जिस पर न सिर्फ केन्द्र व राज्य सरकारों बल्कि हमारे संविधान के जानकार विद्वानों को भी गंभीर विचार करना चाहिए, हमारे संविधान व कानून को राजनीतिक हथियार बनाना और उनके माध्यम से राजनीतिक लड़ाई लडऩा कहां तक उचित है? क्या अब हमारे माननीय राजनेता और उनके राजनीतिक दल अपनी संवैधानिक मर्यादा भी भूल गए? जो उन्होंने संसद, विधानसभा और संविधान व कानून को राजनीतिक संघर्ष का हथियार बना लिया? हमारे राजनेताओं व उनके दलों की इस 'करनी को कौन सी श्रेणी में रखा जाए? क्या हमारे व्यक्तित्व, राजनीति और उसके साथ हमारी सोच का स्तर इतना गिर गया? यह एक गंभीर चिंतनीय विषय है, जिस पर सभी को मिल-बैठ कर गंभीर विचार-विमर्श व चिंतन करना चाहिए।

आर्थिक चक्र कमजोर

अर्थव्यवस्था इस हद तक कैपेक्स पर निर्भर क्यों है? संकट के समय में आर्थिक हालात को संभालने के लिए यह रास्ता उचित माना जाता है। लेकिन सामान्य समय में भी यही तरीका बचा रहे, तो यही माना जाएगा सामान्य आर्थिक चक्र कमजोर हो चुका है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में भारत के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में बड़ी गिरावट आई। उसके पहले वाली तिमाही में ये दर 7.8 प्रतिशत थी, जो अप्रैल-जून में 6.7 फीसदी रह गई। इसका कारण बताते हुए भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन ने कहा- 'यह गिरावट हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप है। चुनाव और सरकारी पूंजी खर्च (कैपेक्स) में कमी आने के कारण जीडीपी वृद्धि दर में गिरावट अपेक्षित थी। लेकिन इस पर जोर देने की जरूरत है कि ऐसी अपेक्षा रहना ही आज भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी कमजोरी है। आखिर अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर इस हद तक कैपेक्स पर निर्भर क्यों है? और इस तरह सरकार कब तक आर्थिक वृद्धि की ऊंची दर बनाए रख सकेगी? सरकार जो रकम खर्च कर रही है, वह या तो किसी अन्य मद में कटौती करके या फिर ऋण लेकर जुटाया जाता है। संकट के समय में आर्थिक हालात को संभालने के लिए यह रास्ता उचित माना जाता है। लेकिन सामान्य समय में भी यही तरीका अर्थव्यवस्था की रीढ़ बना रहे, तो उसका सीधा अर्थ यह समझा जाएगा कि मांग- उपभोग- निजी निवेश- उत्पादन- बिक्री और मुनाफे का चक्र कमजोर हो चुका है। किसी भी सोच के नजरिए से यह स्वस्थ स्थिति नहीं है। वैसे खुद नागेश्वरन ने ऐसे कई आंकड़ों का जिक्र किया, जिनसे भारतीय अर्थव्यवस्था की कमजोरी जाहिर होती है। मसलन, उन्होंने बताया कि 2023-24 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश गिर कर 26.6 बिलियन डॉलर रह गया, जबकि 2022-23 में यह 42 बिलियन डॉलर से ज्यादा था। उधर कृषि वृद्धि दर गिर कर दो प्रतिशत रह गई, जबकि 2023-24 की पहली तिमाही में यह 3.7 फीसदी थी। इन आंकड़ों के बावजूद नागेश्वर ने यह दावा दोहराते रहे कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत हाल में है और आने वाला समय बेहतर रहेगा। यह मुश्किलों या कमजोरियों पर परदा डालने की अधिकतम कोशिश के वर्तमान सरकार के नजरिए के अनुरूप ही है। मगर इससे समस्याएं हल नहीं हो जातीं। आज इस बात पर गंभीर बहस-मुबाहिशे की जरूरत है।

बाल विवाह की बुराई से मुक्त नहीं हुआ है गांव

आरती कुमारी

हमारे देश में सामाजिक स्तर पर कुछ बुराईयां और कुरुतियां ऐसी हैं जिसने गहराई से समाज में अपनी जड़ें जमा रखी हैं. यह न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य में भी विकास की प्रक्रियाओं को भी प्रभावित करता है. इनमें सबसे प्रमुख बाल विवाह है. आज भी देश के कई ऐसे राज्य हैं जहां ग्रामीण स्तर पर बाल विवाह जैसी बुराई देखने और पढ़ने को मिल जाती है. इसका सबसे नकारात्मक प्रभाव किशोरियों के जीवन पर पड़ता है. इससे न केवल उनका शैक्षणिक बल्कि शारीरिक और मानसिक विकास भी रुक जाता है. सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े कुछ समुदायों में अभी भी बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराई देखने को मिल जाती है. इनमें राजस्थान के अजमेर जिला स्थित नाचनबाड़ी गांव में आबाद कालबेलिया समुदाय भी है. जहां कम उम्र में ही लड़कियों की शादी की परंपरा अभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है. इस संबंध में समुदाय की 22 वर्षीय कंचन (नाम परिवर्तित) कहती हैं कि "14 साल की उम्र में मेरी शादी हो गई थी. 16 वर्ष की उम्र में मां बन गई. घर और ससुराल दोनों ही आर्थिक रूप से कमज़ोर था. इसलिए कभी पौष्टिक आहार उपलब्ध नहीं हो पाया. इस उम्र तक तीन बच्चे हो चुके हैं." वह कहती है कि हर समय शरीर में कमज़ोरी का एहसास होता है. लेकिन इसी हालत में घर का सारा काम करना होता है और बच्चों की देखभाल भी करनी होती है. कंचन कहती है कि उसके पति स्थानीय मार्बल फैक्ट्री में पत्थर कटिंग का काम करते हैं. उन्हें मिलने वाले पैसों से घर में राशन का पूरा इंतेज़ाम नहीं हो पाता है. हालांकि आंगनबाड़ी केंद्र से मिलने वाले आहार और आशा वर्कर द्वारा सेहत की नियमित जांच से गर्भावस्था के दौरान उसे काफी लाभ हुआ था. वहीं 28 वर्षीय लक्ष्मी बताती हैं कि उसकी भी 13 वर्ष की उम्र में शादी कर दी गई थी. उसके पांच बच्चे हैं और सभी कुपोषण के शिकार हैं. वह कहती है कि कम उम्र में शादी, पोषणयुक्त आहार की कमी और घर के सारे काम करने की वजह से वह अक्सर बीमार रहती है. उसे कभी भी स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला. इसी समुदाय की एक 70 वर्षीय बुजुर्ग लक्ष्मी का कहना है कि कालबेलिया समाज में लड़कियों की कम उम्र में शादी हो जाना आम बात है. मेरी शादी 13 साल की उम्र में हो गई थी. मैं न केवल शादी शब्द से अनजान थी बल्कि इसका अर्थ भी नहीं जानती थी. जिस उम्र में लड़कियां ज़िम्मेदारी से मुक्त केवल पढ़ाई और खेलती हैं उस उम्र में मुझे बहू के नाम पर घर के सारे कामों की ज़िम्मेदारियां सौंप दी गई थीं. 16 वर्ष की उम्र में मैं गर्भवती भी हो गई थी. इस दौरान भी मेरे उपर पूरे घर की जिम्मेदारी होती थी. घर का सब काम मुझे करना होता था. पौष्टिक खाना उपलब्ध नहीं होता था. जिस वजह से मेरा गर्भपात हो गया था. वह कहती हैं कि कालबेलिया समुदाय में कोई भी परिवार आर्थिक रूप से सशक्त नहीं है. ऐसे में गर्भवती महिला के लिए पौष्टिक खाना उपलब्ध होना संभव नहीं है. अधिकतर परिवार में पुरुष दैनिक मज़दूरी करते हैं जिससे बहुत कम आमदनी होती है. कई बार काम नहीं मिलने के कारण घर में चूल्हा भी नहीं जल पाता है. अक्सर इस समुदाय की महिलाएं त्योहारों के दौरान फेरी लगाने (भिक्षा मांगने) शहर चले जाती हैं. जिससे कुछ दिनों के लिए उन्हें खाने पीने का सामान मिल जाता है. नाचनबाड़ी अजमेर शहर से पांच किमी दूर घूघरा पंचायत में स्थित है. लगभग 500 की आबादी वाले इस गांव में कालबेलिया समुदाय की बहुलता है. आर्थिक और सामाजिक रूप से यह समुदाय अभी भी विकास नहीं कर पाया है. सरकार द्वारा इस समुदाय को अनुसूचित जनजाति समुदाय के रूप में मान्यता मिली हुई है. इस संबंध में गांव में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र की सेविका इंदिरा बाई कहती हैं कि कालबेलिया समुदाय में बाल विवाह होने के बहुत सारे कारण हैं. एक ओर जहां समुदाय में अभी भी जागरूकता की कमी देखी जा सकती है वहीं दूसरी ओर गांव में हाई स्कूल की कमी भी एक कारण है. नाचनबाड़ी में केवल एक प्राथमिक विद्यालय है, जहां पांचवीं तक पढ़ाई होती है. इसके आगे दो किमी दूर घूघरा जाना पड़ता है. जहां अधिकतर अभिभावक लड़कियों को नहीं भेजते हैं. इसलिए गांव में पांचवीं से आगे लड़कियों की पढ़ाई छुड़वा दी जाती है. यदि गांव में ही दसवीं तक स्कूल बन जाए तो न केवल बालिका शिक्षा का ग्राफ बढ़ेगा बल्कि शिक्षा की इस जागरूकता के कारण बाल विवाह भी रुक सकता है. इंदिरा बाई कहती हैं कि वह पिछले 12 वर्षों से इस आंगनबाड़ी केंद्र से जुड़ी हुई हैं. ऐसे में गांव के हर घर से वह परिवार की तरह जुड़ी हुई हैं. वह अपने स्तर पर बाल विवाह के खिलाफ लोगों को जागरूक करने का लगातार प्रयास भी करती रहती हैं. यूनिसेफ इंडिया की वेबसाइट के अनुसार अनुमानित तौर पर भारत में प्रत्येक वर्ष 18 साल से कम उम्र में करीब 15 लाख लड़कियों की शादी होती है जिसके कारण भारत में दुनिया की सबसे अधिक बाल वधुओं की संख्या है, जो विश्व की कुल संख्या का तीसरा भाग है. 15 से 19 साल की उम्र की लगभग 16 प्रतिशत लड़कियां शादीशुदा हैं. हालांकि एक अच्छी बात यह है कि साल 2005-06 से 2015-16 के दौरान 18 साल से पहले शादी करने वाली लड़कियों की संख्या 47 प्रतिशत से घटकर 27 प्रतिशत रह गई है, पर यह अभी भी अत्याधिक है. यह न केवल चिंता का विषय है बल्कि लैंगिक असमानता और महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव का ज्वलंत उदाहरण है. वेबसाइट के अनुसार बाल विवाह बच्चों के अधिकारों का अतिक्रमण करता है जिससे उनपर हिंसा तथा यौन शोषण का खतरा बना रहता है. हालांकि बाल विवाह लड़कियों और लड़कों दोनों पर असर डालता है, लेकिन इसका प्रभाव सबसे अधिक लड़कियों के जीवन पर पड़ता है. इससे उनके विकास के अवसर छिन जाते हैं. ऐसे में ज़रूरी है कि इस प्रकार की एक प्रभावी नीति बनाई जाए जिससे लड़कियों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध हो सके और बाल विवाह जैसे दंश से उन्हें मुक्ति मिल सके. लेकिन किसी भी नीति को बनाने से पहले उस समुदाय के सामाजिक ढांचों और कारणों को समझना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए.

हरियाणा में त्याग के बदले सपा कांग्रेस से क्या -क्या चाहती है ?

अशोक भाटिया , मुंबई

हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव का बड़ा बयान सामने आया है। दरअसल अभी तक सुगबुगाहट थी कि हरियाणा में इंडी गठबंधन के तहत सपा 17 सीटों की मांग कर रही है। माना जा रहा था कि इस बंटवारे का सीधा असर इसके बाद होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा की 10 सीटों के उपचुनाव के सीट बंटवारे पर भी पड़ेगा। उपचुनाव के लिए कांग्रेस का प्रदेश नेतृत्व 5 सीटों पर दावेदारी कर रहा है। लेकिन शुक्रवार को अखिलेश यादव ने एक्स पर अपनी पोस्ट में साफ कर दिया कि हम हरियाणा के हित के लिए किसी भी तरह के त्याग के लिए तैयार हैं। बात सीट की नहीं जीत की है। यानी जो जहां से मजबूत होगा, उसे इंडी गठबंधन का दूसरा दल समर्थन देगा। दरअसल लोकसभा चुनाव में 37 सीटें जीतने के बाद से अखिलेश यादव राष्ट्रीय फलक पर सपा को पहचान दिलाने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इसके लिए वो पहले हरियाणा विधानसभा चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे थे। हरियाणा की सपा प्रदेश इकाई ने 17 सीटों पर चुनाव लड़ने का प्लान बनाया था। सपा के प्रदेश अध्यक्ष सुरेन्द्र भाटी ने अखिलेश यादव को 17 सीटों का ब्यौरा भी भेज दिया था। जुलाना, सोहना, बावल, बेरी, चरखी-दादरी और बल्लभगढ़ जैसी सीट पर सपा की नजर थी। सपा प्रमुख अखिलेश यादव की कोशिश हरियाणा में कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ने की थी । इसके लिए कांग्रेस शीर्ष नेतृत्व के साथ सीटों को लेकर उनकी बातचीत भी चल रही थी। हालांकि, कांग्रेस एक सीट से ज्यादा सपा को देने के पक्ष में नहीं थी। ऐसे में अखिलेश ने हरियाणा चुनाव लड़ने से पीछे हट गए हैं। ट्वीट करके कहा कि हमारे या इंडिया गठबंधन के किसी भी घटक दल के लिए, यह समय अपनी राजनीतिक संभावना तलाशने का नहीं, बल्कि त्याग और बलिदान देने का है। हरियाणा के हित में सपा बड़े दिल से हर त्याग के लिए तैयार हैं। बीजेपी को हराने में इंडिया गठबंधन के साथ अपने संगठन और समर्थकों की शक्ति को जोड़ देंगे। उन्होंने आगे लिखा है कि पिछले 10 सालों में भाजपा ने हरियाणा के विकास को बीसों साल पीछे ढकेल दिया है। हम मानते हैं कि हमारे या इंडिया एलायंस के किसी भी दल के लिए, ये समय अपनी राजनीतिक संभावना तलाशने का नहीं है बल्कि त्याग और बलिदान का है। जनहित के परमार्थ मार्ग पर स्वार्थ के लिए कोई जगह नहीं होती। कुटिल और स्वार्थी लोग कभी भी इतिहास में अपना नाम दर्ज नहीं करा सकते हैं। ऐसे लोगों की राजनीति को हराने के लिए ये क्षण, अपने से ऊपर उठने का ऐतिहासिक अवसर है। हम हरियाणा के हित के लिए बड़े दिल से, हर त्याग-परित्याग के लिए तैयार हैं। इंडिया एलायंस की पुकार, जनहित में हो बदलाव! अखिलेश ने हरियाणा चुनाव से अपने कदम पीछे खींचकर कांग्रेस को चुनाव लड़ने के लिए पूरा मैदान दे दिया है। मध्य प्रदेश के 2023 चुनाव में कांग्रेस के साथ सीट शेयरिंग पर बात न बनने के बाद सपा ने 71 सीटों पर उम्मीदवार उतार दिए थे। अब हरियाणा में समझौते से पहले ही सपा विधानसभा चुनाव लड़ने से सिर्फ पीछे ही नहीं हटी बल्कि कांग्रेस को पूरा समर्थन करने का भी भरोसा दिया है। सपा प्रमुख ने हरियाणा में जिस तरह त्याग दिखाया है, क्या कांग्रेस यूपी में बड़ा दिल दिखा पाएगी और महाराष्ट्र में सम्मानजनक सीट देगी? उत्तर प्रदेश की 10 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होने हैं। यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि कांग्रेस उपचुनाव में 10 में 5 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इसे लेकर जब अखिलेश यादव से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि 50-50 तो बिस्किट आता है। सपा की कोशिश अपनी पांच विधानसभा सीटों पर जीत को बरकरार रखने के साथ एनडीए पाले वाली पांच विधानसभा सीटों पर कब्जा जमाने की है। ऐसे में अखिलेश कांग्रेस को उपचुनाव में एक से दो सीटें ही देने के मूड में है। 2024 लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में छह सीटें जीतने के बाद से कांग्रेस के हौसले बुलंद है। इसके चलते ही कांग्रेस को यूपी की सियासत में दोबारा से खड़े होने की उम्मीद दिखने लगी है। इसके लिए वह 2027 के विधानसभा चुनाव में अपने लिए बड़ा अवसर तलाश रही है। राहुल गांधी लगातार यूपी के दौरे कर रहे है। ऐसे में कांग्रेस उपचुनाव में पांच सीटों पर दावा कर रही है। 2024 में 17 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस ने 2027 विधानसभा चुनाव में 100 से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ने का मंसूबा बना रखा है। हालांकि, हरियाणा में जिस तरह से कांग्रेस मजबूत है, उसी तरह यूपी में सपा की स्थिति है। हरियाणा में सपा कमजोर है तो यूपी में कांग्रेस की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। अखिलेश यादव ने हरियाणा में कांग्रेस के साथ सीट की बार्गेनिंग करने के बजाय बीजेपी को हराने के लिए हर त्याग-परित्याग देने की बात कही है, क्या उसी तरह से यूपी उपचुनाव में भी कांग्रेस बड़ा दिल दिखा पाएगी। कांग्रेस पांच सीटों पर उपचुनाव लड़ने की जिद छोड़ेगी, क्योंकि उपचुनाव को 2027 के विधानसभा का लिटमस टेस्ट माना जा रहा है। लोकसभा चुनाव में बदली रणनीति के तहत उतरी सपा ने बीजेपी को करारी मात दी थी। अखिलेश यादव अब विधानसभा उपचुनाव में सपा के मोमेंटम को बरकरार रखने की कोशिश में है। इसके जरिए वो विधानसभा चुनाव 2027 की रूपरेखा तय करने की कोशिश करते दिख रहे हैं, लेकिन कांग्रेस ने पांच सीटों की डिमांड करके चिंता बढ़ा दी है। ऐसे में अखिलेश यादव ने हरियाणा चुनाव में इंडिया गठबंधन को समर्थन करके कांग्रेस पर यूपी उपचुनाव और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए दबाव बना दिया है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में सपा करीब 10 सीटों पर अपना दावा ठोक रही है। अखिलेश यादव ने अपने वरिष्ठ नेता माता प्रसाद पांडेय, विधायक लकी यादव, तूफानी सरोज और इंद्रजीत सरोज को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए प्रभारी नियुक्त कर रखा। महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष अबु आसिम आजमी एक बड़ा चेहरा है। अबु आजमी पिछले दिनों सपा के सभी सांसदों का मुंबई में स्वागत समारोह कर मोमेंटम बनाने का काम कर चुके हैं। पार्टी के अभी वहां दो विधायक हैं। सपा ने महाराष्ट्र में मुस्लिम बहुल और उत्तर भारतीय मतदाताओं वाली सीटों पर चुनाव लड़ने का प्लान बनाया है, जिसके लिए पार्टी ने उम्मीदवारों के नाम भी लगभग तय कर लिए हैं। मुंबई और उससे सटे ठाणे जिले की सीटों पर पार्टी की नजर है। मुंबई की मानकोर शिवाजी नगर, भायखला, वर्सोवा और इससे सटे ठाणे की भिवंडी ईस्ट और भिवंडी वेस्ट के अलावा महाराष्ट्र की धूलिया और औरंगाबाद जैसी मुस्लिम बहुल सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारने की तैयारी की है। मानकर शिवाजी नगर सीट से सपा के अबु आजमी और भिवंडी ईस्ट से रईस शेख पार्टी के मौजूदा विधायक हैं। इस बार सपा महाराष्ट्र में अपने विधायकों की संख्या में इजाफा करना चाहती है। हरियाणा में त्याग के बदले सपा यूपी उपचुनाव और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में सम्मानजनक सीटें चाहती है। हरियाणा में चुनाव प्रदर्शन और जमीन के आधार पर जिस तरह राज्य में सपा को सीटें नहीं मिली हैं, उसी तरह यूपी उपचुनाव में कांग्रेस के लिए दबाव बना दिया है। कांग्रेस यहां पांच सीटों पर दावा कर रही है, लेकिन एक से अधिक सीट उसको मिलनी मुश्किल होगी। हरियाणा की तरह महाराष्ट्र में भी कांग्रेस से बात नहीं बनी, तो इसका असर उत्तर प्रदेश की सियासत में दोनों दलों की दोस्ती पर भी पड़ सकता है।

मेष राशिः आज आपका दिन बेहतरीन रहेगा। इस समय लोग बेहतरीन विचारों को सुनने–जानने के लिए बहुत उत्सुक होंगे। आज आप लोगों से जो भी बात मनवानी है, आसानी से मनवा सकते हैं। अपने अधिकार जताने की प्रवृत्ति को नियंत्रण में रखें, यह आपके काम पर असर डाल सकती है। इस राशि के लोगों को आज किसी करीबी से कोई खुश-खबरी मिल सकती है। करियर के मामले में आपके ऊपर अपनी क्षमता से अधिक जिम्मेदारियां आ सकती हैं। कोई भी फैसला सोच-समझ कर लें। लवमेट्स के लिए आज का दिन शानदार रहने वाला है।

वृष राशिः आज का दिन आपका खुशनुमा बना रहेगा। आज आपका रचनात्मक कार्यों में नाम होगा और आपको प्रसिद्धि भी मिलेगी 7 आज आप अपने मन के आधार पर फैसले लेंगे। लेकिन वे सिर्फ पैसों के मामले में लाभकारी साबित होंगे7 आज सामने आयी सभी चुनौतियों का डटकर मुकाबला करेंगे तो सफलता भी हांथ लगेगी। लेकिन आपको भविष्य को बेहतर बनाने के लिए इस समय आलस्य को छोडऩा होगा। आज लवमेट के साथ किसी बात पर चर्चा हो सकती हैं।

मिथुन राशिः आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज आपको नौकरी के लिए अच्छी खबर मिल सकती है। आपको किसी कंपनी में इंटरव्यू के लिए बुलाया जा सकता है। इस राशि के उभरते हुए लेखकों के लिए आज का दिन एक बेहतरीन हो सकता है क्योंकि आपके लेख या आपकी पुस्तक किसी बड़े पब्लिशर के द्वारा प्रकाशित हो सकती है। आपका करियर अब पूरी तरह से एक नए रूप में शोभित होगा। आज आप जमीन जायदाद खरीदने की योजना अपने परिवार के साथ बना सकते हैं।

कर्क राशिः आज आपका दिन ठीक-ठाक रहेगा। आज आप शाम का समय परिवारवालों के साथ बिताएंगे। इस राशि के जो लोग बिजनेस करते है आज उन्हें धनलाभ होने की उम्मीद है। लेकिन कोई डील करते समय बोलने से पहले सोच लें, कहीं ऐसा ना हो कि डील होने से पहले केंसिल हो जांए। इस राशि के आर्किटेक वालों को आज किसी मल्टीनेशनल कंपनी से जॉब के लिए कॉल आ सकती हैं।

सिंह राशिः आज जिस काम को पूरा करना चाहेगें वो आसानी से पूरा हो जाएगा। किसी जरूरी काम के पूरा होने पर बधाईयां देने के लिए लोगों का आवागमन लगा रहेगा। आज किसी पुराने मित्र से मिलने उसके घर जा सकते हैं जहां आप निजी समस्याओं को लेकर बातचीत करेंगे । अगर पहले किसी रिश्तेदार से अनबन हुई है तो आज रिश्तों में सुधार लाने के लिए दिन अच्छा है। आज विरोधी आपसे दूरिया बनाकर रहेंगे ।

कन्या राशिः आज का दिन आपके लिए खुशियों से भरा रहेगा। जिस काम को कई दिनों से पूरा करने की सोच रहें है वो आज किसी मदद से पूरा हो जाएगा। आज किसी दूसरे के काम में राय देने से बचें और साथ ही आज दूसरों से बात करते समय सही भाषा का प्रयोग करें। इस राशि के जो लोग सोशल नेटवर्किंग से जुड़े हैं उनके लिए आज का दिन बढिया है।

तुला राशिः आज आपका दिन खुशनुमा बना रहेगा। आज आप किसी काम को करते समय अपने मन को शांत रखें, तो आपका काम आसानी से सफल होगा। अगर आप जल्दी मचाएंगे तो सब गड़बड़ हो जाएगा। इस राशि के जो लोग अविवाहित हैं आज उनके लिए रिश्तें आ सकते हैं। परिवार वालें आपके विवाह की प्लानिंग करेंगे।

वृश्चिक राशिः आज का दिन आपके लिए बहुत बढिया है। जिन चीजों के लिए आप लम्बे समय से कोशिश कर रहे हैं, आज पूरे होने वाली हैं 7 जिन कोशिशों को आप अपनी ओर से व्यर्थ मान चुके थे, वे आज सफल होंगी7 इसीलिए आज दोस्तों और परिजनों के साथ खुशियाँ मनाएं, हो सकता है कि उनके पास भी आपको सुनाने के लिए कोई अच्छी खबर हो 7 आपका करियर आपकी योजना के अनुसार नहीं जा रहा है ।

धनु राशिः आज का दिन आपके लिए उमंग से भरा रहेगा। आज आपके मन में नए विचार आयेंगे, हो सकता है किसी नए बिजनेस की शुरुआत करें, जिससे भविष्य में आपको फायदा होगा। आज परिवार से जुडी कई जिम्मेदारियां निभाएंगे। इस राशि के कॉन्ट्रेक्टर के लिए आज का दिन अच्छा होगा, हो सकता है कि आपको आज कोई नया कॉन्ट्रेक्ट मिलेगा। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर राशिः आज का दिन आपके लिए सामान्य रहेगा। आज का दिन यात्रा में बितेगा। ये यात्रा में ऑफिस के काम से रिलेटेड हो सकती है। यात्रा के दौरान किसी दूर के रिश्तेदार से आपकी मुलाकात हो सकती है। जिससे आपका मन प्रसन्न हो जाएगा। इस राशि के इंजीनियर्स के लिए आज का दिन फायदेमंद रहेगा। किसी कम्पनी से जॉब के ईमेल आ सकती है । स्टूडेंट्स के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ राशिः आज आपका दिन आपके अनुकूल रहेगा। आपका रुझान आध्यात्म की तरफ रहेगा मंदिर जाने या किसी धार्मिक कार्यक्रम के आयोजन की योजना बना सकते हैं। आज आनंद की प्राप्ति के लिए आपको अपने स्वभाव में थोड़ा परिवर्तन लाने की जरूरत है। निश्चित ही घर में खुशियों का आगमन होगा । पारिवारिक सम्बन्धी परेशानियां आज खुद-ब-खुद दूर हो जाएगी। जिससे आप आनन्द महसूस करेंगे।

मीन राशिः आज आपकी किस्मत आपका पूरा साथ देगी। आप अपने कार्य क्षेत्र में काफी अच्छे तरीके से काम करेंगे। आप अपने माता-पिता या बहन भाइयों के साथ भी समय बिता सकते हैं। ऑफिस में कोई नया काम करने का मौका मिल सकता है।

शब्द सामर्थ्य -171

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. समासि, खात्मा 3. रोगी, बीमार 5. गंभीरता, गहराई 6. बलपूर्वक, जबरदस्ती, व्यर्थ 9. लानत, तिरस्कार सूचक एक शब्द 10. लक्ष्मी, कमला 11. औषधालय 13. नाव खेने का लकड़ी का यंत्र 14. सतह, 'लेवल' 15. बिजली, तड़ित 17. चौकसी, सावधानी, बचाव 19. कहने वाला, वाचनकर्ता 20. सुंदर, अच्छा, बढ़िया 21. लगातार, तड़-तड़ करते हुए।

ऊपर से नीचे
1. शरीर का कोई भाग, शरीर 2. खोज-बीन, जांच-पड़ताल 3. वोट देने का हक 4. जो अत्यधिक शक्तिशाली व कठोर प्रकृति का हो, दृढ़, मजबूत 7. बरसात, पावस, बारिश 8. भरना, अटना, अंदर करना 12. घटना, हादसा, दुर्घटना 13. लिबाज़, पहनने का ढंग 16. नीला वस्त्र पहने वाला, नीला वस्त्र 17. ऐक्य, एक होने का भाव 18. दिल्ली स्थिति प्रसिद्ध जेल।

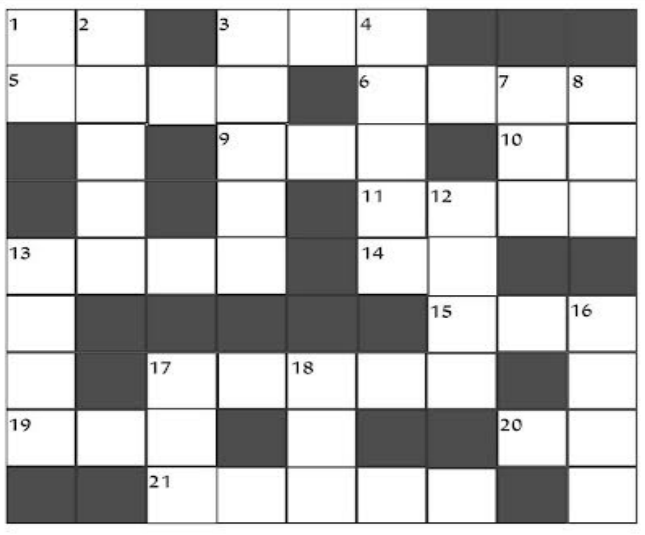

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 170 का हल

वा	स्ता	■	■	सि	स	की	■	■
जि	■	ल	प	ट	■	मा	चि	स
ब	द	ला	■	क	■	■	ल	■
■	■	ट	■	नी	ल	क	म	ल
ता	ली	■	का	■	की	■	■	हू
क	■	स	रो	का	र	■	■	लु
झां	■	ज	बा	न	■	म	सी	हा
क	च	ना	र	■	भा	र्या	■	न
■	र्म	■	■	ज	र	दा	■	■

सूडोकु नवताल- 7182

सरल

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7181 का हल

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2

सुभाषित

अपमान और दवाकी गोलियां निगल जानेके लिए होती हैं, मुंहमें रखकर चूसते रहनेके लिए नहीं। ❐ **वक्रमुख**

प्राणघातक लापरवाही

उत्तर प्रदेशके हाथरस जिलेमें शुक्रवारको बस और मैक्स लोडर पिकअप वाहनकी टक्करमें पांच बच्चे और पांच महिलाओं सहित १७ लोगोंकी मौत दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। इस दर्दनाक हादसेके बाद यूपी पुलिसपर सवाल उठ रहे हैं। दरअसल माल ढोनेवाले पिकअप वाहनमें ३५ लोग सफर कर रहे थे। यह लोडर जिलेकी चार थानों और पुलिस वैरियरके सामनेसे गुजरा लेकिन किसी भी स्थानपर उसके खिलाफ काररवाई नहीं की गयी, जबकि मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथका सख्त निर्देश है कि लोडिंग गाड़ियोंसे सवारी नहीं ढोयी जाय और ट्रैक्टर, ट्राली, डम्पर, छोटा हाथी नामक मैक्स लोडर आदि माल वाहक वाहनोंपर सवारी बैठानेवालोंके खिलाफ सख्त काररवाई की जाय। इसके बावजूद पुलिस एवं आरटीओकी लापरवाही, अनदेखी और वसूलीके फलस्वरूप प्रदेशके हर जिलोंमें हर दिन ऐसे हादसे हो रहे हैं और लोगोंकी जान जा रही है। मामला केवल मालवाहक वाहनोंमें ओवरलोड सवारी ढोनेका नहीं है, बल्कि सड़कोंपर यमदूत बने अप्रशिक्षित एवं ड्राइविंग लाइसेंस बिना बेरोक-टोक गाड़ियां चला रहे ड्राइवर भी पुलिसकी सांठ-गांठकी नियतको दर्शा रहे हैं। हाथरस हादसेमें ही प्रत्यक्षदर्शियोंकी माने तो मैक्स लोडर वाहनका चालक गलत तरीकेसे आगेके वाहनको ओवरटेक कर रहा था। उसी समय सामनेसे आ रही तेज रफ्तार बसने उसे टक्कर मार दी। माल वाहक वाहनोंके अलावा टैक्सी, मैक्स कमाण्डर जीप सेवाके नामपर चलनेवाले इन वाहनोंमें हजारोंसे अधिक लोग सफर कर रोज अपनी जिन्दगीको दांवपर लगा रहे हैं। सामान और सवारियोंसे खचाखच भरे इन वाहनोंमें चालक सीटपर बैठनेकी जगह लटककर ड्राइविंग करना, पावदानपर सात-आठ तथा अगल-बगल सवारियोंको लटकाकर यात्रा कराना लोगोंकी जिन्दगीपर भारी पड़ रह है फिर भी जिम्मेदार हाथपर हाथ धरे बैठे हैं। हादसा होनेपर सम्भागीय परिवहन विभाग और थानोंकी पुलिस चेंकिंग अभियान चलानेका नाटक करती है, जबकि ऐसे वाहनोंको पुलिस और परिवहनके लोगोंका सीधा संरक्षण प्राप्त होता है। जबतक जिम्मेदारकी जवाबदेही तय करनेके साथ कठोर काररवाई नहीं की जाती, तबतक ऐसे हादसे होते रहेंगे।

साहित्यकारोंकी सुधि

उत्तर प्रदेश सरकारका साहित्यकारोंकी सुधि लेते हुए कलाकारोंकी तरह अब साहित्यकारों पेंशन देनेका निर्णय स्वागतयोग्य है। प्रदेशके पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंहने शुक्रवारको इसकी घोषणा करते हुए बताया कि ६० वर्षसे अधिक आयुके साहित्यकारोंको प्रतिमाह दो हजार रुपयेकी पेंशन दी जायगी। सरकारकी इस दूरदर्शिताकी सराहना की जानी चाहिए कि धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजनोंमें पर्यटकों, श्रद्धालुओंको सुखद अनुभव देनेमें कवि साहित्यकारोंकी भी महती भूमिका रहती है। प्रयागराज कुम्भ २०२५ के शुभारम्भके प्रथम आयोजन कवि कुम्भको रेखांकित करते हुए जयवीर सिंहने कहा कि कवि-साहित्यकारोंकी उपस्थितिसे विश्वके सबसे बड़े सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजनकी भव्यता एवं दिव्यता और बढ़ जायगी। सरकारने साहित्यकारोंको पेंशनका निर्णय ऐसे समय लिया जब महाकुम्भ २०२५ के प्रारम्भ होनेमें कुछ माह ही शेष है जो प्रशंसनीय और कवि साहित्यकारोंका मनोबल बढ़ानेवाला है। साहित्य समाजका दर्पण होता है जो लोगोंको समाजमें व्याप्त कुरीतियोंसे लड़नेकी प्रेरणा देता है। किसी भी राष्ट्रकी श्रेष्ठताकी पहचान उसकी विलासितापूर्ण भौतिकवादी उन्नतिसे नहीं अपितु साहित्य, कला और संस्कृतिसे होती है। साहित्यकारोंको पेंशन जरूर मिलनी चाहिए। यह साहित्य जगतका सम्मान है। साहित्यकारोंको पेंशन राष्ट्रकी संस्कृतिके गौरवका सम्मान है। इससे साहित्य जगतका विकास होगा। सरकारका यह कदम निश्चित रूपसे सराहनीय है लेकिन इसके लिए वास्तविक साहित्यकार ही पात्र होना चाहिए। साहित्यकारोंकी पहचानके लिए एक कमेटीका गठन होना चाहिए और उसकी जवाबदेही भी तय की जानी चाहिए। साहित्यकारोंके चयनमें पारदर्शिता जरूरी है वरन् अपात्र लाभान्वित होंगे और पात्र साहित्यकार सरकारके इस राहतकारी निर्णयके लाभसे वंचित रह जायंगे। सरकारको इसपर विशेष निगाह रखनेकी जरूरत है।

लोक संवाद

खेलोंमें भारतकी खराब स्थिति

महोदय,-पैरिस २०२४ पैरालिम्पिकमें भारत, खास तौरपर ओलिम्पिकमें हासिल की गयी ७१वीं रैंकिंगसे बेहतर रैंकिंगकी उम्मीद कर रहा है। यह आशाजनक लग रहा है। इसके पदकोंकी संख्या पहलेसे ही अधिक है। पैरा शूटर अवनी लेखराका लगातार दूसरा स्वर्ण पदक देशका अबतकका सबसे बड़ा प्रदर्शन रहा है। लेकिन पैरालिम्पिक हो या ओलिम्पिक भारत अपनी जनसांख्यिकीय ताकतके सापेक्ष वैश्विक खेल मंचपर पिछड़ जाता है। इसने १९०० से ओलिम्पिकमें सिर्फ ४१ पदक जीते हैं। अकेले संभावनाके आधारपर दुनियाके छहमेंसे एक व्यक्तिके लिए देशका हालिया प्रदर्शन शर्मनाक है। इसने इस साल ओलिम्पिकमें सिर्फ छह पदक जीते। उदाहरणके लिए अमेरिकाने इस सालके ओलिम्पिकमें भारतसे पांच गुना अधिक एथलीट भेजे, जबकि उसकी आबादी भारतकी आबादीका सिर्फएक चौथाई है। दरअसल मुख्य चीनी अर्थशास्त्री रोरी ग्रीनने पाया कि पैरिस खेलोंमें पदकोंकी संख्यामें लगभग ९० प्रतिशत अंतर जीडीपीके कारण था। भारत दुनियाकी पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी है। यदि उसके पास लोग और पैसा है तो वह खेलोंमें इतना खराब क्यों है। ओलिम्पिकमें सफलता जीडीपीके साथ बढ़ती है, क्योंकि यह खेल व्ययके लिए एक प्रॉक्सीके रूपमें कार्य करता है। ग्रीनने कहा, पूंजी गहन खेल, जिसमें जिम्नास्टिक, तैराकी, नौकायन और गोताखोरी शामिल हैं। इस वर्ष उपलब्ध पदकोंका २८ प्रतिशत हिस्सा थे। अमेरिका, चीन और ब्रिटेन इनमेंसे कईमें बेहतर हैं। आर्थिक विकासका मतलब अधिक अवकाश समय और खेल संस्कृतिका निर्माण भी है। शारीरिक मनोरंजनपर व्यय लगातार सरकारोंके लिए प्राथमिकता नहीं रहा है। परिणामस्वरूप इच्छुक एथलीटोंको खराब फंडिंग और सुविधाओं कोचिंग और उपकरणोंतक पहुंचकी कमीके रूपमें महत्वपूर्ण बाधाओंका सामना करना पड़ा है। गरीबी एक चुनौती बनी हुई है। विश्वबैंकके अनुसार क्रय शक्ति समताके आधारपर भारतका प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद दस हजारसे थोड़ा अधिक है, जो इसे ईराक और एस्वातीनी जैसे देशोंसे नीचे रखता है। माता-पिता और शिक्षक, स्वाभाविक रूपसे बच्चोंको डाक्टर और इंजीनियर जैसे बेहतर वेतनवाले, उच्च स्थितिवाले व्यवसायोंको अपनानेके लिए प्रोत्साहित करते हैं। वारविक विश्वविद्यालयमें समाजशास्त्रके एसोसिएट प्रोफैसर कहते हैं, परम्परागत रूपसे दूसरोंके लिए प्रदर्शन करनेवाली नौकरियां, जैसे घरेलू काम, नृत्य और खेल अकसर निम्न स्थितिसे जुड़ी होती थीं। यहां भी एक आत्म-सुदृढ़ीकरण गतिशीलता है। राष्ट्रीय खेल रोल मॉडल (क्रिकेट और शतरंजसे परे) की कमीका मतलब है कि एक एथलीटके रूपमें जीवनयापन करनेके लिए जोखिम-ईनाम अनुपात प्रतिकूल दिखता रहता है। डिग्री प्राप्त करने, धन संचय करने और परिवारकी देखभाल करनेकी सामाजिक अपेक्षाओंका मतलब है कि भारतीय अपने दैनिक जीवनमें साथी देशोंकी तुलनामें खेलके लिए कम समय समर्पित करते हैं। महिलाओंको अलग-अलग दबावोंका सामना करना पड़ता है। कम उम्रमें शादी करना और बच्चे पैदा करना खेल महत्वाकांक्षाओंमें बाधा डालता है और भारतमें क्रिकेट भी इतना हावी हो गया है कि बहुत कम लोग दूसरे खेलोंकी ओर देखते हैं। हालांकि आशावादी होनेके कारण भी हैं। भारतीय अधिकारी खेल द्वारा लाये जानेवाले सॉफ्ट पावर और आर्थिक अवसरोंको तेजीसे पहचान रहे हैं। हालके वर्षोंमें राष्ट्रीय खेल बजटमें वृद्धि हुई है और खेलो इंडिया जैसे कार्यक्रम, जिसे २०१७ में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लांच किया गया था, का उद्देश्य युवा खेल प्रतिभाओंको खोजना और उनका पोषण करना है। व्यवसाय भी भारतके खेलके सामान और दर्शकोंके बड़े, युवा बाजारका लाभ उठाना चाहते हैं। पिछले महीने ही खेल खुदरा विक्रेता डेकाथलॉनने देशमें सौ मिलियन डालरके निवेशकी घोषणा की। खेल उद्योगका राजस्व, जिसमें मीडिया खर्च और प्रायोजन शामिल हैं, २०१४ से दोगुनासे अधिक हो गया है। भारतने २०३६ ग्रीष्मकालीन ओलिम्पिककी मेजबानीमें भी रुचि व्यक्त की है। बोली लगानेसे इसकी खेल स्थितिको समर्थन मिल सकता है। ग्रीनने कहा कि मेजबान देशोंके लिए पदकोंकी संख्यामें वृद्धि घरेलू लाभके कारण कम है, बल्कि आयोजनसे पहले खेलमें किये जानेवाले निवेशके कारण अधिक है। भारतकी एथलैटिक समस्याओंको दूर करनेमें समय और दृढ़ताकी आवश्यकता होगी। इसने इस वर्षके ओलिम्पिकमें चौथे स्थानपर रहनेका राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया, लेकिन पदक जीतनेके लिए प्रशिक्षण और तैयारीमें निरन्तर निवेशकी आवश्यकता है। वैश्विक मंचपर सफलता, साथ ही भारतके नेताओं द्वारा खेलको लगातार बढ़ावा देना, एथलैटिक गतिविधियोंके प्रति दृष्टिकोण बदलनेके लिए आवश्यक हो सकता है। तबतक, भारत कमसे कम १२८ सालके अंतरालके बाद लॉस एंजल्स २०२८ ओलिम्पिकमें क्रिकेटकी वापसीकी उम्मीद कर सकता है। **-आर.पी. सिंह, वाया ईमेल।**

सिर्फ कानूनसे नहीं रुकेंगे अपराध

ममता सरकारने महिला चिकित्सकसे दरिंदगी मामलेमें वही किया है जो अबतक ऐसे मामलोंमें दूसरे राज्य करते रहे हैं। मसलन कानून बनाकर जिम्मेदारी पूरी कर ली। ममता सरकारने विधानसभामें बलात्काररोधी विधेयक सर्वसम्मतिसे पारित कर दिया। मसौदेमें ऐसे दोषियोंके लिए मृत्युदंडके प्रावधानका प्रस्ताव किया गया है।

❐ **योगेंद्र**

देशके नेताओंने समस्याओंका आसान रास्ता तलाश कर रखा है। जब भी किसी समस्यासे सामना हो तो कानून बनाकर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लो। समस्याकी जड़तक कोई भी राजनीतिक दल और सरकारें नहीं जाना चाहती। ऐसा नहीं है कि समस्याओंका स्थायी समाधान नहीं हो सकता, किन्तु वहांतक पहुंचने और व्यावहारिक समाधान ढूंढ़नेमें पापड़ बेलने पड़ते हैं। पश्चिम बंगालकी ममता बनर्जी सरकारने महिला चिकित्सकसे बलात्कारके बाद हत्याके मामलेमें वही किया है जो अबतक ऐसे मामलोंमें दूसरे राज्य या केन्द्र सरकार करती रही हैं। मसलन कानून बनाकर जिम्मेदारी पूरी कर ली। ममता सरकारने विधानसभामें बलात्काररोधी विधेयक सर्वसम्मतिसे पारित कर दिया। विधेयकके मसौदेमें बलात्कार पीड़िताकी मौत होने या उसके स्थायी रूपसे अचेत अवस्थामें चले जानेकी सूरतमें ऐसे दोषियोंके लिए मृत्युदंडके प्रावधानका प्रस्ताव किया गया है। इसके अलावा मसौदेमें प्रस्ताव किया गया है कि बलात्कार और सामूहिक बलात्कारके दोषी व्यक्तियोंको आजीवन कारावासकी सजा दी जाय और उन्हें पेरोलकी सुविधा न दी जाय। अपराजिता महिला एवं बाल विधेयक (पश्चिम बंगाल आपराधिक कानून एवं संशोधन) विधेयक २०२४ शीर्षकवाले इस प्रस्तावित कानूनका उद्देश्य बलात्कार और यौन अपराधोंसे संबंधित नये प्रावधानोंके जरिये महिलाओं और बच्चोंकी सुरक्षा मजबूत करना है। यह बिल पास होनेके बाद राज्यपालके पास जायगा, उनसे पास होनेके बाद राष्ट्रपतिकी मंजूरीके लिए जाएगा। इससे पहले २०१९ में आंध्र प्रदेश दिशा विधेयक और २०२० में महाराष्ट्र शक्ति विधेयक विधानसभासे पारित हुआ था। इन दोनों विधेयकोंमें बलात्कार और सामूहिक बलात्कारके सभी तरहके मामलोंमें अनिवार्य फांसीका प्रावधान किया गया था। इन दोनों विधेयकोंको राज्य विधानसभाओंने सर्वसम्मतिसे पारित किया था। लेकिन दोनों विधेयकोंको अभीतक राष्ट्रपतिकी मंजूरी नहीं मिली है। भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिताके साथ-साथ २०१२ के पोक्सो अधिनियमके कुछ हिस्सोंमें संशोधन करने और पीड़िताकी उम्र चाहे जो हो, कई तरह के यौन उत्पीड़नके मामलोंमें मौतकी सजाका प्रावधान है। इस बिलमें महिलाओं और बच्चोंके साथ होनेवाले अपराधके लिए कठोर सजाका प्रावधान किया गया है। बीते महीने लागू हुए बीएनएसकी धारा-६४ में बलात्कारके लिए दस सालसे लेकर आजीवन कारावासतककी सजाका प्रावधान है। वहीं बीएनएसकी धारा-६६ में बलात्कार और हत्या और ऐसे बलात्कार, जिनमें पीड़ित निष्क्रिय हो जाती है, उनमें मौतकी सजाका प्रावधान है। इसमें २० सालकी जेलकी या उम्र कैदकी सजाका भी प्रावधान किया गया है। गौरतलब है कि निर्भया कांडके बाद कानूनको बहुत सख्त कर दिया गया था। रेपकी परिभाषा भी बदल दी थी, ताकि महिलाओंके खिलाफ अपराधमें कमी लायी जा सके। पहले जबरदस्ती या असहमतिसे बनाये गये संबंधोंको ही रेपके दायरेमें लाया जाता था। लेकिन इसके बाद २०१३ में कानूनमें संशोधन कर इसका दायरा बढ़ाया गया। इतना ही नहीं, जुवेनाइल कानूनमें संशोधन किया गया था। इसके बाद यदि कोई १६ साल और १८ सालसे कम उम्रका कोई किशोर जघन्य अपराध करता है तो उसके साथ वयस्ककी तरह ही बर्ताव किया जायगा। हालांकि इन सबके बावजूद सुधार नहीं हुआ है। निर्भया कांड (२०१२) के बाद भारत में कई चर्चित बलात्कारकी घटनाएं हुई हैं। उत्तर प्रदेशके उन्नाव जिलेमें एक १७ वर्षीय लड़कीके साथ बलात्कार और हत्या की घटना सामने आयी। उत्तर प्रदेशके ही हाथरस जिलेमें एक १९ वर्षीय दलित लड़कीके साथ सामूहिक बलात्कार और अत्यंत बर्बरता की गयी। पीड़िताकी मृत्युके बाद, उसके शवको परिवारकी अनुमतिके बिना रातके समय दफनाया गया। मध्य प्रदेशके मुरैना जिलेमें एक महिलाके साथ सामूहिक बलात्कारकी घटना सामने आयी। पीड़िताकी शिकायतके बावजूद, पुलिसने समयपर काररवाई नहीं की, जिससे व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए। हैदराबादमें एक महिला वेटरिनरी डाक्टरके साथ बलात्कार और हत्याकी घटनाने व्यापक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया। अपराधियोंको पकड़नेके लिए पुलिसने काररवाई की और बादमें आरोपी एनकाउंटरमें मारे गये, जिसने विवाद और बहसको जन्म दिया। मणिपुरमें एक महिलाके साथ बलात्कार और हत्याकी घटनाने हालमें बहुत ध्यान खींचा। इस मामलेने स्थानीय हिंसा और सामाजिक अस्थिरताको भी उजागर किया। साल २०१३ में केंद्र सरकारने महिलाओंकी सुरक्षाके लिए निर्भया फंड बनाया, जिसका मकसद राज्योंको महिलाओंकी सुरक्षाको पुख्ता करना था। परन्तु इसका अभी पूरी तरहसे इस्तेमाल नहीं हो पाया है। निर्भया फंडकी नौ हजार करोड़ रुपयेकी धनराशिका लगभग ३० प्रतिशत हिस्सा भी सहीसे इस्तेमाल नहीं हो पाया है। निर्भया फंड बननेसे लेकर २०२१-२२ तक, कोषके तहत कुल आवंटन ६००० करोड़ रुपयेसे ज्यादा रहा है, जिसमेंसे ४२०० करोड़ रुपयेका ही अबतक इस्तेमाल हो पाया है। गौरतलब है कि भारतमें हर घंटे तीन महिलाएं रेपका शिकार होती हैं, यानी हर २० मिनटमें बलात्कारकी एक घटना। देशमें रेपके मामलोंमें ९६ प्रतिशतसे ज्यादा आरोपी महिलाको जाननेवाले होते हैं। रेपके मामलोंमें सौमेंसे २७ आरोपियोंको ही सजा होती है, बाकी बरी हो जाते हैं। ये तीन आंकड़े बताते हैं कि सख्त कानून होनेके बावजूद हमारे देशमें रेपके मामलोंमें न तो कमी आ रही है और न ही सजाकी दर यानी कन्विक्शन रेट बढ़ रहा है। केन्द्र सरकारकी एजेंसी नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरोके आंकड़े बताते हैं कि भारतमें सालभरमें महिलाओंके खिलाफ अपराधके चार लाखसे ज्यादा अपराध दर्ज किये जाते हैं। इन अपराधोंमें सिर्फ रेप ही नहीं, बल्कि छेड़छाड़, दहेज हत्या, किडनैपिंग, ट्रैफिकिंग, एसिड अटैक जैसे अपराध भी शामिल हैं। आंकड़े बताते हैं कि २०१२ से पहले हर साल बलात्कारके औसतन २५ हजार मामले दर्ज किये जाते थे। लेकिन इसके बाद यह आंकड़ा तीस हजारके ऊपर पहुंच गया। २०१३ में ही ३३ हजारसे ज्यादा मामले दर्ज हुए थे। २०१६ में तो आंकड़ा ३९ हजारके करीब पहुंच गया था। साल २०२२ में औसतन हर दिन करीब रेपके ८७ मामले दर्ज किये गये। इसी साल २४८ दुष्कर्म या गैंगरेपके साथ हत्या, ३१५१६ रेप, ३२८८ रेपके प्रयास और ८३३४४ मामले महिलाकी गरिमाको ठेस पहुंचानेके इरादेसे किये गये हमलेके दर्ज किये गये। इन आकंड़ोंसे जाहिर है कि निर्भया कांडके बाद भी देशमें महिलाओंके साथ होनेवाले अपराधोंकी तस्वीर नहीं बदली है। दरअसल नेताओं और सरकारोंके इरादोंमें कमी है। देशमें महिलाओंकी सामूहिक तरक्की, पर्याप्त शिक्षा, बुनियादी सुविधाएं, रोजगार और अन्य सुविधाओंमें इजाफा नहीं होगा, तबतक निर्भया जैसी घटनाओंपर सिवाय चीख-पुकार मचानेसे कुछ नहीं होगा। यह सब करना सरकारोंके लिए आसान नहीं है। इसलिए जब भी कोई वारदात होती है, तब कानूनमें कुछ और धाराएं जोड़कर सरकारें अपने दायित्वकी इतिश्री कर लेती हैं।

तमाम आकंड़ोंसे जाहिर है कि निर्भया कांडके बाद भी देशमें महिलाओंके साथ होनेवाले अपराधोंकी तस्वीर नहीं बदली है। दरअसल नेताओं और सरकारोंके इरादोंमें कमी है। देशमें महिलाओंकी सामूहिक तरक्की, पर्याप्त शिक्षा, बुनियादी सुविधाएं, रोजगार और अन्य सुविधाओंमें इजाफा नहीं होगा, तबतक निर्भया जैसी घटनाओंपर सिवाय चीख-पुकार मचानेसे कुछ नहीं होगा। यह सब करना सरकारोंके लिए आसान नहीं है। इसलिए जब भी कोई वारदात होती है, तब कानूनमें कुछ और धाराएं जोड़कर सरकारें अपने दायित्वकी इतिश्री कर लेती हैं।

सर्वोत्तमकी गहन अभिलाषा

सर्वोत्तम हमारी सर्वोत्तम मनोकामना, गहन अभिलाषा है। यही अभिलाषा भिन्न-भिन्न रुपोंमें प्रकट होती है। प्रतिस्पर्धामें प्रथम होनेकी इच्छा। धनसंग्रही होनेकी अभिलाषा। लोकसंग्रही होनेकी आकांक्षा और यशकी अभीप्सा।

❐ **हृदयनारायण दीक्षित**

सर्वोत्तम हमारी सर्वोत्तम मनोकामना है। सर्वोत्तम हमारी गहन अभिलाषा है। यही अभिलाषा भिन्न-भिन्न रूपोंमें प्रकट होती है। प्रतिस्पर्धामें प्रथम होनेकी इच्छा। धनसंग्रही होनेकी अभिलाषा। लोकसंग्रही होनेकी आकांक्षा और यश अभीप्सा। शिक्षा हमारे उत्तमको उभारती है और सर्वोत्तममें प्रकट करती है। लेबनानी चिन्तक खलील जिब्रानकी सुंदर पुस्तक है प्राफेट। लिखा है, शिक्षकने पूछा कि शिक्षाके विषयमें बताओ। उसे बताया गया। कोई व्यक्ति तुम्हारे सामने वही उद्घाटित कर सकता है जो तुम्हारे भीतर हो। शिक्षा हमारे ही सुप्त ज्ञानप्राप्तिका उपकरण है। ज्ञानके लिए चाहिए गुरु। तुलसीदासने गाया है, बिन गुरू होंहि कि ज्ञान। इसी तरह शिक्षाके लिए शिक्षककी महत्ता है और ज्ञानके लिए गुरू की। शिक्षाका शिखर सर्वोत्तम ज्ञान है। ज्ञानका प्रारम्भिक चरण शिक्षा है। शिक्षकका शिखर विकास गुरुत्व है। गुरुत्व विकासका मध्यवर्ती चरण शिक्षक है। गुरु होना हरेक शिक्षककी संभावना है। शिक्षक महत्वपूर्ण है। गुरुको भी शिक्षक होकर ही गुरुत्व मिलता है। बीते ५ सितम्बरको देशमें शिक्षक दिवस था। विश्व प्रख्यात भारतीय दार्शनिक डा. राधाकृष्णनकी जन्मतिथि (५ सितम्बर) शिक्षक दिवसके रूपमें मनायी जाती है। भारतमें शिक्षकको गुरु भी कहा जाता है। शिक्षककी भारतीय अनुभूति यही है। उत्तरवैदिक काल अनूठा है। इस कालमें तमाम ज्ञान है, कर्मकाण्ड भी हैं। कर्मकाण्ड विरोधी अनेक चिन्तन धाराएं भी हैं। चिन्तन और दर्शनका विकास ध्यान देने योग्य है। इस कालमें तैत्तिरीय आरण्यकके सातवें, आठवें और नवें अध्यायको तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है। उपनिषद् प्रारम्भ होती है-शिक्षा व्याख्यास्यम:से। यहां शिक्षाकी अतिसंक्षिप्त परिभाषा है। कुल तीन छोटे वाक्य हैं। पहला है=वर्ण: स्वर। वर्ण स्वरका बोध शिक्षा है। दूसरा वाक्य पढ़ते हैं-मात्रा बलम्। मात्राका ज्ञान, इनपर बल देनेकी जानकारी। तीसरा है, साम सन्तान:। गीता प्रेसके अनुवादमें सामका अर्थ वर्णोंका समवृत्तिसे उच्चारण है और सन्तानका अर्थ संधि है। फिर अंतिम वाक्य है-शिक्षा अध्याय समाप्त हुआ। शब्द ज्ञान श्रेय है परन्तु वही अंतिम नहीं। शब्द संसारके ध्वनि प्रतिनिधि हैं। यहां प्रत्येक वस्तु, पदार्थके लिए शब्द है। इसलिए वे स्वयं एक विराट विश्व हैं। संसारमें वन, उपवन, पर्वत और नदी समुद्र हैं। तो शब्द संसारमें वन, उपवन आदि शब्द हैं। लेकिन वे प्रत्यक्ष वन, पर्वत आदि नहीं हैं। केला, आम या अंगूर वास्तविकतामें सुस्वाद फल हैं। इनके नाम केवल संज्ञा हैं। हमारे संज्ञानमें वे मूल पदार्थोंके प्रतिनिधि स्वर-वर्ण मात्र हैं। आम खाकर मिठाईका बोध होता है। आम कहकर स्वाद नहीं मिलता। वे केवल नाम हैं। नामसे रूप समझना शिक्षा है और देखकर रूप नाम बोलना भी। नाम, रूप, गुण, व्यवहार आदिका ज्ञान शिक्षासे होता है। शिक्षक यही बोध देते हैं। वे संसारका साधारण परिचय कराते हैं। तैत्तिरीयके ऋषिने शिक्षाकी ठीक परिभाषा की है। ऐसा ज्ञान दुखमुक्तिका उपकरण नहीं हो सकता। गांधी जीने पीड़ा व्यक्त की है कि गणित, भूगोल, इतिहास आदि जानकर मुझे क्या मिला। गांधी सत्यप्रिय थे। सत्यधर्मान् महान व्यक्ति। विश्व मानव। यह शिक्षा उनके काम नहीं आ रही थी। वे आगे बढ़े, सत्यके साथ हो गये। मैंने सम्मानित शिक्षकोंसे विज्ञान पढ़ा। मातृभाषा पढ़ी। माननीय शिक्षकोंने अंग्रेजी भी पढ़ाई। वह मातृभाषा है नहीं सो मात्र-अंश ही समझमें आयी। अर्थशास्त्र पढ़ा एमए तक। उत्तम अंक मिले, ज्ञान गंध तो मिली लेकिन तत्व ज्ञान नहीं मिला। दुखिया मन और दुखिया रहा। योरोपीय विद्वान और उन जैसे भारतीय विद्वानोंने भारतके प्राचीन साहित्यको धार्मिक आस्थावाला बताकर षड्यंत्र किया था। वैदिक साहित्य विज्ञान और दर्शनकी अनुभूतियोंसे भरापूरा है। यूरोपीय विद्वानोंने भारतीय दर्शन चिंतनको कमतर बताया है। अंग्रेजी सभ्यताने राष्ट्रजीवनको आत्महीन बताया। अब अंग्रेजी हमारी बुद्धिमें है। सभी भारतीय भाषाएं हमारी मां, मां जैसी या मौसी लेकिन अंग्रेजी सुपिरिचत आत्मीय शत्रु। अंग्रेजी भारतीय अनुभूतिके प्रकटीकरणमें अक्षम है। शिक्षक श्रद्धेय हैं। उम्रमें छोटे हों तो भी। मनु:स्मृतिकी बड़ी निन्दा होती है। इसमें शिशु दीक्षितके सम्मानमें भी ५०-६० वर्षीय वरिष्ठजनोंको सम्मानमें खड़े होने के सुझाव हैं। तुलसीदासका श्रीगुरु चरण सरोज रजध्निज मन मुकुर सुधार दोहा है। इसका अंग्रेजी अनुवाद कठिन है। अंग्रेजीमें गुरुका समानार्थी शब्द है नहीं। चरणके लिए शब्द है लेकिन सरोजका क्या करें। उसका ठीक अनुवाद हो भी तो सरोज रजका अनुवाद असंभव। शिक्षककी कठिनाई है। वे सुयोग्य हैं लेकिन शब्द ज्ञानसे ही काम नहीं चलता। डा. राधाकृष्णन् भारतीय दर्शनकी गहन समझसे भरेपूरे थे। उनकी पुस्तक इण्डियन फिलास्फीने सारी दुनियाको भारतीय चिन्तनकी जानकारी दी। गीताका अंग्रेजी अनुवाद असंभव है। उन्होंने इसे संभव बनाया। उन्होंने अनुवादमें अपना कोई दृष्टिकोण नहीं जोड़ा। भारतीय शिक्षा और शिक्षकोंमें राष्ट्रीय आत्माकी सुवास रही है।

शिक्षा अच्छे मनुष्यकी निर्मिति है। अच्छा मनुष्य आदर्श मनुष्य होना चाहिए। भारतीय आदर्शका अच्छा मनुष्य लोकमंगल अभीप्सु मानव है। आत्मबोधमें वह सम्पूर्ण विश्वका अंश है। शिक्षकपर ऐसा ही मनुष्य गढ़नेकी जिम्मेदारी हैं। आदर्श मनुष्य गढ़ना आसान नहीं। शिक्षा मनुष्यके सर्वोत्तमको प्रकट करती है। इसके लिए ध्यान चाहिए। ध्यान यानी एकाग्रता। विवेकानंदने कहा है, एकाग्रता ही वह विधि है जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। मनकी एकाग्रता ही शिक्षाका सार तत्व है। जीवनके किसी भी क्षेत्रमें सफलता प्राप्त करनेका यही सर्वोत्तम साधन है। विचारोंकी एकाग्रताके अभावमें ही मनुष्य भयंकर भूलें करता है। जो मनुष्य प्रशिक्षित होता है या जिनका मन एकाग्र होता है वह भूल नहीं करता। मनुष्यके चित्तकी एकाग्रताके अनुपातमें भिन्नताके कारण ही मनुष्योंमें अंतर होता है। महान व्यक्तिका चित्त एकाग्र और साधारण व्यक्तिका मन कम एकाग्र या चंचल होता है। हरेक मनुष्य अनूठा है। अद्वितीय है। उस जैसा दूसरा मनुष्य है ही नहीं। दूसरा हो भी नहीं हो सकता। इसलिए उसके अन्तस्को उसी स्वरूपमें, उसकी निजता और वैशिष्ट्यमें सर्वोत्तमतक विकसित करनेका काम कठिन है। परिश्रमी शिक्षक भी संगीत प्रिय छात्रको अर्थशास्त्रका विद्वान नहीं बना सकता। शिक्षक और छात्रका सम्बंध महत्वपूर्ण है। शिक्षा देना आसान है लेकिन छात्रका ग्राह्यता स्तर मापना कठिन है। उत्तर वैदिक कालमें आचार्य और शिष्य साथ-साथ प्रार्थना करते थे-सहनोभुनुक्त, सहनाववतु शब्द आज भी जीवंत हैं। शिक्षामें संसारकी उपेक्षा नहीं थी। तैत्तिरीय उपनिषद्में शिक्षाकी संक्षिप्त व्याख्याके बाद आचार्य और शिष्य प्रार्थना करते हैं, हम दोनोंका यश साथ-साथ बढ़े। हम दोनोंका तेज एक साथ बढ़े। हम लोक जानें। ज्योतियां जानें। विद्या (मुक्ति संधान) जानें और प्रकृति रहस्य भी। पृथ्वी पूर्व वर्ण है, अंतरिक्ष उत्तर वर्ण हैं। आकाश संधि है। वायु योजक हैं। आदि। यहां शिक्षाका विस्तार अंतरिक्षतक है। जहांतक शिक्षा है वहांतक शिक्षकका भी विस्तार है। इसलिए शिक्षकको आचार्य कहा गया। आचार्य अपने आचार शिक्षा देते थे। गुरु इसी शिक्षक चेतनाका विकास है। शिक्षक दिवस गुरु उत्सव ही है।

आत्मबोध

मनपर नियंत्रण

❐ **मुकेश ऋषि**

जीसाधना कठिन पुरुषार्थ है। यह देवत्वसे जुड़नेकी आध्यात्मिक गूढ़ प्रक्रिया है। अन्तर्तात्मामें परमात्माकी अमृतमयी वाणीके श्रवणका लाभ साधनाकी गूढ़ प्रक्रियाके मार्गपर चलनेसे सिद्ध एवं संपन्न होती है। वहिर्मुखी मनको अंतर्मुख करनेमें साधना ही प्रमुख आधारशिला है। कण-कणमें, तन-मनमें शक्तिका संचार, स्फूर्ति, शान्ति साधकको साधना ही प्रदान करती है। साधना ऐसा गूढ़ सूत्र, सिद्धांत एवं पुरुषार्थ है, जिसके सिद्ध होनेसे जीवनका गणित सुधर जाता है और व्यक्तिके स्वभावमें, जीवनमें विलक्षण परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। साधना मनके नियंत्रण करनेका ब्रेक है, जो मनुष्यको दुष्चिंतन, पतनके पथसे खींचकर देवत्वकी ओर अग्रसर करती है। साधनाके अभावमें ही मानवता नष्ट होती है और साधनाकी सिद्धि एवं परिपूर्णतासे जीवन तपकर कुंदनकी भांति अमूल्य बन जाता है। मानव जीवन नि:देष्य प्राप्त नहीं है। जीवनकी सार्थकता हेतु साधना ही सापेक्ष रूपमें उत्तरदायित्वका बोध करानेमें मानवका असली संगी है। साधनाके अभावमें ही मानव जीवनमें सदा तंगी, अशान्ति, पशुता बनी रहती है। साधनासे जो यथार्थ सुख, शांति, आनन्द, साधन प्राप्त होते हैं, वही जीवनका शाश्वत धन एवं प्रमुख आधार है। जगतमें सर्वत्र साधन भरे पड़े हैं, परन्तु साधनाका अभाव है। मानव जीवनकी दुर्गतिका प्रमुख कारण सभी कारणोंमें साधना विहिन होना है। इंद्रिय लोलुपता दासता है। स्वामित्वकी प्राप्ति साधनाकी सिद्धिसे संभव होती है। मानव जीवन अमूल्य खजानोंका जखीरा है, परन्तु मनुष्यको इसका बोधतक नहीं है। क्षणिक-वासना, कामनाके सुखमें वह शाश्वतको लात मारकर, नजरअंदाज करके जीवनको पापपंकमें डुबोकर नारकीय यातनाओंको भोगता है। मानव जीवन भोगी बननेके लिए नहीं योगी बननेके लिए मिला है। सभी शास्त्र मानव जीवनकी श्रेष्ठता, ईश्वरप्राप्तिके लिए साधनाके गुह्य तत्वका विवेचन किया है। प्राचीन ऋषियों, मुनियोंने निरन्तर साधनात्मक जीवन जिया है और हमें साधनात्मक जीवन जीनेकी प्रेरणा एवं संदेश दिया है। वैचारिक, शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक रूपसे उत्कृष्ट होनेके लिए साधनाका आधार प्रमुखत: सत्य है। आलस्य, प्रमाद, भोग-बिलासकी मनोभूमिका कारक एवं जन्मदाता मनुष्यका मन है। मन चंचल है। सुख-प्राप्तिकी लालसामें यह पानीकी तरह बहावमें आ जाता है। मनका बहकाव खतरेकी घंटी है। इसलिए मनपर नियंत्रण अनिवार्य है। हमारे प्राचीन ऋषियोंने मानव जीवनके हितके लिए मनपर नियंत्रणको अनिवार्य बताया है। मनको साधनेसे ईश्वरसे जुड़ना संभव है। यही असली योग है। लेकिन निरन्तर प्रयास जारी रखना हमारा मूल कर्तव्य है। साधनासे सिद्धिका विषय अत्यंत आनन्ददायी एवं लाभकारी है।

लोकतंत्रके लिए अच्छा होगा एकसाथ चुनाव

❐ **एस. कुमार**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीको एक बड़ी सफलता मिलती दिखाई दे रही है। राजनीतिक सूत्रोंका कहना है कि एनडीएके सहयोगी दल जेडीयू, तेलुगू देशम पार्टी और एलजेपी (राम बिलास) एक देश, एक चुनाव और धर्म निरपेक्ष नागरिक संहितापर सहमत हो गये हैं। जाति जनगणनापर भी सहमति बनती दिखाई दे रही है। मतलब साफ है कि भाजपा २०२९ के लोकसभा चुनावोंके साथ सभी राज्योंके विधानसभाओंके चुनाव एक साथ करानेके लिए नया कानून ला सकती है। एक देश, एक चुनाव निश्चित तौरपर एक अच्छी धारणा है। संभव हो तो पंचायतों और नगर परिषदोंके चुनाव भी एक साथ ही हो जायं तो लोकतंत्रके लिए और अच्छी बात होगी। इससे चुनावके भारी-भरकम खर्चमें कमी आयगी। समयकी बचत होगी। बार-बार चुनावके काममें लगा दिये जानेवाले कर्मचारियोंको अपना काम करनेका अधिक मौका मिलेगा। राजनीतिक दलों और उम्मीदवारोंको भी चुनावपर अधिक खर्च नहीं करना पड़ेगा। इसके चलते राजनीतिक भ्रष्टाचारपर भी थोड़ा बहुत अंकुश लग सकता है। एक देश, एक चुनाव कोई नई बात नहीं है। आजादीके बाद १९५२ से १९६७ तक लोकसभा और विधानसभाओंके चुनाव एक साथ ही होते थे। समस्या १९६७ के बाद शुरू हुई। इस चुनावमें कांग्रेस पार्टीको लोकसभामें तो बहुमत मिल गया लेकिन बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश जैसे कई राज्योंमें किसी पार्टीको बहुमत नहीं मिला। पिछले पांच वर्षोंमें चुनावका बढ़ता खर्च देशकी अर्थव्यवस्थापर बोझ बनता जा रहा है। सैंटर फॉर मीडिया स्टडीजकी एक रिपोर्टके मुताबिक आजादीके बाद १९५२ में देशके चुनावपर साढ़े दस करोड़ रुपये खर्च हुए थे। तब लोकसभा और विधानसभाके चुनाव एक साथ हुए थे। २०१९ में लोकसभा और आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, अरुणाचल प्रदेश एवं सिक्किम विधानसभाओंके चुनाव एक साथ हुए जिसपर करीब ५० हजार करोड़ रुपये खर्च हुए। २०२४ में ये खर्च बढ़कर करीब एक लाख करोड़ रुपये होनेका अनुमान है। जाहिर है कि लोकसभा और विधानसभाके चुनाव एक साथ होते तो लगभग इसी खर्चमें दोनों अनुष्ठान पूरे हो जाते। लोकसभाके चुनावका खर्च केन्द्र सरकार और विधानसभा चुनावका खर्च राज्य सरकार देती है। दोनों चुनाव एक साथ होनेपर खर्च दोनोंमें बंट जाता है। विधानसभाओंके चुनाव अलग-अलग होनेसे सरकारी तंत्र, मंत्री और राजनीतिक दल हमेशा चुनावकी तैयारीमें व्यस्त नजर आते हैं। प्रधान मंत्री और भाजपा सभी चुनावोंको एक साथ करानेपर जोर दे रहे हैं। लेकिन कांग्रेस सहित ज्यादातर विपक्षी दल एक साथ चुनावपर सहमत नहीं हैं। खास कर क्षेत्रीय पार्टियोंको डर है कि एक साथ चुनाव होनेपर सत्ता उनके हाथसे निकल जायगी। विपक्षका ये डर बहुत तार्किक नहीं लगता है। केन्द्र सरकारके लिए लोकसभा और सभी विधानसभाओंके चुनाव एक साथ कराना मुश्किल नहीं है। संविधानकी धारा ३५६ के जरिये विधानसभाओंको भंग करके एक साथ चुनाव कराये जा सकते हैं। इसका उपयोग कई बार हो चुका है। १९७७ में जनता पार्टीकी सरकार केन्द्रमें आयी तो कांग्रेसी राज्य सरकारोंको इसी धाराका उपयोग करके भंग कर दिया गया और राज्योंमें विधानसभाके चुनाव कराये गये। १९८० में कांग्रेस केन्द्रमें लौटी तो राज्योंमें जनता पार्टीकी सरकारोंको भंग करके चुनाव कराये गये। किसी राज्य विधानसभा या लोकसभाका मध्यावधि चुनाव करानेकी नौबत आ जाय तो क्या होगा। क्या फिर सभी विधानसभाओं और लोकसभाके एक साथ चुनाव कराये जायंगे। इसे तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता है। एक देश, एक चुनावके नामपर केन्द्र सरकारको राज्योंमें राजनीतिक हस्तक्षेपका अधिकार फिरसे देना राज्योंकी स्वायत्तताको खत्म करने जैसा होगा। जरूरी है राजनीतिक सुधार, देशमें राजनीतिक दलोंकी भीड़ बढ़ती जा रही है। राज्योंमें नये नेता उभर रहे हैं। लोकतंत्रके लिए यह एक शुभ संकेत है। लेकिन क्षत्रप नेताओंकी महत्वाकांक्षा एक बड़ी समस्या भी है, जिसके चलते सरकारें पांच सालका समय पूरा नहीं कर पाती हैं। एक देश,एक चुनाव लागू करनेपर इस समस्यासे कैसे निबटा जायगा इसका कोई ब्लू प्रिंट अबतक सामने नहीं आया है। प्रधान मंत्रीको यह साफ करना होगा कि पूरे कार्यकालतक सरकार नहीं चलनेपर क्या होगा। एक तरीका ये हो सकता है कि लोकसभा या विधानसभाका कार्यकाल पांच साल पूरा नहीं होनेपर सिर्फ बचे हुए कार्यकालके लिए मध्यावधि चुनाव कराये जायं। लेकिन दूसरी बार भी किसी पार्टी या गठबंधनको बहुमत नहीं मिले और सरकार फिर नहीं चले तब क्या होगा। एक रास्ता यह भी हो सकता है कि उम्मीदवारोंको वोट देनेकी जगह पार्टियोंको वोट देनेकी व्यवस्था शुरू की जाय। इस प्रणालीमें पार्टीको जितने प्रतिशत वोट मिलें उस हिसाबसे उसके उम्मीदवारोंको लोकसभा और विधानसभामें सीटें दे दी जायं। वोट प्रतिशतके हिसाबसे ही पंचायतों और नगर निकायोंमें भी सीटें तय की जा सकती हैं। इसपर भी राजनीतिक दलोंमें सहमति आसान नहीं है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

शिक्षा, स्वास्थ्य व निवेश का ड्रीम डेस्टिनेशन बना गोरखपुरः मुख्यमंत्री

सीएम योगी ने कहा, सैनिक स्कूल की स्थापना से पूरा हो रहा पीढ़ियों के निर्माण का पवित्र उद्देश्य

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश, सीमावर्ती बिहार और नेपाल की तीन करोड़ से आबादी का हर लिहाज से महत्वपूर्ण केंद्र है। आज गोरखपुर नए भारत की विकास यात्रा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से, उनके मार्गदर्शन में तेजी से आगे बढ़ रहा है। गोरखपुर, उत्तर-पूर्व क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य और निवेश का ड्रीम डेस्टिनेशन बन गया है। सीएम योगी शनिवार को सैनिक स्कूल गोरखपुर के लोकार्पण समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का स्वागत कर रहे थे। उपराष्ट्रपति और उनकी पत्नी डॉ सुदेश धनखड़ का प्रदेश और गोरखपुरवासियों की तरफ से अभिनंदन करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि उपराष्ट्रपति जी का पहली बार गोरखपुर आगमन हुआ है। उन्होंने कहा कि सैनिक स्कूल के जरिये आज पीढ़ियों का निर्माण करने वाला पवित्र उद्देश्य पूरा हो रहा है। यह पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिए महत्वपूर्ण दिन है। मुख्यमंत्री ने कहा कि गोरखपुर पौराणिक और ऐतिहासिक कालखंड से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह महायोगी गुरु गोरखनाथ जी की साधना स्थली है तो गीता प्रेस के माध्यम से पूरी दुनिया में सनातन साहित्य के प्रकाशन का केंद्र भी। आजादी की लड़ाई में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता समर के दौरान शहीद बंधु सिंह के नेतृत्व में गोरखपुर क्षेत्र में अंग्रेजी हुकूमत की चूलों को हिला दिया गया था। 1922 में चौरीचौरा की ऐतिहासिक घटना में आजादी के संघर्ष को नई गति दी। सीएम ने कहा कि गोरखपुर प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है।

टेराकोटा की गणेश प्रतिमा भेंटकर सीएम ने किया उपराष्ट्रपति का अभिनंदन

सैनिक स्कूल के लोकार्पण समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अंगवस्त्र तथा टेराकोटा की गणेश जी की प्रतिमा भेंटकर उपराष्ट्रपति का अभिनंदन किया। इस अवसर पर माध्यमिक शिक्षा राज्य मंत्री गुलाब देवी ने उपराष्ट्रपति की पत्नी डॉ. सुदेश धनखड़ को टेराकोटा की गणेश जी की प्रतिमा भेंट की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मेजबानी में हुए इस समारोह में केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान, माध्यमिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गुलाब देवी, बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संदीप सिंह, सांसद रविकिशन शुक्ल, जिला पंचायत अध्यक्ष साधना सिंह, महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, विधायक फतेह बहादुर सिंह, महेंद्रपाल सिंह, श्रीराम चौहान, विपिन सिंह, डॉ. विमलेश पासवान, प्रदीप शुक्ल, सरवन निषाद आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

उपराष्ट्रपति ने सैनिक स्कूल का निरीक्षण भी किया

सैनिक स्कूल गोरखपुर का उद्घाटन करने के साथी उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ इसका निरीक्षण भी किया। उन्होंने क्लास रूम, प्ले ग्राउण्ड, तरणताल, आवासीय परिसर आदि का अवलोकन किया। तत्पश्चात नवनिर्मित एकलव्य शूटिंग रेंज स्थल पर शूटिंग का अभ्यास भी किया। पर्यावरण को स्वच्छ और सुंदर बनाने के दृष्टिकोण से पौधरोपण कर प्रकृति को हरा भरा रखने का संदेश दिया। उपराष्ट्रपति जब मंच पर पहुंचे तो कार्यक्रमों की शुरुआत राष्ट्रगान और सरस्वती वंदना से हुई। इस अवसर पर सैनिक स्कूल के कैडेट्स ने सैनिक स्कूल के छात्र जीवन से लेकर सैन्य जीवन तक की दिनचर्या पर भावपूर्ण नाट्य प्रस्तुति की।

सीएम योगी का निमंत्रण पाकर बहुत भावुक हो गयाः धनखड़

सैनिक स्कूल के उद्घाटन के मौके पर उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि जब देश के सबसे बड़े प्रांत के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेरे आवास पर आकर सैनिक स्कूल गोरखपुर के लोकार्पण के लिए निमंत्रण पत्र दिया तो मैं बहुत भावुक हो गया। उन्होंने कहा कि वैसे तो योगी जी का हर बात असाधारण है पर सैनिक स्कूल के लिए योगी जी का निमंत्रण पत्र भी असाधारण ही था। उन्होंने मुझे सैनिक स्कूल के एक पुरातन छात्र के रूप में निमंत्रित किया। योगी जी की नजर पैनी और पारखी है। मुझे बुलाने के लिए मुझ पर जितना होमवर्क उन्होंने किया, उतना मेरे निकट संबंधियों ने भी नहीं किया होगा। उपराष्ट्रपति ने कहा कि सैनिक स्कूल के लोकार्पण समारोह में आकर वह काफी भावविभोर और प्रफुल्लित हैं। आज उनके सामने छहदशक पूर्व का दृश्य जीवंत हो रहा है जब वह खुद सैनिक स्कूल के छात्र थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेरे लिए यह अविस्मरणीय काम कर दिया है। धनखड़ ने कहा कि इस निमंत्रण के जरिये योगी ने यह भान भी कराया कि शिक्षा बदलाव लाने, असमानता दूर कर समानता पैदा करने का माध्यम है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि सैनिक स्कूल गोरखपुर के लोकार्पण के लिए मौका देकर आपने (योगी जी) मेरे जीवन में नया अध्याय जोड़ दिया है। इसे कभी नहीं भूलेंगे।

उपराष्ट्रपति ने जोड़ा गोरक्षभूमि का राजस्थान से रिश्ता

सैनिक स्कूल के लोकार्पण समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और नाथ संप्रदाय की साधनास्थली गोरक्षभूमि को नमन करते हुए इसका अपने गृह क्षेत्र राजस्थान से रिश्ता जोड़ा। उन्होंने कहा कि वर्तमान गोरक्ष पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ के दादागुरु महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज राजस्थान के उदयपुर से थे। गीता प्रेस के हनुमान प्रसाद पोद्दार का ताल्लुक भी राजस्थान से ही था। उन्होंने कहा कि यह उनका परम सौभाग्य रहा है कि योगी के गुरुदेव महंत अवेद्यनाथ के साथ वह लोकसभा के सदस्य रहे। केंद्र में जब वह मंत्री बने तो उन्होंने जिन कुछ लोगों का आशीर्वाद लिया था उसमें महंत अवेद्यनाथ जी भी एक थे।

गुरु गोरखनाथ का दर्शन-पूजन कर भावविभोर हुए उपराष्ट्रपति

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

पहली बार गोरखपुर आए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को सैनिक स्कूल का लोकार्पण करने के बाद गोरखनाथ मंदिर जाकर शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ जी का दर्शन-पूजन किया। साथ में उनकी पत्नी डॉ. सुदेश धनखड़ भी उपस्थित रहीं। दर्शन-पूजन का अनुष्ठान मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने खुद अपनी देखरेख में संपन्न कराया। गुरु गोरखनाथ के चरणों में शीश नवाकर और महायोगी के मंदिर के गर्भगृह में प्रज्वलित अखंड ज्योति की महत्ता जानकर उपराष्ट्रपति भावविभोर हो गए। सैनिक स्कूल के लोकार्पण का कार्यक्रम संपन्न होने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगवानी में उपराष्ट्रपति, सपत्नी गोरखनाथ मंदिर पहुंचे। यहां मंदिर के मुख्य द्वार से वह गोल्फ कार्ट से मुख्य मंदिर की सीढ़ियों तक आए। यहां उपराष्ट्रपति के आते ही 251 वेदपाठी छात्रों ने वैदिक मंत्रोच्चार और शंखध्वनि के बीच उनका दिव्य स्वागत किया।

मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करने के दौरान गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, देवीपाटन शक्तिपीठ के महंत योगी मिथिलेशनाथ, कालीबाड़ी के महंत रविंद्रदास, चचाईराम मठ के महंत पंचानन पुरी और महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के पदाधिकारी डॉ. एसपी सिंह ने उपराष्ट्रपति और उनकी पत्नी की अगवानी की।

प्रमुख सचिव कारागार राजेश सिंह हटाए गए

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रमुख सचिव कारागार राजेश सिंह को हटा दिया है। राजेश सिंह के सभी प्रभार दूसरे अफसरों को सौंपने के बाद उन्हें प्रतिक्षारत कर दिया गया है। राजेश सिंह सिंह वर्तमान में सहकारिता, कारागार और ग्राम विकास विभाग का कार्यभार देख रहे थे। अब एमपी अग्रवाल को प्रमुख सचिव सहकारिता, अनिल गर्ग को प्रमुख सचिव कारागार और वेंकटेश्वर लू को ग्राम विकास संस्थान बीकेटी का चार्ज दिया है। उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट ने एक कैदी की सजा माफी के मामले में उत्तर प्रदेश कारागार प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव राजेश कुमार सिंह को बीते मंगलवार को फटकार लगाई थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि वह किसी आईएएस अधिकारी को न्यायालय के सामने झूठ बोलते हुए और सुविधानुसार अपना रुख बदलते हुए बर्दाश्त नहीं करेगा। राजेश कुमार सिंह द्वारा 14 अगस्त को जो शपथपत्र दिया गया वह उनके बयानों से पूरी तरह भिन्न था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि शपथपत्र में दिए गए बयान झूठे प्रतीत होते हैं। राजेश कुमार सिंह ने 12 अगस्त को दलील दी थी कि मुख्यमंत्री कार्यालय ने हाल ही में संपन्न लोकसभा चुनावों के कारण राज्य में लागू आदर्श आचार संहिता के चलते एक दोषी की सजा माफी से संबंधित फाइल के निपटारे में देरी की। बाद में कहा कि उन्होंने अनजाने में यह कह दिया कि आदर्श आचार संहिता के कारण मुख्यमंत्री सचिवालय ने सजा माफी से संबंधित फाइलें स्वीकार नहीं की। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में जल्द ही सुनवाई है, माना जा रहा है कि इसके चलते यह कार्रवाई की गई है।

यूपी की नारी शक्ति को आत्मनिर्भर बना रही विद्युत सखी योजना

सरकार का राजस्व बढ़ाने के साथ खुद भी स्वावलंबी बन रही विद्युत सखियां

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी के रामनगर विकास खंड स्थित सिलौटा गांव की विद्युत सखी राजश्री शुक्ला ने न केवल विद्युत सखी योजना से जुड़कर अपने परिवार की आय बढ़ाई, बल्कि प्रदेश की अन्य महिलाओं के लिए एक मिशाल भी बनीं। वह खुद तो स्वावलंबी बनी हीं, साथ में गांव की अन्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित कर रहीं हैं और योगी सरकारी की योजनाओं के बारे में लोगों को बता रही हैं। वह अपने साथ ही ग्रामीण जीवन में भी बदलाव ला रही हैं। साथ ही बिजली सखी के रूप में घर-घर जाकर बिजली बिल जमा करके ग्रामीणों को बिलों का भुगतान करने के लिए लंबी-लंबी कतारों में खड़े होने के बोझ से छुटकारा दिला रही हैं। राजश्री शुक्ला ने बताया कि वह ग्रामीण क्षेत्रों में घर-घर बिजली का बिल जमा करती हैं, जिससे ग्रामीणों का समय तो बचता ही है, साथ ही लंबी लाइन से उन्हे छुटकारा भी मिल जाता है। राजश्री शुक्ला ने बताया कि वह 50,000 रुपए से अधिक कमीशन प्रतिमाह कमा रही हैं। उन्होंने जुलाई-24 में 81,900 रुपये का कमीशन अर्जित कर प्रदेश की दस सबसे अधिक कमीशन अर्जित करने वाली बिजली सखियों में अपना नाम दर्ज कराया है। वह बताती हैं कि वह स्वयं सहायता समूह के जरिए विद्युत सखी बनी हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बैंकिंग सखी की तर्ज पर हम लोगों को बिजली सखी से जोड़कर हमारे जीवन को खुशहाल बना दिया है। मैं इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का धन्यवाद देती हूं। आज मैं बिजली का बिल जमा कराकर उससे मिलने वाले कमीशन से अपने परिवार का बखूबी ख्याल रख रही हूं। इससे मेरी और मेरे परिवार की आय में वृद्धि हुई है। उत्तर प्रदेश की नारी शक्ति को सशक्त, आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने का सीएम योगी का प्रयास रंग लाने लगा है। राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन की मिशन निदेशक दीपा रंजन ने बताया कि महिला स्वावलंबन के लिए चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उठाकर नारी शक्ति प्रदेश के विकास में कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। इसी क्रम में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत 10,500 से अधिक विद्युत सखियों ने 1120 करोड़ रुपये से अधिक का बिजली बिल जमा कराकर 14.6 करोड़ रुपये कमीशन प्राप्त कर अपना और परिवार का जीवन रौशन किया है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर अब तक स्वयं सहायता समूह के जरिये 30,000 महिलाओं को चयनित किया जा चुका है, जिसमें से 10,500 से अधिक विद्युत सखियां पहले से ही पूरे प्रदेश में कार्य शुरू कर दिया है। यह ग्रामीण और शहरी इलाकों में मीटर रीडिंग और बिजली के बिल का कलेक्शन कर रही हैं। इसके लिए उन्हे विद्युत सखी ऐप उपलब्ध कराया गया है, जिसमें वह लॉगिन करके बिजली बिल बनाकर उसका कलेक्शन करती हैं और ऐप के जरिए ही यूपीपीसीएल को बिल का भुगतान करती हैं।

बिल का भुगतान करते ही उनका कमीशन भी ऐप पर तुरंत आ जाता है। ऐसे में उन्हे विद्युत उपकेंद्र तक भी नहीं जाना होता है। इस योजना से जुड़ने के लिए विद्युत सखी को पहली बार ऐप पर 30 हजार रुपये का रिचार्ज करना होता है।

भाजपा सरकार किसानों की बदहाली कभी दूर नहीं कर सकतीः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार महंगाई, भ्रष्टाचार और किसानों की बदहाली कभी दूर नहीं कर सकती है। वह प्रत्येक स्तर पर सत्ता का दुरूपयोग करती है। निर्दोषों को झूठे केसों में फंसाती है। लोकसभा चुनावों में पराजय के बाद भी भाजपा कुप्रचार करने से बाज नहीं आ रही है। अखिलेश यादव शनिवार को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय के डॉ. राम मनोहर लोहिया सभागार में एकत्र पार्टी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी का पीडीए भाजपा का मुकाबला करेगा और उसे हराएगा। पीडीए में समाज के सभी पक्षों के हित सुरक्षित हैं। पीडीए के माध्यम से सामाजिक न्याय के लिए लड़ाई को भी अंतिम परिणाम तक पहुंचाने का लक्ष्य है। यादव ने कहा कि भाजपा लोकतंत्र और संविधान दोनों के लिए खतरा है। वह नफरत फैलाकर सामाजिक सद्भाव को तहस-नहस करने का इरादा रखती है। समाज में सभी को हक और सम्मान मिले इसके लिए समाजवादी पार्टी जातीय जनगणना को आवश्यक मानती है। समाजवादी पार्टी की जब भी सरकार बनेगी जातीय जनगणना कराकर सबको हक और सम्मान दिया जायेगा। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में अपराधियों को खुली छूट है। महिलाओं और बच्चियों का जीवन असुरक्षित है। फर्जी एनकाउण्टरों की वजह से उत्तर प्रदेश की देश-दुनिया में बदनामी हो रही है। पुलिस हिरासत में मौतों के मामलों में भी उत्तर प्रदेश सबसे आगे हैं और उत्तर प्रदेश का नाम बदनाम हो रहा है। अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था पूरी तरह चौपट है। भाजपा ने उत्तर प्रदेश को अराजकता की ओर धकेल दिया है।

प्रदेश की चीनी मिलों में हो रहा बड़ा सुधार

बागपत व मुजफ्फरनगर चीनी मिलों का होगा आधुनिकीकरण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ उनके जीवनस्तर में सुधार के लिए भी प्रयासरत है। प्रदेश के गन्ना किसानों को अधिक से अधिक लाभ मिले, इसके लिए योगी सरकार ने चीनी मिलों की स्थापना और आधुनिकीकरण पर विशेष जोर दिया है। इसी क्रम में प्रदेश सरकार की बागपत और मुजफ्फरनगर में चीनी मिलों के आधुनिकीकरण की योजना है। इसमें इन मिलों की कार्यक्षमता में सुधार के साथ ही तकनीकी अपग्रेडेशन शामिल है। हाल ही में मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई एक उच्च स्तरीय बैठक में इस पर विचार किया गया। इसमें किसान सहकारी चीनी मिल बागपत की कार्यक्षमता में सुधार के लिए मार्जिनल विस्तार (2500 टीसीडी से 3000 टीसीडी क्रशिंग क्षमता), तकनीकी अपग्रेडेशन एवं आधुनिकीकरण कार्य से संबंधित प्रस्ताव के लिए 84.77 करोड़ की लागत का अनुमान जताया गया है। इसमें 50 प्रतिशत राज्य सरकार से अंश पूंजी के रूप में तो 50 प्रतिशत ऋण के रूप में लिए जाने की वित्तीय व्यवस्था की जाएगी। 2024-25 के शासकीय बजट में 65 करोड़ के अनुदान के तहत निवेश/ ऋण का प्रावधान है। मिल के आधुनिकीकरण की आवश्यकता के बारे में बताया गया कि मिल के कमांड एरिया में गन्ने की प्रचुर उपलब्धता है। साथ ही मिल द्वारा लगभग 4.82 लाख टन गन्ने की पेराई की जा रही है। अगले 5 वर्षों में कारखाने के कमांड एरिया से प्लांट को लगभग 5.01 लाख टन गन्ना पेराई के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। इसी तरह गंगा किसान सहकारी चीनी मिल लि. मोरना, मुजफ्फरनगर की कार्यक्षमता में मार्जिनल विस्तार (2500 टीसीडी से 3000 टीसीजी क्रशिंग कैपेसिटी), तकनीकी अपग्रेडेशन एवं आधुनिकीकरण कार्य के लिए 88.02 करोड़ की प्रस्तावित लागत का अनुमान जताया गया है।

एगटेक के क्षेत्र में अग्रणी बनेगा यूपी

10 बिलियन डॉलर की एगटेक अर्थव्यवस्था विकसित कर योगी सरकार अन्नदाताओं को बनाएगी सशक्त

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कृषि में तकनीक को बढ़ावा देकर किसानों की आमदनी में इजाफा करने के लिए योगी सरकार एगटेक (एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी) स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित कर रही है। इसके लिए वर्ल्ड बैंक और गूगल जैसे अंतर्राष्ट्रीय दिग्गज संस्थाओं का सहारा भी लिया जा रहा है, जो युवाओं को एग्रीकल्चर के क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहित करेंगे और युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में भूमिका निभाएंगे। एगटेक के जरिये योगी सरकार कृषि को आधुनिक, उच्च तकनीक युक्त, लाभदायक और टिकाऊ उद्योग बनाएगी। इसके साथ ही, किसानों को एगटेक के विकास और नवाचारों से जोड़ा जाएगा। इससे, किसानों द्वारा कृषि कार्यों को संपन्न कराने को लेकर दूसरों पर निर्भरता भी कम होगी। इतना ही नहीं, योगी सरकार उत्तर प्रदेश को एगटेक के क्षेत्र में वैश्विक अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में तेजी से कार्य कर रही है। इसके भविष्य में परिवर्तनकारी परिणाम देखने को मिलेंगे, जिसका लाभ न केवल प्रदेश के किसानों को, बल्कि पूरे प्रदेशवासियों को होगा।

योगी सरकार एगटेक के जरिये उन्नत प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाने के साथ अगले पांच वर्षों में प्रदेश को 10 बिलियन डॉलर की एगटेक अर्थव्यवस्था बनाएगी। योगी सरकार लक्ष्य को हासिल करने के लिए रणनीतिक निवेश, प्रभावी नीतिगत ढांचे को लागू करके और मजबूत सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देकर एगटेक उत्कृष्टता को स्थापित करेगी। इससे, उत्तर प्रदेश न केवल अपनी कृषि संबंधी जरूरतों को पूरा करेगा बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक खाद्य सुरक्षा को आगे बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसके लिए, एक हजार स्टार्टअप्स को बढ़ावा दिया जाएगा। यह सभी स्टार्टअप्स एग्रीकल्चर सेक्टर के विभिन्न इकाइयों जैसे पैकेजिंग, प्रोसेसिंग, स्टोरेज आदि के विकास पर आधारित होंगे। इतना ही नहीं, इस नवाचार से प्रदेश के 10 लाख युवाओं को रोजगार के नये अवसर उपलब्ध होंगे, जो कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देने, किसानों की आय में वृद्धि करने, मजबूत खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही स्थानीय और वैश्विक दोनों खाद्य प्रणालियों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। मालूम हो कि समृद्ध उत्तर प्रदेश का दृष्टिकोण प्रगति और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों पर आधारित है, जहां कृषि आर्थिक समृद्धि लाती है और प्रदेश के किसान तकनीकी क्रांति का नेतृत्व करते हैं।

योगी सरकार किसानों की आय बढ़ाने के लिए नवीन कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाने और वितरण को बढ़ावा देने के लिए किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के साथ एगटेक कंपनियों के बीच सहयोग को बढ़ाएगी। वह घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा देगी, जिससे एफपीओ महत्वपूर्ण मध्यस्थों के रूप में काम करेंगे। इससे प्रौद्योगिकी प्रदाताओं और किसानों के बीच की खाई को कम करने में मदद मिलेगी। यह साझेदारी एफपीओ को अपने सदस्यों की जरूरतों को बेहतर ढंग से समझने और संबोधित करने के लिए सशक्त बनाएगी। साथ ही, एगटेक कंपनियों को अपने समाधानों को अधिक प्रभावी ढंग से बढ़ाने, किसानों के व्यापक आधार तक पहुंचने और यह सुनिश्चित करने में सक्षम करेगी कि तकनीकी प्रगति सभी के लिए सुलभ और फायदेमंद हो।

ग्राम चौपालों में 3 लाख 99 हजार से अधिक प्रकरणों का किया गया निस्तारण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व व निर्देशन में ग्रामीणो की समस्यायों के निराकरण हेतु प्रदेश के प्रत्येक विकास खण्ड की दो ग्राम पंचायतों में प्रत्येक शुक्रवार को ग्राम चौपाल,(गांव की समस्या-गांव में समाधान) का आयोजन किया जा रहा है, और बहुत बड़ी संख्या में लोगों की समस्यायों का निराकरण उनके गांव में ही हो रहा है। सरकार खुद चलकर गांव व गरीबों के पास जा रही है, ग्राम चौपालों से जहां गांवों में चल रही विभिन्न परियोजनाओं की जमीनी हकीकत का पता चलता है, वहीं सोशल सेक्टर की योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी आ रही है। केशव प्रसाद मौर्य के निर्देशों के अनुपालन में ठोस व प्रभावी रूपरेखा बनाकर चौपालों का आयोजन किया जा रहा है तथा चौपालों से पूर्व गांवों में सफाई पर विशेष रूप से फोकस किया जा रहा है।

वुमेन पॉवर हेल्पलाइन ने 19 माह में 6 लाख से अधिक शिकायतों का समय से किया निस्तारण

महिलाओं की सुरक्षा को लेकर सजग योगी सरकार, शत प्रतिशत मामलों को किया जा रहा निस्तारित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

महिलाओं को सम्मान देने के साथ-साथ योगी सरकार उनकी सुरक्षा पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। यही वजह है कि महिला संबंधी मामलों के निस्तारण में उत्तर प्रदेश पूरे देश में अव्वल है। योगी सरकार के हाथों में उत्तर प्रदेश की कमान आने के बाद पिछले कई वर्षों से यह उपलब्धि प्रदेश के पास ही है। इसमें उत्तर प्रदेश वुमेन पॉवर हेल्पलाइन का खासा योगदान है। वुमेन पॉवर हेल्पलाइन (1090) के वर्ष 2023 के आंकड़ों पर गौर करें तो विभाग ने शत-प्रतिशत महिलाओं की शिकायतों का निस्तारण कर सीएम योगी के विजन को मिशन के रूप में धरातल पर उतारा है। विभाग ने पिछले 19 माह में 6 लाख से अधिक शिकायतों का ससमय निस्तारण किया है। इसमें वर्ष-2023 में शत-प्रतिशत यानी 4,09,434 में से 4,09,433 शिकायतों का निस्तारण किया गया, जबकि एक कॉल को डिफॉल्ट पाया गया है।

वहीं, वर्ष 2024 में 30 अगस्त तक हेल्पलाइन पर 83.92 प्रतिशत मामलों का निस्तारण किया गया। इस दौरान कुल 3,04,481 कॉल रजिस्टर्ड की गयीं, जिसमें से 2,55,535 मामलों को निस्तारित किया गया। निस्तारण का यह डाटा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा महिलाओं की सुरक्षा और आत्मसम्मान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

वुमेन पॉवर हेल्पलाइन की एडीजी पद्मजा चौहान ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरुप प्राथमिकताओं के आधार पर महिला संबंधी शिकायतों का निस्तारण किया जा रहा है। इसके साथ ही उन्हे तत्काल सहायता भी पहुंचायी जा रही है। उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष 2023 में प्रतिदिन औसतन 1,122 शिकायतों का निस्तारण किया गया जबकि 1,70,734 शिकायतों को काउंसिलिंग के जरिये निस्तारित किया गया। वहीं 62,667 मामलों में एफआईआर दर्ज की गयी। इसके अलावा शेष सभी अन्य कॉल्स को संबंधित विभाग (डायल-112, फायर डिपार्टमेंट, अपराध जगत आदि) में हस्तांतरित कर तत्काल सहायता दिलायी गयी। पिछले वर्ष सबसे अधिक इंटरनेट/सोशल मीडिया से संबंधित 56,973 शिकायतें दर्ज की गयी, जिसका रेश्यो कुल शिकायतों का 13.92 प्रतिशत रहा। इसी तरह परिवार संबंधी 5,460 मामले आए, जिसे ऑनलाइन फैमिली काउंसिलिंग के जरिये निस्तारित किया गया, जिसका रेश्यो कुल शिकायतों का1.33 प्रतिशत है। इसके अलावा पीछे करने के 994 मामले आए, जिसका रेश्यो कुल शिकायतों का 0.24 प्रतिशत है। वहीं सबसे अधिक लखनऊ से 40,972 मामले आए जबकि दूसरे नंबर पर कानपुर नगर से 18,358 मामले, तीसरे नंबर पर प्रयागराज से 14,698 मामले, चौथे नंबर पर आजमगढ़ से 12,388 मामले और पांचवें नंबर पर गोरखपुर से 12,354 मामले आए। इसी तरह सबसे अधिक लखनऊ के थानों को कार्यवाही के लिए 5,547 मामले ट्रांसफर किये गये जबकि दूसरे नंबर पर कानपुर नगर को 3,218, तीसरे नंबर पर प्रयागराज को 2,495 मामले, चौथे नंबर पर उन्नाव को 1,865 और पांचवें नंबर पर जौनपुर को 1,857 मामले थानों को कार्यवाही के लिए ट्रांसफर किये गये। वुमेन पावर हेल्पलाइन के मीडिया को-आर्डिनेटर विनोद यादव ने बताया कि इस वर्ष जनवरी से 30 अगस्त तक हेल्पलाइन पर 3,04,481 कॉल रजिस्टर्ड की गयीं। इसमें से 2,55,535 मामले को निस्तारित किया गया, जिसका रेश्यो 83.92 प्रतिशत रहा। वहीं शेष अन्य कॉल को युद्धस्तर पर निस्तारित करने की दिशा कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन औसतन 1,047 शिकायतों का निस्तारण किया गया जबकि 1,70,734 शिकायतों को काउंसिलिंग के जरिये निस्तारित किया गया। वहीं 36,260 मामलों में एफआईआर दर्ज की गयी। इसके अलावा शेष सभी अन्य कॉल्स को संबंधित विभाग (डायल-112, फायर डिपार्टमेंट, अपराध संबंधी आदि) में हस्तांतरित कर तत्काल सहायता दिलायी गयी। अगस्त तक सबसे अधिक इंटरनेट/सोशल मीडिया से संबंधित 43,894 शिकायतें दर्ज की गयी, जिसका रेश्यो कुल शिकायतों का 14.42 प्रतिशत रहा।

t.me/AllNewsPaperPaid

विकास

भारत डोगरा

प्रचलित मान्यताओं में हो सुधार

इन दिनों विश्व स्तर पर सतत् विकास लक्ष्य (सस्टेनेबल डवलपमेंट गोल्स या एसडीजी) विमर्श के केंद्र में है। विकास, पर्यावरण रक्षा और समाज कल्याण की विभिन्न प्राथमिकताओं के संबंध में व्यापक विमर्श के बाद समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं कि विभिन्न देशों को निर्धारित समय पर यहां तक अवश्य पहुंचना चाहिए। सतत् विकास लक्ष्यों की सार्थकता यह बताई गई है कि इनके निर्धारित होने से उचित प्राथमिकताओं को अपनाने में विश्व स्तर पर मदद मिलेगी।

यह लक्ष्य तो बहुत जरूरी है, और यदि विश्व इन समयबद्ध लक्ष्यों को पूरा कर सके तो निश्चय ही यह बड़ी उपलब्धि होगी। विकास के महत्त्वपूर्ण मानकों के आधार पर अभी तक की सबसे बड़ी उपलब्धियां प्राप्त होंगी पर बड़ा सवाल यह है कि यह सतत् विकास लक्ष्य वास्तव में कहां तक प्राप्त हो सकेंगे। चिंता की एक बड़ी वजह यह है कि जिस दौर में विकास के सबसे बड़े लक्ष्य प्राप्त करने की बात कही जा रही है, उसी दौर में अनेक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि इस दौर में अति गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं के कारण और अति विनाशक हथियारों के कारण धरती की जीवनदायिनी क्षमताएं ही खतरे में पड़ सकती हैं। सवाल यह है कि ऐसे गंभीर संकटों के दौर में विकास की सबसे बड़ी उपलब्धियां कैसे प्राप्त की जा सकती हैं। जहां एक ओर इतनी गंभीर चुनौतियां हैं, उसी दौर में सतत् विकास के निर्धारित लक्ष्य कैसे प्राप्त होंगे? यह प्रश्न इस कारण और पेचीदा हो जाता है कि धरती की जीवनदायिनी क्षमता को संकट में पड़ने से बचाने के प्रयास हाल के समय में सफलता से बहुत दूर रहे हैं और विश्व के सबसे शक्तिशाली देश इस संदर्भ में अपनी बड़ी जिम्मेदारियों से दूर हटते नजर आए हैं।

अतः इस समय बहुत जरूरी है कि विध्वंसक हथियारों को न्यूनतम करने, युद्ध और गृह युद्ध की संभावना कम से कम करने और अमन-शांति के लिए विश्व में एक व्यापक और सशक्त जन-अभियान निरंतरता से चले। इसी तरह धरती की जीवनदायिनी क्षमता से जुड़े पर्यावरण के मुद्दों पर भी ऐसा ही अभियान चले। इन जन-अभियानों द्वारा इन समस्याओं की गंभीरता की जानकारी करोड़ों लोगों तक भली-भांति पहुंचाई जाए और इन समस्याओं के समाधान के अनुकूल जीवन-मूल्यों का प्रसार किया जाए। इस तरह अति महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर जबरदस्त जन-उभार आ सकता है और इस उभार के कारण सरकारें भी इन मुद्दों पर अधिक ध्यान देने के लिए बाध्य होंगी। इस तरह जो अनुकूल माहौल तैयार होगा उससे सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की संभावना बहुत बढ़ जाएगी। यह विडंबना है कि जहां विश्व के अनेक विख्यात विद्वानों ने बार-बार तर्क देते हुए कहा है कि जीएनपी को विकास की सही पहचान नहीं माना जा सकता है, इस समय भी जीएनपी (ग्रॉस नेशनल प्रोडक्ट या सकल राष्ट्रीय उत्पाद) का आर्थिक विकास के प्रमुख द्योतक के रूप में उपयोग जारी है। रिचर्ड डाऊथवेट ने अपनी चर्चित पुस्तक 'द ग्रोथ इल्यूशन' में लिखा है कि चूंकि जीएनपी में केवल उन वस्तुओं और सेवाओं की गिनती होती है जिन्हें नकदी में खरीदा-बेचा जाता है, अतः साफ हवा, शुद्ध पानी, प्राकृतिक सौंदर्य, आत्म-सम्मान और मानवीय रिश्तों में हो रहे बदलाव इसमें उपेक्षित रह जाते हैं जबकि जीवन की गुणवत्ता के लिए यह सब अति महत्त्वपूर्ण हैं। डाऊथवेट ने ब्रिटेन का अध्ययन ऐसे दौर में किया जब प्रति व्यक्ति जीएनपी दो गुणा बढ़ गई थी। इसी दौर में ब्रिटिश सोशल साइंस रिसर्च काउंसिल ने पांच वर्षों में तीन बार ब्रिटेन के लोगों के सैम्पल से जीवन की गुणवत्ता के बारे में सवाल पूछे। तीनों बार एक से सवाल पूछे गए। जब लोगों से पूछा गया कि क्या पिछले 5 वर्षों में वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग बढ़ा है, तो उन्होंने लगभग एकमत से उत्तर दिया-हां, बढ़ा है। पर जब उनसे पूछा गया कि क्या जीवन की गुणवत्ता (क्वालिटी ऑफ लाइफ) भी इसके साथ बढ़ी है, तो सभी ने लगभग एक मत से उत्तर दिया कि जीवन की गुणवत्ता बढ़ी नहीं है, घटी है।

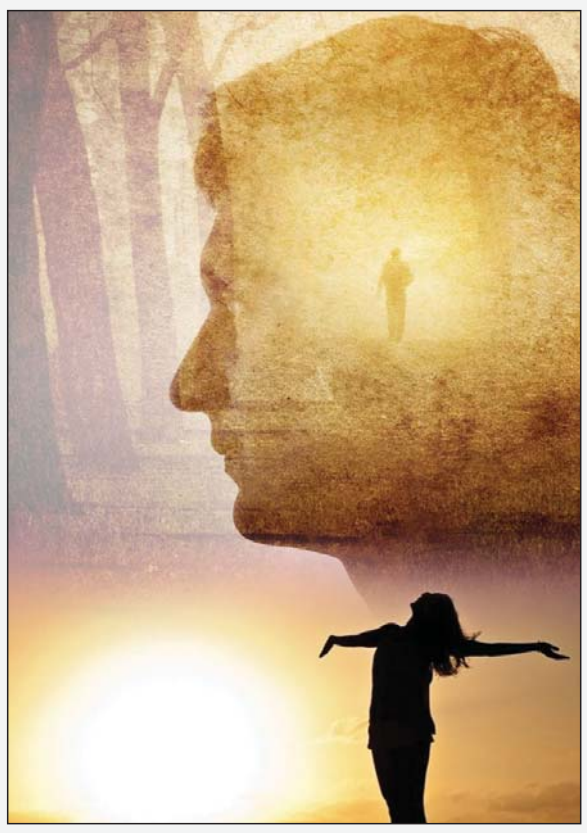

इस सर्वेक्षण में लोगों से पूछा गया कि जीवन की गुणवत्ता किस से निर्धारित होती है तो प्राप्त उत्तरों को विभिन्न श्रेणियों में बांटा गया। इनमें से 71 प्रतिशत जवाबों का वर्गीकरण ऐसी श्रेणियों में हुआ जिनका कैश या नकदी से कोई संबंध नहीं है। इस स्थिति में जीएनपी को विकास का सही द्योतक कैसे माना जा सकता है? जीएनपी के स्थान पर आर्थिक भलाई या इकनॉमिक वेल्फेयर का बेहतर द्योतक प्राप्त करने का प्रयास हरमन डेली और जॉन कॉब ने अपनी पुस्तक 'फॉर द कॉमन गुड' में किया। उन्होंने अमेरिका के संदर्भ में पाया कि एक ऊंचाई तक पहुंचने के बाद आर्थिक भलाई में ठहराव आ गया, फिर गिरावट भी आई जबकि आंकड़ों में प्रति व्यक्ति जीएनपी की वृद्धि ही दर्ज होती रही। हाल के वर्षों में इस बारे में कई बार चिंता व्यक्त की गई है कि जीएनपी के आंकड़े तो तेज आर्थिक विकास दिखा रहे हैं पर बढ़ती संख्या में लोग इसे स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। इस विवाद को हल करने के लिए फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति सरकोजी ने एक कमीशन नियुक्त किया जिसमें नोबल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्रियों की भी सहायता ली गई। इस कमीशन की रिपोर्ट तो आ गई है, पर जिस उलझन के समाधान के लिए यह आयोग बनाया गया था, वह उलझन अभी तक हल नहीं हुई है।

दरअसल, इस तरह के विवाद को मुख्य रूप से अर्थशास्त्रियों के जिम्मे नहीं छोड़ा जा सकता अपितु इसे मिले-जुले विशेषज्ञों की सहायता से सुलझाना चाहिए जिनमें समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों को भी स्थान मिलना चाहिए। आध्यात्मिक विद्वानों का विचार प्राप्त करना भी उपयोगी होगा। ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर न्यू इकनॉमिक्स फाऊंडेशन ने एक रिपोर्ट तैयार की है, जिसमें बताया गया है कि 1950 के बाद सकल राष्ट्रीय उत्पाद 230 प्रतिशत बढ़ा पर टिकाऊ आर्थिक वेल्फेयर में मात्र 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1975-90 के बीच सकल राष्ट्रीय उत्पाद में एक तिहाई वृद्धि हुई पर टिकाऊ आर्थिक वेल्फेयर में बहुत गिरावट आई। इस तरह के बहुत से अध्ययनों और रिपोर्टों से यह स्पष्ट हो रहा है कि आय बढ़ जाने या आर्थिक संवृद्धि की दर बढ़ जाने से खुशहाली स्वतः नहीं आ जाती है अपितु इसके लिए ऐसे विशिष्ट और सतत् प्रयास की जरूरत है जो आर्थिक विकास को खुशहाली की ओर ले जाए। खुशहाली लाने के लिए उचित जीवन मूल्य होना, नैतिकता के मानदंड होना, सामाजिक और पारिवारिक संबंधों में प्रगाढ़ता होना, विभिन्न स्तरों पर समानता यह सब बहुत जरूरी हैं। जब इन बुनियादी मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया जाता है तो अनेक स्तरों पर अकेलापन, अवसाद, टूटन और बढ़ती विषमता आर्थिक संपन्नता के बावजूद बढ़ सकते हैं। अतः आर्थिक विकास के साथ सामाजिक संतुलन और नैतिक मूल्यों पर समुचित ध्यान देना बहुत आवश्यक है। यह हाल के दशकों के अनुभवों का ऐसा सबक है जिसे तेजी से बदलते भारत को ध्यान में रखना चाहिए।

विश्व स्तर पर सतत् विकास लक्ष्य (सस्टेनेबल डवलपमेंट गोल्स या एसडीजी) विमर्श के केंद्र में है। विकास, पर्यावरण रक्षा और समाज कल्याण की विभिन्न प्राथमिकताओं के संबंध में व्यापक विमर्श के बाद समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं कि विभिन्न देशों को निर्धारित समय पर यहां तक अवश्य पहुंचना चाहिए। सतत् विकास लक्ष्यों की सार्थकता यह बताई गई है कि इनके निर्धारित होने से उचित प्राथमिकताओं को अपनाने में विश्व स्तर पर मदद मिलेगी। यह लक्ष्य तो बहुत जरूरी है, और यदि विश्व इन समयबद्ध लक्ष्यों को पूरा कर सके तो निश्चय ही बड़ी उपलब्धि होगी। विकास के महत्त्वपूर्ण मानकों के आधार पर अभी तक की सबसे बड़ी उपलब्धियां प्राप्त होंगी पर बड़ा सवाल यह है कि सतत् विकास लक्ष्य वास्तव में कहां तक प्राप्त हो सकेंगे

उज्जैन रेप कांड : हम मोबाइल दीवाने, घटना के समय वीडियो रिकॉर्डिंग करने वाले और सोशल मीडिया पर वायरल करने के लिए कंटेंट क्रिएटर और गुस्साए योद्धाओं के देश में तब्दील हो गए हैं। अपराध को रोकने की आगे बढ़कर पहल कौन करेगा यह तो पहले होता था हमारा मिजाज। शर्मनाक!-

प्रियंका चतुर्वेदी, सांसद @priyankac19

आजादी के सवाल

मीडिया

सुधीश पचौरी

आजादी के पक्षधर होते हुए भी हम सेंसर का इंतजार करेंगे कि वह आगे क्या करता है? यों हमारा मानना है कि कलाओं को पर्याप्त आजादी चाहिए लेकिन कोई भी आजादी 'बेहद' तो नहीं हो सकती। अगर 'बेहद' होगी तो वह दूसरों की 'हदों' से टकराएगी और फिर आपत्ति होगी, हल्ला होगा, हल्ला होगा तो कानून व्यवस्था के सवाल भी उठेंगे

इन दिनों दो फिल्में 'विवाद' में हैं। एक है कंगना की फिल्म 'इमरजेंसी' जिसे सेंसर बोर्ड ने अभी तक ओके नहीं किया है। कहते हैं कि एक समुदाय विशेष की आपत्ति पर इसे रोक दिया गया। दूसरी फिल्म है 'आईसी 814 द कंधार हाईजैक'। इसे लेकर एक समुदाय की आपत्ति रही कि इसके हाईजैकर्स के नाम किसी एजेंडे के तहत असल कहानी के मुस्लिम नामों को बदल कर 'हिन्दू' जैसे कर दिए गए जैसे 'भोला','शंकर' आदि...। कंधार हाईजैक के बाद में उस जहाज के पाइलट ने इसकी सच्ची कहानी भी लिखी थी कि जिसमें हाईजैकर्स के असली नाम थे, वे किस समुदाय के थे जिनको कहानी को 'हिन्दू' के 'कोड नामों' से पुकारा जाता था। लगता है कि फिल्म बनाने वाले ने इन 'कोड नामों' को 'कलात्मक आजादी' के नाम पर कुछ ज्यादा ही तरजीह दी है और यही आपत्ति का कारण है। तथ्यों की ऐसी 'हेराफेरी' पर जब 'हिन्दू सेना' ने आपत्ति दर्ज की तो इस सीरीज को 'ओटीटी प्लेटफार्म' वालों को रोकना पड़ा और कहना पड़ा कि ये तभी जाएगी जब निर्माताओं द्वारा इससे संबंधी सारे तथ्य सही कर लिए जाएंगे...।

कुछ फिल्म निर्माताओं के लिए 'ओटीटी प्लेटफार्म' ऐसा 'प्लेटफार्म' बन चुका है जिसमें वे समझते हैं कि कुछ भी दिखा सकते हैं लेकिन जब आपत्ति होती है तो पहले तो ये 'पॉलिटीकल खेल' खेलते हैं कि 'आपत्ति करने वाले' को खास तरह की विचारधारा वाले हैं, और अपनी कलात्मक आजादी की दुहाई देते हैं। जब इस तरह के विवाद से 'फ्री' की 'पब्लिसिटी' ले लेते है तो 'विक्टिम कार्ड' खेलते हुए फिल्म को कुछ इधर-उधर कर दिखाने योग्य बना देते हैं, और इस तरह विवाद से पैदा हुई 'उत्सुकता' को दुहते रहते हैं।

ऐसा खेल और भी कई फिल्मों ने किया है जिनमें से कुछ के नाम याद आ रहे हैं जैसे 'महाराज','सेक्रिड गेम्स','तांडव' और 'द सूटेबल ब्वॉय' आदि इस क्रम में अब 'कंधार हाईजैक' वाली इस फिल्म को शामिल कर लें। फिलहाल 'ओटीटी' पर इसकी रिलीज टल गई है। ऐसी कई विवादास्पद फिल्में सिर्फ 'ओटीटी प्लेटफार्म' के लिए बनाई जाती हैं। इनको सीरीज की तरह बनाया जाता है। सिनेमा हॉल की अपेक्षा 'ओटीटी' पर फिल्मों को दिखाने की काफी आजादी रहती है। जब तक कोई आपत्ति न करे और खूब हल्ला न करे तब तक इनका खेल चलता रहता है। लेकिन ऐसी आजादी सिर्फ 'ओटीटी फिल्में' ही नहीं लेतीं, बहुत सी मुख्यधारा की फिल्मों में भी कई चतुर सुजान अपनी आजादी के नाम पर अपना 'खेल' करते रहते हैं। एक बार 'सेंसर सर्टिफिकेट' मिल जाने के बाद कोई उनकी 'तथ्यात्मक गड़बड़ियों' पर कोई ध्यान भी नहीं देता।

आप एक 'पॉपूलर खेल' पर बनी फिल्म को याद करें जो अपने वक्त में हिट हुई लेकिन इसकी असली कहानी का नायक हिन्दू नाम का खिलाड़ी था जिसकी वजह से इंडिया फाइनल में हार गया था। हार के लिए बहुत से लोगों ने उसे ही जिम्मेदार करार देते हुए उसे खलनायक जैसा बना दिया था जबकि फिल्म में उसे दूसरी पहचान वाला नाम दे दिया गया जो कुछ-कुछ दूसरी पहचान वाला था। ऐसी न जाने कितनी फिल्में रही हैं, जिनमें ऐसी हेराफेरियां की जाती रही हैं।

अब हम कंगना की एमरजेंसी पर आई आपत्तियों को देखें तो वहां तथ्यों की अनदेखी हुई है लेकिन फिर भी एक समुदाय को आपत्ति है। बहरहाल, आजादी के पक्षधर होते हुए भी हम सेंसर का इंतजार करेंगे कि वह आगे क्या करता है? यों हमारा मानना है कि कलाओं को पर्याप्त आजादी चाहिए लेकिन कोई भी आजादी 'बेहद' तो नहीं हो सकती। अगर 'बेहद' होगी तो वह दूसरों की 'हदों' से टकराएगी और फिर आपत्ति होगी, हल्ला होगा, हल्ला होगा तो कानून व्यवस्था के सवाल भी उठेंगे। माना कि हर कला 'पूर्वाग्रहग्रस्त' होती है लेकिन अगर कलाएं एजेंडा लेकर आती हैं तो उनका क्या किया जाए? बहुत से लोग ऐसे विवादों से ही कमाई करते हैं जबकि 'उत्तम कोटि' की कला वो होती है जो अपनी बात कुछ इस तरह से कहती है कि जिसे कमोबेश सभी पसंद करें। अच्छी 'पॉपूलर कल्चर' का यही बुनियादी सूत्र है कि वह सबकी 'औसत अभिरुचि' को अपील करे...उच्च कोटि के कलाकार यही करते हैं लेकिन जो निम्न कोटि के होते हैं वे 'छेड़छाड़' कर विवाद पैदा कर अपनी कमाई करते हैं, और कलाकार बनना चाहते हैं।

अमेरिका में मोदी यूनुस मुलाकात

वैश्विकी

डॉ. दिलीप चौबे

वास्तव में पड़ोसी देश में इस समय बंगाली अस्मिता और इस्लामी पहचान के बीच संघर्ष चल रहा है। आश्चर्य की बात है कि अमेरिका जैसे पश्चिमी देश इस्लामी पहचान की वकालत करने वाली ताकतों का समर्थन कर रहे हैं

बांग्लादेश में तख्ता पलट के एक महीने बाद ही यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि देश की शोर जा रहा है। अमेरिका के समर्थन से सत्ता की बागडोर संभालने वाले मोहम्मद यूनुस देश में लोकतंत्र की स्थापना करेंगे अथवा सेवा की कठपुतली बने रहेंगे यह भी अभी साफ नहीं है। कहने के लिए यूनुस नोबैल पुरस्कार विजेता और गरीबों की खुशहाली के लिए आर्थिक क्रांति का वाहक बनने वाले व्यक्ति हैं लेकिन, हाल के वर्षों में उनकी गतिविधियां संदिग्ध रही हैं। प्रधानमंत्री शेख हसीना ने मोहम्मद यूनुस के कारनामों की जांच कर कर उन्हें हाशिये पर कर दिया था। छात्र आंदोलन के नाम पर देश में अराजकता पैदा कर यूनुस को अब शेख हसीना से बदला लेने का मौका मिला है। अमेरिका सहित पश्चिमी देश भी इस फिराक में हैं कि वह नई हुकूमत के जरिए अपने भू राजनीतिक हितों को पूरा करें।

यूनुस के हालिया बयान भारत के लिए चिंता पैदा करते हैं। इतना ही नहीं मणिपुर में हाल में हुए ड्रोन और रॉकेट हमले से सुरक्षा एजेंसियों के कान खड़े हो गए हैं। भारत को अब दोहरे खतरे का सामना है। एक और पड़ोस में पाकिस्तान जैसा एक विरोधी देश है वहीं मणिपुर सहित पूरे पूर्वोत्तर भारत में सुरक्षा चुनौतियां पैदा हो गई हैं। यूनुस के हालिया बयानों से पता चलता है कि वह एक अपरिपक्व और गैर जिम्मेदाराना नेता हैं। वह भारत से मांग कर रहे हैं कि शेख हसीना को उनके कथित अपराधों के लिए बांग्लादेश को सौंपा जाए। उनका यह भी कहना है कि यदि शेख हसीना भारत में ही रहती हैं तो उन्हें अपना मुंह बंद रखना होगा। यूनुस, कट्टरपंथी जमाते इस्लामी और हिफाजत इस्लाम जैसे संगठन बांग्लादेश का नया इतिहास लिख रहे हैं। इसमें 1971 के मुक्ति संघर्ष का अवमूल्यन किया जा रहा है। मुक्ति वाहिनी के योद्धाओं और भारतीय सैनिकों के शौर्य और बलिदान को मिटाने की कोशिश की जा रही है।

आज के माहौल में इस तरह के कुकृत्यों के खिलाफ विरोध करना आसान नहीं है। फिर भी बांग्लादेश का मौन बहुमत धीरे-धीरे अपनी आवाज बुलंद करने की कोशिश कर रहा है। हाल में पूरे बांग्लादेश में लाखों लोगों ने राष्ट्रगान 'आमार सोनार बांग्ला' का सामूहिक रूप से गायन किया। यह यूनुस और कट्टरपंथी इस्लामी संगठनों को पहले चेतावनी है। उल्लेखनीय है कि जमाते इस्लामी गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर विरचित राष्ट्रगान को बदलना चाहती है। जाहिर है उसकी मंशा एक ऐसे मूल्की तराने की है जिसमें इस्लाम का गौरव गान हो।

वास्तव में पड़ोसी देश में इस समय बंगाली अस्मिता और इस्लामी पहचान के बीच संघर्ष चल रहा है। आश्चर्य की बात है कि अमेरिका जैसे पश्चिमी देश इस्लामी पहचान की वकालत करने वाली ताकतों का समर्थन कर रहे हैं। इतना ही नहीं भारत सहित अनेक देशों के लोकतंत्र और उदारवाद समर्थक बुद्धिजीवी भी नई हुकूमत के समर्थन में तर्क दे रहे हैं। ये लोग इस हकीकत को नजरअंदाज कर रहे हैं कि इस्लामी कट्टरपंथ का जिन्न बोतल से बाहर आ गया है जो धीरे-धीरे पूरे समाज को धर्मांधता की ओर धकेल देगा। सबसे भयावह स्थिति यह बन सकती है कि बांग्लादेश नया अफगानिस्तान या सीरिया बन जाए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मोहम्मद यूनुस इस महीने के उत्तरार्द्ध में अमेरिका की यात्रा करने वाले हैं। उन्हें संयुक्त राष्ट्र अधिवेशन में भाग लेना है। यूनुस यह चाहेंगे कि मोदी से उनकी मुलाकात हो जिसमें वह भारत के साथ रिश्तों को पटरी पर लाने की कोशिश करें। अमेरिका की ओर से भी प्रधानमंत्री मोदी पर यह दबाव होगा कि वह बांग्लादेश के प्रति अपना रुख नरम करें। अमेरिका के लिए बंगाल की खाड़ी में अपने भू-राजनीतिक हितों को पूरा करने के लिए जरूरी है कि भारत और बांग्लादेश के बीच संबंध सामान्य रहे। मणिपुर में हालिया हमलों से यह संकेत मिलता है कि बांग्लादेश और सीमावर्ती म्यांमार इलाके से भारत के खिलाफ। भारत के खिलाफ तोड़-फोड़ की कार्रवाई शुरू हो सकती है। यदि यह जारी रहती है तो भारत कूटनीतिक ही नहीं बल्कि सैन्य रूप से भी इनका मुकाबला करेगा।

दुष्कर होती जा रही पेयजल की समस्या

मुद्दा

भगवती प्र. डोभाल

दुनिया की आधी से अधिक आबादी यानी 60 फीसद लोग स्वच्छ जल के अभाव से त्रस्त हैं। बहुत सारे सर्वेक्षणों के नतीजे हैं कि पीने का साफ पानी न मिलने के कारण लोग तरह-तरह के रोगों के शिकार हो रहे हैं। सर्वेक्षणों में जानने की कोशिश की गई कि वे अपने पेय जल को कितना सुरक्षित और स्वच्छ मानते हैं। इस कार्य को नॉर्थवेस्टर्न विश्वविद्यालय और उत्तरी कैरोलिना के चैपल हिल विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने अपनी रिपोर्ट में जानकारी दी है कि आम नागरिक इस बात से परेशान है कि जब नल का पानी अक्सर गंदा रहता है, तब वे बोतलबंद पानी पीने की कोशिश करते हैं, लेकिन बोतलबंद पानी बहुत महंगा होता है। दूसरी ओर, बोतलबंद पानी के इस्तेमाल ने पर्यावरण को भी दूषित कर दिया है। प्लास्टिक की बोतल होने की वजह से इसे हर जगह पानी पीने के बाद फेंक दिया जाता है, ये बोतलें आज परेशानी का कारण भी बन चुकी हैं जो ग्लोबल वार्मिंग में सहायक हैं।

दुनिया में जल संसाधनों में भारत की हिस्सेदारी सिर्फ चार फीसद है जो दुनिया की आबादी का 18 फीसद है। एक अध्ययन के अनुसार भारत में 71 फीसद जल संसाधन की मात्रा देश के 36 फीसद क्षेत्रफल में सिमटी हुई है और बाकी 64 फीसद क्षेत्रफल के पास देश के 29 फीसद जल संसाधन उपलब्ध हैं। भारत में पीने के पानी के कई प्राकृतिक स्रोत हैं; सर्वश्रेष्ठ स्वच्छ जल वाले राज्य उत्तराखंड, हिमाचल, मेघालय, सिक्किम और केरल हैं। 2021 में जल शक्ति मंत्रालय के अनुसार देश में प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक जल उपलब्धता 1,486 क्यूबिक मीटर से घट कर 2031 तक 1,367 क्यूबिक मीटर होने की संभावना है। 1,700 घन मीटर से कम का जल स्तर काफी सोचनीय स्थिति को इंगित करता है और 1,000 घन मीटर का होना जल की भारी कमी का संकेत है।

देश में जल निकायों की संख्या के मामले में शीर्ष पांच राज्य हैं-पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और असम, जो देश के कुल जल निकायों का लगभग 63 फीसद हिस्सा बनाते हैं। भारत में भीषण गर्मी में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल जल निकायों में काफी आगे है। बढ़ती आबादी के बावजूद जल संसाधनों को संरक्षित रखने के कारण यह झीलों के शहर के रूप में भी मानी जाती है। भोपाल में अलग-अलग आकार के 18 जल निकाय हैं। आज भी देश की करीब 5 फीसद जनसंख्या यानी लगभग साढ़े सात करोड़ लोगों के लिए पीने का पानी नहीं है; और करीब डेढ़ लाख बच्चे हर वर्ष गंदे पानी की वजह से होने वाली बीमारियों के कारण मर जाते हैं। प्रति व्यक्ति, प्रति वर्ष उपलब्ध जल की मात्रा के मामले में भारत दुनिया में 133वें पायदान पर है। भारत दुनिया का दूसरा बड़ा जल उपभोक्ता भी है।

गौर करें तो पता चलता है कि सबसे अधिक पानी की खपत वाली फसल चावल, गेहूं और गन्ना हैं। इन फसलों को अन्य फसलों की अपेक्षा 80 फीसद पानी की जरूरत होती है। प्रसिद्ध पर्यावरणविद सुंदर लाल बहुगुणा ने चावल न खाने की प्रतिज्ञा ले रखी थी। एक बार इस प्रसंग में मैंने चावल न खाने का कारण उनसे जानना चाहा तो उन्होंने बताया, देश में पानी नहीं है और हम अधिक से अधिक चावल की फसलों को उगाने का प्रयास कर रहे हैं, इन चावलों को उपजाने के कारण हम अपने पीने के पानी को जाया कर रहे हैं।' वास्तव में ऐसी सोच ही देश में पेय जल को संरक्षित करने का उपाय हो सकता है।

पंजाब-हिमाचल की आर्थिकी गड़बड़ाई

रेवड़ी कल्चर

ललित गर्ग

दिल्ली, पंजाब और हिमाचल सरकारों के सम्मुख वित्तीय संकट के धुंधलके छाने लगे हैं। सत्ता पर बैठी आम आदमी पार्टी एवं कांग्रेस की सरकारों के सामने चुनाव के दौरान वोटरों को लुभाने के लिए की गई फ्रीबीज या रेवड़ी कल्चर की घोषणा आर्थिक संकट का बड़ा कारण बन रही हैं। मुफ्त की रेवड़ियां बांटने एवं लोक-लुभावन घोषणाओं के कितने भारी नुकसान होते हैं, इस बात को दिल्ली, पंजाब और हिमाचल सरकारों के सामने खड़ी वित्तीय परेशानियों से समझा जा सकता है। इन सरकारों के लगातार बढ़ते राजस्व घाटे और बड़ी होतीं देनदारियां राज्य की अर्थव्यवस्था पर भारी पड़ रही हैं।

विकास योजनाओं को तो छोड़ें, इन राज्यों में कर्मचारियों को वेतन और सेवानिवृत्त कर्मियों को समय पर पेंशन देने तक में मुश्किलें आ रही हैं। इन जटिल स्थितियों को लेकर 'रेवड़ी कल्चर' पर न्यायालय से लेकर बुद्धिजीवियों एवं राजनीतिक क्षेत्रों में व्यापक चर्चा हैं। पंजाब के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक यानी कैग की हालिया रिपोर्ट में राज्य की वित्तीय प्राप्तियों और खर्चे के बीच बढ़ते राजकोषीय अंतर को उजागर किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मुफ्त की संस्कृति पर तीखे प्रहार करते हुए इसे देश के लिए नुकसानदायक परंपरा बता चुके हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार भी इस चलन पर चिंता जता चुके है। नीति आयोग के साथ रिजर्व बैंक भी इस चलन पर चिंतित हैं, लेकिन राजनीतिक दल बेअसर हैं।

कैग की रिपोर्ट बताती है कि कैसे पंजाब राज्य का राजस्व घाटा सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 1.99 फीसद लक्ष्य के मुकाबले 3.87 फीसद तक जा पहुंचा है। बेहद चिंताजनक स्थिति है कि राज्य का सार्वजनिक ऋण जीएसडीपी का 44.12 फीसद हो गया है। अब भी सत्ताधीश वित्तीय अनुशासन का पालन नहीं करते एवं मुक्त की सुविधाएं देने से बाज नहीं आते तो निश्चित ही राज्य को बड़ी मुश्किल की ओर धकेलने जैसी बात होगी।

जटिल होते हालात को देखते हुए अपेक्षा है कि राजनेता सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए सब्सिडी की राजनीति एवं मुफ्त की संस्कृति से परहेज करें और वित्तीय अनुशासन से राज्य की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का प्रयास करें। जब भी ऐसी लोक-लुभावन घोषणाएं की जाती हैं तो उन दलों को अपने घोषणापत्र में यह बात स्पष्ट करनी चाहिए कि वे जो लोकलुभावनी योजना लाने जा रहे हैं, उसके वित्तीय स्रोत क्या होंगे? कैसे और कहां से यह धन जुटाया जाएगा? जनता को भी सोचना चाहिए कि मुफ्त के लालच में दिया गया वोट कालांतर में उनके हितों पर भारी पड़ेगा। जनता को गुमराह करते हुए, ठगते हुए देश में रेवड़ियां बांटने का वादा और फिर उन पर जैसे-तैसे और अक्सर आधे-अधूरे ढंग से अमल का दौर चलता ही रहता है। लोकलुभावन वादों को पूरा करने की लागत अंततः मतदाताओं खासकर करदाताओं को ही वहन करनी पड़ती है-अक्सर करों अथवा उपकरों के रूप में।

मुफ्त रेवड़ियां देने से मुफ्तखोरी की संस्कृति जन्म लेती है। मुफ्त की सुविधाएं पाने वाले तमाम लोग अपनी आय बढ़ाने के जतन करना छोड़ देते हैं। पंजाब में महिलाओं को नगद राशि देने की घोषणा हुई जबकि वहां की महिलाएं समृद्ध हैं। दिल्ली में उन महिलाओं को भी डीटीसी बसों में मुफ्त यात्रा की सुविधा दी गई है, जिन्हें इस तरह की सुविधा की जरूरत नहीं। आधी आबादी को मुफ्त यात्रा की सुविधा देने से दिल्ली में डीटीसी को हर साल 15 करोड़ रुपये तक का नुकसान होगा। इस राशि का उपयोग दिल्ली के इंफ्रास्ट्रक्चर पर किया जा सकता है। मुफ्तखोरी की राजनीति से देश का आर्थिक बजट लडखड़ाने का खतरा है और इसके साथ निष्क्रियता एवं अकर्मण्यता को भी बल मिलेगा। हिन्दुस्तान में लोगों को बहुत कम में जीवन निर्वहन करने की आदत है। ऐसे में जब मुफ्त राशन, बिजली, पानी, शिक्षा, चिकित्सा मिलेगा तो काम क्यों करेंगे।

'गरीब की थाली में पुलाव आ गया है, लगता है शहर में चुनाव आ गया है' भारत की राजनीति से जुड़ी विसंगतियों एवं विडंबनाओं पर ये दो पंक्तियां सटीक टिप्पणी हैं। चुनाव आते ही वोटरों को लुभाने के लिए जिस तरह राजनीतिक दल और उनके नेता वायदों की बरसात करते हैं, यह शासन-व्यवस्थाओं को गहन अंधेरों में धकेल देता है। मुफ्त की संस्कृति को कल्याणकारी योजना का नाम देकर राजनीतिक लाभ की रोटियां सेंकी जाती रही हैं। भारत जैसे विकासशील देश के लिए मुक्त संस्कृति अभिशाप बनती जा रही है। सच भी है कि मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग आज भी इस स्थिति में है कि कथित तौर पर मुफ्त या सस्ती चीजें उसके वोट के फैसले को प्रभावित करती हैं। मुफ्त की 'रेवड़ी' और कल्याणकारी योजनाओं में संतुलन कायम करना आवश्यक है, परंतु वोट खिसकने के डर से राजनीतिक दल इस बारे में मौन धारण किए रहते हैं, बल्कि न चाहते हुए भी इसे प्रोत्साहन भी देते हैं। फ्रीबीज या मुफ्त उपहार न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया में वोट बटोरने एवं राजनीतिक धरातल मजबूत करने का हथियार है। मुफ्त उपहार के मामले में कोई देश पीछे नहीं है। अनेक देश इस दौड़ में शामिल हैं। संभव है कि भारत ही इस चलन पर नियंत्रण को लेकर कोई राह दुनिया को दिखाए।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए मुक्त संस्कृति अभिशाप बनती जा रही है। सच भी है कि मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग आज भी इस स्थिति में है कि कथित तौर पर मुफ्त या सस्ती चीजें उसके वोट के फैसले को प्रभावित करती हैं। मुफ्त की 'रेवड़ी' और कल्याणकारी योजनाओं में संतुलन कायम करना आवश्यक है, परंतु वोट खिसकने के डर से राजनीतिक दल इस बारे में मौन धारण किए रहते हैं, बल्कि न चाहते हुए भी इसे प्रोत्साहन भी देते हैं। फ्रीबीज या मुफ्त उपहार न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया में वोट बटोरने एवं राजनीतिक धरातल मजबूत करने का हथियार है। मुफ्त उपहार के मामले में कोई देश पीछे नहीं है। अनेक देश इस दौड़ में शामिल हैं

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
। समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750

वर्ष-34, अंक 25 आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

मैं ईसाई स्कूल में पढ़ा। हमें रामायण और महाभारत का अध्ययन कराया गया। हमने मुस्लिम और जैन प्रार्थनाएं सुनीं। हमारे शिक्षक धर्मनिरपेक्ष थे। किसी ने नहीं कहा कि शाकाहारी श्रेष्ठ या बेहतर होते हैं।
—देवदत्त पटनायक, धर्म मर्मज्ञ @devduttmyth

साक्षरता दिवस

योगेश कुमार गोयल

मानव चेतना बढ़ाने को हो सार्थक प्रयास

विश्व भर में लोगों को साक्षरता के महत्त्व के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से प्रति वर्ष 8 सितम्बर को 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाया जाता है। दुनिया से अशिक्षा समाप्त करने के संकल्प के साथ इस बार 58वां 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' है। पहली बार यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) द्वारा 17 नवम्बर, 1965 को 8 सितम्बर को ही अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाए जाने की घोषणा की गई थी, जिसके बाद 8 सितम्बर, 1966 से शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने तथा विश्व भर के लोगों का इस ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रति वर्ष इसी दिन यह दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया गया। वास्तव में यह संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का ही प्रमुख घटक है।

प्रति वर्ष इस दिवस के लिए विशेष थीम चुनी जाती है और इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस की थीम है-बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देनाः आपसी समझ और शांति के लिए साक्षरता-जो संचार को बेहतर बनाने और विविध संस्कृतियों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देने के लिए कई भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने के महत्त्व पर जोर देती है। पिछले साल साक्षरता दिवस-'संक्रमण काल में दुनिया के लिए साक्षरता को बढ़ावा देनाः टिकाऊ और शांतिपूर्ण समाजों की नींव का निर्माण-थीम के साथ मनाया गया था। इस दिवस के आयोजन का उद्देश्य कक्षा, परिवार, कार्यस्थल, समुदाय, ऑनलाइन इत्यादि साक्षरता सीखने के विभिन्न मौजूदा स्थान और उनके विभिन्न अंतर्संबंधों की जांच करना है ताकि सीखने के मार्ग को सुगम और लचीला बनाया जा सके। यह सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण, न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए साक्षरता सीखने के स्थानों के मौलिक महत्त्व पर पुनर्विचार करने का अवसर होगा। निरक्षरता खत्म करने के लिए ईरान के तेहरान में शिक्षा मंत्रियों के विश्व सम्मेलन के दौरान वर्ष 1965 में 8 से 19 सितम्बर तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा कार्यक्रम पर चर्चा करने के लिए पहली बार बैठक की गई थी और यूनेस्को ने नवम्बर, 1965 में अपने 14वें सत्र में 8 सितम्बर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस घोषित किया। उसके बाद से सदस्य देशों द्वारा प्रति वर्ष 8 सितम्बर को 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मनाया जा रहा है। यह दिवस लगातार शिक्षा प्राप्त करने की ओर लोगों को बढ़ावा देने के लिए तथा परिवार, समाज और देश के लिए अपनी जिम्मेदारी को समझने के लिए मनाया जाता है।

दुनिया भर में आज भी करोड़ों लोग निरक्षर हैं, और यह दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत, सामुदायिक तथा सामाजिक रूप से साक्षरता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए विश्व में सभी लोगों को शिक्षित करना ही है। साक्षरता दिवस के माध्यम से यही प्रयास किए जाते हैं कि तमाम बच्चों, व्यस्कों, महिलाओं तथा वृद्धों को भी साक्षर बनाया जाए। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार दुनिया भर में फिलहाल करीब चार अरब लोग साक्षर हैं लेकिन विडंबना है कि आज भी विश्व भर में करीब एक अरब लोग ऐसे हैं, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते। तमाम प्रयासों के बावजूद दुनिया भर में 70 करोड़ से भी ज्यादा युवा साक्षरता की कमी से प्रभावित हैं अर्थात प्रत्येक पांच में से एक युवा साक्षर नहीं है, जिनमें से दो तिहाई महिलाएं हैं। आंकड़े बताते हैं कि 6-7 करोड़ बच्चे आज भी ऐसे हैं, जो कभी विद्यालय तक नहीं पहुंचते जबकि बहुत से बच्चों में नियमितता का अभाव है, या फिर वे किसी न किसी कारणवश विद्यालय जाना बीच में ही छोड़ देते हैं। करीब 58 फीसद के साथ सबसे कम व्यस्क साक्षरता दर के मामले में दक्षिण और पश्चिम एशिया सर्वाधिक पिछड़े हैं।

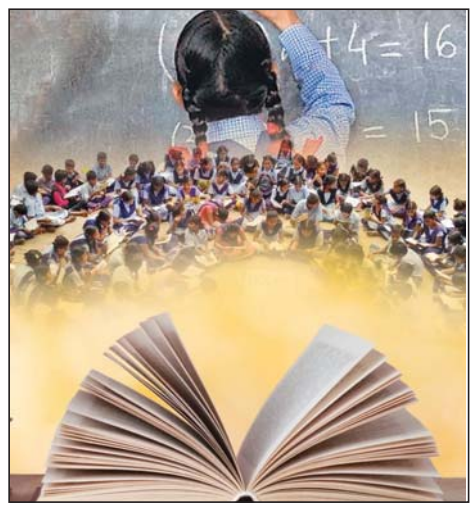

यूनेस्को के अनुसार 2022 में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के 7 व्यस्कों में से कम से कम एक में बुनियादी साक्षरता कौशल की कमी थी। लाखों बच्चे पढ़ने, लिखने और अंकगणित में न्यूनतम स्तर की दक्षता हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं जबकि 6-18 वर्ष की आयु के लगभग 250 मिलियन बच्चे स्कूल से बाहर हैं। इस समय वैश्विक औसत साक्षरता दर 86.81 प्रतिशत है लेकिन कुछ देशों की यह दर बेहद कम है। दुनिया के एक दर्जन से ज्यादा देश तो ऐसे हैं, जिनकी साक्षरता दर 50 प्रतिशत से भी कम है। भारत में राष्ट्रीय सांख्यिकी संगठन (एनएसओ) ने 2017-18 में 'घरेलू सामाजिक उपभोगः भारत में शिक्षा' नामक एक रिपोर्ट जारी की थी, जिसमें बताया गया था कि भारत में 7 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों में साक्षरता दर करीब 77.7 प्रतिशत थी, जो 2011 में 74.04 प्रतिशत थी अर्थात पिछली जनगणना के आंकड़ों की तुलना में साक्षरता दर में 3.6 फीसद से ज्यादा की वृद्धि हुई। रिपोर्ट के अनुसार भारत की पुरुष साक्षरता दर 84.7 फीसद और महिला साक्षरता दर 70.3 फीसद है।

स्पष्ट है कि अभी भी पुरुषों तथा महिलाओं की साक्षरता दर के बीच गंभीर अंतर बरकरार है। हालांकि माना जा रहा है कि कई महिला साक्षरता अभियानों की शुरुआत के साथ आने वाले वर्षों में यह लैंगिक अंतर कम हो सकता है। फिलहाल, भारत के शहरी इलाकों में साक्षरता दर 87.7 तथा ग्रामीण इलाकों में 73.5 फीसद है, और यूनेस्को का मानना है कि भारत 2060 तक सार्वभौमिक साक्षरता हासिल कर सकेगा। बहरहाल, समझ लेना बेहद जरूरी है कि साक्षरता का अर्थ पढ़ना-लिखना या शिक्षित होना ही नहीं है, बल्कि सफलता और जीने के लिए भी साक्षरता बेहद महत्त्वपूर्ण है। यह लोगों को उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करते हुए सामाजिक विकास का आधार स्तंभ बन सकती है। भारत हो या दुनिया के अन्य देश, गरीबी मिटाना, बाल मृत्यु दर कम करना, जनसंख्या वृद्धि नियंत्रित करना, लैंगिक समानता प्राप्त करना आदि समस्याओं के समूल विनाश के लिए सभी देशों का पूर्ण साक्षर होना बेहद जरूरी है।

साक्षरता में ही वह क्षमता है, जो परिवार और देश की प्रतिष्ठा बढ़ा सकती है। भारत में 'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण' राष्ट्रीय स्तर की शीर्ष एजेंसी है, जो 1988 से ही 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' निरंतर मना रहा है। वैसे आजादी के बाद साक्षरता दर देश में तेजी से बढ़ी है। हालांकि आज भारत में करीब 77.7 फीसद नागरिक साक्षर हैं जबकि ब्रिटिश शासन के दौरान 12 फीसद लोग ही साक्षर थे और देश की आजादी के समय साक्षरता दर करीब 18 प्रतिशत थी लेकिन पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य तक पहुंचना अभी भी दूर की कौड़ी प्रतीत होती है। विद्यालयों की कमी, विद्यालयों में शौचालयों आदि की कमी, निर्धनता, जातिवाद, लड़कियों के साथ छेड़छाड़ या रेप जैसी घटनाओं का डर, जागरूकता की कमी इत्यादि साक्षरता का लक्ष्य हासिल न हो पाने के मुख्य कारण रहे हैं। अतः इनके निदान के लिए गंभीर प्रयास होने नितांत आवश्यक हैं ताकि भारत पूर्ण साक्षर राष्ट्र बनने का गौरव हासिल कर सके। ■

साक्षरता में ही वह क्षमता है, जो परिवार और देश की प्रतिष्ठा बढ़ा सकती है। भारत में 'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण' राष्ट्रीय स्तर की शीर्ष एजेंसी है, जो 1988 से ही 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' निरंतर मना रहा है। वैसे आजादी के बाद साक्षरता दर देश में तेजी से बढ़ी है। हालांकि आज भारत में करीब 77.7 फीसद नागरिक साक्षर हैं जबकि ब्रिटिश शासन के दौरान 12 फीसद लोग ही साक्षर थे और देश की आजादी के समय साक्षरता दर करीब 18 प्रतिशत थी लेकिन पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य तक पहुंचना अभी भी दूर की कौड़ी प्रतीत होती है

डॉ. चिन्मय पाण्ड्या

बुद्धि व ज्ञान के देवता-गणेश जी

हिन्दू देवी-देवताओं में सबसे प्रसिद्ध और सबसे अधिक पूजे जाने वाले देवी-देवताओं में से एक हैं गणपति गणेश जी। वे गणपति संप्रदाय के सर्वोच्च देवता हैं। सनातन धर्मावलम्बियों के प्रथम पूज्य भी हैं। हिन्दी कैलेंडर के अनुसार उनका आविर्भाव दिवस भाद्रपद की चतुर्थी को मनाया जाता है। गणेश जी शुभारंभ के लिए सुद्धि प्रदान करते हैं, और काम को पूरा करने की शक्ति भी। वे विघ्न को दूर कर अभय देते हैं, और सही-गलत का भेद बता कर न्याय भी करते हैं। गणेश के इन्हीं रूपों में उनके प्रथम पूज्य होने का कारण छिपा है। यह त्योहार देश के प्रायः समस्त भागों में विविध रूप में मनाया जाता है। लेकिन महाराष्ट्र में प्रमुख पर्व के रूप में मनाया जाता है।

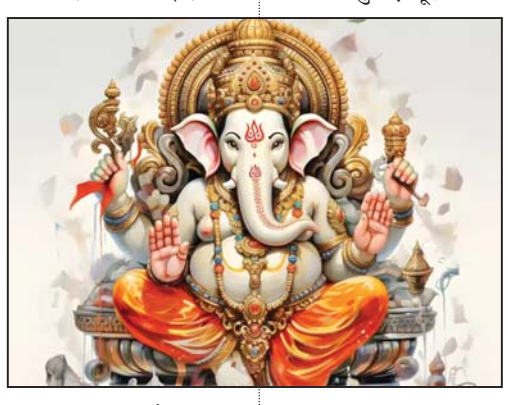

गणेश जी को विघ्नहर्ता के रूप में प्रथम पूज्य देवता माना जाता है। हिन्दू परंपरा के अनुसार प्रत्येक शुभ कार्य की शुरुआत भी गणेश जी की पूजा-आराधना से होती है। मान्यता है कि गणेश जी की पूजा से मनोवांछित कार्यों में सफलता मिलती है। गणेश चतुर्थी को नई शुरुआत और उपक्रमों का प्रतीक माना जाता है। लोग इस दिन नये काम की शुरुआत करते हैं, और अपनी मनोकामनाएं पूरी होने की कामना करते हैं। गणेश जी की पूजा से घर, परिवार में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। भगवान गणेश को बुद्धि और ज्ञान का देवता भी माना जाता है। इसलिए विद्याध्ययन करने वाले विद्यार्थी इस दिन भगवान गणेश से अपनी पढ़ाई में सफलता के लिए प्रार्थना करते हैं।

हिन्दू पंचांग के अनुसार इस वर्ष गणेश चतुर्थी पर सर्वार्थ सिद्धि योग, रवि योग, ब्रह्म योग और इंद्र योग का विशेष संयोग बन रहा है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में कहा गया है कि गणेश चतुर्थी के दिन ही महर्षि वेद व्यास ने भगवान गणेश से महाभारत की रचना को क्रमबद्ध करने की प्रार्थना की थी। गणेश जी सिद्धि विनायक के नाम से भी जाने जाते हैं, जिन्होंने हर युग में अलग-अलग रूपों में अवतार लिया है। उनकी शरीर की संरचना में विशिष्ट और गहरा अर्थ निहित है।

शिवमानस पूजा में श्री गणेश को प्रणव के रूप में उल्लेखित किया गया है। बड़े कान अत्यधिक ग्राह्यशक्ति और छोटी-पैनी आंखें सूक्ष्म-तीक्ष्ण दृष्टि की सूचक हैं। उनकी लंबी नाक (सूंड) महाबुद्धित्व का प्रतीक है। गणेश जी का एकदंत एकाग्रता का परिचायक है। चारों दिशाओं में सर्वव्यापकता के प्रतीक भगवान गणेश की चार भुजाएं सूक्ष्म शरीर की चार आंतरिक विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये हैं-मन, बुद्धि, अहंकार और विवेक। वे लंबोदर हैं क्योंकि समस्त चराचर सृष्टि उनके उदर में विचरती है।

भगवान गजानन की सवारी चूहा है। चूहा बंधनों को काटता है। तात्पर्य यह हुआ कि अगर हम लोभ, मोह, अहंता, ईर्ष्या, द्वेष आदि बंधनों को काट कर आगे बढ़ें, तो हम भी उनका वाहन बन सकते हैं। भगवान गणेश की कृपा हम पर निरंतर बरसती रहेगी। चूहा उस मंत्र के समान है, जो अज्ञान की अनन्य परतों को पूरी तरह काट सकता है, और उस परम ज्ञान को प्रत्यक्ष कर सकता है, जिसके भगवान गणेश प्रतीक हैं। हमारे पूर्वज बहुत बुद्धिशाली थे। तभी तो उन्होंने दिव्यता को शब्दों की बजाय इन प्रतीकों के रूप में दर्शाया क्योंकि शब्द में बदलाव संभव हैं, लेकिन प्रतीक कभी नहीं बदलते। जब भी हम उस सर्वव्यापी का ध्यान करें, तब हमें इन गहरे प्रतीकों को अपने मन में रखना चाहिए। उस समय यह याद रखें कि गणेश जी हमारे भीतर ही हैं। यही वह ज्ञान है, जिसके साथ हमें गणेश चतुर्थी मनानी चाहिए।

(लेखक देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति और प्रसिद्ध आध्यात्मिक चिंतक हैं) ■

हिन्दी और भारतीय भाषा परस्पर पूरक

साल 1949 में संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया था। इसके बाद 1953 में हर साल 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाना शुरू किया गया। हिंदी के राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित-प्रसारित करने के लिए इसे देश भर में मनाया जाता है लेकिन हिन्दी और दूसरी तमाम भारतीय भाषाओं के सामने जो संकट है, उसे समझना जरूरी है। सवाल है कि आजादी के 77 साल बाद भी हिन्दी को क्यों अपनी सुरक्षा के लिए फिक्र करनी पड़ रही है? इस भाषायी और सांस्कृतिक संकट और महर्षि दयानंद व गांधी ने आजादी के बहुत पहले ही भारतीयों में अंग्रेजी के सम्मोहन को जान लिया था।

अंग्रेजी का खतरा महज हिन्दी के लिए ही नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं पर भी है। गांधी कहते हैं-'आप और हम चाहते हैं कि करोड़ों भारतीय आपस में अंतरप्रांतीय संपर्क कामय करें। जाहिर तौर पर अंग्रेजी के जरिए पीढ़ियां गुजर जाने के बाद भी हम आपस के संपर्क स्थापित न कर सकेंगे।' जाहिर तौर पर सात दशक गुजर जाने के बाद भी महर्षि दयानंद, गांधी, लोहिया द्वारा महसूस किया गया भाषायी संकट कहीं अधिक गहरा हो गया है। सच तो यह है कि हिन्दी और हिन्दीतर भाषाओं का आपसी भाईचारा कायम करने में यह सबसे बड़ा बाधक रहा है। ऐसे में डॉ. रामविलास शर्मा का यह कथन कितना प्रासंगिक हो जाता है-'हिन्दी अंग्रेजी का स्थान ले, इसकी बजाय यह वातावरण बनाना चाहिए कि सभी भारतीय भाषाएं अंग्रेजी का स्थान लें।' लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि सतहत्तर सालों में हिन्दी तमाम मुल्कों में जितनी तेजी से आगे बढ़ी, भारत में नहीं बढ़ पाई।

देश के प्रत्येक अंचल में हिन्दी उस आंचलिक भाषायी मिठास के रूप में मौजूद है। हमारे लिए जितनी महत्त्वपूर्ण हिन्दी है उतनी ही तमिल, तेलुगू, कन्नड़, पंजाबी, डोगरी, बोडो, मलयालम, बंगला, असमिया, मराठी और कश्मीरी हैं। यदि हिन्दी राजभाषा और राष्ट्रभाषा-रूपी गंगा की धारा है तो अन्य प्रादेशिक भाषाएं भी कावेरी, सतलज और ब्रह्मपुत्र की धाराएं हैं। जैसे सभी नदियां बहते हुए समुद्र में मिल कर एक हो जाती हैं उसी तरह भारत की सभी भाषाओं का मिलन भी निरंतर होता रहता है। सुब्रह्मण्यम भारती ने कहा था-'भारत माता भले ही 18 भाषाएं (अब 22 हो गई हैं) बोलती हों, फिर भी उसकी चिंतन प्रक्रिया एक ही है।' आज भूमंडलीकरण का दौर है। भाषा-संस्कृति की महत्ता बाजारवाद के आगे दबती दिख रही है, लेकिन इसे नकारा नहीं जा सकता कि भारतीय भाषाओं के अंतर्संबंध तथा भारतीय संस्कृति की विराटता आज पहले से अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। अपनी पहचान के लिए हमें हर हाल में इस संबंध को समझना और जीना होगा। बिना इसके भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। इन्हीं से हमारी पहचान है। हिन्दी सात दशक पहले इस देश की राजभाषा बनी थी, लेकिन राष्ट्रभाषा कब बनेगी, इस पर न कोई राजनेता बोलने की स्थिति में है, न हिंदी के ध्वजवाहक ही। यह जानते हुए भी कि हिन्दी को भारत की पहचान के लिए जीवित रहना ही नहीं, बल्कि मुखर भी रहना जरूरी है और हिन्दी न तो बिना भारतीय भाषाओं के सहयोग से जीवित रह सकती है, और न भारतीय भाषाएं हिन्दी के बिना जिंदा रह सकती हैं।

इस सच को समझने की बेहद जरूरी है कि भाषा के बिना न तो किसी देश की कल्पना की जा सकती है और न समाज की ही। इसलिए भाषा की उपेक्षा का मतलब स्वयं अपने अस्तित्व को ही नकारना है। जैसे विविधताओं के बीच भी सांस्कृतिक आदन-प्रदान कभी नहीं रुकता इसी तरह भाषायी विविधता होते हुए भी भाषाओं के मध्य आदान-प्रदान नहीं थमता। वह चाहे भाषायी संस्कृति के रूप में हो, या व्याकरणिक या वचनात्मक रूप में हो। भाषाओं के अंतर्संबंध को न तो रोका जा सकता है, और न समाप्त किया जा सकता है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का अंतर्संबंध प्रगाढ़ होने में सबसे बड़ी बाधा अंग्रेजी रही है।

अंग्रेजी ने स्वतंत्रता के पूर्व ही इसका जाल तैयार कर दिया था और भाषा, जो हमारे जीवन, समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग है, को राजनीतिक रंग दे दिया गया। स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद आज हम हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के संबंधों का अवलोकन करने पर पाते हैं कि ये संबंध सुदृढ़ होने की जगह निरंतर कमजोर हुए हैं। हिन्दी वालों को तमिल, तेलुगू, कन्नड़, पंजाबी और उड़िया शब्द-संस्कृति में तैरने की जगह अंग्रेजी के जाल-जंजाल अधिक भाते रहे हैं। इस बिडंबना और संकट को वर्षों पूर्व हिन्दी के महान उन्नायक फादर डॉ. कामिल बुल्के ने समझ लिया था। डॉ. बुल्के कहते हैं-'भारत पहुंच कर मुझे यह देखकर दुःख हुआ कि बहुत से शिक्षित लोग अपनी ही संस्कृति से नितांत अनभिज्ञ हैं, और अंग्रेजी बोलना तथा विदेशी सभ्यता में रंग जाना गौरव की बात समझते हैं।'

अंग्रेजों ने भारतीय इतिहास और संस्कृति को हर स्तर पर नीचे गिराने के षडयंत्र किए। ईसाई पादरी और विद्वानों ने हिन्दी सहित भारत की तमाम भाषाओं के बारे में जो लिखा, वह सच न होते हुए भी सच इसलिए माना गया कि अंग्रेजों की सत्ता और विचारों के खिलाफ कोई खुल कर बोलने से बचता रहा। यह बात भारतीय भाषाओं के वर्गीकरण के बारे में भी दिखाई देती है लेकिन कुछ भारतीय भाषाशास्त्रियों ने अंग्रेजों की इस शरारत को समझा। भारतीय भाषा आचार्य काशी राम शर्मा ने अपनी तथ्यपरक विवेचना से इस धारणा को निर्मूल साबित किया कि जो अभिलक्षण द्रविण भाषाओं (13 अभिलक्षण माने गए हैं) में पाए जाते हैं, वही अभिलक्षण उत्तर की भाषाओं में भी पाए जाते हैं। आचार्य काशीराम के शोध के अनुसार दक्षिण भारत की भाषाएं और हिन्दी का उत्स एक ही है। हिन्दी का स्वभाव और भारतीय भाषाओं का स्वभाव एक जैसा है। किसी भी स्तर पर टकराव नहीं है। फिर क्यों हिन्दी का विरोध गैर-हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्रों में यत्र-तत्र देखा जाता है?

■ *प्रस्तुति : अखिलेश आर्येन्दु*

https://t.me/AllNewsPaperPaid

राग रंग | आलोक पराड़कर

दिल शिकस्ता था मगर

सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ लखनऊ में रहते हैं, देश भर में घूमते हैं। समझ कर नाटक करते हैं, भारतेंदु नाट्य अकादमी के निदेशक रह चुके हैं। सत्तर पार हैं लेकिन सक्रियता बनी हुई है, अपनी संस्था नीपा रंगमंडली लेकर नाट्य समारोहों में जाते हैं, भारतेंदु नाट्य अकादमी के विद्यार्थियों के साथ भी नाटक करते हैं। निर्देशक हैं, 'भगवद्ज्जुकीयम' के सौ से अधिक प्रदर्शन कर चुके हैं। केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी से सम्मानित भी हैं।

कुछ वर्षों पूर्व उनके गुरु भारतेंदु नाट्य अकादमी के संस्थापक राज बिसारिया (अब दिवंगत) ने जब 'बेयरफुट इन एथेंस' नाटक किया था तो कुलश्रेष्ठ को सुकरात की मुख्य भूमिका में देख कर सभी आश्चर्य में थे क्योंकि बहुत कम लोगों ने उन्हें अभिनय करते हुए नहीं देखा था। इस संदर्भ में खुद उन्होंने बताया था कि मैंने करीब 25 वर्षों बाद अभिनय किया। भारतेंदु नाट्य अकादमी में प्रशिक्षण के दौरान बिसारिया जी के निर्देशन में दो नाटकों में काम किया था। एक था मोहन राकेश का 'बहुत बड़ा सवाल' और दूसरा था शंकर शेष का 'एक और द्रोणाचार्य'। 'एक और द्रोणाचार्य' में द्रोणाचार्य की भूमिका की थी। उसके बाद 1980 में बिसारिया जी ने जब 'अंधा युग' किया अकादमी के छात्रों के साथ तो उन्होंने मुझे अपने साथ सहनिर्देशक के रूप में काम करने का मौका तो दिया ही, धृतराष्ट्र की भूमिका भी दी। यह प्रस्तुति लखनऊ के बॉटनिकल गार्डन में हुई थी। कुलश्रेष्ठ ने बताया था कि मैंने एक बार उनसे पूछा था कि क्या सुकरात की भूमिका के लिए आपने मेरा चयन इसलिए किया कि मेरा चेहरा दाढ़ी और शक्ल की वजह से सुकरात के नजदीक है, तो उन्होंने कहा था कि शक्ल और दाढ़ी तो मैं पांच सौ रुपये के खर्च से बनवा सकता हूं। आपका चयन मैंने कुछ सोच कर ही किया है।

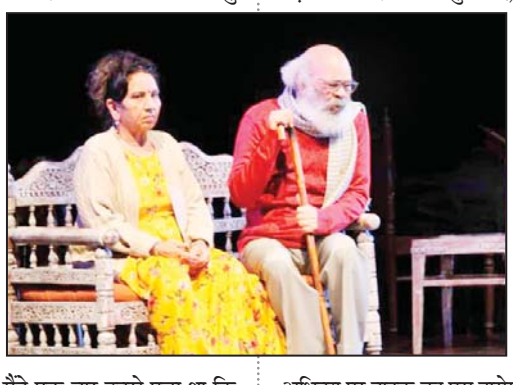

निर्देशक कुलश्रेष्ठ के भीतर कहीं न कहीं एक अभिनेता भी छुपा है, जो समय आने पर अपनी प्रतिभा दिखाता है। सुकरात के बाद उन्होंने 2014 में भारतीय मूल के फ्रांसीसी निर्देशक असील रईस के नाटक 'क्रूआजाद' में अभिनय किया था जो फ्रांसीसी नाटक 'क्रूसेड' का हिन्दी रूपांतरण था लेकिन इधर के वर्षों में वे पिछले साल ओटीटी पर 'सिर्फ एक बंदा काफी है' फिल्म में बाबा की भूमिका में अभिनय करते दिखे थे, रंगमंच पर अभिनय करते नहीं दिखे। खास बात यह भी रही कि उन्होंने अभिनय दूसरों के निर्देशन में किया, पहले अपने गुरु राज बिसारिया के निर्देशन में और बाद में दूसरे निर्देशकों के साथ। पिछले दिनों अभिनय में वापसी करते हुए उन्होंने 'शिकस्ता' नाटक तैयार किया है जिसके वे निर्देशक भी हैं। हालांकि इसके निर्देशन और लेखन में उनका साथ लखनऊ के युवा रंगकर्मी भारतेंदु कश्यप ने दिया है। लखनऊ में 22 अगस्त और चंडीगढ़ में 29 अगस्त को इसका मंचन हुआ। लखनऊ में 6 अक्टूबर को फिर मंचन होगा।

'शिकस्ता' अमेरिकी नाटककार डोनाल्ड एल. कोबर्न के नाटक 'द जिन गेम' पर आधारित है, जिसे नाटक के लिए पुलित्जर पुरस्कार भी मिला था। कोबर्न के माता-पिता के बीच दो साल बाद ही तलाक हो गया था और कोबर्न ने भी अपनी पहली पत्नी को तलाक देकर दूसरी शादी की थी। नाटक ताश के लोकप्रिय खेल जिन के बहाने वृद्धाश्रम में रह रहे दो वृद्धों के दुख-दर्द, जीवन में उनके अकेले पड़ जाने की दास्तान तो सुनाता है, लेकिन बार-बार उनके अहंकार और तानाशाही को भी उजागर करते हुए यह बताना भी चाहता है कि कहीं उनके अकेलेपन की वजह यही तो नहीं। खेल में पुरुष का बार-बार हार जाने, बातचीत में उत्तेजित हो जाने, एक-दूसरे के निकट रहने की आकांक्षा रखने के बावजूद एक-दूसरे को कमतर साबित करने की कोशिश भी करते रहने के प्रसंग आते हैं, और दोनों ही बुजुर्गों के व्यक्तित्व के कई रंग नाटक में खुलते हैं।

नाटक में सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ के साथ मृदुला भारद्वाज हैं, जो लखनऊ की वरिष्ठ निर्देशक और अभिनेत्री हैं। दोनों के ही अभिनय पर नाटक का पूरा दारोमदार है और वे इसका सफलतापूर्वक निर्वाह भी करते हैं, लेकिन यह जरूर है कि राज बिसारिया जैसा निर्देशक जब सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ से अभिनय कराता है तो उसका परिणाम कुछ और ही होता है, खुद अपने निर्देशन में, मध्यांतर के बाद ही वे अधिक सशक्त हो पाए हैं। मध्यांतर के पहले नाटक की गति थोड़ी धीमी है, खासकर जिन रम्मी के खेल को जिस प्रकार प्रमुखता दी गई है, वह उतना रोचक नहीं हो पाता है। मिनिमल थिएटर पर यकीन अच्छा है लेकिन मंच के बीचोंबीच सिंहासन की तरह रखी कुर्सी को आश्रम के परिवेश से मेल कराने में मुश्किल आती है लेकिन यह तो है कि लखनऊ के इन दो वेटरन रंगकर्मियों का अपने पात्रों जैसा ही उत्साह और जीवटता देखते ही बनता है। राहत इंदौरी का शेर याद आता है-'हिफ्ज थीं मुझ को भी चेहरों की किताबें क्या क्या, दिल शिकस्ता था मगर तेज नजर ऐसा था'। ■

कैनवस | जय त्रिपाठी

मौलिक सृजन में शब्दों की धारा

कला निर्माण की खोज में घूमते कलाकार की दृष्टि सदैव रचनात्मक विकास को खोजती है। कला में भाषा और साहित्य रचनात्मक धारा के रूप में चलते हैं। फर्क इतना ही है कि आम जन शब्दों को भाषा की पृष्ठभूमि में देखते हैं जबकि कला दोनों को लेकर आगे बढ़ती है। अतः जब कलाकार का पूरा जीवन कला, लेखन, साहित्य और यात्रा को समर्पित हो तो सृजन मार्ग पर रचनात्मकता के प्रति वह पूरी तरह समर्पित होता है। नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर एनेक्सी की कला दीर्घा में 'शब्दों से नहीं' (नॉट वीथ वर्ड्स) शीर्षक से सीरज सक्सेना की कला यात्रा पर उनकी कलाकृतियों की प्रदर्शनी प्रदर्शित है। शब्दों की धारा के प्रवाह को सृजन की मौलिकता में बांधे रखती यह प्रदर्शनी अप्रतिम कवि कुंवर नारायण की कविताओं को समर्पित है।

सीरज की कला यात्रा को रेखांकित करती प्रदर्शनी, जो आवश्यक रूप से भावनाओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विचारों को व्यक्त करना हो सकता है, लेकिन कलात्मक सृजन का विशिष्ट अभिव्यक्तिवादी दृष्टिकोण भावनाओं की अभिव्यक्ति का उत्पाद है जो कला के निर्माण का गठन करता है, अतः उनके कैनवस या सेरामिक शिल्प हों अथवा कागज की सतह पर गढ़े गए चित्र विशेष रूप से भावनात्मक जीवन से जुड़े हैं। छोटे आकार के शिल्पों में उकेरे गए कविताओं के चुनिंदा शब्द बहुत कुछ समाहित किए रहते हैं। रंग, रूप, आकार एंव बुनावट के माध्यम से कवि की कालजयी कविताओं पर गढ़े गये चित्र कलाकार में परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से ऊर्जा का संचार करते दिखते हैं।

अपनी साइकिल यात्रा के लिए जाने जाते कलाकार सीरज बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं, इन यात्राओं के अनुभवों को पुस्तक के रूप में सामने भी लाते हैं। इसी तरह सीरज जब अपने सेरामिक शिल्प पर कविता की पंक्ति गढ़ते हैं, तो सेरामिक एंव कागज आदि की अन्य सतहों पर सीरज के रंगाकार अभिव्यक्ति की नई भाषा रचते नजर आते हैं। सरल स्वभाव के इस कलाकार का चित्रण सरल आकारों की संभावनाओं को सबल करता है। अपनी कृतियों में सृजन के सरलीकरण से रचनात्मक होते सीरज की दृष्टि जीवंत और विचारशील यात्रा को रेखांकित करती है। मूर्तन से अमूर्तन होती कला के प्रति यह प्रदर्शनी केवल कविताओं का चित्रण नहीं, बल्कि कलाकार की संवेदना भी है। वैसे भी कला प्रदर्शनी कलाकार के कला मन के सपनों का संसार सरीखी होती है, जिसमें कलाकार की सोच और रचनात्मक ऊर्जा का लगातार विस्तार, जोश, सोच, रचनात्मक ऊर्जा और समर्पण होता है, जो किसी भी कलाकार को प्रेरित करता है। एक कलाकार की दृष्टि में सीरज कविताओं के बहाने जिस वस्तु, स्थान अथवा पात्र आदि को देखते हैं, उसे सरल और रचनात्मक रूपों में कुछ इस तरह बांधते हैं कि उसमें कलात्मक दृश्यात्मकता का बोध हो। दस सितम्बर तक प्रदर्शित सीरज सक्सेना की प्रदर्शनी 'शब्दों से नहीं' उनके रचनात्मक संसार के कला बोध को गहरे अर्थों में समृद्ध करती है।

नई दिल्ली की त्रिवेणी कला दीर्घा में प्रदर्शित **बंदना जैन** की एकल प्रदर्शनी में रचनाकार अनुभवों, रुचियों और वस्तुओं से उपजे भावों को न केवल अपनी सोच बल्कि समाज से मिली प्रेरणा को एक कलाकृति के माध्यम से कथा कहानियों की तरह गढ़ती हैं। दूर से देखने पर पहली नजर में इनके चित्र संग्रह से प्रतीत होते हैं पर बंदना की विधि इनके काम से गंभीर मंथन की ओर प्रेक्षक को उन्मुख कराती है। एक मुख्य आकृति में कई तत्वों के रूप में परत दर परत प्रयोग करना इनकी कलात्मक दूरदर्शिता और लगातार काम के अभ्यास को दर्शाता है। रंगों में मोनोटोन होने की प्रक्रिया भी कहीं-कहीं पर पुरानी को याद ताजा करने जैसा है। बंदना ने चित्रों में हर भाव को चित्रित करने का प्रयास किया है।

चित्रों में सामाजिक अपेक्षाओं के विपरीत दिशाओं में जुनून की रचना बंदना को भाती है। समाज में स्त्री पर उनका गहरा ध्यान है। दार्शनिक रूप से आधुनिक अस्तित्व को रेखांकित करतीं कृतियों में मानव संस्कृति और चेतना का समावेश है। प्रकृति से मानव का सबंधं हमेशा से रहा है। हम प्रकृति के बदलते वातावरण को देख रहे हैं। इन प्राकृतिक बदलावों के बीच बंदना जीवंत दृश्य रच कर दर्शकों को कल्पना की उस उड़ान पर ले जाती हैं जहां प्रेक्षक भावशून्य हो कर कृतियों से ध्यान नहीं हटा पाता। यह प्रभावी ढंग से उच्च तकनीकी का प्रयोग करके करती हैं। सौंदर्य के रूप में सिलवट सी परतें दीवार से बाहर आती प्रतीत होती हैं। प्रयोगशील कलाकार के व्यक्तित्व का रचनात्मक विस्तार चित्रकार ने अपने अंर्तमन में उपजी कल्पनाओं से देखा है। प्रदर्शनी 9 सितम्बर तक प्रदर्शित है। ■

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

सेबी की साख का संकट

शेयर बाजार नियामक (रेगुलेटरी) सेबी की चेयरपर्सन माधवी पुरी बुच से जुड़े विवाद एक के बाद एक बढ़ते जा रहे हैं। एक विवाद खत्म नहीं होता कि दूसरा आ जाता है। विवादों के चलते माधवी पुरी बुच की मुश्किलें अब बढ़ती जा रही हैं। संसद की पब्लिक अकाऊंट्स कमेटी (पीएसी) सेबी चीफ के खिलाफ लगे आरोपों की जांच करेगी और इसी सिलसिले में कमेटी माधवी पुरी बुच को तलब कर सकती है। इस कदम का उद्देश्य नियामक संस्थान की कारगुजारी की समीक्षा करना है। पीएसी वित्त और कार्पोरेट मामलों के मंत्रालयों के अधिकारियों से पूछताछ करने की योजना बना रही है। पब्लिक अकाऊंट्स कमेटी के 22 सदस्यों में लोकसभा के 15 और राज्यसभा के 7 सांसद शामिल हैं। कमेटी का नेतृत्व कांग्रेस सांसद के.सी. वेणुगोपाल कर रहे हैं। अमेरिकी फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च ने अडाणी समूह के बारे में करीब 19 महीने पहले खुलासा किया था लेकिन उसके पहले ही अडाणी समूह के शेयरों में आई जबरदस्त तेजी की जांच पर बाजार नियामक सेबी ने जिस तरह का रवैया अपना रखा था वह स्वतंत्र पर्यावेक्षकों के लिए उलझाने वाला था। ऐसे आरोप पहले भी लगाए जाते रहे हैं कि सेबी के एक दूसरे पूर्व अध्यक्ष के कार्यकाल में भी अडाणी समूह को फायदा पहुंचाने के लिए काम किया था।

मौजूदा अध्यक्ष के कार्यकाल में सेबी ने अडानी समूह के शेयरों में हुई असामान्य मूल्य वृद्धि को नजरअंदाज करते हुए हिंडनबर्ग प्रकरण के बाद की अपनी जांच को मुख्यत: शॉर्ट सेलिंग गतिविधियों पर केंद्रित रखा। एक नौसिखिया निवेशक भी समझ सकता है कि शॉर्ट सेलिंग के मौके तभी आते हैं जब शेयर की कीमतें किसी कंपनी के आधारभूत कारकों (फंडामेंटल्स) या भावी संभावनाओं से कहीं ज्यादा हो जाती हैं। 10 अगस्त को हिंडनबर्ग रिसर्च द्वारा जारी किए गए विस्फोटक नए 'व्हिसिल-ब्लोअर' दस्तावेजों ने इस मामले को एक नया मोड़ दे दिया है और इसने सेबी के लिए विश्वसनीयता का बड़ा संकट पैदा कर दिया है। हिंडनबर्ग ने तथ्यों और दस्तावेजों के साथ सेबी अध्यक्ष माधवी पुरी बुच की व्यक्तिगत ईमानदारी और उनके 'खुलासों' पर सवाल खड़े किए हैं।

> पब्लिक अकाऊंट्स कमेटी के 22 सदस्यों में लोकसभा के 15 और राज्यसभा के 7 सांसद शामिल हैं। कमेटी का नेतृत्व कांग्रेस सांसद के.सी. वेणुगोपाल कर रहे हैं। अमेरिकी फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च ने अडाणी समूह के बारे में करीब 19 महीने पहले खुलासा किया था लेकिन उसके पहले ही अडाणी समूह के शेयरों में आई जबरदस्त तेजी की जांच पर बाजार नियामक सेबी ने जिस तरह का रवैया अपना रखा था वह स्वतंत्र पर्यावेक्षकों के लिए उलझाने वाला था। ऐसे आरोप पहले भी लगाए जाते रहे हैं कि सेबी के एक दूसरे पूर्व अध्यक्ष के कार्यकाल में भी अडाणी समूह को फायदा पहुंचाने के लिए काम किया था।

इन खुलासों पर भी खामोशी बनी रही। सेबी अध्यक्ष ने आरोपों का खंडन ही किया। इसके बाद एक के बाद एक नए आरोप लगते रहे। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि 2017 में जब से माधवी पुरी बुच ने पद सम्भाला है तब से वह सेबी से सैलरी ले रही है और आईसीआईसीआई बैंक में ऑफिस ऑफ प्रोफिट भी सम्भाल रही है। हालांकि बैंक ने सफाई देते हुए कहा कि उसने 2013 को माधवी पुरी बुच की रिटायरमैंट के बाद कोई सैलरी या ईएसओपी नहीं दिया है। हिंडनबर्ग की रिपोर्ट में यह भी खुलासा किया गया था कि अडाणी मनी साइफनिंग घोटाले में इस्तेमाल किए गए ऑफशोर फंड में माधवी बुच और उनके पति की हिस्सेदारी थी। यह भी आरोप लगा है कि सेबी चीफ को दवा कम्पनी वाकहाट से जुड़ी उस सहायक इकाई से किराये की आय प्राप्त हुई जिसकी सेबी द्वारा भेदिया कारोबार समेत कई मामलों में जांच की जा रही थी। अब माधवी पुरी बुच पूरी तरह से घिर चुकी है। इसके साथ ही सेबी की साख भी प्रभावित हुई है। इन मामलों में जितनी भी सफाई दी जाए उससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता। हिंडनबर्ग की रिपोर्ट दो प्रमुख व्यवस्थागत मुद्दे सामने लाई है जिन पर बहस करना और उन्हें हल करना बहुत जरूरी है। बड़ा आरोप यह था कि ऑफशोर फंडों की मदद से शेयरों के मूल्यों में छेड़छाड़ की गई तथा सार्वजनिक शेयर धारिता के मामलों का उल्लंघन किया गया।

अब तक नियामक ने स्पष्ट नहीं किया है कि ऐसा है या नहीं। दुनिया के सबसे बड़े शेयर बाजारों में से एक के नियामक की ओर से यह एक गंभीर कमी नजर आती है। बहरहाल, उसने विदेशी फंडों के लिए प्रकटीकरण के मानक सख्त कर दिए हैं जिनके तहत एक खास सीमा को पार करने वाले फंडों को आर्थिक लाभार्थियों के नामों तथा फंड के स्वामित्व की जानकारी देनी होगी। अगर नियामक तथ्यों के साथ इन आरोपों को खारिज कर पाता तो बाजार को एक कड़ा संदेश जाता। दूसरा मसला चेयरपर्सन तथा निर्णय प्रक्रिया से जुड़े अन्य अहम लोगों से संबंधित है। सेबी ने कहा है कि प्रकटीकरण को लेकर उसके पास एक ठोस व्यवस्था है। अहम लोगों के लिए प्रकटीकरण मानकों को मजबूत बनाने तथा भविष्य में किसी अटकल को समाप्त करने के लिए नियामक को ऐसे लोगों के वित्तीय हितों को सार्वजनिक करने की आवश्यकता है। हर नियामक से उम्मीद की जाती है कि वह ईमानदार और निष्पक्षता से काम करेगा। अगर नियामक तंत्र ही भ्रष्टाचार का शिकार है तो निवेशकों के हितों की रक्षा कौन करेगा। भारत का पूंजी बाजार दुनिया के शीर्ष 5 बाजारों में से एक है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए संसाधन जुटाने का एक बड़ा माध्यम है। बाजार में आम लोगों के निवेश को देखते हुए यह जरूरी है कि सेबी की विश्वसनीयता कायम हो और सेबी खुद नियमों और मानकों का पालन करते दिखे। सेबी की व्यवस्थागत खामियां दूर होनी चाहिए। इसलिए पहले उसे अपना घर सम्भालना होगा। सेबी की जांच निष्पक्ष रूप से होनी चाहिए ताकि नियामक तंत्र पर लोग भरोसा कर सकें।

आदित्य नारायण चोपड़ा
Adityachopra@punjabkesari.com

क्या सभापति के खिलाफ महाभियोग आएगा

मिर्च मसाला
त्रिदीब रमण
gossipguru.in

'हद से ज्यादा तेरा खुद पर
यकीं बेहद लाजिमी है
बातें करता खुदा सी पर
तू एक अदना सा आदमी है'

विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक ने राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ की नींदें उड़ा रखी हैं, सियासी हलकों में यक्ष प्रश्न अब भी एक अनसुलझे रहस्य के मानिंद है कि क्या सचमुच विपक्षी खेमा धनखड़ साहब के रवैये से इतना आहत है कि वह अनुच्छेद 67 (बी) के तहत राज्यसभा के सभापति के खिलाफ महाभियोग लाने की तैयारियों में जुटा है? भले ही ऐसा करने के लिए विपक्ष के पास पर्याप्त संख्या बल न हो पर अब तक 87 सांसद इस नोटिस पर अपने दस्तखत कर चुके हैं।

विपक्ष की रणनीति बेहद साफ है कि 'चाहे सदन में यह प्रस्ताव गिर जाए पर जब इस मुद्दे पर सदन में बहस होगी तो पूरा देश उसे देखेगा और मामले का दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।' सत्ता पक्ष के समक्ष भी नैतिक जवाबदेही बलवती होगी और धनखड़ साहब को भी अपने किए पर अफसोस होगा। सनद रहे कि अनुच्छेद 67 (बी)

के तहत अगर महाभियोग का प्रस्ताव राज्यसभा के तत्कालीन सदस्यों के बहुमत से पारित होता है और लोकसभा से इसे सहमति हासिल होती है तो फिर उपराष्ट्रपति को उनके पद से हटाया जा सकता है। हालांकि इस प्रस्ताव को सदन में पेश करने के लिए 14 दिनों का नोटिस देना भी अनिवार्य है। पर मौजूदा दोनों सदनों में सत्ता पक्ष के गिनती बल को देखते हुए ऐसे किसी प्रस्ताव का पारित होना संभव नहीं लगता, फिर भी विपक्ष इस पूरे मामले की प्रासंगिकता को बनाए रखना चाहता है, क्योंकि विपक्षी दलों को सभापति का सदन में रवैया पक्षपातपूर्ण लगता है।

सूत्र बताते हैं कि मामले की नजाकत को भांपते हुए उपराष्ट्रपति की ओर से भी बड़े विपक्षी नेताओं से संपर्क साधा जा रहा है और उन्हें मनाने की भरसक कोशिश हो रही है। वैसे तो भाजपा शीर्ष के लिए भी यह पूरा मामला गले की हड्डी बन गया है, जगदीप धनखड़ साहब को बंगाल से यह सोच कर दिल्ली लाया गया था कि उनके आने से पश्चिमी यूपी, राजस्थान व हरियाणा के जाटों में भाजपा की धाक बढ़ेगी, पर हालिया चुनावों में जिस तरह भाजपा व जाटों के बीच छत्तीस का आंकड़ा दिखा है उससे तो कम से कम यही लगता है कि धनखड़ को लाने से भाजपा षीर्श की उम्मीदें बस धराशयी ही हुई हैं।

कांग्रेस के विभीषण

हरियाणा विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अब तक 67 टिकट ही घोषित किए हैं, पर अनुशासित माने जाने वाली व चाल चरित्र चेहरा का खटराग गाने वाली पार्टी का असली चेहरा सड़कों पर उतर आया है। टिकटों के बंटवारे से पार्टी में भयंकर असंतोष है और रोज-ब-रोज थोकभाव में भगवा नेता अपनी पार्टी को अलविदा कह अन्यत्र जा रहे हैं।

भगवा पार्टी को अपने चुनाव पूर्व सर्वेक्षणों में ही इस बात का इल्म हो गया था कि शायद इस बार जीत की तिकड़ी उनके नसीब में नहीं। सो, कायदे से पार्टी रणनीतिकारों ने प्रदेश कांग्रेस के दो बड़े नेताओं पर डोरे डाले, इनमें से एक चर्चित महिला नेत्री भी हैं, जो हरियाणा की भी होकर दिल्ली में हमेशा अपना सिक्का चलाती रहीं हैं। इन दोनों नेताओं को प्रलोभन भी दिया गया था कि 'अगर हरियाणा में तीसरी बार भाजपा की सरकार आती है तो सीएम पद पर इन दोनों का भी दावा हो सकता है।' कहते हैं इन दोनों नेताओं से खुल कर लक्ष्मी दर्शन का भी वादा था।

इस डील की भनक कांग्रेस नेतृत्व को भी लग गई थी, सो आनन-फानन में कांग्रेस शीर्ष ने इन दोनों नेताओं की टिकट वितरण में भूमिका एकदम से समेट दी, पार्टी ने कुछ कड़े फैसले लेते हुए कह दिया 'दो बार के हारे

उम्मीदवारों को टिकट नहीं दी जाएगी, सांसदों को विधानसभा चुनाव लड़ने का मौका नहीं मिलेगा और जिन नेताओं पर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं उन्हें भी टिकट नहीं दिया जाएगा।' लेकिन भाजपा को अंत तक इन दोनों नेताओं के भगवा रंग में रंग जाने की उम्मीद थी, भले ही चुनाव आयोग ने बिश्नोई समाज के त्यौहार का हवाला देकर हरियाणा चुनाव की तारीख आगे बढ़ा दी हो, पर भाजपा को अंत समय तक इन दोनों नेताओं के 'हां' का इंतजार था।

क्यों छटपटा रहे हैं नीतीश

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपने सियासी कैरियर की सबसे मुश्किल जंग लड़ रहे हैं, इस बार दगा का खतरा बाहर से ज्यादा घर से है, दुश्मनों से कहीं ज्यादा दोस्तों से है।

सूत्र बताते हैं कि नीतीश को इस बात का बखूबी इल्म हो चुका है कि उनकी गठबंधन साथी भाजपा उनकी पूरी पार्टी को ही गड़प करना चाहती है। यह भी मुमकिन है कि आने वाले दिनों में उन्हें सीएम पद भी छोड़ना पड़ जाए, क्योंकि 25 के विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा राज्य में अपनी पार्टी का सीएम चाहती है। यह भी कहा जा रहा है कि नीतीश के सभी दर्जन भर सांसद भाजपा रणनीतिकारों के निरंतर संपर्क में हैं, और इस भगवा योजना को अंजाम तक पहुंचाने में संजय झा, ललन सिंह, हरिवंश,

प्रशांत किशोर व आरसीपी सिंह जैसे लोग दिन-रात जुटे हैं।

सूत्रों की मानें तो भाजपा नेतृत्व नीतीश कुमार द्वारा बिहार में कराए जा रहे 'भूमि सर्वेक्षण' को लेकर खासा नाराज़ है। भाजपा का तर्क है कि 'राज्य की लगभग एक-तिहाई जमीन पहले से विवादित है और भूमि सर्वेक्षण के बाद यह आंकड़ा दो-तिहाई तक पहुंच सकता है, जिससे वहां के परिवारों में जमीन को लेकर झगड़े, मुकदमे और हिंसा की घटनाओं में बढ़ोतरी होगी। इस भूमि सर्वेक्षण का खामियाजा सबसे ज्यादा राज्य की अगड़ी जातियों को उठाना पड़ सकता है, जो कायदे से भाजपा के कोर वोटर हैं।' बदलती हवा का रुख भांपते हुए नीतीश पहले अपने दफ्तर में राजद नेता तेजस्वी यादव से मिले और दोनों नेताओं के बीच बंद कमरे में एक लंबी बात हुई। इसके कुछ दिनों बाद नीतीश लालू-राबड़ी से मिलने उनके घर जा पहुंचे, अपने साथी भाजपा को यह बताने के लिए कि उन्होंने भी सियासत में कोई कच्ची गोलियां नहीं खेल रखी है।

बिहार कांग्रेस को कब मिलेगा नया मुखिया

बिहार कांग्रेस के मौजूदा अध्यक्ष जो लालू यादव के परम शिष्यों में शुमार होते हैं, उन्हें हटाने की कवायद पिछले कई महीनों से जारी है, पर नतीजा वही है ढाक के तीन पात। अभी पिछले दिनों बिहार कांग्रेस का एक प्रतिनिधिमंडल कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मिलने दिल्ली पहुंचा और उनसे अर्ज करता नज़र आया कि 'अगर अखिलेश प्रसाद सिंह को तुरंत प्रदेश अध्यक्ष पद से नहीं हटाया गया तो फिर बिहार में कांग्रेस का भगवान ही मालिक है।'

वहीं इन बातों से बेखबर अखिलेश प्रसाद बिहार कांग्रेस के कुछ नेताओं से अपनी पुरानी दुश्मनी साधने में जुटे हैं। जैसे उन्होंने पिछले दिनों सारण के जिला अध्यक्ष अजय सिंह के बारे में हाईकमान को पत्र लिख कर उन पर तुरंत कार्रवाई करने को कहा, यह कहते हुए कि 'अजय सिंह की वजह से पार्टी को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है।' सनद रहे कि राजपूत जाति से ताल्लुक रखने वाले ये यही अजय सिंह है जो पहले बिहार कांग्रेस सेवा दल और किसान कांग्रेस के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। एक बार वे राबड़ी देवी के खिलाफ चुनाव भी लड़ चुके हैं। अखिलेश को शक है कि इस दफे के 2024 के लोकसभा चुनाव में उनके पुत्र आकाश को महाराजगंज सीट से चुनाव हरवाने में अजय सिंह की एक महती भूमिका है, क्योंकि वे महाराजगंज की सीट अपने पुत्र श्रीकृष्ण हरि के लिए मांग रहे थे, श्रीकृष्ण हरि पिछले दो वर्षों से महाराजगंज में सक्रिय थे, वे ऑल इंडिया यूथ कांग्रेस के सचिव होने के साथ मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रभारी भी हैं। 'नीट' एक्जाम में धांधली के विरोध में श्रीकृष्ण हरि ने पटना में एक विरोध

प्रदर्शन आयोजित किया था, जिसमें शामिल होने पर पुलिस की लाठियों से यूथ कांग्रेस अध्यक्ष श्रीनिवास का हाथ टूट गया था। वहीं अखिलेश पुत्र आकाश पहले उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी में थे, वहां से वे एक दफे चुनाव भी लड़ चुके हैं और किसी को नहीं मालूम कि वे कब कांग्रेस में आ गए और महाराजगंज से कांग्रेस का टिकट भी पा गए।

हरियाणा का भगवा सबक दिल्ली के लिए

हरियाणा की चुनावी आहूति में अपनी अंगुलियां जला चुका भाजपा शीर्ष अभी से दिल्ली के विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुट तो गया है पर अपना हर कदम फूंक-फूंक कर रख रहा है। वैसे भी आप नेताओं की हालिया जेल यात्राओं के बाद दिल्ली में कमल के प्रस्फुटन की संभावनाएं बेहतर बताई जा रही हैं। सो, पार्टी शीर्ष ने दिल्ली भाजपा के तीन बड़े दिग्गजों मीनाक्षी लेखी, प्रवेश साहिब सिंह वर्मा और रमेश बिधूड़ी से विधानसभा चुनाव में उतरने के लिए तैयार रहने को कहा है।

भाजपा ने अपने दिल्ली के मौजूदा सातों सांसदों से कहा है कि 'वे अभी से अपने क्षेत्रों में मजबूती से जम जाएं, वक्त-वक्त पर आलाकमान को अपनी रिपोर्ट सौंपे ताकि जहां जो कमी है उसे दूर करने के प्रयास किए जा सके।' इसके अलावा सांसदों से विधानसभा वार उनके पसंदीदा व जिताऊ उम्मीदवारों की लिस्ट भी मांगी गई है ताकि जमीनी सर्वेक्षणों में उनकी जीत की संभावनाओं को टटोला जा सके। पार्टी ने अपने सभी मौजूदा सांसदों को ताकीद दी है कि 'उनके लोकसभा के अंतर्गत आने वाली विधानसभा सीटों पर भाजपा उम्मीदवारों को विजयी बनाना उनका नैतिक दायित्व है।'

राष्ट्रपति मुर्मू की चिंता...

श्रीमती किरण चोपड़ा
डायरेक्टर- पंजाब केसरी दैनिक समाचार लि.
चेयरपर्सन- वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब
मुख्य संरक्षिका- चौपाल
सदस्या- राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल, एकल
संरक्षिका- भारतीय लोक विकास परिषद
f/kiranchopra01
kiranchopra@punjabkesari.com
kiranchopradesk@gmail.com

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रविवार को कहा कि बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों में अदालती फैसलों में देरी से आम आदमी को लगता है कि न्यायिक प्रक्रिया में संवेदनशीलता का अभाव है। साथ ही उन्होंने अदालतों में स्थगन की संस्कृति में बदलाव का आह्वान किया। उन्होंने यह भी कहा कि लम्बित मामले न्यायपालिका के समक्ष एक बड़ी चुनौती हैं और उन्होंने यह भी कहा कि जब बलात्कार जैसे जघन्य अपराध में अदालती फैसले एक पीढ़ी बीत जाने के बाद आते हैं तो आम आदमी को लगता है कि न्यायिक प्रक्रिया में संवेदनशीलता का अभाव है, इसलिए लम्बित मामलों में निपटारे के लिए एक विशेष लोक अदालत जैसे कार्यक्रम अधिक बार आयोजित किए जाने चाहिए। उन्होंने यह भी अफसोस जताया कि कुछ मामलों में साधन सम्पन्न लोग अपराध करने के बाद बैखोफ खुलेआम घूमते रहते हैं और गरीब लोग अदालत में जाने से डरते हैं। राष्ट्रपति के अनुसार ऐसे लोग अन्याय को चुपचाप सहते हैं।

मैं पहले भी लिख चुकी हूं कि मैं राष्ट्रपति मुर्मू की बहुत बड़ी प्रशंसक हूं, क्योंकि वह जमीन से जुड़ी महिला हैं। हर आम आदमी का दर्द समझती और जानती हैं, वो हर अवस्था से स्वयं गुजर चुकी हैं।

सच में उनकी चिंता करना वाजिब है। एक महिला होने के नाते एक महिला का दर्द भी समझती हैं। कोलकाता रेप, मर्डर केस के बाद शायद ही कोई स्त्री होगी जिसका खून न खोला हो। मैं तो सो भी नहीं पा रही थी यह सोच कर कि एक पीढ़ी-लिखी डॉक्टर जो मेहनत से डॉक्टर बनी, उसके माता-पिता ने उसको किस मेहनत से डॉक्टर बनाया होगा और जब एक पिता ने अपनी बेटी की नंगी लाश देखी होगी वो भी बुरी हालत में तो उसका क्या हाल होगा। उसका दु:ख-दर्द हम सभी समझते हैं और मेरा तो खून खोलता है। मैं हर बार लिखती हूं कि ऐसे लोगों को सख्त से सख्त सजा या चौराहे पर खड़ा करके लोगों के सामने फांसी होनी चाहिए ताकि भविष्य में इस बारे में कोई सोचे भी नहीं। मैंने पीएम को भी पत्र लिखा है। मेरी अपनी राय तो यह है कि कोई

भी बलात्कारी को उम्रकैद और अगर महिला बलात्कार के बाद मर जाए तो उसे सबके सामने फांसी देनी चाहिए। आगे न्यायपालिका देखे। जब तक यह नहीं होगा तब तक ऐसा जघन्य अपराध नहीं रुकेगा। इंसाफ और डर अवश्य होना चाहिए और इंसाफ देर से मिले तो कोई फायदा नहीं।

बंगाल की मुख्यमंत्री ने रैपिस्ड को फांसी दिए जाने का प्रावधान वाला बिल तो पास करवा लिया परन्तु अभी तक कोलकाता डॉक्टर केस में हत्या करने वालों को फांसी क्यों नहीं हुई। क्या यह बिल लोगों को शांत करने के लिए लाया गया। अगर सच में लाया गया है तो फांसी होनी चाहिए, एक मिसाल कायम हो जाएगी। मैं तो कहती हूं कि राष्ट्रीय स्तर पर यह प्रावधान पास होना चाहिए। जब एक-दो को फांसी होगी तो ऐसे नीच सोच वाले और ऐसे कुकर्म करने वाले व्यक्तियों की अक्ल ठिकाने आएगी।

मेरा इतना खून खोलता है कि अगर मेरे हाथ में कोई ऐसा जादू हो जाए या कानून मेरे हाथ में आ जाए तो मैं ऐसा डर, भय पैदा कर दूं कि ऐसे व्यक्तियों के सोचने से पहले वह कांप जाए।

यही नहीं हमारे प्रधान न्यायाधीश डी.वाई. चन्द्रचूड़ ने कहा है कि केवल 6.7 प्रतिशत अदालतों का बुनियादी दावा महिलाओं के अनुकूल है, इसलिए यह अवश्यक है कि ऐसी स्थिति को बदलने की जरूरत है।

यही नहीं हर मां को अपने बेटों और बेटियों को भी शिक्षा देनी होगी और कुछ ऐसा भी प्रावधान हो जो नेट, सोशल मीडिया पर अश्लील चीजों पर भी प्रतिबंध होना चाहिए। समाज के लोगों की मानसिकता स्वच्छ, तुच्छ होनी चाहिए। आज छोटे-छोटे बच्चों के साथ ऐसी गंदी हरकतें, घटनाएं हो रही हैं। इसके लिए जरूरी है बारीकी से हर उन अश्लील चीजों को, वीडियो को रोकना होगा जो मानसिकता खराब करें। हर यूट्यूब चैनल, सोशल मीडिया, व्हाट्सएप बंद होने चाहिए जहां यह सब उपलब्ध हैं।

हर कौने-कौने में इस जघन्य अपराधों को रोकने के लिए कदम उठाने होंगे। सुरक्षा जरूरी है नहीं तो महिला सशक्तिकरण का कोई फायदा नहीं। ऐसा ही होना है तो महिलाएं घूंघट डालकर घर पर ही बैठ जाए और सुरक्षित रहे। क्या यह सब चाहते हैं, हरगिज नहीं, तो आगे सभी मिलकर ऐसे जघन्य अपराध को रोकें। हर कोई देश का सिपाही बन जाए, बहनों का भाई, बेटियों का रखवाला बन जाए।

गोवा के होटल में सेंडल से पिटे नेताजी

नई दिल्ली, (एनटीआई): भाजपा के ये बड़े पुराने नेताओं में शुमार होते हैं, संगठन में बड़े पदों पर शोभायमान रहे हैं, मध्य प्रदेश राज्य में मंत्री भी रह चुके हैं और आज भी हैं। चुनाव मैनेजमेंट में भी मास्टरी हासिल है। सो, चुनावों के इसी मौसम में अपनी ऊब से बाहर निकलने के लिए नेताजी ने अपने कुछ खास चंपुओं के साथ सीधे गोवा की फ्लाइट पकड़ ली, वहां के एक आलीशान होटल में अपना कमरा बुक कराया, उनके सहयोगी भी उसी होटल के किसी अन्य फ्लोर पर रुक गए। नेताजी पहले से अपने कृत्यों-कुकृत्यों के लिए काफी कारनामें बटोर चुके हैं। सो, जैसा कि पहले से सब तय था कि वे होटल में 'चेक इन' कर रहे थे तो मुंबई की दो सुंदरियां पहले से उनके इंतजार में लॉबी में विराजमान थीं, नेताजी अपने कमरे में पहुंचे तो युवतियों का साथ उन्हें नसीब हो गया।

कार्यक्रम की समाप्ति के बाद उन

लड़कियों ने पैसे मांगे तो नेताजी ने कहा कि 'वे उनके बिचौलिए को (जो उस वक्त लॉबी में बैठा था) पेमेंट कर देंगे', पर लड़कियां मानी नहीं, बोलीं-इस धंधे में उधार नहीं चलता' नेताजी ने हाथ झाड़ लिए, बोले-उनके पास इतना कैश नहीं। फिर हंगामा शुरू हुआ, दलाल भी ऊपर उनके कमरे में आ गया।

डिजिटल क्रांति के इस युग में दलाल ने सलाह दी कि 'वे यूपीआई से पेमेंट कर दें'। पर नेताजी 'ऑन रिकार्ड' ऐसा कोई रिस्क नहीं चाहते थे, उनकी पार्टी सियासत का चाल चरित्र चेहरा बदलने जो निकले थे। मामले ने तूल पकड़ा तो लड़कियों ने नेताजी के कमरे में तोड़-फोड़ शुरू कर दी, फिर लगे हाथ सेंडल से नेताजी की पिटाई शुरू कर दी, साथ गाली-गलौज भी बोनस में। होटल के कर्मचारी भी भागे-भागे आए, लड़कियों को समझा-बुझा कर नीचे लॉबी में भेजा गया, होटल मैनेजर ने उनकी पेमेंट कैश में कर दी।

होटल ने नेताजी से आग्रह किया कि 'वे फौरन होटल छोड़ दें, उनके साथ-साथ होटल की भी बदनामी हो रही है, क्योंकि लोकल मीडिया को इस बात की भनक लग गई है, वे बस आते ही होंगे।' मामले की नजाकत को भांपते हुए नेताजी फौरन वहां से रफ्फूचक्कर हो गए, हां यह और बात है कि होटल ने लड़कियों को दी गई पेमेंट नेता जी के होटल बिल में ही जोड़ दी थी। बाद में यह खबर वहां के कुछ लोकल अखबारों में छप भी गई पर मुख्यधारा का दिल्ली मीडिया इससे अनजान बना रहा।

राष्ट्रवाद के साथ समझौता, देश के साथ चरम धोखा : उपराष्ट्रपति धनखड़

गोरखपुर, (भाषा): उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को नागरिकों को राष्ट्रवाद पर समझौता करने के खिलाफ सावधान करते हुए इसे ''राष्ट्र के साथ चरम धोखा'' करार दिया। उन्होंने कहा, ''जहां भी कोई राष्ट्र पर प्रश्न चिन्ह उठाएगा तो हमें उसे बर्दाश्त नहीं करना है''।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दुनिया में भारत की एक अलग और सशक्त पहचान बनी है, जिसमें उत्तर प्रदेश का गुणात्मक योगदान है।

धनखड़ ने 2047 में 'विकसित भारत' की संकल्पना को लेकर जारी अभियान में सभी से योगदान देने की अपील की। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के हवन में हरेक व्यक्ति को आहुति देनी चाहिए, क्योंकि हम देश के लिए जितना भी कर सकें, उतना कम है।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि 680 अरब डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार के साथ भारत उन दिनों से बहुत आगे निकल आया है, जब उसे वित्तीय संकट से उबरने के लिए अपना सोना गिरवी रखना पड़ा था। धनखड़ ने शनिवार को गोरखपुर में उत्तर प्रदेश सैनिक स्कूल के उद्घाटन के दौरान ये टिप्पणियां कीं।

अभिनेता दर्शन को जेल में मिलेगा टेलीविजन

बेल्लारी, (पंजाब केसरी): जेल में बंद कन्नड़ अभिनेता दर्शन थुगुदीप के अनुरोध पर उनकी कोठरी में टेलीविजन उपलब्ध कराया जाएगा। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। बेंगलुरु पुलिस ने बुधवार को रेणुकास्वामी हत्याकांड में दर्शन सहित 17 आरोपियों के खिलाफ 3,991 पन्नों का आरोप-पत्र दाखिल किया। अभिनेता को 29 अगस्त को बेंगलुरु के परप्पना अग्रहारा केंद्रीय जेल से बेल्लारी स्थानांतरित कर दिया गया था, क्योंकि एक उपद्रवी सहित तीन अन्य लोगों के साथ जेल के लॉन में उनकी एक तस्वीर वायरल हो गई थी, जिससे विवाद पैदा हो गया था।

- **रेणुकास्वामी हत्याकांड में दर्शन जेल में बंद हैं**

एक वरिष्ठ जेल अधिकारी ने बताया, ''उन्होंने (अभिनेता ने) अपने मामले से संबंधित घटनाक्रमों और बाहरी दुनिया में हो रही गतिविधियों से खुद को अवगत रखने के लिए पिछले सप्ताह अपनी कोठरी में टेलीविजन लगाने की मांग की थी। इसलिए, प्रक्रिया और जेल दिशानिर्देशों के अनुसार, उन्हें संभवत: सोमवार तक अपनी कोठरी में टेलीविजन उपलब्ध करा दिया जाएगा।''

दर्शन के साथ-साथ उनकी दोस्त कन्नड़ अभिनेत्री पवित्रा गौड़ा और मामले के 15 अन्य आरोपी फिलहाल राज्य की विभिन्न जेलों में न्यायिक हिरासत में हैं। अभिनेता के प्रशंसक 33-वर्षीय रेणुकास्वामी ने पवित्रा को अश्लील संदेश भेजे थे, जिससे दर्शन नाराज हो गया।

भारत ने जीवन रक्षक दवाएं चाड भेजीं

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): भारत ने विनाशकारी आग से जूझ रहे अफ्रीकी देश चाड के लिए सहायता के रूप में जीवन रक्षक एंटीबायोटिक दवाओं समेत लगभग 2,300 किलोग्राम चिकित्सा सामग्री भेजी है। चाड की राजधानी एन'जामेना के गौडजी इलाके में एक सैन्य आयुध डिपो में हुए विनाशकारी विस्फोट में कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई और 46 अन्य व्यक्ति घायल हो गए। बताया जा रहा है कि आग के कारण क्षेत्र में सिलसिलेवार विस्फोट हुए हैं।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने 'एक्स' पर लिखा, "चाड को मानवीय सहायता पहुंचाई गई: भारत - विश्वबंधु, विश्वमित्र!" उन्होंने कहा-भारत ने घातक आग से निपटने में सहायता के लिए चाड गणराज्य की सरकार को आवश्यक जीवन रक्षक एंटीबायोटिक्स और सामान्य दवाओं समेत चिकित्सा सहायता प्रदान की है।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

महाशक्ति का स्वप्न और ये अवरोध

भारतीय प्रधानमंत्री अगर आने वाले दिनों में रूस और यूक्रेन के युद्ध पर अंकुश लगाने में अहम भूमिका निभाते हैं, तो यकीनन भारत की बलवान होती अवधारणा को नया बल मिलेगा। हालांकि, इस रास्ते पर बाहरी अवरोधों के अलावा देश के अंदर पनप रही कुछ प्रवृत्तियां बाधा पैदा कर रही हैं।

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

आजकल

शशि शेखर

मौजूदा वक्त के दुरुहतम सत्तानायक व्लादिमीर पुतिन के इस बयान को ध्यान से सुनिए, 'हम अपने दोस्तों और साझेदारों का सम्मान करते हैं। खासतौर से चीन, ब्राजील और भारत इस (यूक्रेन) संघर्ष से जुड़े सभी मुद्दों को ईमानदारी से सुलझाना चाहते हैं।' उनके प्रवक्ता दमित्री पेस्कोव ने यह भी कहा कि बातचीत का रास्ता खोजने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अहम भूमिका निभा सकते हैं।

यह साधारण उपलब्धि नहीं है।

यह वही हुकूमत-ए-मॉस्को है, जिसके पास वर्ष 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन द्वारा अपमानित इंदिरा गांधी मदद मांगने पहुंची थीं। तत्कालीन राष्ट्रपति लियोनिद ब्रेझनेव ने खुली बाहों से उनका स्वागत किया था। यह सिलसिला दोनों मुल्कों के हर हुक्मरां ने आज तक जारी रखा है। 1991 के सोवियत विघटन के बाद बीच-बीच में सर्दी-गर्मी के दौर आए अवश्य, पर मित्रता टूटी नहीं।

मई 2014 में नरेंद्र मोदी ने सत्ता सम्हाली। वह जानते थे कि अब हिन्दुस्तान की बारी है। नई दिल्ली के हुक्मरां अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए कितनी मेहनत कर रहे हैं,उसे जानने के लिए गुजरे कुछ हफ्ते बहुत काफी हैं। पिछले महीने की 21 तारीख से 5 सितंबर तक प्रधानमंत्री ने पोलैण्ड, यूक्रेन, ब्रुनेई और सिंगापुर की यात्राएं कीं। विदेश मंत्री एस जयशंकर इस दौरान मालदीव और कुवैत गए। अब साउथ ब्लॉक उनकी इस महीने अमेरिका और अगले महीने रूस यात्रा की तैयारियों में जुटा है।

बदलते 'जियो पॉलिटिकल' परिदृश्य में मोदी की यात्राएं भारत की नई भूमिका गढ़ रही हैं।

ब्रुनेई से शुरू करता हूं, क्योंकि बाकी देशों पर काफी कुछ छप चुका है। भौगोलिक दृष्टि से यह देश भले छोटा है, लेकिन इसे संसार में सर्वाधिक धनी होने का मान हासिल है। उसके पास अकूत तेल भंडार है। इसके साथ ही उसका एक किनारा दक्षिण चीन सागर से मिलता है। दक्षिण चीन सागर में बीजिंग कितना आक्रामक है, यह बताने की जरूरत नहीं। वहां का सत्ता सदन चाहता है कि किसी तरह ब्रुनेई को धौंसाकर अपने प्रभाव में ले ले, ताकि सस्ती कीमत पर ईंधन की भरपायी की जा सके। स्वाभाविक है, ब्रुनेई के सुल्तान हाजी हसनल बोल्किया को यह गवारा नहीं। इस दृष्टि से देखें, तो ब्रुनेई में मोदी की मौजूदगी नए मायने गढ़ती है। चीन दशकों से हमारी सीमाओं पर उत्पात मचा रहा है और हमें भी तेल की जरूरत है।

रही बात सिंगापुर की, तो यह द्वीप देश हमारा पुराना साझेदार है। हमारे सदियों पुराने सांस्कृतिक संबंध हैं और जिस तरह सिंगापुर ने खुद को विकसित किया है, वह आज भी नौजवान भारतीयों को अपनी ओर आकर्षित करता है। आसियान देशों में सिंगापुर की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है और इस नाते बदलती दुनिया में भारत और सिंगापुर की साझेदारी को नए रंग-रोगन की जरूरत है। सिंगापुर की सहायता से हम हिन्दुस्तान को 'सेमीकंडक्टर' का हब बनाने का ख्वाब पूरा कर सकते हैं।

इस समय ऐसी कूटनीति की सर्वाधिक जरूरत है।

रूस और यूक्रेन पिछले ढाई साल से जिस तरह से एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं, उससे दुनिया के समक्ष नए संकट खड़े हो गए हैं। यह युद्ध शुरू होने के साथ, सयानों ने भविष्यवाणी की थी कि आज नहीं, तो कल अन्य मुल्कों में भी आग फैल सकती है। वे सही साबित हुए। अगले ही वर्ष इजरायल और उसके पड़ोसी मुल्क उलझ पड़े। इससे नया भू-राजनीतिक संकट उठ खड़ा हुआ है। दो साल होने को आए, पर अमेरिका अपनी समूची शक्ति के बावजूद अपने सहयोगियों के साथ युद्ध रोकने में नाकाम रहा है। ये अमेरिकी प्रभुत्व के लड़खड़ाने के दिन हैं।

उधर, चीन चाहता है कि उलझती हुई दुनिया में उसकी

हिस्सेदारी बढ़ती रहे। दूसरे विश्व युद्ध से पहले अमेरिका इसी तरह दूर से हालात की खोज-परख तक सीमित था। पर्ल हार्बर पर हमले के बाद उसे सीधी जंग में दाखिल होना पड़ा था। त्रासद परमाणु हमला इस महायुद्ध की परिणति थी। आज चीन उभरती हुई महाशक्ति है। उसके नेता शी जिनपिंग चाहते हैं कि उनके जीते-जी चीन अमेरिका को पछाड़कर नंबर एक का दर्जा हासिल कर ले। वह इसीलिए युद्ध खत्म करने में मदद के बजाय उसमें थोड़ी-बहुत समिधा डालते रहते हैं।

इन जटिल परिस्थितियों में भारत की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो चली है।

भरोसा न हो, तो सिंगापुर के वरिष्ठ कूटनीतिज्ञ अंतरराष्ट्रीय और आर्थिक मसलों के जानकार, लेखक और वक्ता किशोर महबूबानी के विचार जान लीजिए। किशोर कहते हैं कि वक्त आ गया है, जब इंग्लैंड सुरक्षा परिषद से अपनी दावेदारी छोड़ भारत के लिए सीट खाली कर दे। महबूबानी का तर्क है कि तेजी से अपने संजाल में उलझती इस दुनिया को भारत जैसे देश और मोदी जैसे नेता की आवश्यकता है। महबूबानी मोदी को अमेरिकी और चीनी राष्ट्रपति के बाद सर्वाधिक ताकतवर नेता बताते हैं। ऐसे में, भारतीय प्रधानमंत्री अगर आने वाले दिनों में रूस और यूक्रेन के युद्ध पर अंकुश लगाने में अहम भूमिका निभाते हैं, तो यकीनन भारत की बलवान होती अवधारणा को नया बल मिलेगा।

हालांकि, इस रास्ते पर बाहरी अवरोधों के अलावा देश के अंदर पनप रही कुछ प्रवृत्तियां बाधा पैदा कर रही हैं। यकीन न हो, तो फरीदाबाद की घटना पर नजर डाल देखिए। एक तरफ, अखबारों में ब्रुनेई में प्रधानमंत्री के भव्य स्वागत की खबर छप रही थी, तो दूसरी तरफ, फरीदाबाद में एक नौजवान की हत्या सुर्खियों में थी। उसे तथाकथित गौरक्षकों ने गो-तस्कर होने के शक में मार डाला था। खुद को गोरक्षक बताने वाले ये 'ट्रिगर हैप्पी' लोग कौन हैं? इन्हें शूट-एट-साइट का ऑर्डर किसने दिया? इन पर कब लगाम लगेगी? आप सांसद संजय सिंह का आरोप है कि पिछले 10 वर्षों में गोरक्षा के नाम पर 55 लोग मारे गए और 93 चोटिल कर दिए गए।

भारत अपने अंदर फैल रही इस दुष्प्रवृत्ति पर काबू पाए बिना भला अपना मकसद कैसे अर्जित करेगा?

अफसोस! इसे रोकने की जिम्मेदारी जिन राजनेताओं की है, उनमें से कुछ इस आग में घी डाल रहे हैं। संविधान की शपथ लेकर सत्ता सदन में दाखिल होने वाले लोग बांग्लादेश का नाम लेकर आम जन की भावनाओं को उग्रता प्रदान कर रहे हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि बांग्लादेश के जिम्मेदार लोग आरोप लगा रहे हैं कि अपनी अंदरूनी राजनीति चमकाने के लिए बांग्लादेश का नाम बदनाम किया जा रहा है। इस बेमतलब की बयानबाजी से उन कूटनीतिज्ञों का काम और कठिन हो जाता है, जो ईमानदारी से भारतीय इमेज को चमकाने के लिए दिन-रात एक किए हैं।

क्या नफरत की दुकान चलाने वाले इस गुहार को सुन रहे हैं? देश उनसे जिम्मेदारी भरे व्यवहार की उम्मीद कर रहा है।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

रीना गोनोई
पूर्व फौजी

न्याय होगा, अवश्य होगा अगर आप बोलेंगी

हारकर रीना गोनोई ने सोशल मीडिया पर मुहिम चलाई। मुहिम को जोर पकड़ते देख जापान के सैन्य नेतृत्व ने नई जांच बिठाई। जांच में सारी शिकायतों को सही पाया गया। दोषी सैनिक सेवा से बर्खास्त किए गए। रक्षा मंत्रालय को बाकायदा गोनोई से लिखित माफी मांगनी पड़ी।

महिलाओं पर यौन हमले की घटनाएं यूं तो सदियों से देश-दुनिया में घटती रही हैं, उनको लेकर स्थानीय स्तर पर छोटे-मोटे एहतिजाज भी होते रहे हैं, मगर व्यापक समाज पर खास असर नहीं पड़ता था। निर्भया कांड ने पहली बार इस विषय को एक गंभीर राष्ट्रीय-सामाजिक विमर्श के रूप में खड़ा किया और अब कोलकाता की डॉक्टर के साथ हुई वारदात से भारतीय समाज फिर आंदोलित है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के यौन हिंसा के आंकड़े बताते हैं कि यह मुद्दा कितना गंभीर और जटिल है। जटिल इसलिए कि जिस संसद पर महिलाओं को एक निर्भीक व बराबरी का माहौल देने का दायित्व है, उसके ही कई माननीय इस जघन्य कृत्य के आरोपी हैं और जिस समाज को दुराचारियों से मुंह फेरना था, उसका एक वर्ग तो उनके जेल से बाहर आने पर गुलाल उड़ाता है। उन्हें फूल-मालाओं से लाद देता है। ऐसे में, भारत की औरतों को भी जापान की पूर्व फौजी रीना गोनोई की तरह अपनी जंग खुद लड़नी होगी।

आज से ठीक 25 साल पहले जापान के एक छोटे से शहर हिगाशी-मात्सुशिमा में गोनोई पैदा हुईं। माता-पिता जानते थे कि आज के दौर में बेटी को सिर्फ तालीम दिलाना काफी नहीं है, उसे शारीरिक रूप से भी आत्मरक्षा के योग्य बनाना जरूरी है। लिहाजा, चार साल पूरा करते ही गोनोई की जूडो-कराटे की तालीम शुरू हो गई। अच्छी बात यह थी कि बड़े भाई जूडो-कराटे में दक्ष थे। इसलिए गोनोई को किसी बाहरी प्रशिक्षक की जरूरत नहीं पड़ी। जूडो के प्रशिक्षण ने न सिर्फ उन्हें शारीरिक रूप से, बल्कि मानसिक रूप से काफी मजबूत बना दिया।

साल 2011 की बात है। गोनोई तब पांचवीं कक्षा में थीं। 11 मार्च को जापान में जबर्दस्त भूकंप और सुनामी आई। लगभग 20 हजार होग उस कुदरती आपदा में मारे गए थे। गोनोई का घर भी तबाह हो गया था। 11 साल की गोनोई के परिवार को 'जापान ग्राउंड सेल्फ डिफेंस फोर्स', यानी जेजीएसडीएफ की टीम बचाकर शेल्टर होम ले आई थी। इस टीम में पुरुष और महिला सैन्यकर्मी जिस तरह पीड़ित परिवारों की सेवा कर रहे थे, शरणार्थी शिविरों में राहत-कार्य कर रहे थे, उसने गोनोई के मन पर गहरा असर डाला। बचपन से वह ओलंपियन बनना चाहती थीं, मगर इस हादसे के बाद जेजीएसडीएफ का हिस्सा बनना उनका लक्ष्य बन गया।

गोनोई को यही लगता था कि फौज में मर्द-औरत में भेदभाव नहीं है, बल्कि स्त्रियों को अन्य क्षेत्रों के मुकाबले यहां ज्यादा अधिकार हासिल हैं। वह जुट गईं। मेहनत रंग लाई और साल 2020 में गोनोई का जेजीएसडीएफ में चयन हो गया। जाहिर है, वह बहुत खुश थीं। सैन्य सेवा का हिस्सा बनने के बाद वहां की खेल सुविधाओं को देखकर उनका पुराना सपना भी जाग उठा था। वह ओलंपिक के लिए तैयारी के मनसूबे बांधने लगी

थीं। साल 2021 में उन्हें फुकुशिमा स्टेशन पर नियुक्ति मिली। मगर कुछ ही दिनों में उन्हें एहसास हो गया कि जिनको वह 'हीरो' मानती रही हैं, उनमें कुछ 'विलेन' भी घुसे बैठे हैं।

शुरू-शुरू में गोनोई ने उनके फूहड़ मजाक को नजरअंदाज किया, मगर आहिस्ता-आहिस्ता उनकी हिमाकत बढ़ती गई। फिर एक दिन उन्होंने उनके मुंह से अपने अंगों के बारे में अभद्र टिप्पणी सुनी। दो-तीन जवान गाहे-बगाहे गोनोई को गले लगाने की जैसे फिराक में रहते। स्वाभाविक ही वह इस सबसे आहत थीं। फिर अगस्त 2021 में घटी एक घटना ने उन्हें बुरी तरह हिला दिया। तीन फौजी अफसरों ने प्रशिक्षण के दौरान गोनोई को एक टेंट में बुलवाया, जहां वे तीनों शराब पी रहे थे। वे मार्शल आर्ट तकनीक में विरोधी को जमीन पर पटकने और गला घोंटने की शैली पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने गोनोई को गला घोंटने की तकनीक प्रदर्शित करने को कहा।

गोनोई जानती थीं कि यह प्रशिक्षण का माहौल नहीं है, मगर फौजी अनुशासन में सीनियर का आदेश न मानना दंडनीय होता। लिहाजा, जैसे ही वह मुद्रा में आईं, एक अधिकारी ने झपटकर उन्हें बिस्तर पर पटक दिया और उनके शरीर के साथ जैसा व्यवहार किया गया, वह मार्शल आर्ट नहीं, यौनाचार की मुद्रा थी। दर्जन भर अन्य सैन्य सहकर्मी सामने खड़े यह सब देख रहे थे और खिलखिला रहे थे। इसके बाद गोनोई की सहनशीलता जवाब दे गई। उन्होंने उनके खिलाफ वरिष्ठ अफसरों से यौन उत्पीड़न की शिकायत की, मगर सुबूत के अभाव में उसे खारिज कर दिया गया, क्योंकि सभी पुरुष प्रत्यक्षदर्शी मुकर गए थे। गोनोई ने फिर जेजीएसडीएफ के शीर्ष स्तर पर शिकायत की, मगर नतीजा सिफर रहा, क्योंकि तब भी कोई साथ देने आगे नहीं आया।

निराश होकर जून 2022 में गोनोई ने फौज से इस्तीफा दे दिया। मगर उन्होंने घुटने नहीं टेके। महिला फौजियों के सम्मान और गरिमा की लड़ाई लड़ने का प्रण उन्हें मीडिया के पास ले गया, मगर कोई फौज के खिलाफ खबर लिखने-दिखाने को तैयार न था। हारकर रीना गोनोई ने सोशल मीडिया पर मुहिम चलाई। मुहिम को जोर पकड़ते देख सैन्य नेतृत्व ने नई जांच बिठाई। जांच में गोनोई की सारी शिकायतों को सही पाया गया। पांच सैनिकों को सेवा से बर्खास्त किया गया, चार अन्य को भी सजा हुई। जापान के रक्षा मंत्रालय व जेजीएसडीएफ के प्रमुख को रीना गोनोई से लिखित माफी मांगनी पड़ी। इस साहस के लिए *बीबीसी* ने गोनोई को दुनिया की सौ प्रभावशाली महिलाओं में गिना, तो अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने अभी कुछ ही माह पहले उन्हें 'इंटरनेशनल वुमन ऑफ करेज अवॉर्ड' से सम्मानित किया है।

सैन्य सेवा का हिस्सा बनकर वह बहुत खुश थीं। उन्हें लगता था कि यहां स्त्रियों को मर्दों के बराबर हक हासिल हैं। गोनोई को फुकुशिमा स्टेशन पर नियुक्ति मिली। मगर कुछ ही दिनों में उन्हें एहसास हो गया कि जिनको वह 'हीरो' मानती रही हैं, उनमें कुछ 'विलेन' भी घुसे बैठे हैं।

रीना गोनोई की जीत ने साबित किया है कि न्याय के लिए चुप्पी तोड़नी होगी। रघुवीर सहाय तो दशकों पहले कह गए हैं- *कुछ होगा कुछ होगा अगर मैं बोलूंगा/ न टूटे न टूटे तिलिस्म सत्ता का/ मेरे अंदर एक कायर टूटेगा/ टूट/ मेरे मन टूट एक बार सही तरह/ अच्छी तरह टूट...मत झूठ-मूठ ऊब, मत रूठ...।*

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

भूपेन हजारिका
भारत रत्न संगीतकार

ब्रह्मपुत्र से गंगा तक गूंजती मधुर पुकार

बच्चे के कंठ से बोरगीत के बोल मानो झरने-बरसने लगे। भगवान हरि अर्थात विष्णु जी को समर्पित असमी बोरगीत - पावे परि हरि करोहो कतरी...। भावार्थ यह कि - 'हरि चरण पकड़ रहा हूं कातर भाव से, मेरी जीवन रक्षा कीजिए। ... विषयों से भरा, जीवन थमता नहीं। ...

सबसे अद्भुत तो ईश्वर हैं, जो सबको अलग-अलग रचते हैं। अलग-अलग रचने में उनका भी मन लगता है। मान लीजिए, अगर वह हम सबको एक जैसा रचते, तो क्या होता? हम सब अलग-अलग हैं, तभी तो हमारा एक दूजे में मन लगा रहता है। यह अद्भुत भूमि है, कहीं गंगा हैं, तो कहीं ब्रह्मपुत्र। कहीं उत्तर में संत कबीर हैं, तो कहीं असम में संत शंकरदेव। दोनों ही समाज और देश सुधारने में लगे हैं। उनके गीत आज भी लोगों को राह दिखा रहे हैं। ब्रह्मपुत्र के किनारे बसे तेजपुर की वह मां भी शंकरदेव के गीत-भजन खूब गाती थीं। उनके बड़े बेटे के दिलो-दिमाग में वो गीत ऐसे घुलते थे, मानो दूध में मिश्री। बड़े बेटे में कुछ खास था, वह मां के साथ गाने लगता था। संत कवि शंकरदेव के लिखे बोरगीत। मां का मन भी सुनकर पिघलने लगता, एक तो शंकरदेव के पुकारते बोरगीत और बेटे की मधुर आवाज। पता नहीं, मां के मन में क्या सपना था?

एक दिन मां ने पड़ोस में आयोजित एक कार्यक्रम में अपने बेटे को भी मंच पर गाने के लिए खड़ा कर दिया। बच्चे ने मन मजबूत कर मंच संभाला और उसके कंठ से बोरगीत के बोल मानो झरने-बरसने लगे। भगवान हरि अर्थात विष्णु जी को समर्पित असमी बोरगीत - *पावे परि हरि करोहो कतरी...*। भावार्थ यह कि - 'हरि चरण पकड़ रहा हूं कातर भाव से, मेरी जीवन रक्षा कीजिए। ... विषयों से भरा, जीवन थमता नहीं। मैं क्या करूं? कमल दल जल चित्त चंचल है, पल भर भी थमता नहीं...।' शंकरदेव ने अपने भजन में ईश्वर के प्रति अपने प्रेम, आस को आंसुओं में घोलकर ठीक वैसे ही बहा दिया है, जैसे शरद, ग्रीष्म में ब्रह्मपुत्र का बहाव होता है, सरल, सुगढ़, मद्धम।

बहरहाल, उस दस साल के बच्चे ने मंच पर कमाल कर दिया। लोगों की आंखों में आंसू थे और तालियों का सिलसिला थमता न था। संयोग की बात कि कार्यक्रम में प्रसिद्ध असमिया गीतकार, फिल्म निर्माता ज्योतिप्रसाद अग्रवाल और प्रसिद्ध असमिया कलाकार-कवि बिष्णु प्रसाद राभा भी मौजूद थे। ये दोनों बड़े कलाकार बच्चे के गायन से अभिभूत थे कि यह बच्चा बिना शास्त्रीय सीखे शुद्ध लोक में गा रहा है। आवाज ऐसी है, मानो कोई सुरीला भंवरा हो, जिसके स्वर की लड़ी टूटती नहीं है, कुछ पल के लिए थमती है और फिर जुड़कर आगे बढ़ने लगती है। जैसे एक भंवरा बिना प्रयास गुनगुनाता है और साथ में, फूलों से रस लेने का काम भी नहीं छोड़ता। ठीक वैसे ही यह बच्चा गाता है, मानो इसका जन्म ही गाने के लिए हुआ हो, कहीं कोई खास कोशिश नहीं, न कहीं जोर लगाना, न कभी गाते हुए मुख मुद्रा का बिगड़ना। दोनों ही बड़े कलाकारों ने बच्चे के गायन की भव्य व विरल सहजता को थाम लिया और तय कर लिया कि इस बाल रत्न को किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहिए।

कुछ ही महीने बाद वह बच्चा कोलकाता में सेलोना कंपनी के लिए ऑरोरा स्टूडियो में अपना पहला गीत रिकॉर्ड करवा रहा था और उसे लोग भूपेन हजारिका के नाम से जानने लगे थे। 12 साल की उम्र में उनके फिल्मी गीत गली-गली में बजने लगे और वह खुद भी गीत लिखने लगे। उनके जीवन और असमिया संस्कृति में एक क्रांति की शुरुआत हुई। उन्होंने महज 14 की उम्र में एक गीत लिखा - *अग्निजुगर फिरिंगथी माई* (मैं अग्नि के युग की चिंगारी हूं) और गीतकार, संगीतकार, गायक, फिल्मकार बनने की राह पर चल पड़े।

संयोग देखिए, ब्रह्मपुत्र के पुत्र गंगा किनारे बनारस पढ़ने आए। बीएचयू से बीए, एमए करने के बाद छात्रवृत्ति पर अमेरिका गए। न्यूयॉर्क में एक प्रमुख नागरिक अधिकार कार्यकर्ता पॉल रॉबसन से उनकी दोस्ती हुई, जो मानते थे कि संगीत सामाजिक बदलाव का साधन है और गिटार सिर्फ संगीत वाद्ययंत्र नहीं, एक सामाजिक वाद्ययंत्र है। रॉबसन डूबकर अपना गीत गाते थे - *ओल्ड मैन रिवर*, तो भूपेन हजारिका को ब्रह्मपुत्र और गंगा जैसी अपनी पुरानी नदियों की याद आती थी। वह स्वदेश लौट आए और स्वयं को संगीत व समाज के लिए समर्पित कर दिया। असमी, बांग्ला, हिंदी में उनके गीत खूब प्रसिद्ध हुए। वह भारतीय सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादा साहेब फाल्के से सम्मानित हुए। देखते-देखते असम के रत्न भारत रत्न हो गए।

8 सितंबर को जन्मे अमृत कंठ वाले भूपेन हजारिका (1926-2011) भारतीयता के सच्चे प्रतीक हैं। उनका जीवंत योगदान एकता, मानवता और संगीत को समर्पित है। उन्हें जितनी प्रिय ब्रह्मपुत्र नदी है, उतनी ही गंगा। आज भी जब मेघ बरसते हैं, तो उनके गीत असंख्य लोगों के मन में उमड़ने लगते हैं, जैसे - *दिल हूम-हूम करे, घबराए, / घन धम-धम करे, गरजाए, / एक बूंद कभी पानी की, / मोरी अंखियों से बरसाए।*

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

तू जहां पढ़े-लिखे, वही तेरी 'स्टडी'

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

हर लेखक की पहली और आखिरी इच्छा यही होती है कि उसका भी एक मकान हो और मकान में अलग से हो एक 'स्टडी' यानी लेखक का कमरा, इसलिए अपना भी सपना रहा कि एक बंगला बने न्यारा और बंगले में हो न्यारी स्टडी, जिसमें हो न्यारी-सी टेबल, कुरसी और चारों ओर शीशेदार अलमारियों में करीने से लगी किताबें, साथ ही, कई कलम-पेंसिलों को सहेजने वाला एक कप, ऊपर एक बेआवाज पंखा और पास में एक गिलास, एक बोतल पानी और दरवाजे के बाहर टंगी एक तख्ती, जो कहती हो 'बिवेअर! राइटर इज बिजी : नो एंट्री विदाउट परमीशन'।

और अपना लेखक, इन सबके बीच में कुछ न कुछ पढ़ता-न पढ़ता हुआ, कुछ न कुछ लिखता - न लिखता हुआ, उलझे बालों को अपनी ऊंगलियों से कुरेदता हुआ, 'रचना' और 'ज्ञान' से लबालब भरे इस 'रचनात्मक सीन' में अपने आप को 'चिंतक मुद्रा' में देखे और अगर पत्नी चाय देने आए, तो देखे कि उसके पतिदेव इस वक्त वाकई बहुत बिजी हैं, किसी महान आइडिया से जूझते हुए देर से रचनात्मक संघर्ष कर रहे हैं, फिर बच्चों को फुसफुसाकर डपटते हुए कहे कि शोर न करो, नहीं तो तुम्हारे पापा डिस्टर्ब हो जाएंगे और तुम्हारी शाम की चॉकलेट केंसिल हो जाएगी, खबरदार जो शोर किया।

मैं भी जब दिल्ली आया, सोचा कि अपना भी इक बंगला बने न्यारा और उसमें एक हो छोटी-सी प्यारी-सी स्टडी, जिसकी खिड़की से हरी-भरी वसुंधरा के दर्शन होते हों और ऐसे रचनात्मक वातावरण में मैं एक से एक रचना रचूं और साहित्य में छा जाऊं। मुझ देख सब जलें कि इस जैसी स्टडी काश अपनी भी होती।

'स्टडी' के कीड़े ने मुझे तब काटा, जब मैंने दुनिया के कुछ जाने-माने लेखकों की 'स्टडीज' के बारे में पढ़ा। बहुत से विदेशी लेखक अपनी-अपनी स्टडी रखते थे, तभी वे महान रचनाएं रच सके। फिर पढ़ा कि अपने गालिब साहब ने कभी आसमान में अपना एक घर बनाने की सोची थी, जिसे लेकर एक शेर भी कहा था कि

बे दर ओ दीवार सा इक घर बनाना चाहिए,
कोई हमसाया न हो और पासबां कोई न हो।

जाहिर है कि गालिब भी एक अदद घर के चक्कर में थे। यों वह पुरानी दिल्ली की गली कासिम जान में रहते थे। उनको वो भी पसंद न आया शायद, इसीलिए वे एक आसमानी आध्यात्मिक घर बनाने का 'आइडिया' देने लगे। बड़ा शायर! बड़ी बातें!

फिर याद आया कि अपने अज्ञेय जी ने भी 'पेड़' पर एक घर बनाया था। खबर हमने भी देखी, लेकिन देखने न गए। सच! जितने बड़े कवि उतने बड़े चोंचले, लेकिन उनका भी निजता का अधिकार! ऐसी महान आत्माओं से ऐसे फालतू सवाल क्या कोई कर सकता है? मेरे जैसे जन्म के 'जलोकड़े' लेखक के ऐसे दो कौड़ी के सवाल का कोई क्यों जबाव दे?

कहते हैं कि समय से पहले और तकदीर से ज्यादा किसी को नहीं मिलता! सो हमारे जीवन में भी एक वक्त ऐसा आया, जब एक फ्लैट के साथ एक स्टडी लगभग फ्री देने का ऑफर 'डीडीए' ने दिया। एक दिन 'डीयू' स्थित 'ड्यूटा' (दिल्ली यूनिवर्सिटी टीचर्स एसोसिएशन) के दफ्तर में एक डीडीए कर्मी बहुत से फार्म लेकर आया और कहता रहा कि आप जैसे बुद्धिजीवियों के लिए अशोक विहार की 'स्कीम' में फ्लैट के संग एक 'स्टडी' फ्री देंगे।

बुद्धिजीवियों ने तो फार्म भर दिए, लेकिन मैं 'निर्बुद्धि' यहां भी रह गया। बैंक में कुछ होता, तो भरता, सो वही 'प्रसाद' के आंसू वाला हाल हुआ कि आलिंगन में आते-आते मुसकाकर स्टडी भाग गई, तब से आजतक सब मिला, लेकिन एक स्टडी ही न मिली।

फिर सोचा कि मनचंगा तो कठौती में गंगा! तू जहां पढ़े-लिखे, वही तेरी 'स्टडी'! इस तरह तेरा ये 'स्टूल' ही तेरी स्टडी! फिर इन दिनों तो एक लेपटॉप, एक स्मार्ट फोन ही पूरी स्टडी है, इसलिए अब स्टडी हो न हो, की फरक पैंदा ऐ!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

https://t.me/AllNewsPaperPaid

दैनिक जागरण

रूप, बल और ज्ञान का नाश चाहते हैं तो चिंता करें

अशांत मणिपुर

मोदी सरकार के लिए यह गंभीर चिंता का विषय बनना चाहिए कि मणिपुर शांत होने का नाम नहीं ले रहा है। गत दिवस वहां फिर हिंसा भड़क उठी, जिसमें कई लोग मारे गए। नए सिरे से हिंसा भड़कने से हालात और अधिक बिगड़ने की आशंका के चलते राज्य सरकार ने जिस तरह सभी स्कूल बंद करने का निर्णय लिया, उससे यही पता चलता है कि हिंसा पर काबू पाना कठिन होता जा रहा है। इस सीमावर्ती राज्य में रह-रहकर हिंसक घटनाएं होती ही रहती हैं। इससे शांति बहाली की उम्मीद दम तोड़ती रहती है। मणिपुर को अशांत हुए एक वर्ष से अधिक का समय हो गया है और हाल की घटनाओं से लगता नहीं कि वहां आसानी से शांति कायम हो सकेगी। चिंताजनक केवल यह नहीं है कि मैतेई और कुकी समुदायों के बीच हिंसक टकराव समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है, बल्कि यह भी है कि अब वहां कहीं अधिक घातक हथियारों का उपयोग हो रहा है। बीते दिनों पहले यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि वहां ड्रोन से हमले हो रहे हैं, फिर राकेट हमले की खबरें आईं। स्पष्ट है कि हथियारबंद समूह न केवल कहीं अधिक आधुनिक हथियारों से लैस हो रहे हैं, बल्कि वे दुस्साहसी भी हो रहे हैं। अब तो ऐसा भी लगता है कि उनके दुस्साहस का सामना करने में सुरक्षा बलों को भी मुश्किल पेश आ रही है। यह सामान्य बात नहीं कि हथियारबंद समूह सुरक्षा बलों से हथियार छीन लेते हैं और जवाबी कार्रवाई से बचने के लिए बंकरों में छिप जाते हैं।

मणिपुर में स्थितियां किस तरह खराब होती जा रही हैं, इसे इससे भी समझा जा सकता है कि ड्रोन और राकेट हमलों के कारण सुरक्षा बलों को हेलीकाप्टरों के जरिये निगरानी करनी पड़ रही है। मणिपुर के हालात यही बता रहे हैं कि राज्य में शांति स्थापित करने के लिए केंद्र, राज्य सरकार और सुरक्षा बलों को किसी नई रणनीति पर काम करना होगा। इस रणनीति के तहत उन्हें मैतेई और कुकी समुदाय के बीच वैमनस्य खत्म करने के जतन करने होंगे। यह आसान काम नहीं, क्योंकि दोनों समुदाय पूरी तरह बंट चुके हैं। स्थिति यह है कि एक-दूसरे के इलाकों में रहने वाले दोनों समुदायों के लोग वहां से पलायन कर चुके हैं। इन दोनों समुदायों के बीच अविश्वास खत्म करने के साथ ही उपद्रवी तत्वों और विद्रोहियों के दुस्साहस का दमन करना भी आवश्यक है। इसी क्रम में मणिपुर में म्यांमार से होने वाली घुसपैठ पर भी लगाम लगानी होगी और मादक पदार्थों के कारोबार पर भी। चूंकि म्यांमार भी अस्थिरता से जूझ रहा है, इसलिए केंद्र सरकार को कहीं अधिक सजग रहना होगा। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि मणिपुर में भारत विरोधी शक्तियां भी सक्रिय हैं। यदि मणिपुर अशांत बना रहता है तो भारत सरकार को अपनी एक्ट ईस्ट नीति को आगे बढ़ाने में कठिनाई ही होगी।

छात्र राजनीति में हिंसा

उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की आवाज को मंच देने के लिए छात्र प्रतिनिधियों को मंच दिया जाता है। हर वर्ष नया सत्र शुरू होने के बाद छात्र प्रतिनिधि चुने जाते हैं। ये प्रतिनिधि प्रबंधन के समक्ष विद्यार्थियों की समस्याओं को रखते हैं। हिमाचल प्रदेश के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में छात्र परिषद का चयन किया जाता है। इन चुनावों में छात्र संगठन भी हिस्सा लेते हैं। पहले प्रत्यक्ष चुनाव के माध्यम से छात्र प्रतिनिधियों का चयन होता था। इस दौरान छात्र संगठनों में हिंसा तक भी होती थी। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में हिंसा में मौत तक की घटनाएं हो चुकी हैं। सरकार ने हिंसा के मद्देनजर प्रत्यक्ष चुनाव पर प्रतिबंध लगा दिया था लेकिन छात्र परिषद का चुनाव मनोनयन से किया जाता है। छात्र संगठन चुनाव बहाली की मांग करते हैं। इसके लिए प्रदर्शन तक किए जाते हैं। नए विद्यार्थियों को अपने साथ जोड़ने के लिए छात्र संगठन शिक्षण संस्थानों में सक्रिय रहते हैं। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय व अन्य संस्थानों में छात्र गुटों में भिड़ंत की घटनाएं अब भी हो रही हैं। शुक्रवार को विश्वविद्यालय परिसर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने छात्रों की मांग व चुनाव की बहाली के लिए प्रदर्शन किया। इस दौरान उनकी पुलिस के साथ धक्कामुक्की भी हो गई। यह भी उचित है कि छात्र राजनीति से निकल कर कई नेता प्रदेश की राजनीति में सक्रिय हैं। सत्तापक्ष व विपक्ष के कई नेता छात्र राजनीति में चमके हैं। नेता छात्र राजनीति की महत्ता को अच्छी तरह समझते हैं। छात्र संगठनों को समझना होगा कि चुनाव के लिए शांतिपूर्वक माहौल आवश्यक है। ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए, जहां पर किसी तरह की हिंसा न हो। जब परिसरों में शांति रहेगी तभी सरकार छात्र संघ चुनाव करवाने का निर्णय ले सकती है।

उच्च शिक्षण संस्थानों में शांति होने पर ही छात्र संघ चुनाव करवाना संभव होगा

कब तक होती रहेगी न्याय में देरी

संजय गुप्त

हमारे नीति-नियंता यह ध्यान रखें तो बेहतर कि यदि न्यायिक तंत्र पर से लोगों का भरोसा उठा तो यह लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं होगा

अवधेश राजपूत

जिला अदालतों के राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन दिवस पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने लंबित मुकदमों और न्याय में देरी का उल्लेख कर न्यायिक तंत्र की एक गंभीर समस्या को नए सिरे से रेखांकित करने का ही काम किया। उन्होंने लंबित मुकदमों को न्यायपालिका के लिए एक बड़ी चुनौती बताते हुए ऐसे मुकदमों के कारण आम आदमी को होने वाली समस्याओं का विस्तार से जो जिक्र किया, उस पर कार्यपालिका और न्यायपालिका को तत्काल प्रभाव से ध्यान देना चाहिए। ऐसा किया जाना इसलिए आवश्यक हो गया है, क्योंकि निचली अदालतों से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक में लंबित मुकदमों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। एक आंकड़े के अनुसार ऐसे मुकदमों की संख्या पांच करोड़ तक पहुंच गई है। यह ठीक है कि लंबित मुकदमों के बोझ को कम करने के लिए लोक अदालतें सक्रिय हैं, लेकिन अभी वांछित नतीजे नहीं मिल पा रहे हैं। यह ठीक नहीं कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हमारा न्यायिक तंत्र विकसित और कई विकासशील देशों जैसा नहीं बन पाया है। न्याय में देरी केवल सामाजिक कुंठा ही नहीं बढ़ा रही है, बल्कि विकास के कार्यों पर भी विपरीत असर डाल रही है, क्योंकि अपराध के मामलों की तरह जमीन-जायदाद और कारपोरेट जगत के मामले भी अदालतों में लंबित हैं। एक समस्या यह भी है कि केंद्र-राज्य सरकारें सबसे बड़ी मुकदमेबाज हैं। आखिर इससे खराब बात और क्या हो सकती है कि सरकारें ही अपने लोगों से अदालतों में उलझी रहें?

यह अच्छा है कि न्याय में देरी की समस्या से सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ भी अच्छी तरह परिचित हैं। उन्होंने जिला अदालतों के राष्ट्रीय सम्मेलन में यह बताया कि जिला स्तर पर न्यायिक कर्मियों की रिक्तियां 28 प्रतिशत और गैर-न्यायिक कर्मचारियों की 27 प्रतिशत हैं। उन्होंने लंबित मामलों को कम करने के लिए गठित एक समिति का जिक्र करते हुए ऐसे मामलों को कम करने के लिए एक कार्ययोजना भी रेखांकित की। तीन चरणों वाली इस कार्ययोजना के तहत ऐसे उपाय किए जाएंगे, जिनसे अदालतें पूरी क्षमता से काम कर सकें। इस कार्ययोजना में कुशल न्यायिक अधिकारियों की भर्ती करना और लंबित मुकदमों को हल करना भी शामिल है। यह कार्ययोजना प्रभावी तो नजर आती है, लेकिन बात तब बनेगी, जब उस पर समय रहते सही ढंग से अमल हो और उसके अनुकूल नतीजे सामने आएं।

प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में जब सरकार की बागडोर अपने हाथ में ली थी, तब उन्होंने पुराने कानूनों को खत्म करने का वादा किया था। इस वादे पर अमल करते हुए तमाम पुराने और अप्रासंगिक पड़ चुके कानूनों को खत्म भी किया गया है, लेकिन लंबित मुकदमों का बोझ और न्याय में देरी की समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा है। अपने देश में निचली अदालतों की जैसी कार्यप्रणाली है, वह चिंतित करने वाली है। यह कार्यप्रणाली न्यायिक तंत्र का उपहास सी उड़ाती है। निचली अदालतें न्यायाधीशों की कमी के साथ ही संसाधनों के अभाव से भी जूझ रही हैं और इसके कारण भी लोगों को समय पर न्याय नहीं मिल पाता। न्याय में देरी का एक कारण न्यायाधीशों और अधिवक्ताओं के काम करने का तौर-तरीका भी है। इसी तौर-तरीके के कारण तारीख पर तारीख का सिलसिला कायम है। यह सिलसिला आम आदमी को हतोत्साहित करने वाला है। इस संदर्भ में राष्ट्रपति ने यह बिल्कुल सही कहा कि अब आम आदमी अदालतों का दरवाजा खटखटाने में घबराता है। इस घबराहट को उन्होंने ब्लैक कोट सिंड्रोम की जो संज्ञा दी, वह बिल्कुल सही है।

न्याय में देरी अन्याय ही है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि न्याय आम आदमी से दूर होता चला जा रहा है। हमारे नीति-नियंता यह ध्यान रखें तो बेहतर कि यदि न्यायिक तंत्र पर से लोगों का भरोसा उठा तो यह लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं होगा। निःसंदेह ऐसा नहीं है कि सामान्य मामलों में ही फैसला होने में देरी होती हो। गंभीर मामलों में भी समय पर न्याय नहीं मिल पाता। उदाहरणस्वरूप नेताओं और नौकरशाहों के भ्रष्टाचार के जिन मामलों की सुनवाई प्राथमिकता के आधार पर होनी चाहिए और फैसला जल्द दिया जाना चाहिए, उनमें भी आवश्यकता से अधिक देरी होती है। इसका लाभ उठाकर भ्रष्टाचार के मामलों का सामना कर रहे अथवा जेल भेजे गए नेताओं के समर्थक यह माहौल बनाते हैं कि उन्हें झूठे मामले में बदले की राजनीति के तहत फंसाया गया है। भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना कर रहे नेताओं को जब कभी जमानत मिल जाती है तो ऐसे नेता और उनके समर्थक यह प्रचारित करने लगते हैं कि उन्हें क्लीनचिट मिल गई। दिल्ली के आबकारी घोटाले में गिरफ्तार लोगों को जमानत मिलने के बाद ऐसा ही माहौल बनाया जा रहा है। इन लोगों को जमानत इसलिए मिली, क्योंकि उनके ट्रायल शुरू होने में देरी हो रही थी। एक अन्य कारण जांच एजेंसियों की ओर से अदालतों के समक्ष पुख्ता प्रमाण न रख पाना भी है। यदि जांच एजेंसियां अपना काम सही तरह से नहीं कर पाएंगी तो फिर राजनीतिक भ्रष्टाचार पर प्रहार नहीं किया जा सकता। राजनीतिक भ्रष्टाचार की तरह ही महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों और विशेष रूप से यौन अपराधों के मामलों की सुनवाई में भी देरी होती है। कई बार तो ऐसे कुछ मामलों में भी देरी होती है, जो गंभीर होते हैं और जिन्होंने सारे देश का ध्यान आकर्षित किया होता है। यह एक तथ्य है कि दिल्ली के बहुचर्चित निर्भया कांड के दोषियों की सजा पर अमल करने में आठ वर्ष का समय लग गया। इसी तरह उन्नाव के एक चर्चित मामले में अभी तक अंतिम फैसला नहीं हो सका है।

न्याय में देरी के कारणों का उल्लेख कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के लोग करते ही रहते हैं, लेकिन इन कारणों का निवारण कैसे हो, इस पर उनमें आम राय कायम नहीं हो पा रही है। उन्हें न केवल आम राय कायम करनी होगी, बल्कि ऐसी कोई व्यवस्था भी बनानी होगी, जिससे न्याय में देरी की समस्या का प्रभावी तरीके से समाधान हो सके। यदि ऐसा नहीं हो सका तो भ्रष्टाचार और अपराधों पर अंकुश लगाना तो कठिन होगा ही, देश के विकास की गति को आगे बढ़ाना और विकसित भारत के सपने को साकार करना भी मुश्किल होगा।

response@jagran.com

जंगल में सामाजिक न्याय की पहल

हास्य-व्यंग्य

संजीव जायसवाल 'संजय'

जंगल में सामाजिक न्याय के लिए बनी नेवला-सांप, बाघ-हिरण, भेड़िया-खरगोश की सर्वदलीय कमेटी

सिंह राज ने आपात बैठक बुलाई। सभी जानवर गिरते-पड़ते पहुंचे। सिंह राज एक ऊंची चट्टान पर चढ़कर गंभीर स्वर में बोले, 'भाइयों-बहनों, देश में लोकतंत्र लागू है तो वह जंगल में भी लागू होगा और उसमें सामाजिक न्याय एवं आरक्षण का भी ध्यान रखा जाएगा।' चीता सिंह ने टोका, 'महाराज पहेलियां मत बुझाइए, साफ-साफ बताइए कि मसला क्या है?' सिंह राज नाराजगी से बोले, 'आप तो कुछ न बोलें, क्योंकि सबसे ज्यादा रायता आपने ही फैलाया है।' अप्रत्याशित आरोप से तिलमिलाए चीता सिंह बोले, 'मैंने क्या किया है महाराज?' सिंह राज ने स्पष्ट किया, 'आप जब भी इंसानी बस्ती की ओर जाते हैं, जो भी दिखता है उस पर झपट पड़ते हैं।' 'इसमें मेरा क्या कसूर? मैं घास खा नहीं सकता, जानवर न मिलने पर मैं दो पैरों वाले जानवर से काम चलाता हूं। इसमें कैसी आपत्ति?' चीता सिंह ने विरोध दर्ज किया। सिंह राज ने टोका, 'आप इंसानों को खाइए, मगर नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए।'

सिंह राज सबकी शंका का समाधान करते हुए बोले, 'आज के बाद जो भी जानवर, इंसानों को खाएगा, सामाजिक न्याय का ध्यान रखेगा।' 'महाराज, मैं तो किसी को खाता नहीं, इसलिए यह नियम मुझ पर तो लागू नहीं होगा', ऊंट ने कहा। 'तुम अपनी लंबी गर्दन घुसेड़कर हर जगह लेटरल एंट्री का लाभ लेते हो, लेकिन जंगली लोकतंत्र का नियम तुम पर भी लागू होगा। तुम मनमाने तरीके से किसी का भी खेत नहीं चर सकते।' सिंह राज ने आदेश दिया। 'मैं तो न इंसानों को खाता हूं, न फल-फूल को, इसलिए मैं तो शर्तिया जंगली लोकतंत्र के नियम से मुक्त हुआ', विषैले सांप ने कहा। 'नहीं, नियम सब पर लागू होगा। मैं रोस्टर बनवाए दे रहा हूं। तुम्हें उसी के हिसाब से सबको डसना होगा', सिंह राज ने फैसला सुनाया।

कई जानवरों ने जंगली लोकतंत्र के नियम से छुटकारा पाने की कोशिश की, लेकिन सिंह राज ने सबको खामोश कर दिया। अंत में पीछे खड़ा गधा बोला, 'महाराज, जंगली लोकतंत्र सच्चे अर्थों में लागू करें।' 'सामाजिक न्याय सबसे पहले राजा के पद पर लागू हो। परिवारवाद उचित नहीं। राजा की संतान राजा बने, यह नहीं चलेगा', गधे ने कहा। सभी को सिंह राज के खानदानी राज से पीछा छुड़ाने का पहली बार उपाय नजर आने लगा। जानवर समर्थन से उत्साहित गधे ने कहा, 'महाराज, मैंने पंचतंत्र पढ़ा है। नागराज, गजराज, व्याघ्रराज, वृषभराज, पक्षीराज आदि का उल्लेख सुना है, मगर कोई गधा आज तक राजा नहीं बना। इसलिए राजा का पद गधों के लिए आरक्षित करना चाहिए।'

'मान्यवर, जरा लोककथाओं को भी पढ़ लीजिए, कई स्थानों पर गर्दभराज का जिक्र आता है।' सुअर गधे की दावेदारी को नकारते हुए बोला, 'हम सुअर आज तक राजा नहीं बने। इसलिए यह पद सुअरों को मिलना चाहिए।' 'बाराह को तो ईश्वर का तीसरा अवतार माना जाता है। ईश्वर को भला सिंहासन की क्या आवश्यकता?' उल्लू सुअर की दावेदारी की हवा निकालते हुए बोला, 'राजा का पद हम उल्लुओं को मिलना चाहिए।' इसके विरोध में बकरा खड़ा हो गया और बोला, 'इतिहास गवाह है कि हम बकरों को हमेशा हलाल किया गया है, राज कभी नहीं मिला। इसलिए यह पद हमारे लिए आरक्षित होना चाहिए।' कई जानवरों ने तत्काल कहा, 'हां, बकरे को ही राजा बनना चाहिए।' सिंह राज ताड़ गए कि ये सब बकरे को किसलिए राजा बनाना चाहते हैं। उन्होंने सामाजिक न्याय को सही तरह लागू करने का सुझाव देने के लिए नेवला-सांप, बाघ-हिरण, भेड़िया-खरगोश की एक सर्वदलीय कमेटी बना दी। वह जानते थे कि ये कभी एक मंच पर एकत्रित नहीं हो सकते। यदि एकमत होकर रिपोर्ट दे भी दी तो उसका अध्ययन करने के लिए एक हाई-पावर कमेटी बना देंगे। जब तक यह सब होगा, तब तक यह दावा किया जाता रहेगा कि सिंह राज सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

response@jagran.com

ऊर्जा

जीवन में शांति

जीवन के अंतिम समय में हर मनुष्य शांति चाहता है। यह शांति उसे वैराग्य अपनाने से ही मिल सकती है। वैराग्य का तात्पर्य है अपने मन को काम, क्रोध, लोभ और मोह से दूर करते हुए नियंत्रित करना, क्योंकि मनुष्य की शांति का केंद्र मन ही है। सनातन धर्म के अनुसार मानव जीवन चार आश्रमों-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास में विभाजित है। ब्रह्मचर्य आश्रम विद्या अर्जन करते हुए स्वयं को आगामी जीवन के लिए तैयार करने के लिए होता है। गृहस्थ आश्रम के अंतर्गत मनुष्य जीवन के नियत कर्म जैसे परिवार का पालन-पोषण करता है। वानप्रस्थ में वह जीवन के ऐसे मोड़ पर पहुंच चुका होता है जहां जिम्मेदारियां समाप्त हो चुकी होती हैं और इस स्थिति में वह मानसिक शांति चाहता है। यह शांति उसके मन पर निर्भर होती है, क्योंकि मन के द्वारा ही मनुष्य का जीवन नियंत्रित होता है।

मनुष्य आंख, कान, नाक, जीव और त्वचा के द्वारा ही संसार का अनुभव करता है। ये सब इंद्रियां मन को सूचनाएं पहुंचती हैं। इसके अलावा भूतकाल की यादें भी मन को अशांत करती हैं। इस स्थिति से उबरने का मार्ग केवल वैराग्य है। इसका तात्पर्य है ज्ञानेंद्रियों द्वारा प्राप्त सूचनाओं के प्रति उदासीन मनोवृत्ति अपनाना, जिसके द्वारा मनुष्य भोग-विलास से बचते हुए काम-क्रोध जैसे विकारों से भी मुक्ति पा सकता है। इसके बाद भूतकाल की यादों, आदतों से पीछा छुड़ाने के बारे में प्रयास किया जाना चाहिए। हालांकि पुरानी यादों से पीछा नहीं छुड़ाया जा सकता, फिर भी हम कोशिश कर सकते हैं कि ये यादें हमारे आज को नकारात्मक रूप से प्रभावित न कर सकें। यदि हम यह कर सकते हैं तो इसे सच्चा वैराग्य या संन्यास कहा जा सकता है। मन को पुरानी यादों और आदतों इत्यादि से दूर रखने के लिए यम और नियम को अपनाना चाहिए। ध्यान और प्राणायाम के द्वारा मन को नियंत्रित किया जा सकता है।

कर्नल शिवदान सिंह

तथ्य-कथ्य

2023 में कुल कारों की बिक्री में इलेक्ट्रिक कारों की हिस्सेदारी

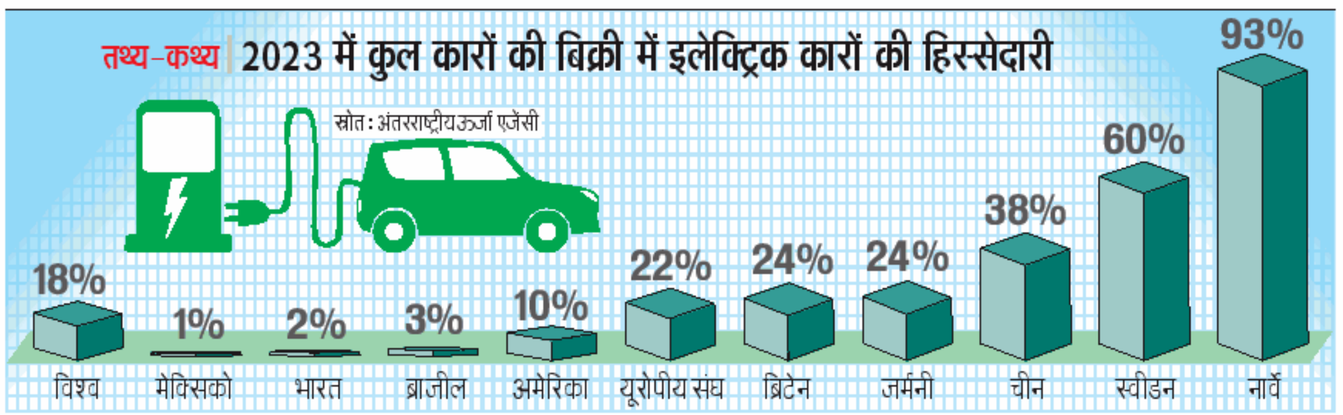

त्वचा बनेगी पारदर्शी

मुकुल व्यास

विज्ञानियों ने जैविक फेरबदल के जरिये जीवित चूहों के कुछ हिस्सों को पारदर्शी बनाने का करिश्मा किया है

क्या त्वचा को पारदर्शी बनाया जा सकता है? आपको यह सवाल कुछ अजीबोगरीब लग सकता है, लेकिन विज्ञानी सचमुच ऐसा करना चाहते हैं और इस दिशा में उन्हें कुछ सफलता भी मिल रही है। उन्होंने जैविक फेरबदल के जरिये जीवित चूहों के कुछ हिस्सों को पारदर्शी बनाने का करिश्मा दिखाया है। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के विज्ञानी जीहो ओयू और उनके सहयोगियों ने जैविक दृष्टि से एक ऐसी सुरक्षित डाई विकसित की है, जो ऊतकों को पारदर्शी बनाती है। यह आशा की जाती है कि इसी तरह की तकनीक से अंततः शोधकर्ताओं को शरीर के भीतर कार्यरत अंगों के निरीक्षण में मदद मिलेगी। आगे चलकर इस तकनीक से रक्त निकालने के लिए त्वचा पर नसों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकेगा। यह तकनीक कैंसर का प्रारंभिक अवस्था में पता लगाने और उसका उपचार करने में भी सहायता कर सकती है। जब एक विशेष वेव लेंथ का प्रकाश उन सामग्रियों को पार करता है जिनमें अलग-अलग अपवर्तक गुण होते हैं तो यह सभी दिशाओं में बिखर जाता है, जिससे सामग्री अपारदर्शी दिखाई देती है। यही वजह है कि ऊतक और उनके आसपास के तरल पदार्थों की पतली परतें आमतौर पर पारदर्शी नहीं दिखाई देतीं।

जहां इस तरह की जैविक सामग्री एक ही अपवर्तक सूचकांक साझा करती है, वहां प्रकाश की किरणें गहरे ऊतकों से प्रतिबिंबित कर सकती हैं और सीमा से बड़ी सफाई से पार हो सकती हैं, जिससे चीजें स्पष्ट हो जाती हैं। प्रकाश के बिखरने पर ऐसा नहीं हो पाता। अपारदर्शी ऊतकों में इसे हासिल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए एक ऐसे पदार्थ का प्रयोग करना होगा, जो विशेष वेव लेंथ के प्रकाश को अवशोषित करता है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि टार्ट्राजिन नामक एक खाद्य-सुरक्षित डाई सही रंग के प्रकाश के अनुपात को अवशोषित कर सकता है। इससे शोधकर्ता कोशिकाओं के आसपास के तरल पदार्थ के अपवर्तक सूचकांक को बदल कर प्रकाश के बिखरने को काफी कम कर सकते हैं। शोधकर्ताओं का दावा है कि यह डाई जीवित जीवों के लिए सुरक्षित है। इसके अलावा यह बहुत सस्ती और प्रभावी है। चूहे की त्वचा पर डाई और पानी का मिश्रण रगड़ कर शोधकर्ता रक्त वाहिकाओं और अंगों को विस्तारपूर्वक देख सकते हैं। यहां तक कि वे परीक्षण से गुजर रहे जानवर के पाचन तंत्र की मांसपेशियों का निरीक्षण भी कर सकते हैं। प्रयोग के बाद डाई को धोया जा सकता है, जिससे त्वचा फिर से अपारदर्शी हो जाती है। शरीर में प्रवेश करने वाली डाई अंततः बाहर निकाल जाती है। मानव त्वचा एक चूहे की तुलना में लगभग 10 गुना मोटी है, इसलिए अभी यह स्पष्ट नहीं है कि क्या मनुष्यों पर भी यह विधि काम करेगी। शोधकर्ता यह पता लगा रहे हैं।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

आधुनिक अभिमन्यु

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का मानना है कि वह आधुनिक अभिमन्यु हैं। यानी उन्हें चक्रव्यूह के अंदर जाकर बाहर आना भी आता है। यूं तो उन्होंने यह बयान विपक्षी दलों के परिप्रेक्ष्य में दिया है, लेकिन लोगों का मानना है कि इसी बहाने उन्होंने पार्टी और महायुति के अंदर भी नेताओं को संदेश दिया है। दरअसल लोकसभा चुनाव के कमतर नतीजों के बाद भाजपा के अंदर ही प्रदेश से लेकर केंद्र तक कई नेता फडणवीस को जिम्मेदार ठहरा कर उन्हें प्रदेश से बाहर करना चाहते हैं, लेकिन फडणवीस ने जिस तरह गोटियां बिठाई हैं और संगठन पर अपनी पकड़ को मजबूत बनाए रखा है, उससे बहुसंख्य कार्यकर्ताओं को तो यही संदेश है कि पार्टी सत्ता में आई तो फिर फडणवीस ही मुख्यमंत्री बनेंगे। वैसे भी कई राज्यों में भाजपा की रणनीति रही है कि जातियों के वर्चस्व के घमासान में पार्टी छोटी संख्या वाली न्यूट्रल जाति के नेता को सामने खड़ा कर देती है। ऐसे में फडणवीस के अभिमन्यु वाले बयान को अहम माना जा रहा है।

शाम का आफिस

देश में हर चुनाव में राजनीतिक दलों के कार्यालय में गहमा-गहमी होती ही है, लेकिन हरियाणा का चुनाव कुछ खास ही होता है। कांग्रेस इन दिनों पार्टी मुख्यालय में हर दिन जुट रही भीड़ से भारी परेशान है। कब कौन कमरे में आकर ठेठ अंदाज में धमक जाए, यह पता नहीं। नेताजी भी कई बार असमंजस में पड़ जाते हैं कि उन्हें क्या जवाब दिया जाए। लिहाजा पिछले कुछ दिनों से अधिकतर पदाधिकारी शाम को ही दफ्तर आना पसंद करते हैं या फिर कहीं और बैठ कर काम निपटाते हैं। वैसे कांग्रेस आफिस के कर्मचारी खुश हैं, क्योंकि उनकी पूछ-परख बढ़ गई है।

राजरंग

नया प्रस्ताव

लंबे समय से जदयू के साथ रहते हुए लगभग हर विषय पर बोलने वाले केसी त्यागी अब प्रवक्ता नहीं रहे। कई मामलों में उनकी लाइन पार्टी से अलग होने लगी थी। अब चर्चा यह छिड़ गई है कि वह पार्टी में रहेंगे या नहीं। वह खुद तो कह रहे हैं कि नीतीश कुमार को छोड़कर कहीं नहीं जा रहे हैं, लेकिन उनके नजदीकियों की ओर से यह संदेश भी दिया जा रहा है कि राजद के तेजस्वी यादव का संदेश त्यागीजी को मिल चुका है। बिहार कांग्रेस के भी एक बड़े नेता ने संपर्क साधा है। इसकी पुष्टि नहीं हुई है और इसकी जानकारी भी सूत्रों से साझा नहीं की जा रही है कि प्रस्ताव प्रवक्ता बनने का ही आया है या फिर कुछ ठोस मिल सकता है।

डांट अच्छी लगे

उद्योग जगत में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी स्टार के रूप में देखे जाते हैं। वह हमेशा कुछ नया आइडिया देकर जाते हैं और बताते कुछ इस अंदाज में हैं जैसे सब कुछ तत्काल हो सकता है। वह ऐसी बात भी बोल जाते हैं जिसके बाद आयोजक सिर पकड़ कर बैठ जाते हैं। कभी आटो उद्योग को वह बुलडोज करने की धमकी दे देते हैं तो कभी इलेक्ट्रिक कार उद्योग को सब्सिडी देने की व्यवस्था पर ही सवाल उठा देते हैं, लेकिन इसके बावजूद उद्योग जगत में उनकी लोकप्रियता ऐसी है कि हर आर्थिक सेमिनार में उन्हें बुलाने के लिए हरमुमकिन कोशिश की जाती है। गडकरी की उपस्थिति कार्यक्रम को सफल जो बना देती है। अगले हफ्ते फिर से आटोमोबाइल उद्योग के सबसे बड़े सालाना आयोजन में गडकरी को आना है और इसके आयोजक अभी से आपस में मजाक कर रहे हैं कि देखें इस बार कैसी डांट पड़ती है?

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए; नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

संपादकीय जागरण

(10) रविवार, 8 सितंबर, 2024: भाद्रपद शुक्ल - 5 वि. 2081

रूप, बल और ज्ञान का नाश चाहते हैं तो चिंता करें

अशांत मणिपुर

मोदी सरकार के लिए यह गंभीर चिंता का विषय बनना चाहिए कि मणिपुर शांत होने का नाम नहीं ले रहा है। गत दिवस वहां फिर हिंसा भड़क उठी, जिसमें कई लोग मारे गए। नए सिरे से हिंसा भड़कने से हालात और अधिक बिगड़ने की आशंका के चलते राज्य सरकार ने जिस तरह सभी स्कूल बंद करने का निर्णय लिया, उससे यही पता चलता है कि हिंसा पर काबू पाना कठिन होता जा रहा है। इस सीमावर्ती राज्य में रह-रहकर हिंसक घटनाएं होती ही रहती हैं। इससे शांति बहाली की उम्मीद दम तोड़ती रहती है। मणिपुर को अशांत हुए एक वर्ष से अधिक का समय हो गया है और हाल की घटनाओं से लगता नहीं कि वहां आसानी से शांति कायम हो सकेगी। चिंताजनक केवल यह नहीं है कि मैतेई और कुकी समुदायों के बीच हिंसक टकराव समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है, बल्कि यह भी है कि अब वहां कहीं अधिक घातक हथियारों का उपयोग हो रहा है। बीते दिनों पहले यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि वहां ड्रोन से हमले हो रहे हैं, फिर राकेट हमले की खबरें आईं। स्पष्ट है कि हथियारबंद समूह न केवल कहीं अधिक आधुनिक हथियारों से लैस हो रहे हैं, बल्कि वे दुस्साहसी भी हो रहे हैं। अब तो ऐसा भी लगता है कि उनके दुस्साहस का सामना करने में सुरक्षा बलों को भी मुश्किल पेश आ रही है। यह सामान्य बात नहीं कि हथियारबंद समूह सुरक्षा बलों से हथियार छीन लेते हैं और जवाबी कार्रवाई से बचने के लिए बंकरों में छिप जाते हैं। मणिपुर में स्थितियां किस तरह खराब होती जा रही हैं, इसे इससे भी समझा जा सकता है कि ड्रोन और राकेट हमलों के कारण सुरक्षा बलों को हेलीकाप्टरों के जरिये निगरानी करनी पड़ रही है। मणिपुर के हालात यही बता रहे हैं कि राज्य में शांति स्थापित करने के लिए केंद्र, राज्य सरकार और सुरक्षा बलों को किसी नई रणनीति पर काम करना होगा। इस रणनीति के तहत उन्हें मैतेई और कुकी समुदाय के बीच वैमनस्य खत्म करने के जतन करने होंगे। यह आसान काम नहीं, क्योंकि दोनों समुदाय पूरी तरह बंट चुके हैं। स्थिति यह है कि एक-दूसरे के इलाकों में रहने वाले दोनों समुदायों के लोग वहां से पलायन कर चुके हैं। इन दोनों समुदायों के बीच अविश्वास खत्म करने के साथ ही उपद्रवी तत्वों और विद्रोहियों के दुस्साहस का दमन करना भी आवश्यक है। इसी क्रम में मणिपुर में म्यांमार से होने वाली घुसपैठ पर भी लगाम लगानी होगी और मादक पदार्थों के कारोबार पर भी। चूंकि म्यांमार भी अस्थिरता से जूझ रहा है, इसलिए केंद्र सरकार को कहीं अधिक सजग रहना होगा। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि मणिपुर में भारत विरोधी शक्तियां भी सक्रिय हैं। यदि मणिपुर अशांत बना रहता है तो भारत सरकार को अपनी एक्ट ईस्ट नीति को आगे बढ़ाने में कठिनाई ही होगी।

मानवता के दुश्मन

सारण जिले के गड़खा मोतीराजपुर धर्मबागी में फर्जी डाक्टर ने एक बच्चे की जान ले ली। स्वजन का आरोप है कि वह यू-ट्यूब देखकर उसकी पथरी का आपरेशन कर रहा था। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि स्वयं को चिकित्सक बताकर चिकित्सा करने वालों के कारण किसी की जान गई हो। इस तरह का मामला बहुत गंभीर है, जिस पर कड़ी कार्रवाई की जरूरत है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इनलोगों ने बहुत बड़ा नेटवर्क फैला रखा है, जिनके जाल में गांव के लोग फंसते रहते हैं। स्वयं को बिना डिग्री के ही डाक्टर घोषित कर रखे इनलोगों ने क्लिनिक और अस्पताल तक खोल रखा है। किसी भी प्रकार के विरोध आदि की स्थिति में लोगों को डराने-धमकाने के लिए ये असामाजिक तत्वों का भी सहारा लेते हैं। इस तरह के अवैध स्वास्थ्य केंद्रों पर प्रशासन को कड़ी कार्रवाई करने की जरूरत है, ताकि ये फर्जी चिकित्सक लोगों की जान से खिलवाड़ नहीं कर सकें। सारण में जो घटना हुई, उसमें स्वजन का आरोप है कि बच्चे की पथरी का आपरेशन यू-ट्यूब देखकर किया जा रहा था और हालत खराब होने लगी तो वह भाग गया। यह एक घटना बता रही है कि इनके लिए किसी की जान की कोई कीमत नहीं। जिसके पास कोई डिग्री नहीं, जिसने मेडिकल कालेज की चारदीवारी के अंदर कदम तक नहीं रखा हो, वह भी स्वयं को डाक्टर बता कर अस्पताल का संचालन कर रहा है। इस तरह के अवैध केंद्रों में आए दिन प्रसूताओं की मौत होने के समाचार मिलते रहते हैं। राज्य स्तर पर अभियान चलाकर जांच की जानी चाहिए कि कहां-कहां अवैध रूप से फर्जी डाक्टरों ने अस्पताल खोल रखा है।

> बिना डिग्री के डाक्टर होने का दावा कर लोगों की चिकित्सा करने वाले मानवता के दुश्मन हैं। इन्हें हर हाल में कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया के कांग्रेस में जाने से हरियाणा चुनाव में पार्टी को फायदा होगा?

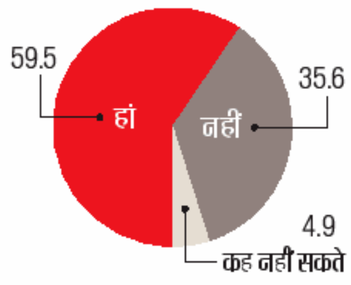

आज का सवाल
क्या हरियाणा में कांग्रेस और आप को अलग-अलग ही चुनाव लड़ना चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

कब तक होती रहेगी न्याय में देरी

संजय गुप्त

हमारे नीति-नियंता यह ध्यान रखें तो बेहतर कि यदि न्यायिक तंत्र पर से लोगों का भरोसा उठा तो यह लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं होगा

जिला अदालतों के राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन दिवस पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने लंबित मुकदमों और न्याय में देरी का उल्लेख कर न्यायिक तंत्र की एक गंभीर समस्या को नए सिरे से रेखांकित करने का ही काम किया। उन्होंने लंबित मुकदमों को न्यायपालिका के लिए एक बड़ी चुनौती बताते हुए ऐसे मुकदमों के कारण आम आदमी को होने वाली समस्याओं का विस्तार से जो जिक्र किया, उस पर कार्यपालिका और न्यायपालिका को तत्काल प्रभाव से ध्यान देना चाहिए। ऐसा किया जाना इसलिए आवश्यक हो गया है, क्योंकि निचली अदालतों से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक में लंबित मुकदमों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। एक आंकड़े के अनुसार ऐसे मुकदमों की संख्या पांच करोड़ तक पहुंच गई है। यह ठीक है कि लंबित मुकदमों के बोझ को कम करने के लिए लोक अदालतें सक्रिय हैं, लेकिन अभी वांछित नतीजे नहीं मिल पा रहे हैं। यह ठीक नहीं कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हमारा न्यायिक तंत्र विकसित और कई विकासशील देशों जैसा नहीं बन पाया है। न्याय में देरी केवल सामाजिक कुंठा ही नहीं बढ़ा रही है, बल्कि विकास के कार्यों पर भी विपरीत असर डाल रही है, क्योंकि अपराध के मामलों की तरह जमीन-जायदाद और कारपोरेट जगत के मामले भी अदालतों में लंबित हैं। एक समस्या यह भी है कि केंद्र-राज्य सरकारें सबसे बड़ी मुकदमेबाज हैं। आखिर इससे खराब बात और क्या हो सकती है कि सरकारें ही अपने लोगों से अदालतों में उलझी रहें?

यह अच्छा है कि न्याय में देरी की समस्या से सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ भी अच्छी तरह परिचित हैं। उन्होंने जिला अदालतों के राष्ट्रीय सम्मेलन में यह बताया कि जिला स्तर पर न्यायिक कर्मियों की रिक्तियां 28 प्रतिशत और गैर-न्यायिक कर्मचारियों की 27 प्रतिशत हैं। उन्होंने लंबित मामलों को कम करने के लिए गठित एक समिति का जिक्र करते हुए ऐसे मामलों को कम करने के लिए एक कार्ययोजना भी रेखांकित की। तीन चरणों वाली इस कार्ययोजना के तहत ऐसे उपाय किए जाएंगे, जिनसे अदालतें पूरी क्षमता से काम कर सकें। इस कार्ययोजना में कुशल न्यायिक अधिकारियों की भर्ती करना और लंबित मुकदमों को हल करना भी शामिल है। यह कार्ययोजना प्रभावी तो नजर आती है, लेकिन बात तब बनेगी, जब उस पर समय रहते सही ढंग से अमल हो और उसके अनुकूल नतीजे सामने आएं।

प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में जब सरकार की बागडोर अपने हाथ में ली थी, तब उन्होंने पुराने कानूनों को खत्म करने का वादा किया था। इस वादे पर अमल करते हुए तमाम पुराने और अप्रासंगिक पड़ चुके कानूनों को खत्म भी किया गया है, लेकिन लंबित मुकदमों का बोझ और न्याय में देरी की समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा है। अपने देश में निचली अदालतों की जैसी कार्यप्रणाली है, वह चिंतित करने वाली है। यह कार्यप्रणाली न्यायिक तंत्र का उपहास सी उड़ाती है। निचली अदालतें न्यायाधीशों की कमी के साथ ही संसाधनों के अभाव से भी जूझ रही हैं और इसके कारण भी लोगों को समय पर न्याय नहीं मिल पाता। न्याय में देरी का एक कारण न्यायाधीशों और अधिवक्ताओं के काम करने का तौर-तरीका भी है। इसी तौर-तरीके के कारण तारीख पर तारीख का सिलसिला कायम है। यह सिलसिला आम आदमी को हतोत्साहित करने वाला है। इस संदर्भ में राष्ट्रपति ने यह बिल्कुल सही कहा कि अब आम आदमी अदालतों का दरवाजा खटखटाने में घबराता है। इस घबराहट को उन्होंने ब्लैक कोट सिंड्रोम की जो संज्ञा दी, वह बिल्कुल सही है।

अवधेश राजपूत

न्याय में देरी अन्याय ही है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि न्याय आम आदमी से दूर होता चला जा रहा है। अपने देश में जो जितना निर्धन और असहाय है, उसके लिए न्याय पाना उतना ही कठिन है। हमारे नीति-नियंता यह ध्यान रखें तो बेहतर कि यदि न्यायिक तंत्र पर से लोगों का भरोसा उठा तो यह लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं होगा। निःसंदेह ऐसा नहीं है कि सामान्य मामलों में ही फैसला होने में देरी होती हो। गंभीर मामलों में भी समय पर न्याय नहीं मिल पाता। उदाहरणस्वरूप नेताओं और नौकरशाहों के भ्रष्टाचार के जिन मामलों की सुनवाई प्राथमिकता के आधार पर होनी चाहिए और फैसला जल्द दिया जाना चाहिए, उनमें भी आवश्यकता से अधिक देरी होती है। इसका लाभ उठाकर भ्रष्टाचार के मामलों का सामना कर रहे अथवा जेल भेजे गए नेताओं के समर्थक यह माहौल बनाते हैं कि उन्हें झूठे मामले में बदले की राजनीति के तहत फंसाया गया है। भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना कर रहे नेताओं को जब कभी जमानत मिल जाती है तो ऐसे नेता और उनके समर्थक यह प्रचारित करने लगते हैं कि उन्हें क्लीनचिट मिल गई। दिल्ली के आबकारी घोटाले में गिरफ्तार लोगों को जमानत मिलने के बाद ऐसा ही माहौल बनाया जा रहा है। इन लोगों को जमानत इसलिए मिली, क्योंकि उनके ट्रायल शुरू होने में देरी हो रही थी। एक अन्य कारण जांच एजेंसियों की ओर से अदालतों के समक्ष पुख्ता प्रमाण न रख पाना भी है। यदि जांच एजेंसियां अपना काम सही तरह से नहीं कर पाएंगी तो फिर राजनीतिक भ्रष्टाचार पर प्रहार नहीं किया जा सकता। राजनीतिक भ्रष्टाचार की तरह ही महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों और विशेष रूप से यौन अपराधों के मामलों की सुनवाई में भी देरी होती है। कई बार तो ऐसे कुछ मामलों में भी देरी होती है, जो गंभीर होते हैं और जिन्होंने सारे देश का ध्यान आकर्षित किया होता है। यह एक तथ्य है कि दिल्ली के बहुचर्चित निर्भया कांड के दोषियों की सजा पर अमल करने में आठ वर्ष का समय लग गया। इसी तरह उन्नाव के एक चर्चित मामले में अभी तक अंतिम फैसला नहीं हो सका है।

न्याय में देरी के कारणों का उल्लेख कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के लोग जब-तब करते ही रहते हैं, लेकिन इन कारणों का निवारण कैसे हो, इस पर उनमें आम राय कायम नहीं हो पा रही है। उन्हें न केवल आम राय कायम करनी होगी, बल्कि आपस में मिलकर ऐसी कोई व्यवस्था भी बनानी होगी, जिससे न्याय में देरी की समस्या का प्रभावी तरीके से समाधान हो सके। यदि ऐसा नहीं हो सका तो भ्रष्टाचार और अपराधों पर अंकुश लगाना तो कठिन होगा ही, देश के विकास की गति को आगे बढ़ाना और विकसित भारत के सपने को साकार करना भी मुश्किल होगा।

response@jagran.com

जंगल में सामाजिक न्याय की पहल

हास्य-व्यंग्य

संजीव जायसवाल 'संजय'

जंगल में सामाजिक न्याय के लिए बनी नेवला-सांप, बाघ-हिरण, भेड़िया-खरगोश की सर्वदलीय कमेटी

सिंह राज ने आपात बैठक बुलाई। सभी जानवर गिरते-पड़ते पहुंचे। सिंह राज एक ऊंची चट्टान पर चढ़कर गंभीर स्वर में बोले, 'भाइयों-बहनों, देश में लोकतंत्र लागू है तो वह जंगल में भी लागू होगा और उसमें सामाजिक न्याय एवं आरक्षण का भी ध्यान रखा जाएगा।' चीता सिंह ने टोका, 'महाराज पहेलियां मत बुझाइए, साफ-साफ बताइए कि मसला क्या है?' सिंह राज नाराजगी से बोले, 'आप तो कुछ न बोलें, क्योंकि सबसे ज्यादा रायता आपने ही फैलाया है।' अप्रत्याशित आरोप से तिलमिलाए चीता सिंह बोले, 'मैंने क्या किया है महाराज?' सिंह राज ने स्पष्ट किया, 'आप जब भी इंसानी बस्ती की ओर जाते हैं, बिना आगा-पीछा सोचे जो भी दिखता है उस पर झपट पड़ते हैं।' 'इसमें मेरा क्या कसूर? ऊपर वाले ने मुझे मांसाहारी बनाया है। मैं घास खा नहीं सकता, जानवर न मिलने पर मैं दो पैरों वाले जानवर से काम चलाता हूं। इसमें भला कैसी आपत्ति?' चीता सिंह ने विरोध दर्ज किया। सिंह राज ने टोका, 'आप इंसानों को खाइए, मगर नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए।'

सिंह राज सबकी शंका का समाधान करते हुए बोले, 'आज के बाद जो भी जानवर, इंसानों को खाएगा, सामाजिक न्याय का ध्यान रखेगा।' 'महाराज, मैं तो किसी को खाता नहीं, इसलिए यह नियम मुझ पर तो लागू नहीं होगा', ऊंट ने कहा। 'तुम अपनी लंबी गर्दन घुसेड़कर हर जगह लेटरल एंट्री का लाभ लेते हो, लेकिन जंगली लोकतंत्र का नियम तुम पर भी लागू होगा। तुम मनमाने तरीके से किसी का भी खेत नहीं चर सकते।' सिंह राज ने आदेश दिया। 'मैं तो न इंसानों को खाता हूं, न फल-फूल को, इसलिए मैं तो शर्तिया जंगली लोकतंत्र के नियम से मुक्त हुआ', विषैले सांप ने कहा। 'नहीं, नियम सब पर लागू होगा। मैं रोस्टर बनवाए दे रहा हूं। तुम्हें उसी के हिसाब से सबको डसना होगा', सिंह राज ने फैसला सुनाया।

कई जानवरों ने जंगली लोकतंत्र के नियम से छुटकारा पाने की कोशिश की, लेकिन सिंह राज ने सबको खामोश कर दिया। अंत में पीछे खड़ा गधा बोला, 'महाराज, जंगली लोकतंत्र सच्चे अर्थों में लागू करें।' 'सामाजिक न्याय सबसे पहले राजा के पद पर लागू हो। परिवारवाद उचित नहीं। राजा की संतान राजा बने, यह नहीं चलेगा', गधे ने कहा। सभी को सिंह राज के खानदानी राज से पीछा छुड़ाने का पहली बार उपाय नजर आने लगा। जानवर समर्थन से उत्साहित गधे ने कहा, 'महाराज, मैंने पंचतंत्र पढ़ा है। नागराज, गजराज, व्याघ्रराज, वृषभराज, पक्षीराज आदि का उल्लेख सुना है, मगर कोई गधा आज तक राजा नहीं बना। इसलिए राजा का पद गधों के लिए आरक्षित करना चाहिए।'

'मान्यवर, जरा लोककथाओं को भी पढ़ लीजिए, कई स्थानों पर गर्दभराज का जिक्र आता है।' सुअर गधे की दावेदारी को नकारते हुए बोला, 'हम सुअर आज तक राजा नहीं बने। इसलिए यह पद सुअरों को मिलना चाहिए।' 'वाराह को तो ईश्वर का तीसरा अवतार माना जाता है। ईश्वर को भला सिंहासन की क्या आवश्यकता?' उल्लू सुअर की दावेदारी की हवा निकालते हुए बोला, 'राजा का पद हम उल्लुओं को मिलना चाहिए।' इसके विरोध में बकरा खड़ा हो गया और बोला, 'इतिहास गवाह है कि हम बकरों को हमेशा हलाल किया गया है, राज कभी नहीं मिला। इसलिए यह पद हमारे लिए आरक्षित होना चाहिए।' कई जानवरों ने तत्काल कहा, 'हां, बकरे को ही राजा बनना चाहिए।' सिंह राज ताड़ गए कि ये सब बकरे को किसलिए राजा बनाना चाहते हैं। उन्होंने सामाजिक न्याय को सही तरह लागू करने का सुझाव देने के लिए नेवला-सांप, बाघ-हिरण, भेड़िया-खरगोश की एक सर्वदलीय कमेटी बना दी। वह जानते थे कि ये कभी एक मंच पर एकत्रित नहीं हो सकते। यदि हो भी गए तो एकमत होकर रिपोर्ट नहीं दे सकते। यदि रिपोर्ट दे भी दी तो उसका अध्ययन करने के लिए एक हाई-पावर कमेटी बना देंगे। जब तक यह सब होगा, तब तक यह दावा किया जाता रहेगा कि सिंह राज सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

response@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

ऊर्जा

जीवन में शांति

जीवन के अंतिम समय में हर मनुष्य शांति चाहता है। यह शांति उसे वैराग्य अपनाने से ही मिल सकती है। वैराग्य का तात्पर्य है अपने मन को काम, क्रोध, लोभ और मोह से दूर करते हुए नियंत्रित करना, क्योंकि मनुष्य की शांति का केंद्र मन ही है। सनातन धर्म के अनुसार मानव जीवन चार आश्रमों-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास में विभाजित है। ब्रह्मचर्य आश्रम विद्या अर्जन करते हुए स्वयं को आगामी जीवन के लिए तैयार करने के लिए होता है। गृहस्थ आश्रम के अंतर्गत मनुष्य जीवन के नियत कर्म जैसे परिवार का पालन-पोषण करता है। वानप्रस्थ आश्रम में वह जीवन के ऐसे मोड़ पर पहुंच चुका होता है जहां जिम्मेदारियां समाप्त हो चुकी होती हैं और इस स्थिति में वह मानसिक शांति चाहता है। यह मानसिक शांति उसके मन पर निर्भर होती है, क्योंकि मन के द्वारा ही मनुष्य का जीवन नियंत्रित होता है।

मनुष्य आंख, कान, नाक, जीव और त्वचा के द्वारा ही संसार का अनुभव करता है। ये सब इंद्रियां मन को सूचनाएं पहुंचती हैं। इसके अलावा भूतकाल की यादें भी मन को अशांत करती हैं। इस स्थिति से उबरने का मार्ग केवल वैराग्य है। इसका तात्पर्य है ज्ञानेंद्रियों द्वारा प्राप्त सूचनाओं के प्रति उदासीन मनोवृत्ति अपनाना, जिसके द्वारा मनुष्य भोग-विलास से बचते हुए काम-क्रोध जैसे विकारों से भी मुक्ति पा सकता है। इसके बाद भूतकाल की यादों, आदतों और विचारधारा से पीछा छुड़ाने के बारे में प्रयास किया जाना चाहिए।

हालांकि पुरानी यादों से पीछा नहीं छुड़ाया जा सकता, फिर भी हम कोशिश कर सकते हैं कि ये यादें हमारे आज को नकारात्मक रूप से प्रभावित न कर सकें। यदि हम यह कर सकते हैं तो इसे सच्चा वैराग्य या संन्यास कहा जा सकता है। मन को पुरानी यादों और आदतों इत्यादि से दूर रखने के लिए यम और नियम को अपनाना चाहिए। ध्यान और प्राणायाम के द्वारा मन को नियंत्रित किया जा सकता है।

कर्नल शिवदान सिंह

तथ्य-कथ्य | 2023 में कुल कारों की बिक्री में इलेक्ट्रिक कारों की हिस्सेदारी

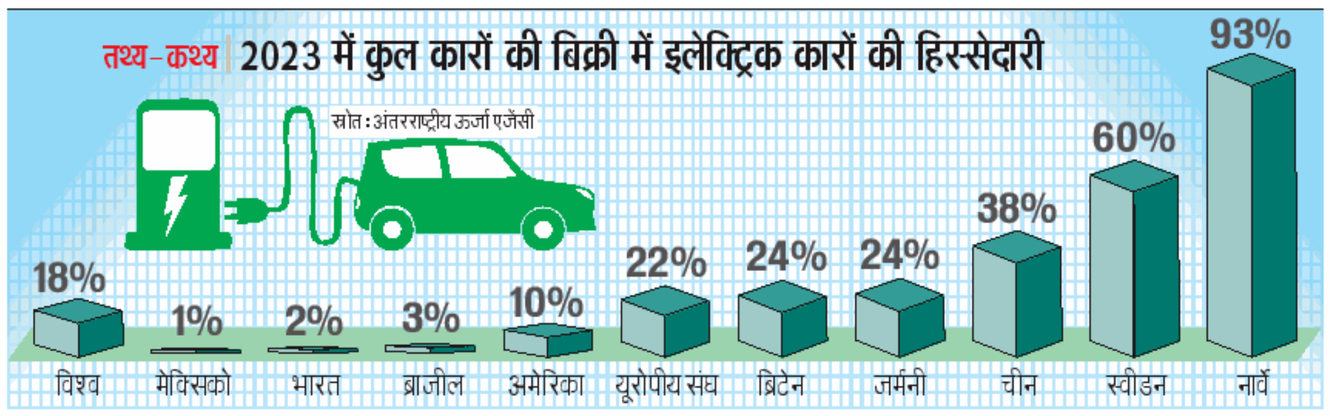

राजरंग

आधुनिक अभिमन्यु

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का मानना है कि वह आधुनिक अभिमन्यु हैं। यानी उन्हें चक्रव्यूह के अंदर जाकर बाहर आना भी आता है। यूं तो उन्होंने यह बयान विपक्षी दलों के परिप्रेक्ष्य में दिया है, लेकिन लोगों का मानना है कि इसी बहाने उन्होंने पार्टी और महायुति के अंदर भी नेताओं को संदेश दिया है। दरअसल लोकसभा चुनाव के कमतर नतीजों के बाद भाजपा के अंदर ही प्रदेश से लेकर केंद्र तक कई नेता फडणवीस को जिम्मेदार ठहरा कर उन्हें प्रदेश से बाहर करना चाहते हैं, लेकिन फडणवीस ने जिस तरह गोटियां बिठाई हैं और संगठन पर अपनी पकड़ को मजबूत बनाए रखा है, उससे बहुसंख्य कार्यकर्ताओं को तो यही संदेश है कि पार्टी सत्ता में आई तो फिर फडणवीस ही मुख्यमंत्री बनेंगे। वैसे भी कई राज्यों में भाजपा की रणनीति रही है कि जातियों के वर्चस्व के घमासान में पार्टी छोटी संख्या वाली न्यूट्रल जाति के नेता को सामने खड़ा कर देती है। ऐसे में फडणवीस के अभिमन्यु वाले बयान को अहम माना जा रहा है।

शाम का आफिस

देश में हर चुनाव में राजनीतिक दलों के कार्यालय में गहमा-गहमी होती ही है, लेकिन हरियाणा का चुनाव कुछ खास ही होता है। कांग्रेस इन दिनों पार्टी मुख्यालय में हर दिन जुट रही भीड़ से भारी परेशान है। कब कौन कमरे में आकर ठेठ अंदाज में धमक जाए, यह पता नहीं। नेताजी भी कई बार असमंजस में पड़ जाते हैं कि उन्हें क्या जवाब दिया जाए। लिहाजा पिछले कुछ दिनों से अधिकतर पदाधिकारी शाम को ही दफ्तर आना पसंद करते हैं या फिर कहीं और बैठ कर काम निपटाते हैं। वैसे कांग्रेस आफिस के कर्मचारी खुश हैं, क्योंकि उनकी पूछ-परख बढ़ गई है।

नया प्रस्ताव

लंबे समय से जदयू के साथ रहते हुए लगभग हर विषय पर बोलने वाले केसी त्यागी अब प्रवक्ता नहीं रहे। कई मामलों में उनकी लाइन पार्टी से अलग होने लगी थी। अब चर्चा यह छिड़ गई है कि वह पार्टी में रहेंगे या नहीं। वह खुद तो कह रहे हैं कि नीतीश कुमार को छोड़कर कहीं नहीं जा रहे हैं, लेकिन उनके नजदीकियों की ओर से यह संदेश भी दिया जा रहा है कि राजद के तेजस्वी यादव का संदेश त्यागीजी को मिल चुका है। बिहार कांग्रेस के भी एक बड़े नेता ने संपर्क साधा है। इसकी पुष्टि नहीं हुई है और इसकी जानकारी भी सूत्रों से साझा नहीं की जा रही है कि प्रस्ताव प्रवक्ता बनने का ही आया है या फिर कुछ ठोस मिल सकता है।

डांट अच्छी लगे

उद्योग जगत में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी स्टार के रूप में देखे जाते हैं। वह हमेशा कुछ नया आइडिया देकर जाते हैं और बताते कुछ इस अंदाज में हैं जैसे सब कुछ तत्काल हो सकता है। वह ऐसी बात भी बोल जाते हैं जिसके बाद आयोजक सिर पकड़ कर बैठ जाते हैं। कभी आटो उद्योग को वह बुलडोज करने की धमकी दे देते हैं तो कभी इलेक्ट्रिक कार उद्योग को सब्सिडी देने की व्यवस्था पर ही सवाल उठा देते हैं, लेकिन इसके बावजूद उद्योग जगत में उनकी लोकप्रियता ऐसी है कि हर आर्थिक सेमिनार में उन्हें बुलाने के लिए हरमुमकिन कोशिश की जाती है। गडकरी की उपस्थिति कार्यक्रम को सफल जो बना देती है। अगले हफ्ते फिर से आटोमोबाइल उद्योग के सबसे बड़े सालाना आयोजन में गडकरी को आना है और इसके आयोजक अभी से आपस में मजाक कर रहे हैं कि देखें इस बार कैसी डांट पड़ती है?

X पोस्ट

कांग्रेस हरियाणा में आप को हल्के में न ले। गठबंधन नहीं होने पर वह सभी 90 सीटों पर लड़ेगी। पंजाब के बाद अगर आप का संगठन किसी राज्य में है तो वह हरियाणा में ही बना हुआ है। अजी हां@AjiHaaan

जम्मू-कश्मीर में भाजपा एनसी/पीडीपी/कांग्रेस को हराने के लिए अलगाववादियों पर उनकी ही रणनीति का उपयोग करती दिख रही है। भाजपा का लक्ष्य जम्मू में 30-35 सीटें जीतना और फिर सरकार बनाने के लिए 10-15 निर्दलीय विधायकों का समर्थन प्राप्त करना है। अगर ऐसा होता है तो प्रदेश को इतिहास में पहली बार जम्मू से पहला हिंदू मुख्यमंत्री मिलेगा। आदित्य राज कौल@AdityaRajKaul

एक भाजपा सांसद ने बिना कुछ बदले एक सच्ची घटना पर आधारित फिल्म बनाई, फिर भी वह अपनी फिल्म रिलीज नहीं कर पा रही हैं। भाजपा को तब बुरा नहीं मानना चाहिए जब कांग्रेसी उसका मजाक उड़ाते हुए कहते हैं कि 'सरकार आपकी है, पर सिस्टम हमारा है।' मि. सिन्हा@MrSinha_

1975 में इमरजेंसी लगाई गई थी और 2024 में 'इमरजेंसी' स्थगित कर दी गई। कितना कुछ बदल गया इन 50 वर्षों में। कमलेश सिंह@kamleshksingh

जनपथ

राजी तो है रूस भी राजी है यूक्रेन,
किंतु समझना है कठिन अमरीका का ब्रेन।
अमरीका का ब्रेन लड़ाई वो करवाए,
कटें रूस-यूक्रेन शांति फिर कैसे आए।
कही पुतिन ने बात अभी है ताजी-ताजी,
शांति वार्ता हेतु दिख रहे वह तो राजी।
- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व.पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त
जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प. बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 148

सितारों की ओर देखें और महसूस करें कि ब्रह्मांड के अस्तित्व के क्या कारण हैं! -स्टीफन हॉकिंग

'कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहता' यह कहावत शेयर बाजार और सितारों के साथ-साथ हमारी जिंदगी और रेत पर उकेरी आकृतियों पर भी लागू होती है। चाहे आने वाले अनंत युगों में कुछ भी हो, यदि ब्रह्मांड का अंत हुआ, तो हम याद रखेंगे कि कम से कम हम यहां अनंत काल के उस क्षणिक चमकते हुए क्षण के लिए मौजूद थे, जब ब्रह्मांड जीवन और प्रकाश से भरा हुआ था। अंत में, अपनी आकाशगंगा हमेशा अपने पास रहेगी।

ब्रह्मांड के आखिरी शब्द क्या होंगे?

अंतरिक्ष विज्ञानी कहते हैं कि सौ अरब साल बाद पृथ्वी खत्म हो जाएगी। लेकिन भविष्य के उस आखिरी दिन, उस अंतिम व्यक्ति के दिमाग में आने वाला आखिरी विचार क्या होगा? क्या वह अंतिम विचार ज्ञान का गहन मोती होगा?

डेनिस ओवरबाय
विज्ञान लेखक एवं पत्रकार

The New York Times

अंतरिक्ष विज्ञानियों का मानना है कि 100 अरब साल बाद पृथ्वी का अंत हो जाएगा। तो क्या अभी से घबराना जल्दबाजी होगी? बर्नार्ड कॉलेज की ब्रह्मांड विज्ञानी जन्ना लेविन ने जोनाथन हैल्परिन और ड्रू ताकाहाशी द्वारा निर्देशित नई नेटफ्लिक्स डॉक्यूमेंटरी *ए ट्रिप टू इनफिनिटी* (अनंत की एक यात्रा) के अंत में घोषणा की, 'मात्र एक अंतिम संवेदनशील प्राणी होगा, मात्र एक अंतिम विचार होगा।'

जब मैंने हाल ही में फिल्म प्रदर्शन के दौरान यह कथन सुना, तो मेरा दिल बैठ गया। यह सबसे दुखद, नितांत एकाकी विचार था। मुझे लगा कि हम भौतिकी और ब्रह्मांड के बारे में जो जानते हैं, यदि वह सच है, तो जीवन और बुद्धिमत्ता बर्बाद हो जाएगी। यह एक ऐसा पहलू था, जिसके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सोचा था। भविष्य में किसी समय ब्रह्मांड में कहीं न कहीं एक आखिरी संवेदनशील प्राणी होगा और एक आखिरी विचार। और वह आखिरी शब्द, चाहे कितना भी गहन या दुनियावी क्यों न हो, आइंस्टीन और एल्विस, जीसस, बुद्ध, एरीथा और ईव की यादों के साथ मौन में विलीन हो जाएगा, जबकि भौतिक ब्रह्मांड के शेष हिस्से खरबों वर्षों तक एकाकी, मौन चलते रहेंगे। क्या वह अंतिम विचार ज्ञान का गहन मोती होगा? आखिर हम मनुष्य इस मुसीबत में फंस कैसे गए?

जैसा कि हम जानते हैं, ब्रह्मांड की उत्पत्ति 13.8 अरब साल पहले एक भयंकर विस्फोट (बिग बैंग) से हुई थी और तब से यह विस्तृत हो रहा है। खगोलविदों ने दशकों तक बहस की कि क्या यह हमेशा के लिए विस्तृत होता रहेगा या किसी दिन फिर से 'बड़ी दरार' में खत्म हो जाएगा। वर्ष 1998 में यह सब कुछ बदल गया, जब खगोलविदों ने पाया कि ब्रह्मांड का विस्तार तेजी से हो रहा है, जो अंतरिक्ष-समय (दिक्-काल) के ढांचे का हिस्सा बने गुरुत्वाकर्षण-विरोधी बल द्वारा बढ़ाया जा रहा है। ब्रह्मांड जितना बड़ा होता जाता है, यह 'डार्क एनर्जी' उसे उतनी ही जोर से अलग करती है। अगर यह डार्क एनर्जी प्रबल होती है, तो अंत में दूर की आकाशगंगाएं इतनी तेजी से दूर चली जाएंगी कि हम उन्हें नहीं देख पाएंगे। समय जितना बीतता जाएगा, ब्रह्मांड के बारे में हमारी जानकारी उतनी ही कम होती जाएगी। तारे मर जाएंगे और उनका पुनर्जन्म नहीं होगा।

इससे भी बुरी बात यह है कि चूंकि सोचने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है, ब्रह्मांड में विचार के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं होगी। अंत में केवल उप-परमाणु के कण ही होंगे, जो एक-दूसरे से दूर कई आकाशगंगाओं के बीच मौन अंधेरे में नाचते रहेंगे, ब्रह्मांड में प्रकाश या जीवन होने के खरबों वर्ष बाद। और फिर, अनगिनत खरबों युग बीत जाएंगे, जब वर्षों को गिनने का कोई तरीका नहीं रह जाएगा। ऐसे में हम अपनी तुच्छता पर न खीजें, यह मुश्किल है। जैसा कि हम जानते हैं कि ब्रह्मांड अब 14 अरब साल पुराना है, जो लंबा समय प्रतीत होता है, लेकिन यह आने वाले खरबों वर्षों के अंधकार का एक छोटा-सा हिस्सा है। यानी हमारे ब्रह्मांड में जो भी दिलचस्प चीजें घटित हुईं, वे सब एक क्षणिक चमक में घटित हुईं। एक आशाजनक शुरुआत, और फिर एक अनंत खाई। आप कह सकते हैं कि ब्रह्मांड के भविष्य का निर्धारण करना अभी बहुत जल्दी है। भौतिकी में नई खोजें रास्ता प्रदान कर सकती हैं। हो सकता है कि डार्क एनर्जी स्थिर न हो; और ब्रह्मांड को फिर से संकुचित कर दे। लेकिन फिलहाल का ज्ञान तो यही कहता है कि अंतरिक्ष में भागने का कोई रास्ता नहीं है। आकाशगंगाएं खुद ब्लैक होल में समा जाएंगी। और अंततः ब्लैक होल उन सभी कणों और विकिरणों को छोड़ देंगे, जिन्हें उसने कणों और विकिरणों की एक पतली फुहार के रूप में कैद कर रखा है, और जो डार्क एनर्जी की तेज हवा में बिखर जाएंगे। जैसे कि बिग बैंग की प्रचंड ज्वाला से उभरने वाला पहला जीवित प्राणी कहीं न कहीं, कभी न कभी था, वैसे ही मरने वाला एक आखिरी प्राणी, एक आखिरी विचार होगा। एक आखिरी संवेदनशील प्राणी, जैसा कि डॉ. लेविन ने बताया। इस विचार ने मुझे रोक दिया। मेरे मन में कभी यह विचार नहीं आया था कि किसी व्यक्ति के पास अस्तित्व पर अंतिम शब्द होगा, शाप देने या आभारी होने का अंतिम मौका। दुखद है कि कोई नहीं जान पाएगा कि किसने अंतिम शब्द कहा, या क्या सोचा या कहा। मुझे आश्चर्य हुआ कि यह कैसा होगा! संभवतः जैसे-जैसे सारी ऊर्जा क्षितिज के पार चली जाएगी, यह नींद में डूबने जैसा हो। या आइजैक असिमोव की क्लासिक कहानी *द लास्ट क्वेश्चन* में समय के अंत में कंप्यूटर अंततः ब्रह्मांड के रहस्य का पता लगाता है और घोषणा करता है, 'प्रकाश हो।' क्या यह स्ट्रिंग थ्योरी की प्रकृति के बारे में कोई ज्वलंत एहसास हो सकता है या ब्लैक होल के बारे में अंतिम रहस्य? मैं इसे खोना नहीं चाहता। मैं सोचना चाहता हूं कि मेरा अंतिम विचार प्रेम, कृतज्ञता, विस्मय या किसी प्रियजन के चेहरे के बारे में होगा, लेकिन मुझे चिंता है कि यह व्यर्थ ही होगा। समझदार लोग कह सकते हैं, जब मैं इस बारे में बात करता हूं, तो उन अरबों वर्षों के बारे में क्यों नहीं रोता, जो मेरे जन्म से पहले गुजर गए? शायद इसलिए, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि मैं क्या खो रहा हूं, अब मेरे पास यह कल्पना करने के लिए पूरा जीवन है कि मैं क्या खोऊंगा। अगर यह आपको चिंतित करता है, तो आइंस्टीन के समीकरणों से सीधे एक उत्साहजनक रूपक है: जब आप ब्लैक होल के अंदर होते हैं, तो बाहरी ब्रह्मांड से प्रकाश आता है, जो गति पकड़ता हुआ प्रतीत होता है, जबकि आप जमे हुए प्रतीत होते हैं। सिद्धांत रूप में, आप आकाशगंगा के पूरे भविष्य के इतिहास या यहां तक कि पूरे ब्रह्मांड को अपने पास से गुजरते हुए देख सकते हैं, जब आप केंद्र की ओर गिरते हैं। वह विलक्षणता, जहां स्थान और समय रुक जाते हैं, और आप मर जाते हैं। शायद मृत्यु भी ऐसी ही हो सकती है, समस्त अतीत और भविष्य का रहस्योद्घाटन करती हुई। एक तरह से, जब हम मरते हैं, तो भविष्य भी मर जाता है। अधिकांश भौतिकविद और खगोलविद कहते हैं कि यह विचार राहत देने वाला है। भविष्य की मृत्यु उन्हें वर्तमान के जादू पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्वतंत्र करती है। प्रिंसटन के दिवंगत महान खगोल भौतिक विज्ञानी, दार्शनिक और ब्लैक होल प्रचारक जॉन आर्चीबाल्ड व्हीलर कहा करते थे कि अतीत और भविष्य काल्पनिक हैं, तथा वे केवल वर्तमान की कलाकृतियों और कल्पनाओं में ही हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, ब्रह्मांड का अंत मुझ पर ही होता है, और इसलिए अंतिम निर्णय मेरा ही होगा। 'कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहता' यह कहावत शेयर बाजार और सितारों के साथ-साथ हमारे जीवन और बौद्ध रेत चित्रों पर भी लागू होती है। अनंत काल की एक झलक पूरे जीवनकाल को रोशन कर सकती है, शायद मेरे जीवन को भी। चाहे आने वाले अनंत युगों में कुछ भी हो, कम से कम हम यहां अनंत काल के उस क्षणिक चमकते हुए क्षण के लिए मौजूद थे, जब ब्रह्मांड जीवन और प्रकाश से भरा हुआ था। मेरी आकाशगंगा हमेशा मेरे पास रहेगी।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

कलियुग के प्रभाव से परीक्षित के मन में शमीक मुनि को दंड देने का विचार आया। निकट ही एक मृत सर्प पड़ा था। परीक्षित ने अपने बाण की नोक से सर्प को उठाया और उसे ऋषि के गले में डालकर आश्रम से चला गया...

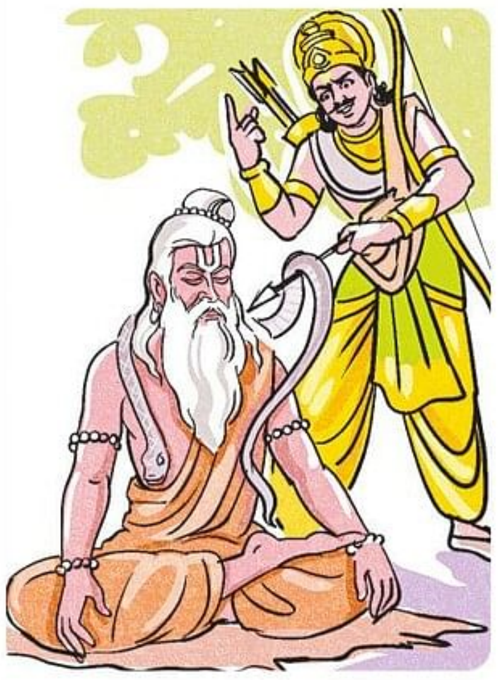

जनमेजय ने क्यों किया था नाग-यज्ञ?

उन दिनों अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित का शासन था। परीक्षित के ही शासनकाल में द्वापर का अंत और कलियुग का आरंभ हुआ माना जाता है। कलियुग के प्रभाव से परीक्षित के हाथों एक गलत काम हो गया, जिसका मूल्य उसे प्राण देकर चुकना पड़ा। एक दिन परीक्षित वन में एक हिरण का पीछा करते हुए बहुत आगे निकल गया और मार्ग भटक गया। उसे बहुत प्यास लगी थी। मार्ग में उसे ऋषि शमीक का आश्रम मिला। शमीक मुनि उस समय आंख बंद करके ध्यान में लीन थे। इसलिए उनकी दृष्टि परीक्षित पर नहीं पड़ी।

धूप आने दो

राजा ने शमीक से पीने के लिए पानी मांगा, किंतु ध्यान में लीन मुनि ने कोई उत्तर नहीं दिया। थकान और प्यास से परेशान परीक्षित को क्रोध आ गया, क्योंकि उसके सिर पर रखे मुकुट में कलियुग बैठा था। कलियुग के प्रभाव से परीक्षित के मन में मुनि को दंड देने का विचार आया। निकट ही एक मृत सर्प पड़ा था। परीक्षित ने बाण की नोक से सर्प को उठाया और उसे ऋषि के गले में डालकर आश्रम से चला गया। शमीक का शृंगी नाम का तेजस्वी पुत्र था। उसे जब परीक्षित के हाथों हुए अपने पिता के अपमान का पता चला, तो उसे क्रोध आ गया। उसने शाप दे दिया, 'जिस पापात्मा ने मेरे पिता के गले में मृत सर्प डाला है, उसकी आज से सातवें दिन तक्षक नामक भयानक सर्प के डसने से मृत्यु हो जाएगी!' ऋषि शमीक ने शाप के बारे में सुना, तो उन्हें अपने पुत्र के अविवेक पर बड़ा दुख हुआ। उन्होंने गौमुख नाम के अपने एक शिष्य से परीक्षित के पास शृंगी के शाप का समाचार भिजवाया और कहा कि राजा परीक्षित को अपनी सुरक्षा का समुचित प्रबंध कर लेना चाहिए।

शृंगी के शाप से बचने के लिए परीक्षित ने एक सप्त-तल प्रासाद बनवाया और चहुं ओर से प्रासाद की सुरक्षा व्यवस्था करवा दी। परीक्षित को यह भी पता था कि शृंगी तेजस्वी ऋषिकुमार हैं, इसलिए उसका शाप समय पर अवश्य फलीभूत होगा। इसलिए परीक्षित ने जीवन के बचे हुए सात दिनों में महर्षि शुकदेव से उपदेश सुनने की इच्छा व्यक्त की। तब वेदव्यास के पुत्र महर्षि शुकदेव ने सात दिनों में परीक्षित को भगवद्भक्ति का महत्व समझाते हुए उपदेश दिया और वही ज्ञान आज ग्रंथ के रूप में 'शुक-सागर' के नाम से प्रसिद्ध है।

इस बीच, सातवें दिन शाप के प्रभाव से तक्षक नाग परीक्षित को डसने के लिए चल पड़ा। उसे मार्ग में काश्यप नामक तपस्वी मिला। दोनों में बातचीत हुई, तो तक्षक को पता चला कि काश्यप, विष से परीक्षित की रक्षा करने के लिए ही जा रहे थे।

दोनों ने वहां शक्ति का प्रदर्शन किया। तक्षक ने एक वृक्ष पर विष छोड़ा, जिससे वृक्ष जलकर भस्म हो गया। परंतु काश्यप ने अपनी मंत्र-विद्या से वृक्ष को पुनः हरा-भरा कर दिया। तक्षक समझ गया कि काश्यप उससे अधिक शक्तिशाली है। उसने काश्यप को बहुत-सा धन देकर मार्ग से ही लौटा दिया और स्वयं परीक्षित के महल तक पहुंच गया। फिर उसने एक कीड़े का रूप धारण किया और एक फल के भीतर छिपकर राजा परीक्षित के पास पहुंच गया। राजा के लिए फल काटा गया, तो उसमें से एक कीट निकला, जो रक्तवर्ण था। उसे देखकर सबको संदेह हुआ, किंतु परीक्षित ने कहा, 'सूर्य अस्ताचलगामी है, अतः मुझे तक्षक से अब कोई भय नहीं है।' परंतु होनी को कौन टाल सकता है! शृंगी का शाप फलीभूत होना तय था। राजा अभी कीट को देख ही रहा था कि वह भयंकर तक्षक नाग में परिवर्तित हो गया। अगले ही क्षण उसने परीक्षित को डस लिया और राजा परीक्षित की मृत्यु हो गई।

परीक्षित की मृत्यु के कई वर्ष बाद उसके पुत्र जनमेजय को जब अपने पिता की मृत्यु का कारण पता चला, तो उसने नाग-जाति से प्रतिशोध लेने के लिए यह संकल्प लिया कि वह तक्षक समेत संसार के समस्त सर्पों को यज्ञ की अग्नि में जलाकर भस्म कर देगा। इसी उद्देश्य से 'जनमेजय के नाग-यज्ञ' का आयोजन हुआ था। अगली कथा में आपको नाग-यज्ञ का परिणाम बताएंगे!

अरण्ये पुष्पिता वृक्षा
दूरस्थाने च बान्धवाः।
समृद्धेनापि किं तेन
यः काले नोपतिष्ठति।।

अर्थात जंगल में खिले हुए पेड़ और दूर जाकर बसे रिश्तेदार किसी काम के नहीं होते। उसी तरह, वह अमीर व्यक्ति भी किसी काम का नहीं है, जो समय पर धन नहीं देता हो। भला, समय बीतने पर वह धन किस काम का है?

- चाणक्य नीति

प्रस्तुति : शास्त्री कोसलेंद्रदास

ताकि स्मार्टफोन आपको रात भर न जगाए

जे. डी. बिएर्सडॉर्फर

अभी ऐसे उपकरणों से युक्त स्मार्टफोन उपलब्ध हैं, जो आपको ये तो बताते ही हैं कि आप कितनी नींद ले रहे हैं, सही मानसिक स्थिति में लाकर धीरे-धीरे नींद की दुनिया में भी ले जाते हैं।

स्मार्टवॉच और दूसरे पहनने योग्य गैजेट की नींद की निगरानी करने वाली सुविधा यह पता कर सकती है कि आप कितनी नींद ले रहे हैं, लेकिन क्या होगा, अगर आपको शुरू में ही नींद आने में परेशानी हो? हालांकि, इसका उद्देश्य चिकित्सा संबंधी मार्गदर्शन की जगह लेना नहीं है, लेकिन अभी ऐसे उपकरणों से युक्त स्मार्टफोन उपलब्ध हैं, जो आपको सही मानसिक स्थिति में लाकर धीरे-धीरे नींद की दुनिया में ले जाते हैं।

कई डॉक्टर हर दिन नियमित समय पर सोने और जागने की सलाह देते हैं। लेकिन इसके लिए अलार्म सेट करना याद रखने की जरूरत नहीं है, क्योंकि ज्यादातर स्मार्टफोन आपको हफ्ते भर के लिए नियमित नींद का समय तय करने देते हैं। आप अपनी व्यस्तता के अनुसार हर दिन के लिए अलग-अलग समय तय कर सकते हैं। अगर आप सप्ताहांत पर एक अतिरिक्त घंटा सोना चाहते हैं, तो आप खास दिनों के लिए अलग-अलग सोने और जागने का समय तय कर सकते हैं।

आईफोन पर, आइओएस हेल्थ ऐप खोलें, स्क्रीन के नीचे ब्राउज पर टैप करें और हेल्थ कैटेगरी मेनू में स्लीप चुनें। स्लीप स्क्रीन पर आप अपने सप्ताह भर के लिए नियमित सोने और जागने का समय तय कर सकते हैं, और अलार्म का प्रकार चुन सकते हैं। कई एंड्रॉइड फोन पर अलार्म प्रकार के साथ एक सरल दैनिक नींद का समय तय करने के लिए क्लॉक ऐप खोलें और स्क्रीन के निचले भाग में बेडटाइम आइकन पर टैप करें। सोने से पहले जब आप फोन को स्क्रॉल करते रहते हैं, तो अपने फोन को आपको बहुत अधिक जगाए रखने से रोकना एक अन्य चुनौती है। आईफोन के हेल्थ ऐप में, स्लीप सेटिंग पर वापस जाएं और फुल शेड्यूल और विकल्प पर टैप करके चुनें कि आपको कब तनाव मुक्त होने के लिए रिमाइंडर चाहिए, अपनी नींद का लक्ष्य तय करें और पता करें कि आप बिस्तर पर कितनी बार फोन तक पहुंचते हैं।

आप अपने शेड्यूल को एप्पल के स्लीप फोकस टूल से भी यहां कनेक्ट कर सकते हैं। गीतों की एक छोटी सूची या पॉडकास्ट एपिसोड खुद बंद हो सकता है, पर अगर आप आईफोन पर अपनी पसंदीदा ऑडियो सुनकर सोना चाहते हैं और नहीं चाहते कि डिवाइस पूरी रात चले, तो क्लॉक ऐप खोलें और टाइमर सेट करें। ध्यान रहे ये उपकरण आपकी मदद के लिए हैं, यदि आपको वास्तव में नींद से जुड़ी कोई गंभीर समस्या है, तो फोन का उपयोग कर कृपया तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

©The New York Times 2024

अध्ययन कक्ष

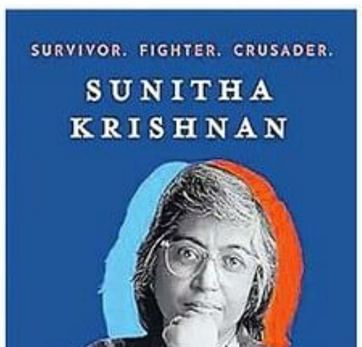

आई एम व्हाट आई एम

लेखक : सुनीता कृष्णन

प्रकाशक : वेस्टलैंड
मूल्य : 699 रुपये
हार्डकवर

मेरा क्रोध ही मेरी प्रेरणा है

आई एम व्हाट आई एम एक ऐसी स्त्री के संघर्षपूर्ण जीवन का मर्मस्पर्शी एवं प्रेरणादायक संस्मरण है, जिन्होंने अपने साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म के बाद पैदा आक्रोश से यौन अपराधों के खिलाफ प्रज्वल नामक संगठन को जन्म दिया।

शुरुआत में उनका परिवार और उनके माता-पिता उन पर गर्व करते थे, क्योंकि दूसरे परिवारों के लिए भी वह एक आदर्श बच्ची थीं, जो पढ़ाई में अच्छा करती थीं और बहुत सक्रिय रहती थीं। लेकिन जैसे ही वह सामूहिक दुष्कर्म की शिकार हुईं, उनका जीवन पूरी तरह बदल गया। अपना ही परिवार उनके अस्तित्व को कोसने लगा और कभी उनकी मिसाल देने वाले पड़ोस के माता-पिता भी अपने बच्चों से कहने लगे कि वे उनसे बातें न करें, क्योंकि इससे उन पर बुरा असर पड़ेगा। इन सब चीजों ने उनके भीतर एक ऐसा आक्रोश पैदा किया, जिसकी चिंगारी से प्रज्वल (शाब्दिक अर्थ शाश्वत उजाला) नामक एक तस्करी-विरोधी संगठन का जन्म हुआ, जो यौन तस्करी और यौन अपराध के मुद्दे पर काम कर रहा है। वर्ष 1996 में स्थापित प्रज्वल अखिल भारतीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संचालित संस्था है। यह कहानी है सुनीता कृष्णन की, जिन्होंने अपने सामूहिक दुष्कर्म से लेकर ऐसी ही पीड़िताओं के पैरोकार बनने तक की संघर्षपूर्ण यात्रा को संस्मरण के रूप में *आई एम व्हाट आई एम* शीर्षक पुस्तक में संकलित किया, जो यौन अपराधों एवं मानव तस्करी की तल्ख सच्चाई को भी उजागर करती है।

लेखिका की कहानी मर्मस्पर्शी और प्रेरणादायक दोनों है, जिसमें उन्होंने अपने व्यक्तिगत संघर्षों, भारत में यौन तस्करी का सामना करने के अपने दृढ़ संकल्प, अपने मिशन के सामने खड़ी भारी बाधाओं और इस लड़ाई में अपने अटूट विश्वास के बारे में लिखा है, जो रोंगटे खड़ी करने वाली है।

उनकी ईमानदारी इस पूरी किताब में स्पष्ट दिखाई देती है, जो इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। वह कहती हैं, 'मुझ पर एक ऐसे अपराध का आरोप लगाया गया, जो मैंने नहीं किया था, मुझे शर्मिंदा किया गया और उस चीज के लिए दोषी महसूस कराया गया, जिसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं थी। इन सब बातों ने ऐसा गुस्सा पैदा किया, जिसने मुझे तब प्रेरित किया और आज भी प्रेरित करता है।'

हमारे देश में लाखों महिलाएं और बच्चे सेक्स तस्करी में फंसे बताए जाते हैं और हर साल लाखों को इस नर्क में धकेला जाता है। यह पुस्तक न केवल इस विषय में जागरूकता बढ़ाती है, बल्कि कार्रवाई के लिए प्रेरित भी करती है। इस किताब को पढ़ने का असल अर्थ तब समझ में आता है, जब इसे महज किताब की तरह नहीं, बल्कि एक प्रेरणादायी सबक की तरह पढ़ा जाए, क्योंकि यह हर चुनौती से जूझने और जीतने तथा एक बेहतर इन्सान बनने का जुनून पैदा करती है।

आई एम व्हाट आई एम वेश्यावृत्ति, तस्करी और सामाजिक मानदंडों के बारे में पाठकों के नजरिये को पूरी तरह बदल देने की क्षमता रखती है और संकीर्णता को चुनौती देती हुई महिलाओं एवं बच्चों के शोषण की कठोर वास्तविकताओं के प्रति आंखें भी खोलती है। पीड़ित-पीड़ित के बीच के संबंध, भारत में वेश्यावृत्ति को वैध बनाने के खतरे और पीड़ितों के खिलाफ समाज में जड़ जमाए हुए कलंक की भावना के बारे में सुनीता कृष्णन की अंतर्दृष्टि मजबूत और दिल दहला देने वाली, दोनों है। मौजूदा परिदृश्य में बदलाव के लिए किया गया उनका अथक संघर्ष वाकई प्रेरणादायक है। यह पुस्तक सहानुभूति, समझ और वास्तविक बदलाव के लिए काम करने का आह्वान है।

अभियान

amarujala.com
अमर उजाला

जिंदगी बढ़िया हो सकती है, अगर लोग आपको अकेला छोड़ दें।
-चार्ली चैपलिन

Hindi@mithelesh
■ मिथिलेश बारिया

गोल चबूतरा

**चांद नहीं, दीये से पूछो,
रात कितनी तूफानी है...**

**मैं क्या-क्या भूल चुका हूं, मुझे सब याद है,
सब तजुर्बे नहीं थे, कुछ गलतियां भी थीं...**

एल्थिया थीं पहली अश्वेत यूएस ओपन विजेता

झरोखा
8 सितंबर

आज के ही दिन सन 1957 में 30 वर्षीय एल्थिया गिब्सन ने अमेरिका की ही लुईस ब्रौ को हराकर यूएस ओपन चैंपियनशिप जीती थी। ऐसा करने वाली वह पहली अफ्रीकी-अमेरिकी यानी अश्वेत टेनिस खिलाड़ी थीं। 6 जुलाई, 1957 को गिब्सन ने हमवतन डार्लिन हार्ड को हराकर विंबलडन जीतने वाली पहली अश्वेत महिला बनने का खिताब भी हासिल किया था। 1956 में उन्होंने ब्रिटेन की एंजेला मॉर्टिमर को हराकर अपना पहला एकल ग्रैंड स्लैम खिताब जीता था। एल्थिया गिब्सन ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट जीतने वाली पहली अश्वेत महिला थीं। गिब्सन एक बेहतरीन एथलीट थीं और मात्र 12 साल की उम्र में न्यूयॉर्क की महिला पैडल टेनिस चैंपियन रहीं। 20 साल की उम्र के बाद वह दुनिया की सबसे बेहतरीन महिला टेनिस खिलाड़ियों में से एक बन गई थीं। चूंकि 1968 से पहले यूएस ओपन (यूएस नेशनल चैंपियनशिप) में कोई पुरस्कार राशि नहीं थी, तब गिब्सन शौकिया तौर पर टेनिस खेलती थीं। इसलिए उन्होंने अपनी ऐतिहासिक जीत के बाद किसी अन्य पेशे में जाने की बात कही थी। एल्थिया गिब्सन रिकॉर्डिंग कलाकार बनीं और उन्होंने एक एलबम भी जारी किया। 1959 में उन्होंने 'द एड सुलिवन' शो में गाना गाया। एल्थिया गिब्सन ने 1958 में टेनिस से संन्यास ले लिया था।

■ कैथल से नीरज उपाध्याय

पहली बार का गौरव

यह तस्वीर 1966 में बोस्टन मैराथन में दौड़ने वाली बॉबी गिब की है। उन्होंने मैराथन दौड़ने वाली पहली महिला एथलीट के रूप में अपना नाम दर्ज कराया था। वह बिना नंबर के दौड़ी थीं, क्योंकि उस समय महिलाओं को दौड़ में शामिल होने की अनुमति नहीं थी।

■ नैनीताल से पीतांबर उप्रेती

छायानट

श्रीदेवी नहीं पहनना चाहती थीं सफेद साड़ी

1989 में आई यश चोपड़ा की फिल्म 'चांदनी' अपनी दिलचस्प कहानी और शिव-हरि यानी पंडित शिवकुमार शर्मा और पंडित हरिप्रसाद चौरसिया के सुमधुर संगीत के कारण ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। इस फिल्म को श्रीदेवी, ऋषि कपूर और विनोद खन्ना के बेहतरीन अभिनय के लिए खूब सराहना मिली थी। दिलचस्प बात यह है कि फिल्म में श्रीदेवी सफेद साड़ी पहनने को तैयार नहीं थीं और उन्होंने इसका विरोध भी किया था, लेकिन यश चोपड़ा उनका यही लुक चाहते थे। एक साक्षात्कार में यश चोपड़ा ने बताया था, "शूटिंग वाले दिन श्रीदेवी मेरे पास आईं और बोलीं कि यश जी, यह सफेद साड़ी क्यों? यह बहुत 'डल' है। मैंने उनसे कहा कि मुझे एक अभिनेता के तौर पर आप पर और आपके अभिनय पर भरोसा है। अगर आपको एक निर्देशक के तौर पर मुझ पर भरोसा है तो मैं आपको वैसे ही पेश करना पसंद करूंगा, जैसा मैं चाहता हूं।" रिलीज के बाद फिल्म में श्रीदेवी के सफेद और शिफॉन साड़ी लुक ने ही फैशन उद्योग में एक क्रांति को जन्म दे दिया था।

■ विशाल गुप्ता, बरेली

हमारे देश में हर साल ढेर सारे त्योहार आते हैं। ये त्योहार हमें प्रकृति से जुड़ने की सीख देते हैं, उससे प्रेम करने के साथ-साथ उसकी रक्षा करने का संदेश देते हैं। लेकिन हम इन सीख-संदेशों का कितना पालन करते हैं?

प्रकृति से प्रेम सिखाते हैं त्योहार

हम क्यों नहीं सीखते?

चिट्ठी 1

पुराने समय मूर्तियों को बनाने के लिए प्राकृतिक वस्तुओं का इस्तेमाल किया जाता था। उस समय भगवान गणेश की मूर्ति को मिट्टी से बनाया जाता था और पूजा में गाय के गोबर का इस्तेमाल किया जाता था। पूजा के बाद जब इस पूजा सामग्री के अवशेषों को जल में प्रवाहित किया जाता था तो इससे जल अशुद्ध नहीं होता था, लेकिन अब शायद ही कोई गाय के गोबर का उपयोग करता हो। अब तो हर पर्व पर आधुनिकता का रंग चढ़ने लगा है, यह हमारी सभ्यता और संस्कृति के विरुद्ध भी है और पर्यावरण के लिए भी उचित नहीं है।

अगर हम गणेश चतुर्थी पर गणेश जी की मूर्तियों को खरीदते हैं और प्राचीन तरीकों की ही पूजा सामग्री का उपयोग कर और हवन यज्ञ करते हैं तो इससे एक तो उन गरीबों का रोजगार बढ़ेगा, जो इससे संबंधित कोई काम करते हैं। दूसरे, हवन यज्ञ करने से पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। लेकिन अक्सर देखा गया है कि धार्मिक आयोजनों में उपयोग की जाने वाली सामग्री या सामान को आयोजन पूरा होने के बाद या तो किसी नहर या फिर नदी में फेंक दिया जाता है। कुछ लोग तो सूखी नहर में ही यह पूजा सामग्री डाल देते हैं। लोग गंगा नदी के किनारे पुण्य कमाने के लिए जाते हैं, लेकिन उसमें पॉलीथिन या अन्य गंदगी डालने से भी परहेज नहीं करते। फिर यह क्या हुआ पाप या पुण्य, यह कैसी संस्कृति है?

हमें नदियों में पूजा की सामग्री नहीं डालनी चाहिए। हमारे शास्त्रों में भी यह बताया गया है कि भगवान परोपकार, समाजसेवा, गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद करने से ज्यादा प्रसन्न होते हैं। नर सेवा नारायण सेवा है, इसलिए गणेश चतुर्थी पर हमें पूजा-पाठ के साथ दूसरों की मदद भी करनी चाहिए।

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

भ्रामक विज्ञापनों का जाल

चिट्ठी 2

आजकल सोशल मीडिया ने हेल्थकेयर के लिए एक नई दुनिया बसा ली है। इन्फ्लूएंसर्स से लेकर हेल्थ एक्सपर्ट तक हर कोई सेहत को लेकर ज्ञान बांटने में लगा है। बीमारी साझा करते ही कंप्यूटर स्क्रीन पर कई बीमारियों के नाम और उनका निदान हाजिर हो जाता है। कोई मधुमेह को जड़ से समाप्त करने का दावा करता है तो कोई कैंसर को। कोई कॉफी को सेहतमंद बताता है तो कोई उसी काफी को स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक बताता है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, चार में से एक व्यक्ति डॉक्टर के पास जाने के बजाय इंटरनेट पर खुद रोग की पहचान कर रहा है। एक अन्य अध्ययन में मानसिक सेहत की समस्याओं का सामना कर रहे 15 से 35 वर्ष के 81 प्रतिशत युवा लक्षणों को जानने के लिए डॉक्टर के पास जाने से पहले इंटरनेट का रुख करते हैं। रोगग्रस्त व्यक्ति के लिए इंटरनेट से सेल्फ डायग्नोस करना कितना सही है?

हमें यह समझना होगा कि हर व्यक्ति की शारीरिक संरचना एवं आनुवांशिक स्थिति दूसरे से बहुत अलग होती है। ऐसे में स्वाभाविक है कि बीमारी के प्रति उनकी प्रतिक्रिया भी अलग हो सकती है। इसलिए जरूरी हो जाता है कि इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री से बीमारी का पता लगाने के बजाय किसी अच्छे डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। तभी बीमारियों का सही तरीके से निदान हो पाएगा, नहीं तो भ्रामक विज्ञापनों के सुझावों को अपनाकर आप अपनी सेहत को नुकसान पहुंचाते रहेंगे।

■ डॉ. विकास पंडित, बड़वानी

हम किसी से कम नहीं

चिट्ठी 3

पेरिस में चल रहे पैरालंपिक में भारतीय खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन गर्वित करने वाला है। परिस्थितियों, हादसे या अन्य किसी भी कारण से यदि किसी व्यक्ति में कोई शारीरिक कमी या अक्षमता आ जाए तो समाज उसे दिव्यांग की श्रेणी में गिनने लगता है, किंतु दृढ़ इच्छा शक्ति और सक्षमता से इन खिलाड़ियों ने साबित कर दिया कि वे किन्हीं भी सक्षम खिलाड़ियों से कम नहीं हैं और अवसर मिले तो सक्षम कहे जाने वाले खिलाड़ियों को भी चुनौती दे सकते हैं।

7 सितंबर, 2024 तक पदक तालिका में भारत 6 स्वर्ण, 9 रजत और 12 कांस्य सहित 27 पदक जीत चुका था। मुख्य ओलंपिक खेलों में जहां भारतीय एक स्वर्ण पदक के लिए भी तरस कर रह गए, वहीं पैरालंपिक में अब 6 स्वर्ण पदक जीतकर खिलाडियों ने भारत का मान बढ़ाया है, जो सभी के लिए प्रेरणादायक है। यह सही है कि हमारे ये खिलाड़ी डिसेबल नहीं, बल्कि स्पेशली एबल्ड पर्सन यानी कि विशेष क्षमता वाले खिलाड़ी हैं। पेरिस ओलंपिक में भारत कुल छह पदक जीतकर 71वें स्थान पर रहा था। 2020 के टोकियो पैरालंपिक में भारत कुल 19 पदक जीतकर 24वें स्थान पर था। पेरिस में चल रहे मौजूदा पैरालंपिक में भारत अब तक 06 स्वर्ण सहित 27 पदक जीत चुका है और पदक तालिका में 17वें स्थान पर है, जो अभी निश्चित ही और ऊपर उठेगा। खिलाड़ियों की ये उपलब्धियां निश्चित ही हर्षित, गर्वित करने वाली एवं सीख देने वाली हैं, जिसके लिए वे समस्त देशवासियों की ओर से बधाई के पात्र हैं।

■ गीता यादवेन्दु, आगरा

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

बरेली से सीमा गुप्ता, उन्नाव से कुलदीप मोहन त्रिवेदी, वृंदावन से विजय महाजन प्रेमी, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, फिरोजाबाद से शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, नैनीताल से डॉ. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी, रुड़की से डॉ. श्रीगोपाल नारसन, मेरठ से डॉ. नरेन्द्र टोंक, अमेठी से डॉ. केके मिश्र, फिरोजाबाद से नितिन रावत, मिर्जापुर से सलिल पांडेय, गाजियाबाद से ललित शंकर।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

यहां बरसती हैं मछलियां

दुनिया में एक शहर ऐसा भी है, जहां साल में एक या दो बार मछलियों की बारिश होती है।

आपने आसमान से पानी, ओले या बर्फ गिरते देखा-सुना होगा, लेकिन क्या आपने कभी ऐसा देखा या सुना है कि आकाश से मछलियों की बारिश हो रही है? मध्य अमेरिका में स्थित देश होंडूरास के छोटे से शहर योरो में साल में एक या दो बार मछलियों की बारिश होती है। इस अनोखी घटना को 'लुविया डे पेसेस' कहा जाता है। भले ही कोई वैज्ञानिक परिभाषा इसे स्पष्ट करने में सक्षम न हो, लेकिन इस बारिश के दौरान शहर के लगभग हर क्षेत्र में सैकड़ों मछलियां आसमान से गिरती हैं। योरो शहर में यह घटना इतनी लोकप्रिय है कि लोग पहले से यह अनुमान लगा सकते हैं कि बादल कब मछलियां नीचे गिराने वाले हैं।

होंडूरास अटलांटिक सागर से 200 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मछलियों की बारिश होने का कारण वैज्ञानिक अटलांटिक सागर को ही बताते हैं, लेकिन वहां के लोग इसे ईश्वर का चमत्कार मानते हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि 19वीं शताब्दी में होंडूरास की आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी। भूख के कारण लोगों की मौत हो रही थी। योरो शहर में रहने वाले एक पादरी ने यह दर्दनाक दृश्य देखकर ईश्वर से लोगों को भोजन देने के लिए प्रार्थना शुरू कर दी। जब उस पादरी की प्रार्थना समाप्त हुई तो एक भीषण तूफान आया और आसमान से मछलियां गिरनी शुरू हो गईं। गौर करने वाली बात यह है कि योरो शहर में मछलियों की बारिश की यह घटना लगभग उसी समय से मई और जून के महीनों में ही होती आ रही है। दरअसल, हर साल शहर में एक बड़ा तूफान आता है, जिसके बाद भारी बारिश होती है और तूफान के गुजर जाने के बाद सड़कों पर जिंदा मछलियां बिखरी मिलती हैं।

■ ऊना से रानू गुप्ता

https://t.me/AllNewsPaperPaid

जो अपने देश से करते हैं प्यार

एक बार आंद्रे बेते ने मुझसे कहा था कि नेहरू ने गणतंत्र को बनाने में जो योगदान दिया, वह सब उनके वंशजों की गलतियों की वजह से नष्ट हो गए।

मैं भारत के विद्वान प्रोफेसर आंद्रे बेते की अत्यधिक प्रशंसा करता हूं। वे अपना 90वां जन्मदिन 15 सितंबर को मनाएंगे। वे बंगाल में पले-बढ़े और कलकत्ता यूनिवर्सिटी से एमए करने के बाद दिल्ली में रह रहे हैं। उन्होंने चार दशकों तक दिल्ली विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में पढ़ाया, साथ ही साथ कई किताबें और लेख भी लिखे। सेवानिवृत्ति के बाद प्रोफेसर बेते ने अशोक यूनिवर्सिटी के पहले कुलपति के रूप में विद्वतापूर्ण कार्यों के साथ-साथ अपनी युवावस्था और शिक्षा के बारे में एक आकर्षक संस्मरण प्रकाशित करना जारी रखा है। आधे फ्रेंच और आधे बंगाली आंद्रे बेते पूरी तरह से भारतीय हैं। वे अपने देश को इस तरह से प्यार करते हैं, जैसा शायद ही कोई बंगाली बुद्धिजीवी कर पाए। एक बार मैंने मजाक किया था कि सभी प्रसिद्ध बंगालियों की दो राष्ट्रीयता होती हैं, जैसे- नीरद सी चौधरी बंगाली और ब्रिटिश, सत्यजीत रे बंगाली और फ्रेंच, ज्योति बसु बंगाली और रूसी, नक्सल नेता चारू मजूमदार बंगाली और चीनी थे। मैंने उसमें यह भी जोड़ा कि रवींद्रनाथ टैगोर शायद अंतिम बंगाली रहे होंगे, जो बंगाली और भारतीय थे।

टैगोर की तरह ही प्रोफेसर बेते दुनिया और शेष भारत के बारे में जानने को उत्सुक रहते हैं। उन्होंने अपना डॉक्टरेट फील्ड वर्क तमिलनाडु के तंजावुर में किया था। उनके अपने शोधार्थियों में मुंबई से एक बंगाली, जमशेदपुर से एक तमिल, लद्दाख पर काम करने वाले एक कन्नड़ और कर्नाटक पर काम करने वाला एक पंजाबी था। वे अपने मार्क्स और वेबर, इवांस-प्रिचर्ड, लेवी स्ट्रॉस और नेहरू और आंबेडकर को भी बहुत अच्छी तरह जानते और समझते हैं। मैंने अपनी किताब 'डेमोक्रेट्स एंड डिसेंटर्स' में प्रोफेसर बेते की विद्वता के बारे में लिखा है। मैं उनसे पहली बार 1988 में मिला था और तब से हम एक-दूसरे के संपर्क में हैं। उनके लेखन और हमारे बीच होने वाली बातचीत ने देश के प्रति मेरे सोचने के तरीके को एक नया आकार दिया है। एक बार मैंने आंद्रे बेते को भारत का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति कहा था, हालांकि वह एक लापरवाही वाला निर्णय था। हो सकता है कि उस समय भारत में कोई बुद्धिमान महिला हो या विदेश में कोई बुद्धिमान भारतीय रहता हो। जब हम पहली बार मिले थे, तब वे एक ही नौकरी में 30 साल गुजार चुके थे और मैं 7 साल में 4 नौकरियां बदल चुका था। मैं बहुत जल्दी में था, लेकिन वे शांत थे। मैं विद्वानों के बीच विवादास्पद बहस का पक्षधर था, चाहे बातचीत में हो या लेख में। वे हमेशा संयमित रहते थे। मैं युवा था और मेरी सोच उनसे बिल्कुल अलग थी। शायद यही वजह थी कि वे मुझसे घुल-मिल गए और हमारी बातचीत को एक नई दिशा मिली।

जब राजीव गांधी जीवित थे, तब आंद्रे ने मुझसे कहा था कि जवाहरलाल नेहरू की मरणोपरांत प्रतिष्ठा ने बाइबिल की एक प्रसिद्ध उक्ति को उलट दिया है। इस मामले में पिता के पापों का फल उनके बच्चों और पोतों पर पड़ने के बजाय उनकी बेटियों और उनके पोतों के पाप उल्टे उन पर आ गए। कहने का मतलब यह कि नेहरू ने गणतंत्र को बनाने में जो योगदान दिया, वह सब उनके वंशजों की गलतियों की वजह से नष्ट हो गए। जब सोनिया गांधी और फिर राहुल गांधी राजनीति में आए तो आंद्रे बेते की टिप्पणी की बुद्धिमत्ता और भी स्पष्ट हो गई।

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

आंद्रे ने नियमित रूप से मीडिया के लिए लिखा और विवादित व्याख्यान भी दिए। वे खुद को एक विद्वान के रूप में ही देखते थे, न कि एक सार्वजनिक बुद्धिजीवी के रूप में। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि "मीडिया आकर्षण न केवल विद्वता का दुश्मन है, बल्कि यह नैतिक अखंडता के लिए भी खतरा है।" उनकी किताबें और शोध पत्र, कक्षाओं में दिए गए व्याख्यान और शोधार्थियों की निगरानी उनकी विद्वता को दिखाते हैं, न कि अखबारों में छपे उनके आर्टिकल्स। उनकी समाजशास्त्रीय विशिष्टता ने उन्हें राज्य की विशेष नीतियों की आलोचना करने में सक्षम बनाया, लेकिन कभी भी वैकल्पिक नीतियों की पेशकश नहीं की। आंद्रे अक्सर नीतियों का विश्लेषण तो करते हैं, लेकिन नीति निर्धारित नहीं करते।

प्रोफेसर बेते राजधानी दिल्ली में रहते हैं, लेकिन अन्य बुद्धिजीवियों के विपरीत उन्होंने कभी किसी प्रभुत्व वाले व्यक्ति से दोस्ती करने या उसे प्रभावित करने की कोशिश नहीं की। उनका काम शोध करना, लिखना और पढ़ाना है, न कि मंत्री या विपक्षी नेताओं के कान में सलाह देकर स्वयं को राजगुरु बताना। किसी ने उन्हें प्रकाशन या राजनीतिक पार्टियों में नहीं देखा होगा। ऐसा नहीं है कि उन्हें अपने काम के अलावा किसी अन्य चीज में रुचि नहीं है, उनकी तीन भाषाओं में कविता उनके स्थायी प्रेम में से एक है, अंग्रेजी में इलियट और मैक्नीस, फ्रेंच में मल्लार्मे, बंगाली में टैगोर और जिबनानंद दास उनके प्रिय कवि हैं।

अपने स्वभाव के कारण आंद्रे बेते को लगा कि मैं सार्वजनिक क्षेत्र में बहुत ज्यादा सक्रिय हूं, बहुत ज्यादा भाषण देता हूं, अक्सर टेलीविजन पर दिखाई देता हूं और बिना बात के विवादों में पड़ जाता हूं। 2012 की गर्मियों में मैं एक सड़क दुर्घटना का शिकार हो गया, जिसमें मेरी कई हड्डियां टूट गईं और मुझे ठीक होने के लिए कई महीनों तक बिस्तर पर आराम करना पड़ा। यह सुनकर आंद्रे ने लिखा, "मुझे लगता है कि आपकी दुर्घटना एक छिपे हुए आशीर्वाद के रूप में आई है। मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि इसका आपके लेखन पर प्रतिकूल प्रभाव क्यों पड़ना चाहिए। वास्तव में, इसका आपके लेखन पर लाभकारी प्रभाव होना चाहिए। इससे आपको अपनी यात्रा और व्याख्यान कम करने और सोचने तथा लिखने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए समय मिलना चाहिए। मुझे लगता है कि आप अपने और लेखन के भले के लिए बहुत ज्यादा यात्रा और बकवास कर रहे हैं। आपके बहुत बड़े प्रशंसक और चचेरे भाई इतिहासकार धर्म कुमार मुझसे कहते थे कि मेरे पास बहुत ज्यादा अनुशासन और बहुत कम कल्पना है। मैं वास्तव में मानता हूं कि आपको भी अपनी सोच और लेखन में अधिक अनुशासन की जरूरत है और यह तभी आ सकता है, जब आप एक जगह बैठकर सोचें और लिखें।" कुछ साल पहले मैं बंगलूरू में भारत के पुराने मित्र मार्क टुली से मिला, जिन्होंने अपना पूरा जीवन उपमहाद्वीप में बिताया है। मैंने आंद्रे को लिखा, "टुली ने मुझसे पूछा था कि क्या मैं भी आपको जानता हूं? वह आपको एक ऐसे सच्चे विद्वान के रूप में याद करते हैं, जो रेडियो पत्रकारिता को प्रिंट पत्रकारिता से कमतर मानते हैं और प्रिंट पत्रकारिता को विद्वत्ता से कमतर। आप बेशक दोनों ही मामलों में सही हैं!"

उनके आलोचक अक्सर इस बात की शिकायत करते हैं कि आंद्रे बेते के पास सिर्फ एक ही विषय है, हालांकि उनका विषय विस्तृत और बेहद महत्वपूर्ण है, जैसे कि समाज में असमानता का लगातार बढ़ना। उन्होंने तमिल गांवों में जाति पर, कृषि की वर्ग संरचना पर, पूर्व और पश्चिम में असमानता के तुलनात्मक विश्लेषण पर, पिछड़े वर्गों के उत्थान पर, सामाजिक न्याय के दावों और संस्थागत अखंडता के बीच तनाव पर किताबें लिखी हैं। स्तरीकरण को केवल आर्थिक कारकों पर आधारित मानने के बजाय उन्होंने स्थिति और शक्ति के आयामों का भी अध्ययन किया है।

आंद्रे बेते के लेखन की प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी। उनके कामों से अपरिचित पाठकों को उनके अखबारी लेखों के संग्रह 'क्रॉनिकल्स ऑफ आवर टाइम' से शुरुआत करनी चाहिए। उनके बारे में ज्यादा जानने की इच्छा करने वाले लोग 'कास्ट, क्लास एंड पावर', 'सोसायटी एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया' और 'द आइडिया ऑफ नेचुरल इनईक्वैलिटी एंड अदर एसेज' को पढ़ सकते हैं। अंत में, मैं उनके अखबारी लेखों के एक अन्य संग्रह के बारे में कहूंगा, जिसका शीर्षक है, 'आइडियोलॉजी एंड सोशल साइंस'।

मोरी की ईंट और समाज की दीवार

दलित रचनाकारों के बरक्स गैर दलित लेखकों ने भी अपनी रचनाओं में वंचित तबके की पीड़ा को बेहद प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। इनमें से तमाम गैर दलित लेखकों की रचनाओं की पर्याप्त चर्चा भी हुई है, लेकिन मुरादाबाद के उनींदे से कस्बे चंदौसी के मदन दीक्षित का उपन्यास 'मोरी की ईंट' करीब-करीब पूरी तरह उपेक्षित है। हंस के एक संपादकीय में कभी राजेंद्र यादव ने इसका उल्लेख जरूर किया था, मगर कुल मिलाकर हिंदी के साहित्यिक समाज ने 1995 में आए इस उपन्यास पर पिछले सालों में रत्ती भर तवज्जो देना भी जरूरी नहीं समझा। यह तब है, जब 'मोरी की ईंट' समाज के तमाम अंधेरे कोनों से झांकते हुए ऐसी सच्चाइयों को सामने लाता है, जिनसे हिंदी समाज आमतौर पर नजरें चुराता रहा है।

मनोज मिश्र

खुला आकाश

मुरादाबाद के उनींदे से कस्बे चंदौसी के मदन दीक्षित का उपन्यास 'मोरी की ईंट' आज पूरी तरह से उपेक्षित है तो आखिर क्यों?

मदन दीक्षित पेशे से अधिवक्ता होने के साथ ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता भी थे, जिन्होंने सफाई कर्मचारियों के बीच लंबे समय तक काम किया। इस दौरान उन्हें जो अनुभव हासिल हुए, उसी से कथा का वितान रचा गया है। उपन्यास एक तरफ सफाई कर्मियों की अमानवीय जीवन स्थितियों का चित्रण करता है तो उसी के समानांतर मिशनरियों की सक्रियता और उनके माध्यम से समाज में आ रहे बदलावों को भी रेखांकित करता है। कथा चंदौसी कस्बे से लेकर इलाहाबाद और अल्मोड़ा तक विस्तार लेती है।

उपन्यास का एक दृश्य है, जहां एक स्वतंत्रचेता महिला सफाई कर्मी का बेटा हाईस्कूल में फर्स्ट डिवीजन में पास होता है। इस खबर पर तथाकथित उच्च समाज की प्रतिक्रिया को मदन दीक्षित निर्ममता से उजागर करते हैं- "हीरालाल की बात सुनकर दुकान पर खड़े सारे लोग सन्न रह गए। मंगो को कौन नहीं जानता था। पहले तो एक सफाई कर्मी के बेटे का हाईस्कूल पास करना कोई अच्छी बात नहीं थी, फिर जहां बड़ी जातियों के इतने लड़के सेकंड और थर्ड डिवीजन पास हुए हों, वहां उसका फर्स्ट डिवीजन पास होना और भी ज्यादा बुरा था।" घीसू और माधव 'मोरी की ईंट' में भी हैं। संत्रास और विद्रूपताएं इनके जीवन में भी उतनी ही हैं, लेकिन यहां पृष्ठभूमि और परिदृश्य इतर है। यहां गंदगी की बजबजाती नालियां हैं। 'कमाने' के नाम पर लोगों की विष्ठा साफ करने का काम है और बदले में है रात की सड़ी हुई जूठन। इन पात्रों के लिए आत्मसम्मान किसी दूसरी दुनिया का शब्द है।

30 साल पहले 'मोरी की ईंट' जब साहित्यिक दुनिया के सामने आया, तब भी लेखक को पता था कि हिंदी उपन्यासों की दुनिया बहुत आगे चली गई है। अब कथा के साथ-साथ शिल्प भी मायने रखता है। इसीलिए वह प्रस्तावना में ही अपनी सीमाओं को स्वीकार कर लेता है- "अंग्रेजी माध्यम से सोचे और समझे गए पंच सितारा संस्कृति के 'पॉप' उपन्यासों की शिल्प की कसौटी पर यह प्रयास 'ऑडियस' नहीं तो 'ऑड' तो सिद्ध होगी ही।" शायद यही वजह है कि 'मोरी की ईंट' आज करीब-करीब पूरी तरह भुला दिया गया है!

दुर्जन अगर एक गुट बना लें, तो सज्जनों को भी संगठित हो जाना चाहिए, वरना एक एक करके उन सबकी बलि चढ़ जाएगी।

– एडमंड बर्कले

सौ दिन में नहीं कोई राहत

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

बेरोजगारी का मसला इनकार, बयानबाजी या फर्जी आंकड़ों से हल नहीं होगा। बेरोजगारी एक 'टाइम बम' है और मोदी सरकार ने 9 जून के बाद से इसे खत्म करने के लिए कुछ भी नहीं किया है- बिल्कुल भी नहीं।

बड़ी खुशी हुई कि मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पूरा भाषण अंग्रेजी में पढ़ पाया, इसके लिए इकोनामिक टाइम्स का शुक्रिया। उन्होंने हिंदी में बात की थी, और मुझे लगता है कि उसका अनुवाद अच्छा हुआ था। मोदी साहब ने अपनी सरकार को बधाई दी और 'वर्ल्ड लीडर्स फोरम' को बताया कि पिछले दस वर्षों में 'हमारी अर्थव्यवस्था में लगभग नब्बे फीसद का विस्तार हुआ है।' अगर यह सही है, तो निस्संदेह बहुत सराहनीय बात है। मेरे पास जो संख्याएं हैं, वे हैं:

वर्ष	स्थिर कीमतों पर जीडीपी
31 मार्च 2014 को	98,01,370 करोड़ रुपए
31 मार्च 2024 को	173,81,722 करोड़ रुपए

वृद्धि 74,88,911 करोड़ रुपए थी और विकास कारक 1.7734 या 77.34 फीसद की वृद्धि दर है। एक विकासशील देश के लिए यह भी अच्छा है। बेशक, किसी को उदारीकरण के बाद से पिछले दो दशक की दरों के साथ उस दर की तुलना करनी चाहिए। 1991-92 और 2003-04 (तेरह वर्ष) के बीच जीडीपी (अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधि) का आकार दोगुना हो गया। फिर, 2004-05 और 2013-14 (यूपीए के 10 वर्ष) के बीच जीडीपी का आकार दोगुना हो गया। मैंने अनुमान लगाया था कि मोदी के दस वर्षों में जीडीपी दोगुनी नहीं होगी, और संसद में भी यही कहा था; प्रधानमंत्री ने अब इसकी पुष्टि कर दी है। भारत की अर्थव्यवस्था वास्तव में बढ़ी है, लेकिन हम और बेहतर कर सकते थे।

बेरोजगारी का हाथी

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा कि '...आज, भारत के लोग नए आत्मविश्वास से भरे हुए हैं।' कुछ दिन पहले ही हमने खबरें देखीं कि हरियाणा सरकार में 15,000 रुपए प्रति माह के वेतन पर अनुबंध आधार पर सफाई कर्मचारी के पद के लिए 3,95,000 उम्मीदवारों ने आवेदन किया था, जिसमें से 6,112 स्नातकोत्तर, 39,990 स्नातक और 117,144 बारहवीं तक पढ़ाई कर चुके थे। निश्चित रूप से, यह 'नए आत्मविश्वास' का संकेत नहीं है। मुझे पता है कि ऐसे समर्थक भी हैं, जो इस प्रसंग की व्याख्या इस तरह करेंगे कि पहले से नौकरी कर रहे लोग सरकारी नौकरी की सुरक्षा चाहते हैं! मैं उनके तसव्वुर को तोड़ना नहीं चाहता।

प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि 'भारत के महत्त्वाकांक्षी युवाओं और महिलाओं ने निरंतरता, राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के लिए मतदान किया है।' कई पर्यवेक्षकों का मानना है कि वोट इसके विपरीत पड़ा था। वोट बदलाव, संवैधानिक शासन और समानता के साथ विकास के लिए था। लक्ष्यों के दो 'सेट' एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं: निरंतरता बनाम बदलाव, राजनीतिक स्थिरता बनाम संवैधानिक शासन और आर्थिक विकास बनाम समानता के साथ विकास। जिस तरह प्रधानमंत्री ने अपने लक्ष्यों के सेट को मंजूरी देने का मामला बनाने की कोशिश की, उसी तरह लोगों द्वारा भाजपा के शासन को नापसंद करने और लक्ष्यों को फिर से निर्धारित करने की इच्छा को लेकर एक पुख्ता तर्क दिया जा सकता है।

पुनर्व्यवस्थित करने की इच्छा

मैं इस स्तंभ में 'बेरोजगारी' पर ही केंद्रित रहना चाहता हूं। सीएमआइई के अनुसार, अखिल भारतीय बेरोजगारी दर 9.2 फीसद है। कांग्रेस के घोषणापत्र 2024 में कहा गया है कि उदारीकरण के तैंतीस साल बाद, 'आर्थिक नीति को फिर से निर्धारित करने का समय आ गया है'। घोषणापत्र में 'नौकरियों' पर दो विशिष्ट प्रस्ताव रखे गए :

– प्रशिक्षुता योजना, जो कौशल प्रदान करने, रोजगार क्षमता बढ़ाने और लाखों युवाओं को नियमित नौकरी प्रदान करने के लिए प्रत्येक स्नातक और डिप्लोमा धारक को एक साल की प्रशिक्षुता की गारंटी देगी।

– नियमित, गुणवत्तापूर्ण नौकरियों के बदले अतिरिक्त भर्ती के लिए कर क्रेडिट जीतने के लिए कारपोरेटों में रोजगार-संबद्ध प्रोत्साहन योजना (ईएलआइ) शुरू करना।

मुझे खुशी हुई जब वित्तमंत्री ने इन विचारों को उधार लिया और उन्हें अपने बजट भाषण में शामिल किया। मोदी साहब और उनके मंत्रियों ने 9 जून, 2024 को शपथ ली। भाजपा ने दावा किया कि तीसरी बार सत्ता में आने के बाद मोदी सरकार के पास पहले सौ दिनों में लागू करने के लिए एक योजना तैयार होगी। वे सौ दिन 17 सितंबर को पूरे होंगे। सरकार ने दो बजट घोषणाओं को लागू करने में कोई तत्परता नहीं दिखाई है। बड़े उत्साह के साथ सरकार ने वक्फ (संशोधन) विधेयक पारित करने और वरिष्ठ सरकारी पदों पर सीधी भर्ती को आगे बढ़ाने की कोशिश की, मगर उसे दोनों को 'रोक' देना पड़ा।

बढ़ती बुरी खबरें

इस बीच, हमारे पास रोजगार के मोर्चे पर और भी बुरी खबरें हैं: कई भारतीय कंपनियों ने 2023 व 2024 में लोगों को नौकरियों से निकाल दिया। इनमें स्विगी, ओला, पेटीएम आदि शामिल हैं। टेक कंपनियों ने घोषणा की है कि वे अपने कर्मचारियों की संख्या को सही करने की प्रक्रिया में हैं।

'टाइम्स आफ इंडिया' में 5 सितंबर, 2024 को छपे एक स्तंभ में दो शिक्षाविदों ने बताया कि आइआइटी मुंबई इस साल अपने स्नातक वर्ग के केवल 75 फीसद छात्रों को ही 'प्लेसमेंट' दे पाया है। विनिमय दर के मुकाबले समायोजित वेतन स्थिर प्रतीत होता है। आइआइटी के अलावा अन्य संस्थानों के स्नातकों का 'प्लेसमेंट' 30 फीसद के निराशाजनक स्तर पर है।

विश्व बैंक के भारत आर्थिक अपडेट (सितंबर 2024) में बताया गया है कि शहरी युवाओं का रोजगार 17 फीसद पर बना हुआ है। एक उलझी हुई व्यापार नीति के कारण, भारत ने चमड़ा और परिधान जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों से निर्यात आय में वृद्धि नहीं की है। विश्व बैंक ने अपनी रपट में व्यापार के प्रति भारत के दृष्टिकोण की आलोचनात्मक समीक्षा की सलाह दी और बताया कि भारत श्रम-प्रधान निर्मित वस्तुओं से चीन के पीछे हटने का लाभ नहीं उठा पाया है। रपट में भारत की संरक्षणवादी नीतियों और मुक्त व्यापार समझौतों के प्रति अरुचि की ओर इशारा किया गया है।

बेरोजगारी का मसला इनकार, बयानबाजी या फर्जी आंकड़ों से हल नहीं होगा। बेरोजगारी एक 'टाइम बम' है और मोदी सरकार ने 9 जून के बाद से इसे खत्म करने के लिए कुछ भी नहीं किया है- बिल्कुल भी नहीं।

देशभक्ति के नाम पर

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

सवाल पूछना चाहिए अपने आला राजनेताओं से कि यह कैसी देशभक्ति है, जो समाज को बांटने का काम कर रही है, इस हद तक कि अगर आगे चलकर भारत का बंटवारा एक बार फिर होता है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। इस देश में मुसलमानों की आबादी इतनी बड़ी है कि उनको किसी दूसरे देश में भेजना असंभव है। इसके बावजूद नफरत फैलाने वालों से कई बार सुनने को मिलता है कि हिंदुओं के लिए सिर्फ भारत है, मुसलिम मुल्क बहुत सारे हैं।

जब भी गोरक्षा के नाम पर किसी की हत्या की जाती है, मुझे याद आती है वह बात जो मैंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक आला नेता से सुनी थी। गोरक्षकों की हिंसा उस समय शुरू ही हुई थी, और मैं गई थी संघ के उस नेता से मिलने इस उम्मीद से कि उनसे बातें करके समझ सकूंगी मैं कि जो लोग अपने आप को देशभक्ति के ठेकेदार मानते हैं, वे क्या सोचते हैं इस हिंसा के बारे में। सोचा था कि इस आला संघी को भी साफ दिखेगा कि अगर गोमाताओं की जान मुसलमानों की जानों से ज्यादा कीमती होंगी भारत में तो जो खाई पहले से है हिंदुओं और मुसलमानों के बीच, वह ज्यादा गहरी हो जाएगी।

जिनसे मिलने गई थी उस दिन, उनकी गिनती संघ के दस सबसे बड़े नेताओं में है। उन्होंने मेरे सवाल, मेरी सारी बातें ध्यान से सुनने के बाद कहा, 'अच्छा है कि हिंदू कम से कम मारने तो लगे हैं। अभी तक तो मरते ही रहे हैं'। हैरान हुई यह सुनकर कि उनकी नजर में गोरक्षकों की हरकतें हिंदुओं की बहादुरी का सबूत थीं। असल में, जब भीड़ इकट्ठा होकर एक निहत्थे इंसान पर हमला करती है, तो वह बहादुरी का सबूत नहीं, बुजदिली का होता है। लेकिन मैंने जब यह बात कहनी शुरू की थी उस दिन, मुझे फौरन ऐसा लगा कि संघ के ये नेता मेरे साथ बिल्कुल सहमत नहीं हैं।

जब कुछ दिन पहले उन्नीस साल के आर्यन मिश्रा की हत्या गोरक्षकों ने फरीदाबाद में की थी उसको गो-तस्कर समझ कर तो उसके पिता ने पूछा कि इन लोगों को किसने अधिकार दिया है कानून को अपने हाथों में लेने का? ये सवाल अगर हम सबने पूछा होता दस साल पहले जब मोहम्मद अखलाक की हत्या देश की पहली 'लिंचिंग' बनी थी, गोमांस के नाम पर, तो शायद आज इस तरह की हत्याएं बंद हो गई होतीं। न सिर्फ ऐसा नहीं हुआ, बल्कि गोरक्षकों ने ऐसी हत्याओं के वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डालने शुरू कर दिए गर्व से। उनके खिलाफ अगर कार्रवाई हुई तो ऐसी कि जमानतें फौरन मिल जाने लगीं अगर गिरफ्तारियां हुईं भी। हो सकता है, जिन हत्यारों ने आर्यन मिश्रा को मारा, उनके साथ इतनी नर्मदिली न दिखाई जाए, इसलिए कि आर्यन न गोतस्कर था, न मुसलमान।

जो जहर फैल गया है गोमाता के नाम पर, वह अब देश की रगों में उतर चुका है। इसलिए मुंबई की एक ट्रेन में नौजवानों के एक झुंड ने बहत्तर वर्ष के अशरफ अली सैयद को घेर कर इतना पीटा कि उसकी एक आंख सूज गई और उसके कपड़े फट गए। उसको ट्रेन के डिब्बे से फेंकने की धमकी दी गई और यह सब हुआ इसलिए कि वह अपनी बेटी के घर जा रहा था दो मर्तबानों में भैंस का मांस लेकर। भैंस काटना जायज है भारत में। बल्कि भारत सरकार के आंकड़ों के मुताबिक हम दुनिया के सबसे बड़े निर्यातक हैं भैंस के मांस के या शायद दूसरे नंबर पर आते हैं ब्राजील के बाद।

जिन नौजवानों ने इस बूढ़े मुसलमान को बुरी तरह पीटा और इस पिटाई का गर्व से वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाला, उनको शायद इस बात की जानकारी नहीं थी। दुख की बात यह है कि ये नौजवान मुंबई जा रहे थे पुलिस में भर्ती होने की उम्मीद से। मुसलमानों के साथ उनका क्या बर्ताव होगा पुलिस में नौकरी लगने के बाद, वह अभी से दिखता है। लेकिन जब नफरत के जहर को किसी देश के आला नेता जानबूझ कर फैलाते हैं उस देश की रगों में, तो ऐसी चीजों को होने से कोई नहीं रोक सकता है।

सोशल मीडिया पर हत्या का एक और वीडियो चारों ओर प्रसारित हुआ था हरियाणा से। इसमें चरखी दादरी के किसी गांव के चौक में दिखते हैं कुछ लोग एक कमजोर से बंदे को जमीन पर गिराकर लाठियों से पीटते हुए। वह बंगाल का एक मजदूर था, जिसको गोमांस खाने के शक के कारण इतना पीटा गया कि उसकी मौत हो गई। उसको उसकी झोपड़ी से घसीट कर लाया था हत्यारों ने उसकी पत्नी और दो साल की बच्ची के सामने। बाद में जब पुलिस गिरफ्तार करने गई भीड़ में शामिल लोगों को, तो पता लगा कि उनमें दो नाबालिग लड़के थे। उन्होंने यह काम किया होगा, यह सोच कर शायद कि ऐसा करके वे देशभक्ति दिखा रहे हैं। जब भी गोरक्षकों के इंटरव्यू दिखते हैं टीवी पर, यही कहा करते हैं कि वे इस काम में जुट गए हैं न सिर्फ गोमाता की रक्षा के लिए, बल्कि इसलिए भी कि वे देशभक्ति दिखा रहे हैं।

सवाल पूछना चाहिए अपने आला राजनेताओं से कि यह कैसी देशभक्ति है, जो समाज को बांटने का काम कर रही है, इस हद तक कि अगर आगे चलकर भारत का बंटवारा एक बार फिर होता है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। इस देश में मुसलमानों की आबादी इतनी बड़ी है कि उनको किसी दूसरे देश में भेजना असंभव है। इसके बावजूद नफरत फैलाने वालों से कई बार सुनने को मिलता है कि हिंदुओं के लिए सिर्फ भारत है, मुसलिम मुल्क बहुत सारे हैं। यानी कहीं भी जा सकते हैं वे भारतीय मुसलमान जो नफरत और हिंसा से तंग आकर देश छोड़ने की सोचने लगते हैं। बेवकूफ हैं ये लोग। जानते नहीं हैं कि पाकिस्तान और बांग्लादेश चुपके से इस उम्मीद में बैठे हैं कि भारत के फिर से टुकड़े होंगे और उनका विस्तार। असली 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' वाला 'गैंग' जेएनयू में नहीं है। इस गैंग के सदस्य हमारी सड़कों पर घूमते हैं गोरक्षक बनकर। जब किसी मुसलमान की हत्या कर देते हैं तो गर्व से उसका वीडियो सोशल मीडिया पर डालते हैं।

सांप्रदायिकता का चरित्र

संदर्भ

राकेश सिन्हा

न जरिए में जितना परायापन होगा, सांप्रदायिकता उसी अनुपात में फैलेगी। राजनीति सिर्फ घटनाओं का समाधान ढूंढ़ती है। उसके पीछे प्रेरित करने वाली प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालने में उसका अपना राजनीतिक स्वार्थ सामने आ जाता है। यही उसकी अक्षमता का कारण कल था और आज भी है।

सांप्रदायिक घटनाओं और प्रवृत्तियों को देखकर लगता है, हमने इतिहास से कुछ भी नहीं सीखा है। हम घटनाओं में स्थानीयता और बयानों में व्यक्ति की राजनीति ढूंढ़ते हैं। इसे अल्पायु मानकर अगली घटना और बयान का इंतजार करते हैं। राजनीति उसका भौतिक समाधान ढूंढ़ती है। वह उसे ही निदान मानती है। यह वैसी ही भूल है जैसी औपनिवेशिक काल में होती रही है। इसका एक अच्छा उदाहरण है। 30 मई 1871 को कलकत्ता उच्च न्यायालय के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश जान नार्मन की हत्या एक वहाबी पंथ (इस्लाम की एक धारा) से जुड़े अब्दुल्ला ने न्यायालय की सीढ़ियों पर कर दी। इसने इतना दशहत पैदा कर दिया कि वायसराय लार्ड मेयो ने मुसलिमों की नाराजगी दूर करने का रास्ता ढूंढ़ना शुरू कर दिया। उसने विलियम विल्सन हंटर को यह काम सौंपा। हंटर ने रपट दी, जो बाद में 'भारतीय मुसलमान' के नाम से प्रकाशित हुआ। रपट में मुसलामानों के साथ भेदभाव को कारण बताया गया। मेयो झटपट उसे दूर करने का उपक्रम करने लगे, पर वे खुद शिकार हो गए। 8 फरवरी 1872 को पोर्ट ब्लेयर में शेर अली ने मेयो की हत्या कर दी।

समुदायों के बीच भेदभाव, प्रतिस्पर्धा, रंजिश, आधिपत्य की महत्त्वाकांक्षा होना अस्वाभाविक नहीं है। इसके निदान की प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए। पर सांप्रदायिकता इन कारणों से भारत में नहीं है। ऐसा नहीं है कि इसे जानने-समझने में कमी रही है। पिछले दो सौ वर्षों से हिंदू-मुसलिम संबंधों पर जितना लिखा गया, भाषण दिया गया, गोष्ठियां और संवाद के आयोजन हुए, उतना शायद किसी अन्य विषय पर नहीं हुआ होगा। पर निष्क्रिय इच्छाशक्ति के कारण परिणाम ढाक के तीन पात हैं।

दरअसल, सांप्रदायिकता को हमने धार्मिक समुदायों की संख्या के आधार पर देखने-समझने का प्रयास किया है। यह आंशिक सत्य भी नहीं है। वास्तव में इसकी उत्पत्ति धार्मिक समुदायों द्वारा एक-दूसरे को देखने के नजरिए से होती है। नजरिए में जितना परायापन होगा, सांप्रदायिकता उसी अनुपात में फैलेगी। राजनीति सिर्फ घटनाओं का समाधान ढूंढ़ती है। उसके पीछे प्रेरित करने वाली प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालने में उसका अपना राजनीतिक स्वार्थ सामने आ जाता है। यही उसकी अक्षमता का कारण कल था और आज भी है। सांप्रदायिकता के चरित्र को समझना होगा। जहां सामुदायिक जीवन मजबूत है, वहां इसकी छाया भी नहीं है। औपनिवेशिक काल की जनगणना रपटों में इसका विस्तार से उल्लेख है। हिंदू-मुसलिमों के बीच विवाह, रीति-रिवाज, खानपान, पहनावा, त्योहारों आदि में मेलजोल इतना अधिक था कि समुदायों के बीच विभाजन रेखा खींचना असंभव था। पाकिस्तान आंदोलन के समर्थकों को पता था कि उनकी मंशा तब तक पूरी नहीं हो सकती थी, जब तक इस सामुदायिकता को छलनी नहीं बना दिया जाएगा। मुसलिम लीग ने धार्मिक नेताओं का उपयोग इस विध्वंस के लिए किया। इस्लाम में शुद्धता यानी 'शरीअत' के अनुसार चलने पर बल दिया जाने लगा। सांप्रदायिकता का दूसरा चरित्र भी है। यह शहर से गांव की ओर जाता है। यह लोगों के मन में भविष्य के प्रति भय और अस्तित्व के प्रति आशंका पैदा करता है। यह इसको द्रुत गति से फैलाता है। दुनिया की कोई विचारधारा या दर्शन इतनी तेजी से नहीं फैलता है। 1940 में जो सांप्रदायिक मांग कागजी लगती थी, वह कुछ वर्षों में क्रूर यथार्थ बन गई। सांप्रदायिकता को घटनाओं से परे देखने की जरूरत है। नारों, भाषणों, प्रस्तावों, सेमिनारों में इसका समाधान नहीं है।

प्रत्येक समाज का एक नैतिक बहुमत होता है। इसका तात्पर्य है कि किसी समाज के अधिकांश लोगों की विशिष्ट जीवन पद्धति है, जिसे आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित करते हैं। हिंदुओं का नैतिक बहुमत प्रयोगधर्मिता है, जिसकी कोई चौहद्दी नहीं है। इसीलिए हिंदू समाज में विविधता इस हद तक है कि अनेक स्तरों पर विरोधाभास के रूप में सामने आ जाता है। यही नैतिक बहुमत भारत की पंथनिरपेक्षता की परिभाषा और गारंटी दोनों है। इसका अतिक्रमण ही पंथनिरपेक्षता पर प्रहार है। चाहे वह अंदर से हो या बाहर से। संविधान अधिकारों की सुरक्षा भर देता है, समाज ही पंथनिरपेक्षता सुनिश्चित करता है। कोई भी संप्रदाय या धर्म अपने अस्तित्व को सुदृढ़ करना चाहता है। पर यह सुदृढ़ीकरण प्रयोगधर्मिता के भविष्य पर सवाल नहीं होना चाहिए। धर्म परिवर्तन सहित अनेक ऐसे विषय हैं, जो समाज को बेचैन करते हैं। आचार्य जेबी कृपलानी ने अपने संस्मरण में आपबीती बताई है। उनके बड़े भाई का जबरन धर्मांतरण करा दिया गया। फिर धर्म उनके लिए अफीम की तरह हो गया। उन्होंने अपने बारह वर्षीय छोटे भाई का अपहरण कर धर्मांतरित कर उसे अफगान तुर्क सीमा पर युद्ध में भेज दिया। उसकी वहां मृत्यु हो गई। कृपलानी लिखते हैं कि बड़ा भाई गांव आता था, तो दहशत फैल जाती थी ।

दुर्भाग्य है कि जो प्रश्न आज से डेढ़ सौ साल पहले विवाद का कारण था, वह कमोबेश आज भी कायम है। धार्मिक आचरण में संस्कृति और स्थानीयता का बोध समाप्त होते ही यह प्रतिद्वंद्विता के दायरे में पहुंच जाता है। फिर अनावश्यक बातों को भी सामाजिक तनाव का कारण बना दिया जाता है। जीवन दर्शन की श्रेष्ठता के लिए परस्पर संवाद ठहर जाता है। किसी संप्रदाय/ धर्म के विस्तार और बहुमत में आ जाने से सभ्यता का संस्कार बदल जाए, तो यह विस्तार चिंता का कारण बन जाता है। ज्ञान के क्षेत्र में योगदान के कारण प्रसिद्ध पाणिनी का जन्म आज के पाकिस्तान में हुआ। पर उन्हें सम्मान वहां नहीं, भारत में मिलता है।

जमीनी स्तर पर इस विषाणु को समाप्त करने का प्रयास ही सक्षम रास्ता है। घटना और अनर्गल बयान भले ही क्षणिक लगें, पर मनोवृत्ति पर असर डालते हैं। इनमें रक्तबीज जैसी क्षमता होती है। यह शिक्षित-अशिक्षित, शहरी-ग्रामीण, बाल-वृद्ध, अपने-अपने कामों से स्वैच्छिक अवकाश लेकर उलझ जाते हैं। यह उसके सुहाग को दीर्घायु बना देता है। पीढ़ियों के लिए दायित्वबोध होते ही हमारी निष्क्रियता समाप्त हो जाएगी।

दिव्यता की परख

बाखबर

सुधीश पचौरी

इन दिनों कई महानुभावों को 'जाति गणना' इतनी प्यारी लगती है कि जब तक उसे करा न लेंगे, मानो पानी तक नहीं पिएंगे। फिर आया एक बड़े सांस्कृतिक संगठन का बयान कि जाति गणना हो, लेकिन उसका राजनीतिक उपयोग न हो। भाई जी! राजनीति के बिना जाति गणना का मतलब क्या?

सन 1984 के सिख विरोधी दंगे के एक 'खलनायक' के बारे में चालीस बार अदालत ने कहा कि चार्जशीट तैयार करें। फिर छिड़ा वही अस्मितावादी राग कि अपने बंदे को बचा, दूसरे को लटका! फिर असम से खबर टूटी कि दफ्तरों में शुक्रवारी नमाज के लिए दो-तीन घंटे वाली विशेष छूट खत्म और फिर इस पर प्रतिक्रिया कि ये धार्मिक आजादी पर हमला है... नहीं, ये कानूनी मसला है। फिर आई कंगना रनौत की फिल्म 'इमरजेंसी' के सेंसर बोर्ड में फंसने की खबर, क्योंकि एक समुदाय का एतराज। फिर कई चैनलों पर बहसें। बहसों में कंगना।

महाराष्ट्र में एक जगह गिरी कुछ महीने पहले लगी छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति और उसके साथ गिरी छवि सरकार की कि विपक्ष का 'हल्ला बोल'। फिर प्रधानमंत्री का शिवाजी महाराज के चरणों में गिरकर क्षमा मांगना, फिर भी विपक्ष नाराज कि शिवाजी हमारे भगवान हैं, माफी मांगने से काम नहीं चलने वाला। यानी माफी मांगो तो गए, न मांगो तो भी गए।

फिर आई हरियाणा के चरखी दादरी से कुछ स्वनियुक्त गोरक्षकों की कुछ बंगाली मजदूरों को गोमांस पकाने के संदेह में 'लिंच' करने की खबर। इस कांड में एक की मृत्यु तक हो गई। पुलिस की त्वरित कार्रवाई ने स्थिति संभाली, लेकिन चैनलों में वही हुआ, जो होता है। एक विपक्षी कहे कि इनके लोग हार की हताशा निकाल रहे हैं। प्रशासन कहे कि जांच शुरू, दोषियों को सजा दी जाएगी। इसी बीच, एक चैनल ने बिहार के जाति सर्वे की एक झलकी दे दी कि बिहार में पिछड़े सत्ताईस फीसद, अति पिछड़े छत्तीस फीसद, अनुसूचित जाति उन्नीस फीसद के आसपास हैं। लेकिन हम तो समझे थे कि पिछड़े आगे होंगे। तभी एक चर्चक बहसा कि अपने यहां 'एक लाख पैंसठ हजार जातियां-उपजातियां' हैं। सिर्फ गिनते रह जाओगे।

फिर एक ज्ञानी नेताजी ने कटाक्ष किया कि असम के मुख्यमंत्री 'चीनी वर्जन' हैं। जवाब आया कि ये शुद्ध नस्लवाद है। ऐसा ही एक देसी-अमेरिकी ने भी कहा था कि इंडिया में पूरब के बंदे चीनी नस्ल के हैं। इस बीच बड़ी अदालत ने चेताया कि बुलडोजर सिर्फ आरोप पर नहीं चलेगा, कानून के अनुसार चलेगा। इसके बाद एक नया बुलडोजर विमर्श चैनलों में आकर बैठ गया। एक बड़े नेता कटाक्ष किए कि सत्ताईस के बाद उत्तर प्रदेश के सारे बुलडोजर गोरखपुर की ओर। तो जवाबी कटाक्ष आया कि बुलडोजर सबके वश की बात नहीं... उसे चलाने के लिए दिल-दिमाग चाहिए।

फिर आई उड़ान आइसी 814 'कंधार हाइजैकिंग' पर बनी वेब शृंखला और सर जी, शृंखला का नाम भी गजब ढाया कि 'हाइजैकिए' सारे मुसलिम, लेकिन किसी का नाम भोला, किसी का शंकर। इसे ही कहते हैं कि कलात्मक की जगह गजब की 'छलात्मक' आजादी। ये कैसा बढ़िया छल कि पहले जानबूझ कर गड़बड़ करो, फिर आजादी का रोना रोओ। जब विवाद से मुफ्त का प्रचार हो जाए तो उलट जाओ। इसके बाद एक राज्य में 'खटाखट रेवड़ी' बांटने के लिए अनुसूचित जातियों के हिस्से के 25,000 हजार करोड़ रुपए को दूसरे खाते में 'खटाखट' कर दिया गया। ऐसे ही दूसरे 'खटाखट' राज्य में कर्मचारियों को तनख्वाहें नहीं मिल रहीं। मिलें भी कैसे? राज्य का अधिकांश पैसा 'मुफ्त की रेवड़ी' बांटने में लगा दिया। एक एंकर ने टीप लगाई कि पूर्व प्रधानमंत्री तक ने ऐसी 'खटाखट बाजी' का विरोध करते हुए कहा कि ऐसे ही करते रहे तो एक दिन देश दिवालिया हो जाएगा। लेकिन अपने 'वोक' बंधु सिर्फ इतना सोचते हैं कि 'खटाखट' से वोट लेते रहो। बाद में देश-राज्य दिवालिया हों तो हों।

इन दिनों कई महानुभावों को 'जाति गणना' इतनी प्यारी लगती है कि जब तक उसे करा न लेंगे, मानो पानी तक नहीं पिएंगे। शायद इसी होड़ में 'एक जी' कह दिए कि नाक रगड़, कान पकड़ कर जाति गणना कराएंगे। फिर आया एक बड़े सांस्कृतिक संगठन का बयान कि जाति गणना हो, लेकिन उसका राजनीतिक उपयोग न हो। भाई जी! राजनीति के बिना जाति गणना का मतलब क्या?

इसके बाद बंगाल से आया एक 'बलात्काररोधी विधेयक' जो बलात्कारियों को देगा आजीवन कैद या फांसी, लेकिन इस पर भी कुछ कह रहे हैं कि यह 'डराने वाला' है और जो कोलकाता में हुआ उसे 'ढकना' है।

फिर कुछ चैनलों में आया कश्मीर के संदर्भ में 'बाहरियों' का 'लूट विमर्श, फिर आया तीन सौ सत्तर, फिर से आए का विलाप और सन पचास वाले 'वजीरे आजम' का आलाप। फिर भी एक कहता रहा कि अब 370 बहाल नहीं हो सकता। फिर आई शिमला में एक अवैध मस्जिद के विरोध की आवाजें और धरना प्रदर्शन। फिर सवाल उठा कि इसका कौन जिम्मेदार, तो जवाब आया कि मस्जिद बनती रही, इनकी आंखें बंद रहीं और उनकी भी बंद रहीं। और अंत में आई 'भागवत वाणी' कि कोई अपने को भगवान क्यों समझे? आपके अंदर की दिव्यता को लोग परखेंगे।

www.readwhere.com

इन दिनों देश में जाति गणना की राजनीति तेज है। लोकसभा चुनाव के बाद से कांग्रेस सांसद राहुल गांधी जाति गणना को लेकर मुखर हैं। हर मंच से वे इसकी पैरवी कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि मुद्दे के रूप में तुरुप का पत्ता हाथ लग गया है और यह मुद्दा उन्हें राजनीतिक वैतरणी पार करा देगा। हालांकि वर्ष 2024 के आम चुनाव में राहुल गांधी के जाति गणना व आरक्षण खत्म होने के डर दिखाने के बावजूद कांग्रेस सौ सीट भी नहीं पा सकी, हिंदी पट्टी में मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, दिल्ली में भाजपा ने बड़ी सफलता हासिल की, केवल उत्तर प्रदेश व हरियाणा में ही झटका लगा, वो भी किसान आंदोलन के चलते, आरक्षण या जाति गणना के मुद्दे के चलते नहीं। जाति गणना पर भाजपा का रुख साफ रहा है। संघ भी जातिवादी विमर्श के पक्ष में कभी नहीं रहा है। अभी केरल में संघ की तीन दिवसीय बैठक के बाद जब बयान आया कि जाति गणना गलत नहीं है, पर इसका राजनीतिक ध्येय न हो, तो विमर्श चल पड़ा है कि क्या जाति गणना के मुद्दे पर भाजपा के रुख में विपक्षी दबाव के चलते बदलाव होगा? यूं तो भाजपा को भारतीयता व हिंदुओं को एकजुट रखने के अपने व्यापक ध्येय से भटकने की जरूरत नहीं है। समावेशिता, हिंदुत्व, भारतीयता, सनातनवाद उसकी ताकत है। जाति गणना मुद्दे पर पेश है आजकल का यह अंक...

जातिवादी राजनीति के भंवर में न फंसे देश

विश्लेषण

उमेश चतुर्वेदी
राजनीतिक विश्लेषक व वरिष्ठ स्तंभकार

हिंदुत्ववादी राजनीति के केंद्र में जातिवाद नहीं है। बल्कि वह समूचे हिंदू समाज को एक मानकर चलती है और अपनी राजनीति को बढ़ाती रही है। चूंकि बीजेपी के पास अपना खुद का बहुमत इन दिनों नहीं है, इसलिए वह जाति जनगणना न कराने के अपने पुराने स्टैंड पर खुलकर कायम नहीं दिख रही, बल्कि विपक्ष के आक्रामक दबाव में वह पशोपेश में दिख रही है। राजनीतिज्ञ मानते हैं कि संघ के बयान के बाद बीजेपी को इस दुविधा से निकलने में मदद मिल सकती है। अगर पार्टी को हरियाणा, झारखंड और महाराष्ट्र के चुनावों में बेहतर नतीजे मिले तो उसका खोया हुआ आत्मविश्वास लौट सकता है। फिर वह अपने पुराने रुख को लेकर खुलकर सामने आ सकती है।

केंद्रीय राजनीति में नरेंद्र मोदी के उभार के बाद लगने लगा था कि राजनीति से मंडलवादी राजनीति की विदाई हो गई, लेकिन जिस तरह से विपक्षी दलों ने जाति जनगणना को लेकर आक्रामक रवैया अख्तियार कर रखा है, उससे लगता है कि हिंदुत्ववादी राजनीति को किनारे करते हुए पिछड़ावादी या यूं कहें कि मंडलवादी राजनीति उभर रही है। हिंदुत्ववादी राजनीति के वैचारिक आधार का केंद्र हिंदू समाज के समन्वय और उसकी एकता है, जबकि मंडलवादी राजनीति के मूल में जातिवादी सोच को परोक्ष बढ़ावा है। मंडलवादी राजनीति समता व सामाजिक न्याय का तार्किक आधार बना कर यह जताने की कोशिश करती है कि सामाजिक बिखराव उसका लक्ष्य नहीं है। इस पूरी राजनीति को नई बहस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की केरल के पलक्कड़ में तीन दिनों तक चली बैठक के बाद आए संघ के विचार से बल मिला है। तीन दिनों तक चली बैठक के बाद संघ ने कहा है, 'हिंदू समाज में जाति और जातीय संबंध एक संवेदनशील मुद्दा है। ये हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसे बहुत गंभीरता से निपटाना चाहिए न कि केवल चुनाव या राजनीति के लिए।' माना जा रहा है कि संघ के इस बयान ने केंद्रीय सत्ता की धुरी भारतीय जनता पार्टी को धर्मसंकट से बचा लिया है।

भाजपा की राजनीति अब रक्षात्मक

पिछले आम चुनाव में बहुमत से दूर हो जाने के बाद से भाजपा की राजनीति थोड़ी रक्षात्मक जरूर प्रतीत हो रही है, लेकिन वह ठसक के साथ विकास के मुद्दों पर आगे भी बढ़ रही है। हालांकि अब उसकी राजनीति वैसी आक्रामक नहीं दिखती, जैसी 2014 और 2019 के आम चुनावों के बाद दिखती थी। पूर्ण बहुमत ने भाजपा को ऐसा आत्मविश्वास दिया, जिसकी वजह से वह अपने कोर मुद्दों को धड़ाधड़ हल करती चली गई। हिंदुत्ववादी राजनीति के केंद्र में जातिवाद नहीं है, बल्कि वह समूचे हिंदू समाज को एक मानकर चलती है और अपनी राजनीति को बढ़ाती रही है। चूंकि बीजेपी के पास अपना खुद का बहुमत इन दिनों नहीं है, इसलिए वह जाति जनगणना न कराने के अपने पुराने स्टैंड पर खुलकर कायम नहीं दिख रही, बल्कि विपक्ष के आक्रामक दबाव में वह पसोपेश में दिख रही है। राजनीतिक जानकार मानते हैं कि संघ के बयान के बाद भाजपा को इस दुविधा से निकलने में मदद मिल सकती है। वैसे पार्टी को हरियाणा, झारखंड और महाराष्ट्र के चुनावों में मनमाफिक नतीजे मिले तो उसका आत्मविश्वास बढ़ सकता है। फिर वह अपने पुराने रुख को लेकर खुलकर सामने आ सकती है। अगर ऐसा नहीं होता तो वह दबाव में आ सकती है।

मंडलवादी राजनीति का उभार

जातिवादी राजनीति, जिसे अतीत में मंडलवादी राजनीति के नाम से जाना जाता रहा है, वह उस समाजवादी नारे को हकीकत बनाने की कोशिश कही जा सकती है, जिसे लोहिया ने पिछली सदी के साठ के दशक में दिया था। भारतीय राजनीति के चिर विद्रोही लोहिया ने नारा दिया था, 'संसोपा ने बांधी गांठ, पिछड़े पावें सौ में साठ।' इसके जरिए पिछड़ी जातियों को राजनीतिक और सामाजिक उत्थान की वकालत समाजवादी आंदोलन करता था। दिलचस्प यह है कि इस राजनीति को बल सात अगस्त 1990 के दिन तब मिला, जब समाजवादी कंधे पर सवार कांग्रेसी पृष्ठभूमि के प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लागू किया। इस रिपोर्ट ने भारतीय राजनीति की दिशा ही बदल दी। इसके बाद ही देश में पिछड़ावादी राजनीति को उभार मिला।

हिंदुत्ववादी राजनीति का उदय

इसी के जवाब में उन्हीं दिनों समूचे हिंदू समाज को एक रखने की वैचारिक सोच की बुनियाद पर हिंदुत्ववादी राजनीति का उभार हुआ। जिसे मंडलवाद की तुकबंदी में कमंडलवादी बताया गया। लेकिन कमंडलवाद महज तुकबंदी का विस्तार नहीं रहा, बल्कि इसमें हिंदुत्ववादी राजनीति को लेकर किंचित व्यंग्य और कुछ उपहास भी था। इसी हिंदुत्ववादी राजनीति की उपज नरेंद्र मोदी हैं। फिर वे उस पिछड़े समुदाय से आते हैं, जिनके उत्थान के दावे मंडलवादी राजनीति करती है। पिछड़े समुदाय की पृष्ठभूमि और हिंदुत्व की वैचारिक पृष्ठभूमि वाली शख्सियत नरेंद्र मोदी के उभार के बाद करीब दस वर्षों तक जाति केंद्रित राजनीति किनारे रही। लगता था कि वह अब खत्म हो जाएगी। लेकिन जाति जनगणना के सवाल के साथ यह राजनीति इन दिनों केंद्र में आ चुकी है। इसे बल मिला 2022 में बिहार से, जब राष्ट्रीय जनता दल के सहयोग से सरकार चला रहे नीतीश कुमार ने बिहार में जाति जनगणना कराकर उसकी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी। तब से केंद्रीय स्तर पर पूरे देश में जाति जनगणना कराने को लेकर राहुल गांधी की अगुआई में समूचा विपक्ष लगा हुआ है। कर्नाटक भी ऐसी जाति जनगणना करा चुका है, लेकिन उसे न तो लागू किया है और न ही उसे प्रकाशित किया है। दिलचस्प यह है कि कांग्रेस की अगुआई वाले यूपीए शासन काल में जाति जनगणना को बहाने से कराया गया, लेकिन उसकी रिपोर्ट प्रकाशित भी नहीं की गई। पिछड़ों के उत्थान के लिए 1953 में गठित काका कालेलकर आयोग की जानकारी राजनीतिक हलके में है।

सामाजिक, आर्थिक और जाति गणना

मंडल रिपोर्ट तो बच्चे-बच्चे की जुबान पर है, लेकिन 2011 की जनगणना में लालू यादव के दबाव पर जाति के स्तंभ शामिल करने की जानकारी ज्यादा लोगों को नहीं है। लोगों को यह भी याद नहीं है कि सहयोगी दलों के दबाव में मनमोहन सरकार ने 2011 में प्रणब मुखर्जी की अगुआई में जाति जनगणना को लेकर एक समिति बनाई थी, जिसने जाति जनगणना के पक्ष में सुझाव भी दिया था। उसकी सिफारिश के आधार पर 'सामाजिक, आर्थिक और जाति गणना' नाम से जनगणना कराई भी गई। इसमें जिलों को आधार बनाकर जिलेवार पिछड़ी जातियों की गिनती की गई। इसके आंकड़े सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय को दिए गए। उसके वर्गीकरण के लिए नीति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष अरविंद पनगढ़िया के अधीन विशेषज्ञ समूह बनाया गया। उसके अध्ययन नतीजे मनमोहन सरकार ने जारी नहीं किए।

आरक्षण ने जातिवाद खत्म नहीं किया

सवाल यह है कि राहुल गांधी ने उस रिपोर्ट को जारी क्यों नहीं कराया? जाति भारतीय समाज में बेहद संवेदनशील मुद्दा है। मंडलवाद के उभार के बाद पिछड़ी जातियों का उत्थान बेशक हुआ, लेकिन यह भी सच है कि उसमें भी कुछ ताकतवर जातियों को ही ज्यादा फायदा हुआ। इससे पिछड़े समूहों में भी ऊंच-नीच बढ़ी है। कई पिछड़ी जातियां सामाजिक और आरक्षण की दौड़ में पिछड़ी रह गई हैं। जाति गणना के अपने खतरे हैं। इससे जातीय खाई और ज्यादा बढ़ने की आशंका है। शायद यही वजह है कि 1951 की जनगणना के दौरान भी जाति गणना की मांग उठी थी, तब गृह मंत्री के नाते सरदार पटेल ने उसे खारिज कर दिया था, जिसका समर्थन आरक्षण लाने वाले आंबेडकर के साथ नेहरू और मौलाना आजाद तक ने किया था। आरक्षण के मूल में विचार रहा है कि आरक्षण के जरिए सामाजिक और आर्थिक से रूप से पिछड़े रह गए समूह आगे आएंगे और इस तरह वे पहले से सामाजिक और आर्थिक रूप से बेहतर स्थिति में रहे समूहों की बराबरी कर पाएंगे। लेकिन जातिवाद आधारित आरक्षण ने जातिवाद खत्म नहीं किया है, बल्कि और बढ़ाया है। हर जाति अपने-अपने जातीय खांचे को और मजबूत और ऊंचा बनाती जा रही है। जातीय समूह आरक्षण को अपना जन्म-जन्मांतर का अधिकार मानने लगे हैं। इसलिए जब भी आरक्षण को लेकर चर्चा होती है, जातीय समूह एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। इससे साफ है कि आरक्षण के जरिए जातीय बराबरी का जो विचार था, वह कहीं न कहीं कमजोर हुआ है।

वोट बैंक बढ़ाना जातिवादी राजनीति का उद्देश्य

आज की राजनीति, चाहे जिस भी पक्ष की क्यों न हो, उसका एक मात्र उद्देश्य जातीय आधार पर अपना वोट बैंक बढ़ाना और उसके जरिए सत्ता हासिल करना रह गया है। इसलिए वह अपने-अपने हिसाब से कभी जाति जनगणना तो कभी जातिवाद आधारित आरक्षण की मांग को हवा देती रहती है। दिलचस्प यह है कि सामाजिक खाई बढ़ाने वाले इस विचार को सामाजिक समता के विचार से जोड़ दिया जाता है। मौजूदा राजनीति का महात्मा गांधी या आचार्य विनोबा भावे की तरह रचनात्मक लक्ष्य नहीं है, वह समतावादी समाज बनाने की सोच को लेकर सर्जनात्मक विचार नहीं रखती, इसलिए सामाजिक विभेद को रोकने में उसकी दिलचस्पी भी नहीं है। जाति जनगणना जैसी मांगें इसी राजनीति का विस्तार है। भारतीय जनता पार्टी की सोच मौजूदा राजनीतिक दर्शन से कुछ अलग रही है। वह समन्वयवादी हिंदुत्व और सनातनी एकता के विचार से प्रेरित है, इसलिए जातीय विभेद की वह परोक्ष विरोधी रही है। पिछड़े समूह व हिंदुत्व के वैचारिक दर्शन की सोच वाले मोदी के उभार ने मंडलवादी और जाति आधारित राजनीति को बड़ी चुनौती दी।

भाजपा को बैकफुट पर आने की जरूरत नहीं

बदले माहौल में राजनीतिक चुनौतियों से जूझने की वजह से भाजपा का दबाव में आना स्वाभाविक लगता है। लेकिन इसी के साथ जातीय उन्माद को रोकने की उम्मीद भी मौजूदा राजनीति में उस से ज्यादा है, यह दायित्व भाजपा के लिए बड़ा है। सत्ता के लिए भारतीय समाज को जातिवाद के गर्त में धकेलने की विपक्ष की सनक के खतरे बड़े हैं, देश दशकों तक इसमें उलझा रहेगा। तीन दशकों तक उलझा ही था। भारत का अतीत भी बहुत कष्टदायक है, देश का विभाजन ही सिर्फ इसलिए हुआ कि मुस्लिम हिंदुओं के साथ नहीं रहना चाहते थे। परिणाम ये हुआ कि भारत तीन राष्ट्र में बंटा हुआ है। उस वक्त मुस्लिम भावना को भड़काने वाले भी सत्ता की ही राजनीति कर रहे थे। केवल सत्ता के लिए मुल्क को बंट जाने दिया। आज भी भारतीय समाज सांप्रदायिक आधार पर बंटा हुआ है। अब जातिवाद के आधार पर भी समाज के बंटने का खतरा बढ़ रहा है। भाजपा व संघ की ओर से भारतीयता व समावेशी हिंदुत्व की भावना से सामाजिक कड़वाहट मिटाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन विपक्ष की जातिवादी राजनीति इस प्रयास में अवरोधक बन सकती है। तक अब देखना होगा कि वह मंडलवादी राजनीति को फिर से बैकफुट पर कर पाती है या नहीं। वैसे भाजपा को किसी भी स्थिति में बैकफुट पर आने की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि 2024 के आम चुनाव में हिंदी क्षेत्र एमपी, बिहार, छग, हिमाचल, उत्तराखंड, दिल्ली में बड़ी सफलता मिली।

जाति गणना की मांग विपक्ष का सियासी स्टंट

राजनीति

रवि शंकर
वरिष्ठ पत्रकार

भारत में जातिगत जनगणना की मांग दशकों पुरानी है। इसका मक़सद अलग-अलग जातियों की संख्या के आधार पर उन्हें सरकारी नौकरी में आरक्षण देना और ज़रूरतमंदों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना बताया जाता है। माना जाता है कि बीजेपी को इस तरह की जनगणना से डर ये है कि इससे अगड़ी जातियों के उसके वोटर नाराज़ हो सकते हैं और पार्टी के परंपरागत हिन्दू वोट बैंक इससे बिखर सकता है। वहीं विपक्ष सामाजिक न्याय के नाम पर जातिगत जनगणना का मुद्दा उठाकर बीजेपी पर दबाव बनाने और दलित, पिछड़े वोट को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रहा है। इससे पहले कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने साल 2010-11 में देशभर में आर्थिक-सामाजिक और जातिगत गणना करवाई थी लेकिन इसके आंकड़े जारी नहीं किए गए थे। इसी तरह साल 2015 में कर्नाटक में जातिगत जनगणना करवाई गई, लेकिन इसके आंकड़े कभी सार्वजानिक नहीं किए गए।

1980 के दशक में उठी थी मांग

बता दें, जातियों की जनसंख्या के मुताबिक़ आरक्षण की मांग सबसे पहले 1980 के दशक में उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी के नेता कांशीराम ने की थी। यूपी की समाजवादी पार्टी भी लगातार जातिगत जनगणना की मांग करती रही है। दक्षिण भारत की कई पार्टियां इस तरह की जनगणना की मांग करती रही है। बिहार में पिछले वर्ष 2023 में जाति जनगणना कराई गई थी। गौरतलब है कि जातिगत जनगणना की बात आते ही अक्सर बहुत सी चिंताएं और सवाल भी उठ खड़े होते हैं। इनमें से एक बड़ी चिंता ये है कि इसके आंकड़ों के आधार पर देशभर में आरक्षण की नई मांग शुरू हो जाएगी। कांग्रेस पार्टी के कई बड़े नेताओं ने हाल के समय में जातिगत जनगणना के मुद्दे को ज़ोर-शोर से उठाया है। जातिगत जनगणना के साथ एक नारा भी लगाया जाता है 'जिसकी जितनी संख्या भारी.. उसकी उतनी हिस्सेदारी'। राहुल गांधी ने 2011 के जातिगत जनगणना के आंकड़ों को सार्वजनिक करने और पिछड़े वर्ग, दलितों और आदिवासियों को उनकी जनसंख्या के हिसाब से आरक्षण देने की मांग भी की थी। दरअसल जातिगत संख्या के आधार पर आरक्षण की मांग कर विपक्ष दलितों और पिछड़ों के बड़े वोट को अपने पक्ष में लाना चाहता है ताकि बीजेपी के कथित हिन्दू वोट बैंक को भी कमज़ोर किया जा सके।

बीजेपी जातीय गणना के विरुद्ध

दूसरी तरफ बीजेपी नहीं चाहती है कि जातिगत जनगणना हो। भाजपा की नीति समावेशी समाज की रही है। संघ भी जातिवाद का विरोध करता रहा है, संघ का लक्ष्य समाज से जातिवाद को अंत करने का है। भाजपा को लगता है कि जाति गणना से जातिवाद को बढ़ावा मिलेगा, जिससे अंततः हिंदू समाज को एक करने का लक्ष्य डिरेल होगा। हिंदुत्व का एजेंडा ही जातियों में बंटे हिंदू समाज को एक करने का है। खैर, विपक्ष जाति जनगणना को एक बड़ी राजनीति के तौर पर देखती है। जनगणना कराने से बेरोज़गारी, एनएसएसओ के आंकड़े, शिक्षा, स्वास्थ्य, किसानों की

आत्महत्या, कोविड में हुए जानमाल का नुक़सान, नोटबंदी और देश की अर्थव्यवस्था पर पड़े असर के वास्तविक आंकड़े भी बाहर आ जाएंगे। वर्ष 2021 की जनगणना अगर समय पर हो जाती तो इससे मिलने वाले आंकड़े साल 2011-21 के बीच के होते और इसमें ज़्यादातर कार्यकाल मोदी सरकार का ही है। यूं कहें कि जनगणना के मुद्दे पर बीजेपी भंवर में है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत समेत बीजेपी के कई नेता समय-समय पर आरक्षण की समीक्षा की बात करते हैं।

संघ ने माना, मामला संवेदनशील

हाल ही में केरल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तीन दिनों तक मंथन बैठक चली। इस बैठक में संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि ये संवदेनशील मामला है और इसका इस्तेमाल राजनीतिक या चुनावी उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसका इस्तेमाल पिछड़ रहे समुदाय और जातियों के कल्याण के लिए होना चाहिए। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उप वर्गीकरण की दिशा में बिना किसी सर्वसम्मति के कोई क़दम नहीं उठाया जाना चाहिए। आरएसएस का बयान ऐसे समय में आया है, जब विपक्षी इंडिया गठबंधन ने जाति आधारित जनगणना को अपना प्रमुख मुद्दा बना लिया है। अभी तक भाजपा ने खुले तौर पर जाति आधारित जनगणना का विरोध नहीं किया है लेकिन उसने इस पर कोई टिप्पणी भी नहीं की है। इसलिए वो खुलकर इसका न तो समर्थन कर पा रही है और न विरोध। जबकि विपक्ष इस बात को समझता है और इसलिए उसने जातिगत जनगणना की मांग की है ताकि आने वाले चुनावों में इसका फ़ायदा उठाया जा सके। विपक्षी दलों को लगता है कि वो जातिगत जनगणना को बड़ा मुद्दा बना लेंगे लेकिन ये आसान काम नहीं होगा, इसके लिए उन्हें बहुत मेहनत करनी होगी। क्योंकि जातिगत समीकरण को तोड़ने के लिए अब बहुत सारे विकल्प हैं जैसे; ग़रीबों के लिए कल्याणकारी योजनाएं। इस तरह से उनको अपने पक्ष में करना ज़्यादा आसान है। आखिर क्या वजह है कि पूर्व में कांग्रेस की सरकार ने अपने देश की सामाजिक सच्चाई को जानने से हमेशा मुंह चुराया और आज भाजपा नीत राजग सरकार पर कांग्रेस जाति गणना के लिए दबाव बना रही है?

जातिवार जनगणना महत्वपूर्ण

1951 से 2011 तक की हर जनगणना में संवैधानिक बाध्यता के चलते अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की गिनती तो हुई है, पर किसी दूसरी जाति की नहीं। आखिर क्या वजह है कि भारत सरकार ने देश की सामाजिक सच्चाई को जानने से हमेशा मुंह चुराया? जो समाज सर्वसमावेशी नहीं होगा, उस पाखंड से भरे खंड-खंड समाज के जरिए अखंड भारत की दावेदारी हमेशा खोखली और राष्ट्र-निर्माण की संकल्पना अधूरी होगी। जातिवार जनगणना से अलग-अलग क्षेत्रों में ओवर-रीप्रेजेंटेड और अंडर-रीप्रेजेंटेड लोगों का एक वास्तविक डेटा सामने आ सकता है, जिनके आधार पर कल्याणकारी योजनाओं और संविधानसम्मत सकारात्मक सक्रियता की दिशा में तेज़ी से बढ़ा जा सके। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि सियासी दलों की नेक नीयत हो। बिल राजनीति के लिए जाति गणना की मांग न उठे। ये सत्य है कि बीजेपी ने भी कभी जातिगत जनगणना का खुल कर विरोध नहीं किया और न खुद को इसका विरोधी बताया। लेकिन अलग-अलग कारणों से वे इसे कराने से बचती रही है। सवाल अहम ये है कि क्या अब संघ के बयान से बीजेपी के रुख में बदलाव आ सकता है। ये भी संभव है कि अगली जनगणना से पहले जातिगत जनगणना पर सरकार के रुख में कोई बदलाव आ जाए। फिलहाल जातीय जनगणना को लेकर राजनैतिक बहस तेज है। देखना है ऊंट किस करवट बैठेगा।

जातीय गणना में आखिर हर्ज ही क्या

दो टूक

मणेन्द्र मिश्रा 'मशाल'
पूर्व अतिथि प्रवक्ता, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय

हाल ही में संपन्न लोकसभा चुनाव के दौरान विपक्षी दलों का प्रमुख मुद्दा जातीय जनगणना रहा। सांसदों की संख्या के आधार पर देश की तीसरी सबसे बड़ी समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव 2017 के विधानसभा चुनाव के बाद से ही जातीय जनगणना कराए जाने को लेकर मुखरता से आवाज उठा रहे हैं। जिसका फैलाव क्षेत्रीय दलों के मैनिफेस्टो से होते हुए कांग्रेस के एजेंडे में शामिल हो चुका है।

भारत में आरक्षण संवेदनशील मुद्दा है। इसको लेकर समय-समय पर संघर्ष भी दिखता रहता है। संविधान निर्माण के समय अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति को उनकी आबादी के अनुसार क्रमशः 15% एवं 7.5% की संवैधानिक व्यवस्था की गई है। संविधान सभा में ओबीसी की आबादी 52% को दृष्टिगत रखते हुए इस वर्ग के लिए 27% आरक्षण की व्यवस्था है। आरक्षण का दायरा बढ़ाने को लेकर विधायिका और न्यायपालिका में गहमागहमी चलती रहती है। माननीय सुप्रीम कोर्ट अनेक फैसलों से आरक्षण का दायरा 50% से अधिक नहीं करने पर स्थिर है। जबकि दक्षिण के कुछ राज्यों में यह दायरा बढ़ गया है। 2019 में 103वें संविधान संशोधन से ईडब्ल्यूएस की नई व्यवस्था के तहत 10% आरक्षण में आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग को शामिल किया गया। ऐसे में यह मांग जोर पकड़ने लगी जब अभी वर्गों को आरक्षण दिया जा रहा है फिर आबादी के अनुसार आरक्षण सबसे उचित तरीका हो सकता है।

अस्पृश्यता निवारण कानून

विपक्षी दलों एवं जातिगत जनगणना के समर्थक वर्ग का मानना है कि इससे आरक्षण को लेकर संघर्ष एवं कटुता दूर करने में मदद होगी। इतिहास की ओर दृष्टिपात करने से आरक्षण व्यवस्था का विषय स्पष्ट हो जाएगा। भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति/जनजाति के साथ छुआछूत की अमानवीय परंपरा को समाप्त करने के लिए जहां एक ओर अस्पृश्यता निवारण कानून बना वहीं दूसरी ओर एससी/एसटी वर्गों के लोकसभा एवं विधानसभाओं में समुचित प्रतिनिधित्व के लिए सुरक्षित निर्वाचन सीटों का प्रावधान हुआ। जिससे दलित और जनजातीय समाज से सांसदों और विधायकों की श्रृंखला शुरू हुई। उसका देश की सामाजिक संरचना पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। अनुसूचित जाति और जनजाति को उसकी आबादी के अनुपात में आरक्षण मिलने से सरकारी सेवाओं एवं सदन, दोनों जगह उस वर्ग को आबादी के अनुपात में हिस्सेदारी मिलने लगी।

मंडल कमीशन की रिपोर्ट

आरक्षण की व्यवस्था में ओबीसी की समस्याओं एवं चुनौतियों की दिशा में ठोस पहल न होने से राज्यों सहित राष्ट्रीय स्तर पर आक्रोश तेज होने लगा। आपातकाल के बाद जब देश में समाजवादियों की सरकार बनी, उस समय घटक दलों में समाजवादी विचार के नेताओं ने डॉ. राममनोहर लोहिया के नेतृत्व में पिछड़े पाँवें सौ में साठ के नारे को आधार बनाते हुए चौधरी चरण सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में मंडल कमीशन ने

आकार लिया। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री रहे बीपी मंडल की अध्यक्षता में मंडल आयोग ने पिछड़ों के सामाजिक/शैक्षणिक आधार का मूल्यांकन कर अपनी रिपोर्ट तैयार की, लेकिन केंद्र में निर्वाचित सरकारों के बदलाव और सत्ताधारी राजनीतिक दलों के भीतर साहस की कमी के कारण मंडल रिपोर्ट ठंडे बस्ते में पड़ी रही। अस्सी के उतरार्द्ध में कांग्रेस की हार के बाद जनता दल की सरकार बनने पर तत्कालीन प्रधानमंत्री वीपी सिंह ने मंडल कमीशन की रिपोर्ट जारी करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। मंडल कमीशन की सिफारिशें लागू होने से देश के विभिन्न प्रांतों में कुछ समय के लिए सामाजिक हिंसा भी हुआ जो समय रहते नियंत्रण में आ गया। पूरे देश में पिछड़ों के सरकारी सेवाओं में 27% आरक्षण का रास्ता खुल गया, जिससे सामाजिक विविधता का नया रूप सामने आया। इसके साथ ही उत्तर भारत में सत्ता के केंद्र में पिछड़ी जातियों का उभार हुआ। नब्बे के दौर में केंद्र और राज्यों में पिछड़ों को आबादी के अनुसार हिस्सेदारी और प्रतिनिधित्व की मांग जोर पकड़ने लगी। इसके साथ ही विश्वविद्यालयों में पिछड़ी जातियों का कोटा तय करने का दबाव केंद्र सरकार पर पड़ने लगा जिसे 2004 में तत्कालीन कांग्रेस सरकार में मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंह ने अमली जामा पहनाया। आरक्षण और प्रतिनिधित्व की धाराएं स्वतंत्र भारत में अनेक सामाजिक आंदोलनों के रूप में लगातार चुनावी राजनीति में राजनैतिक दलों पर प्रभाव डालती रहीं।

यूपी-बिहार में यह धारा बेहद समृद्ध रही। नब्बे के दौर में जहां उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में पिछड़ी जातियाँ एकजुट हुईं वहीं बिहार में लालू यादव और नीतीश कुमार की अगुवाई में यह एकता सामने आई। समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव ने 2019 लोकसभा चुनाव में जातीय जनगणना की मांग को उठाया था जिसे 2022 के विधानसभा चुनाव और 2024 लोकसभा में चुनावी मुद्दा बनाया। हाल ही में भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन में जातीय जनगणना कराए जाने के मुद्दे पर सभी दलों की सहमति बनी। 2024 के लोकसभा चुनाव में अखिलेश यादव ने बतौर नेता प्रतिपक्ष सदन के भाषणों में जातीय जनगणना के पक्ष में पूरी प्रतिबद्धता दिखाई।

नीतीश ने जारी किए आंकड़े

बिहार में नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव ने जातीय गणना कराने के लिए न केवल पहल किया बल्कि अविलंब उसके आकड़े भी जारी कर दिए। हाल ही में सम्पन्न हुए संसद के विशेष सत्र में महिला आरक्षण बिल के दौरान कांग्रेसी नेता राहुल गांधी ने जातीय जनगणना कराने के पक्ष में समर्थन दिया। जनगणना में सरकार द्वारा की जा रही देरी और तमाम शिक्षण संस्थानों में नियुक्ति में आरक्षण को नियमबद्ध रूप से लागू ना करना हो या लेटरल एंट्री के माध्यम से आरक्षण को बिलकुल दरकिनार करना हो, बड़ा मुद्दा बना। बिहार सरकार द्वारा जातीय जनगणना के आंकड़े जारी करने के बाद देर सबेर इस पर राष्ट्रीय सहमति बनने की संभावना दिखती है।

देश में जातीय स्वाभिमान और अस्मिता की राजनीति के उभार से कई मोर्चों पर सामाजिक कटुता अक्सर दिखती रहती है। ऐसे में जातीय जनगणना के माध्यम से सभी जातियों और समूहों को उनके आबादी के अनुपात में हिस्सेदारी मिले इसके लिए आपसी सहमति बननी चाहिए। जनगणना के साथ जातिगत जनगणना को प्राथमिकता से सभी राजनीतिक मंचों पर एक स्वर में आवाज बुलंद करनी चाहिए । सामाजिक तनाव, भेदभाव, वंचित तबके के लिए विशेष अवसर की कमी जैसे अन्य समानार्थी मुद्दे किसी भी लोकतंत्र के लिए उचित नहीं है। संविधान और लोकतंत्र का मूल सिद्धांत समानता,बंधुत्व और सामाजिक न्याय है। जातीय जनगणना इसी लक्ष्य को पूरा करने का एक कारगर हथियार है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid https://t.me/AllNewsPaperPaid

Want to get these Newspapers Daily at earliest

1. AllNewsPaperPaid
2. आकाशवाणी (AUDIO)
3. Contact I'd:- https://t.me/Sikendra_925bot

Type in Search box of Telegram
@AllNewsPaperPaid And you will find a Channel
Name All News Paper Paid Paper join it and receive
daily editions of these epapers at the earliest

Or you can tap on this link:

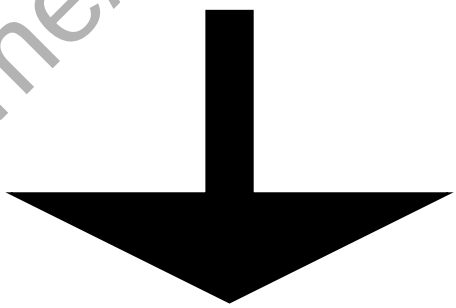

https://t.me/AllNewsPaperPaid

https://t.me/AllNewsPaperPaid https://t.me/AllNewsPaperPaid

https://t.me/AllNewsPaperPaid